राजस्थान- पुरातन- ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

* प्रवन्ध सम्पादक *

जितेन्द्र कुमार जैन

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १२९

राजस्थानी- वीरगीत- संग्रह

भाग ४

* प्रकाशक *

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर (राजस्थान)

१९७९ ई०

मुद्रक

साधना प्रेस, उच्च न्यायालय मार्ग, जोधपुर

वि०सं० २०३६ | भारत राष्ट्रीय शकाब्द १९०१

विषयानुक्रम ः

प्रबन्ध सम्पादकीय

प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित हो रहे 'वीरगीत-संग्रहों' के क्रम में यह चौथा भाग पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। "राजस्थानी- वीरगीत- संग्रह" शीर्षक से प्रकाशित इस शृंखला के चौथे भाग में २१४ वीर-गीत संकलित हैं।

राजस्थानी साहित्य में वीर-गीतों की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। अपने भाव-सौन्दर्य और सजीव वर्णन के कारण ये डिंगल- साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में पहचाने जाते हैं। किन्तु, लोक- साहित्य की अन्य विधाओं की तरह वीर-गीत भी इतिहासकार के लिए उपयोगी हो सकते हैं। वह अपने द्वारा एकत्रित तथ्यों का मिलान इन गीतों से करके अपनी बात को पुष्ट कर सकता है, उनकी जाँच कर सकता है। हाँ, यह अवश्य है कि इनके प्रयोग के लिए इतिहासकार की अन्तर्दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म और पैनी होनी चाहिए क्योंकि इतिहास के लिए इनके अभिधार्थ या 'फेस वेल्यू' का कोई विशेष उपयोग सम्भव नहीं है। उसे तो इसमें व्याप्त धुन्ध में से अपने उपयोग के तथ्य की पहचान करनी होगी, यह उसकी क्षमता पर निर्भर करता है। स्पष्ट है कि इन वीर-गीतों का प्रयोग इतिहास- लेखन में भी उपयोगी और सार्थक हो सकता है।

अन्त म इस कार्य का सम्पादन करने वाले राजस्थानी भाषा के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री सौभाग्यसिंह शेखावत का सधन्यवाद उल्लेख करना चाहूँगा। इस कार्य के प्रूफ-संशोधन में जो सहयोग विभागीय कनिष्ठ तकनीकी सहायक श्री गिरधरवल्लभ दाधीच ने किया उसका उल्लेख किया जाना भी समीचीन होगा। इस ग्रन्थ को यथा समय छापने में जो सहयोग व्यवस्थापक साधना प्रेस ने किया इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

विद्वान् पाठकों द्वारा ग्रन्थ का समुचित स्वागत होगा इस आशा के साथ उन्हें इसकी त्रुटियों का निर्देश एवं आवश्यक सुझाव देने के लिए आमंत्रित करता हूँ ताकि अगले संस्करणों में उन पर समुचित विचार किया जा सके।

27 मार्च, 1979

[नूतन वर्षारम्भ]

के० के० जैन

निदेशक

सम्पादकीय

राजस्थानी भाषा का प्राचीन वीररसात्मक साहित्य अनेक प्रकार के छंदों में प्राप्त होता है, जो प्रवंध तथा मुक्तक दोनों रूपों में उपलब्ध है। किन्तु, परिमाण की दृष्टि से मुक्तक रूप में अधिक लिखा गया है। दोहा, सोरठा, छप्पय, झूलणा, निशानी आदि विविध छंद-प्रकारों से कहीं अधिक गीत-छंद में सर्जित मुक्तक-साहित्य का अपना विशिष्ट स्थान तथा महत्व है। यह स्फुट गीत-काव्य केवल काव्य-रस-रसिकों के लिए ही नहीं अपितु राजस्थान के इतिहास, संस्कृति तथा समाज के अध्येताओं के लिए अनुपेक्षणीय है। भारतीय साहित्य के विद्वान् डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी तो प्राचीन-काव्य को भारतीय-संस्कृति की आधार सामग्री मानते हैं और कहते हैं कि "भारतवर्ष का सुषुप्त युग जिसके पेट में से यह हमारा आधुनिक युग उत्पन्न हुआ, वहुत महत्वपूर्ण है। इस देश की जनता को, उसके विश्वासों को, धर्म-परिवर्त्तनों के कारणों को समझने की सामग्री इस काल में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगी। इसे समझे बिना हम भारतवर्ष को ही ठीक नहीं समझ सकते।" इसलिए प्राचीन साहित्य भाषा वैज्ञानिक अध्ययन तथा इतिहास के घटनाक्रमों तक ही उपयोगी नहीं है, वल्कि सांस्कृतिक थाती के साथ-साथ भावी उन्नयन के लिए भी उपादेय और आवश्यक अध्ययनीय है।

राजस्थान के अतीत का इतिहास स्वाधीनता तथा स्वाभिमान और मानवीय आदर्शों की रक्षा के लिए संघर्ष का इतिहास रहा है। आदर्श की रक्षा के लिए सतत-संघर्षशील राजस्थानी समाज का विश्व के समुन्नत समाज ने ससम्मान स्वागत एवं वंदन किया है। जिस श्रद्धा और स्वाभिमान की भावना से प्रेरित होकर राजस्थान के नर-शार्दूलों ने अपने जीवन को देश, समाज और राष्ट्रीय-गौरव के लिए उत्सर्ग किया, उसी उदात्त प्रेरणा और गौरव के साथ राजस्थान के कवि-मन ने उन राष्ट्र-नायकों, देश-भक्तों, समाज-सेवकों और जूझारों का प्रशस्ति-गान कर उन्हें तथा उनकी पवित्र स्मृति को श्रद्धा के भाव-सुमन समर्पित किये। ये सुरभित-सुमन राजस्थानी भाषा में निवद्ध छन्दात्मक-स्फुट गीतों में प्रचुर मात्रा में सुरक्षित हैं।

'गीत' राजस्थानी का मुक्तक छंद है जिसके एक सौ से अधिक भेदोपभेद हैं। अतीत की एक ही घटना और एक ही व्यक्ति पर अनेक व्यक्तियों द्वारा लिखित पन्द्रह-बीस गीत

सहज उपलब्ध हो जाते हैं। यही नहीं, एक ही नायक एक ही घटना और एक ही कवि द्वारा विभिन्न जातीय गीतों तथा वर्णन शैलियों में रचित गीत भी प्राप्त होते हैं। इससे यह सहज ही समझा जा सकता है कि तत्कालीन समाज में घटना नायक और उससे सम्बंवित घटना के प्रति कितना श्रद्धाभाव और आकर्षण था।

प्रायः वीर-गीतों के नायक ऐतिहासिक व्यक्ति होते हैं और वर्णित प्रसंग भी इतिहास सम्मत तथा ऐतिहासिक घटना से पुष्ट होता है। इतिहास के प्रमुख स्रोत ख्यातों और ऐतिहासिक वातों में जिन वीर पुरुषों का वर्णन नहीं पाया जाता, उन पर भी गीत रचे हुए मिलते हैं। ख्यातकार तथा वार्ताकार जहां किसी रियासत के राज-परिवार या राज-घराने के प्रमुख पात्र के इर्दगिर्द परिभ्रमण करते परिलक्षित होते हैं वहां गीतकार प्रत्येक योद्धा तथा घटना की ओर दृष्टिपात करता है और गीत में उसे प्रमुख-स्थान देता है। इस प्रकार स्फुट गीत भी इतिहास की अमूल्य निधि है।

सामाजिक दृष्टि से योद्धा-समाज के जातीय संस्कार, उनका मान-मूल्य, कार्य-कर्त्तव्य, स्वधर्म, कुल-गौरव तथा राष्ट्र-प्रेम के आदर्शों के परिपालन का स्वर गीतों में ध्वनित व अभिव्यंजित रहा है। गीत-लेखकों ने सामान्यतः ऐसे व्यक्तियों के उदात्त चरित्र चुने जिन्होंने देश में मान्य आदर्शों, प्रतिष्ठित परम्पराओं, जन-आस्थाओं तथा जन-हित-चिंतन के लिए अपने जीवन का बलिदान किया। गीत-रचयिता सदैव जाति, समाज, समूह अथवा धार्मिक बंधन-प्रतिबंधन से सर्वथा स्वतंत्र रहा है। उसका लक्ष्य वीरता और उदारता आदि गुणों से विभूषित चरित्र का सुयश-प्रसारण और भावी समाज के लिए प्रेरणा प्रदान करना रहा है। राजस्थान की ख्यातों, वातों, गीतों तथा कहावतों में विकीर्ण और गुम्फित राजस्थान के विगत इतिहास में युद्ध-वृत्तों और युद्ध-वृत्ति क्षत्रिय जाति के वीरों पर ही नहीं वरन् क्षत्रियों से इतर जातियों- ओसवाल, अग्रवाल, माहेश्वरी आदि वैश्यों, ब्राह्मण, पुरोहित, चारण, राव, दादूपंथी साधु, जाट, गूजर, मीना और मुसलमानों तथा अंग्रेजों आदि पर भी विपुलमात्रा में उनका वीरत्व एवं सामाजिक दायित्व प्रकट करने वाले गीत लिखे गए हैं।

गीतकार कवियों में सर्वाधिक कवि चारण हैं जो आमतौर पर राज-दरबारों एवं योद्धाओं से सम्पृक्त रहते थे और उनके साथ स्वयं युद्ध में भाग लेते और घटना-प्रसंगों का आंखों देखा वर्णन करते थे। इसलिए गीत-रचनाओं में ओज, प्रवाह के

साथ साथ सजीवता तथा चित्रोपमता स्वाभाविक रूप में प्रकट होती है। वीरता के आराधक चारण-कवियों के समान ही कतिपय राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य, पुरोहित, जैन-साधु राव, सेवक, मोतीसर, दमामी और ढाढ़ियों में भी उच्चकोटि के कवि हुए हैं।

राजस्थानी वीरगीत-संग्रह-माला का यह चतुर्थ भाग है। इससे पूर्व प्रकाशित तीन भागों में क्रमशः १८६, १५२ और १४१ इस प्रकार कुल ४७९ गीत प्रकाशित हुए हैं। प्रस्तुत चतुर्थ भाग में २१४ गीत प्रकाशित किये गए हैं। ये गीत राजस्थान और पड़ौसी प्रांत-मालवा के शासकों और योद्धाओं से सम्बद्ध हैं। जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, अजमेर मेरवाड़ा तथा रतलाम (मालवा) के राठौड़ों पर १०९, उदयपुर, डूंगरपुर, प्रताप-गढ़ एवं शाहपुरा क्षेत्र के सिशोदियों पर १३, जयपुर व अलवर भू-भाग के कछवाहों पर २८, कोटा, बूंदी व सिरोही के हाडों तथा देवड़ाओं पर ३४ और भाटी, गौड़, पंवार एवं सोलंखी क्षत्रियों और चारण, मरहठा, खत्री तथा अंग्रेजों पर कोई २६ गीत हैं।

गीतकारों में एक ओर महाराज पृथ्वीराज राठौड़ बीकानेर, चारण दुरसा आढ़ा पांचेटिया, चारण माला सांदू मदौरा, महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण बूंदी, कविराज बांकीदास आशिया जोधपुर, कविवर केशवदास गाडण छींडिया तथा आशा (आशानंद) आदि सुज्ञात कवियों के अतिरिक्त हुकमीचंद खिड़िया, बखता खिड़िया, चतुरभुज खिड़िया, माला खिड़िया महेशदास खिड़िया, प्यारदान खिड़िया, ईश्वरदास खिड़िया, रायमल खिड़िया, हरिदास खिड़िया, खेतसी बारहठ, नाथा बारहठ, कृपाराम बारहठ, भूदरदास पाल्हावत बारहठ सूरतदान सांदू, लाला सांदू, गंगादान सांदू, बख्तावर सांदू, रामां सांदू, ईश्वरदास सांदू, कुम्भकरण सांदू, सुन्दरदास सांदू, बदन मिश्रण, चण्डीदान मिश्रण कल्याणदास मेहडू, किसना मेहडू रामकरण मेहडू, चोलां गाडण, चूडा दधवाड़िया करणीदान दधवाड़िया, शंकरदान सांमोर, जवान आढ़ा, जीवणदास कल्ला सीधा ब्राह्मण, रायमल वहियावट, खड़दान आपावत, मनोहर राव, रघुनाथ राव, किसना दसोंधी, हम्मीर राव और सुखा दमामी प्रभृति अल्पज्ञात और अज्ञात ५३ कवियों की रचनाएँ इस संकलन में प्रस्तुत की गई हैं। सतरहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अंधकार में पड़ी ये स्फुट रचनाएँ आज भी राजस्थानी साहित्य में अपना मूर्धन्य स्थान रखती हैं। गीतनायकों की समसामयिक होने से इन रचनाओं का इतिहास-पक्ष भी कम महत्व का नहीं है।

प्रस्तुत सम्पादन में पूर्व-क्रम का ही अनुसरण किया गया है। मूल गीत के नीचे वर्ण्य-विषय का संक्षिप्त सार तदनन्तर कठिन शब्दों के अर्थ और परिशिष्ट-१

और २ में क्रमश: उपलब्ध ऐतिहासिक टिप्पणियां और गीत छंदानुक्रमणी दी गई है।

मैं विश्वास करता हूं कि राजस्थानी भाषा साहित्य के छात्रों एवं राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास के शोध-विद्वानों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए यह पुस्तक लाभप्रद सिद्ध होगी।

प्रस्तुत संकलन में मेरे अपने निजी संग्रह के अतिरिक्त साहित्य संस्थान उदयपुर, डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, अध्यक्ष राजस्थानी विभाग जोधपुर विश्व विद्यालय, ठाकुर-सुरजनसिंह शेखावत झाझड़, कुंवर सवाईसिंह धमोरा और राजस्थान प्राच्य विद्या-प्रतिष्ठान के संग्रहों से गीतों का चयन किया गया है। एतदर्थ उल्लिखित महानुभावों तथा संस्थाओं के प्रति कृतज्ञ हूं।

प्रेस-कापी तैयार करने का श्रेय भंवरसिंह भाटी सांवतकुवा तथा छंदानुक्रमणी की चिटिकाएं तैयार करने का श्रेय चि. महावीरसिंह शेखावत भगतपुरा को है। प्रूफ-संशोधन में प्रतिष्ठान के मेरे मित्र श्री गिरधरवल्लभ दाधीच कनिष्ठ तकनीकी सहायक ने महत्व-पूर्ण योगदान दिया है। सच तो यह है कि मेरी अस्वस्थता के वावजूद भी यह ग्रन्थ समय पर निकालने का श्रेय इनका ही है।

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के उपनिदेशक डॉ. पद्मधर पाठक का मैं हार्दिक आभारी हूं जिन्होंने निश्चित रूप से राजस्थान की इस लुप्तप्राय: गीत-निधि को प्रकाश में लाने में अपना महत्वपूर्ण योग दिया है।

सौभाग्यसिंह शेखावत

महाशिवरात्रि वि. सं. २०३५
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी

गीत-अनुक्रम

राजस्थानी-वीरगीत-संग्रह

भाग ४

राजस्थानी-वीरगीत-संग्रह

भाग–४

※※※

१. गीत राजा उदैसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

अकवर ची फौज मुदाफर ऊपर, घाइ मिलै आवरत घणौ।
लाख भड़ां सिरताज लेखीयै, तेण दिहाड़े माल तणौ ॥१॥
खांन निवाब वहंतां खागें, आसुरी पातर गया अनेक।
ऊभै पचासां सहस ऊपरां, ऊदै अनड़ जाणीयौ अेक ॥२॥
अणी धणी तैं दीह ऊदैसिंघ, थरकी फौज अठेल थीयै।
सोह चढ़ाय तेरह साखां, लाखां मुंहर बधाय लीयैं ॥३॥
दळण मुदाफर खूंद तणा दळ, अनवीं हूंता भींच अनेक।
जोधाहरा तुहाळा जमली, हिन्दू, तुरक न पूगौ हेक ॥४॥

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

१. गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के राजा उदयसिंह राठौड़ द्वारा शाही पक्ष में रह कर मुदाफरखांन को परास्त करने के उल्लेख का है। गीत में वर्णन है कि बादशाह अकबर की सेना ने मुदाफरखां पर आक्रमण किया तो अन्य योद्धा तो भय से विचलित हो गए, पर उदयसिंह ने साहस पूर्वक दो हजार शत्रुओं पर आक्रमण किया। यों उस वीर ने शौर्य दिखाकर राठौड़ वंश की तेरह शाखाओं को यशस्वी बना दिया।

---

१. अकबर ची—बादशाह अकबर की। घाइ—प्रहार, घाव। आवरत—सेनादल, उमड़ कर। घणौ—अधिक। भड़ाँ—भटों, योद्धाओं। तेण—उस। दिहाड़े—दिन। माल तणौ—राव मालदेव का पुत्र राजा उदयसिंह।

२. वहंतां—प्रहार होते। खागें—तलवारों के। आसुरी पातर—यवन लोग भटक गए। ऊभै पचासां सहस—दो हजार। ऊदै—राजा उदयसिंह। अनड़—अचल, अडिग।

३. अणी धणी—सेनापति। तैं दीह—उस दिन। थरकी—काँपने पर। अठेल—अटल, अडिग। थीयै—हुआ। तेरह साखां—राठौड़ कुल की तेरह शाखाएँ प्रसिद्ध हैं। मुहर—अगाड़ी। बधाय—स्वागत कर।

४. दळण—दमन कर। खूंद तणा—बादशाह कर। दळ—सेना। अनवीं—किसी के भी आगे न झुकने वाले। हूंता—थे। भींच—वीर। जोधाहरा—राव जोधा के पौत्र, उदयसिंह। तुहाळा—तुम्हारा। जमली—यमराज जैसे बराबरी। पूगौ—पहुँचा, बराबरी कर सका। हेक—एक।

२. गीत राजा उदैसिंघ राठौड़ जोधपुर री

कड़ा नींकड़ा लोहड़ा ऊजळा कोरड़ा, बाथ फेरै घड़ावंध वारै।
रीठ पड़तां विचै ऊदड़ा रूकड़ा, माल रा वंकड़ा तूंहीज मारै ।।१।।

लायकां तणै मूंह घायकां लोपीया, विड़ंगह विचै सहत विहत बाज।
पाड़ तायक धरा खरै नायक पणै, सिंघ सांची अचड़ ऊठियौ साज ।।२।।

हैवै दळ छात दळ सैन लग हाथळै, अलव खळां लोप असमान आधार।
तूंझ चडिया थकै हाथ पड़िया तकां, माल रा सींघली ऊठियौ मार ।।३।।

किरमरां मार लग चंद ऊदौ कहै, सकज मेलै नहीं धरा साझी।
हार जीती करे पिसण मसळै हिया, मार ऊभां गयौ मेर मांझी ।।४।।

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

२ गीतसार—ऊपरांकित गीत जोधपुर नरेश उदयसिंह की युद्धवीरता पर कथित है। गीत में वर्णन किया गया है कि हे राव मालदेव तनय उदयसिंह ! घमासान युद्ध में अपरिमित शस्त्र-प्रहारों के मध्य प्रवेश कर शत्रु-सेना का तुम ही नाश करते हो। पराजय को विजय में परिणित करने में तुम समर्थ हो।

---

१. कड़ा—कवच। नींकड़ा—विना कवच। लोहड़ा—शस्त्र। ऊजळा—उज्ज्वल। बाथ—भुजपाश। घड़ावंध—सेनाधीश, राजा। रीठ—शस्त्रों की चोटें। ऊदड़ा—राजा उदयसिंह। रूकड़ा—तलवार। मालरा—राव मालदेव का पुत्र। वंकड़ा—विकट, बाँकुरा।

२. तणै—के। मूंह—मुख। घायकां—मारने वाले। लोपीया—उल्लंघन किया। विड़ंगह—घोड़ा। विहत—दोनों हाथों से। बाज—प्रहार कर। पाड़—गिरा कर। तायक—शत्रु, संहार करने वाला। धरा—पृथ्वी। खरै—खरा, सच्चा। पणै—पन। सिंघ—राजा उदयसिंह। अचड़—श्रेष्ठ कार्य, कीर्ति। साज—सज्जित होकर।

३. हैवै दळ—बादशाही सेना का। छात—छत्र, रक्षक। लग—तक। हाथळै—हत्थल, पंजा। अलव—अलभ्य। खळां—वैरियों के। लोप—उल्लंघन कर। असमान—आकाश। चडिया थकै—सामने आये। तकां—जिनके। सींघळी—सिंह, भूखा शेर।

४. किरमरां—तलवारों की। ऊदौ—उदयसिंह।

३. गीत राजा उदैसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

सिर भमै तकंतौ सास उसासां, सिंघ तणौ असमर सींचाण ।
जाळे मिळै जंगळे जीवण, सिर ढांकै चिड़लो सुरताण ।।१।।

रोहे ऊदैसींघ धारारव, विहंग विछूटौ वडा बिनांण ।
डांणां चूक भाड़ां दिस दौड़ै, चौड़ै नह दौड़ै चहुवाण ।।२।।

पातल जैत पंख पाड़ावीया, सिंघ खड़ग हरि वाहण सीक ।
जीव ऊबारण नवण जंगळी, माथा नवण करै मछरीक ।।३।।

आगै सहर भटाणां ऊपर, ओछीयौ प्राण चालियौ ऊठि ।
बाहै बाजराज वीजूजळ, पारेवड़ा देवड़ा पूठि ।।४।।

तीखा खाग खगेसुर ताकै, साल काढ़वा माल सुजाव ।
परहरि सहर वावरै पांखां, रेसै डहर कबूतर राव ।।५।।

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

३ गीतसार-उपर्युक्त गीत राजा उदयसिंह राठौड़ जोधपुर पर कथित है । गीत में उदयसिंह द्वारा सिरोही के देवड़ों पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है । गीतकार ने गीत-नायक को पक्षीराज बाज और उसकी तलवार को पंख तथा विपक्षी योद्धा देवड़ाओं को चिड़िया वर्णित किया है और कहा है कि वे तरु झंगरों की ओट में मृत्यु भय से छिपते फिरते हैं, फिर भी बच नहीं पाते हैं ।

---

१. भमै—चक्कर काटता है । तकंतौ—ताक लगाये हुए । उसासां—उर्ध्वश्वास । सिंघ तणौ—राजा उदयसिंह की । असमर—तलवार । सींचाण—बाज पक्षी । जाळे—वृक्षों का सघन समूह । जंगळे—वन । ढांकै—छिपाते हैं । चिड़लो—चिड़ा, पक्षी । सुरताण—महाराव सुरतान देवड़ा सिरोही नरेश ।

२. रोहे—घेरे में लेता है । धारारव—तलवार । विहंग—पक्षी । बिनांण—रहस्य, विज्ञान । डांणां चूक—अवसर खोया हुआ, होश हवास भूला हुआ । भाडां—झाड़ियों । दिस—तरफ । चौड़ै—खुले मैदान में ।

३. पातल—प्रतापसिंह । जैत—जैत्रसिंह । पाड़ावीया—उखड़वा लिये । खड़ग—तलवार । हरि वाहण—पक्षीराज गरुड़ । जीव ऊबारण—बचाने हेतु । नवण—झुकने । मछरीक—चौहान, सुरतान ।

४. भटाणां—स्थान का नाम । ओछीयौ—कम, क्षुद्र । बाहै—प्रहार करता है । बीजूजळ—तलवार । पारेवडा—कपोत । पूठि—पीठ पर, भागते हुए पर ।

५. तीखा— तीक्ष्ण । खगेसुर—पक्षीराज । काढ़वा—निकालने । माल सुजाव—राव मालदेव का पुत्र राजा उदयसिंह । परिहरि—त्यागकर । रेसै—संहार करता है, दमन करता है । डहर—खुला साफ मैदान । कबूतर राव— कपोत रुपी राव पक्षी ।

४. गीत महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

समर सगतपुर मंडोवर छतरधर समोसर, तकर कर वजर वर धजर तांजौ ।
असुर वगतर उवर मगर सांसर अतर, गंगहर कळोधर कहर गांजौ ॥१॥
मेळीयौ जसै बळ दिलो दळ मचकतां, प्रवळ भुजवळ सरळ तरळ पूगौ ।
धिखे मैंगळ सदळ अकळ चळवळ धरळ, अरळ सावळ भरळ करळ ऊगौ ॥२॥
वार विकराळ सिरदार वध वाहीयौ, समर वर भार धर धार सूरै ।
सार सेलार उरपार वै मार सर, पार चौधार कर मार पूरै ॥३॥
काळ लंकाळ कर ठाळ जड़ीयौ कमंध, वहै विकराळ रतखाळ वांई ।
भाळ छकड़ाळ चुगडाळ चूनाळ भिद, ताळगो भाळ कर धरण तांई ॥४॥
खतम अवसांण खैंफाण रहीया थरक, रीझियौ भांण हिंदवांण राजी ।
सगत सिव सवाड़ा अखाड़ा सेल रौ, गवाड़ै प्रवाड़ा सुतन गाजी ॥५॥

—वखता खिड़िया रौ कह्यौ

---

४ गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा यशवंतसिंह प्रथम के भाले की प्रशंसा पर रचित है। गीतकार ने गीतनायक को दिल्ली के बादशाह के बराबर का बली वर्णन किया है। वह कहता है कि युद्ध की विषम वेला में यशवंतसिंह ने विपक्षी सेना के सामने आगे बढ़कर युद्ध का भार वहन किया। युद्ध की भयानकता से जब मुसलमान योद्धा भयभीत होने लगे तब यशवंतसिंह ने भाले से आक्रमण कर यशकथा का प्रसार किया।

---

१. समर—युद्ध। सगतपुर—दिल्ली। छतरधर—छत्र धारण करने वाले, राजा। समोसर—बराबर। तकर कर—तकरार करके। वजर वर—वज्र के बराबर, श्रेष्ठ कोटि का वज्र। वजर—भाला। तांजौ—तेरा, तुम्हारा। असुर—मुसलमान। उवर—उर, हृदय। मगर—पीठ भाग। सांसर— (?)। अतर—अति, अधिक। गंगहर—राव गांगा का वंशधर। कहर—प्रलयकारी, भयावह, तेज। गांजौ—भाला, बर्छा।

२ मेळीयौ—मिलाया, भिड़ाया। जसै—महाराजा यशवंतसिंह। मचकतां—भय से आन्दोलित होने पर। तरळ—तीव्र गति से, चपलता से। पूगौ—पहुँचा। धिखै—क्रोधित होकर, भभककर। मैंगळ—हाथी। अकळ—वीर, समस्त। चळवळ—डांवाडोल, रुधिर। धरळ—धाराप्रवाह। अरळ—वैरी। सावळ—भाला। भरळ—चमकता। करळ—भयंकर, हथेली के अग्रभाग में। ऊगौ—उदय हुआ।

३. वार—समय, प्रहार। वध—आगे बढ़कर। वाहीयौ—प्रहार किया। सेलार—भाला। उरपार—वक्षस्थल के पार। चौधार—भाला विशेष। मार-चोट।

४. काळ—यमराज। लंकाळ—सिंह। कमंध—राठौड़। वहै—प्रवाहित हुए। रतखाळ—लोहू के नाले। भाळ—भाले की नोक, ललाट। छकड़ाळ—कवच। चुगड़ाळ—मुसलमान। चूनाळ— (?)। भिद—भेदकर। धरण—पृथ्वी। तांई—तक।

५. खतम—पूर्ण। अवसांण—युद्ध, मौका। खैंफाण—मुसलमान। थरक—डर, कंपित। सवाड़ा—सवागुने अधिक। अखाड़ा—युद्ध। गवाड़ै—गायन करवाकर। गाजी—गजसिंह।

५. गीत जसवंतसिंघ राठौड़ रौ

गड़ लाळ लगाय हालियौ गढ़पत, खरी कहा मत कोय खिजौ ।
डारण जसौ आवतां देखै, वारण बळ तज गयौ बिजौ ।।१।।

कर आग्राज उठायौ कमधज, राखण पाट त्रम्बाट रुड़ ।
इण राठौड़ संहसबळ आगै, मैंगळ जादव गयौ मुड़ ।।२।।

हरियंद सुतन सभाव हालतौ, भौ मन अमर सुजाव भयौ ।
इण नहराळ काळ मूंह आगै, गह तज पाल दंताळ गयौ ।।३।।

असमर धरा धूणियां आयौ, नड़ीयां कमां तणा सिर नेत ।
मद रद हुयै गयौ माडेचौ, खेड़ैचा आगै रिणखेत ।।४।।

---

५ गीतसार—यह गीत यशवंतसिंह राठौड़ पर रचित है। गीत में यशवंतसिंह को सिंह और प्रतिभट विजयपाल यादव को हाथी अंकित कर दोनों का वर्णन किया हैं। गीत में कहा है कि विजयपाल रूपी गज स्वेच्छापूर्वक विचरण किया करता था, किन्तु यशवंतसिंह रूपी सिंह के आक्रमण करने पर वह गर्वविहीन होकर लड़ाई से चलता बना।

१, लाळ—लार, मुँह से बहकर गिरने वाला थूक । हालियौ—चलता बना । खरी—स्पष्ट और सच्ची । खिजौ—रुष्ट हुआ । डारण—शक्तिशाली, वीर, सिंह । जसौ—जसवंतसिंह । वारण—गजराज । बळ—बल, साहस । बिजौ—विजयपाल ।

२. आग्राज—गर्जना, दहाड़ । कमधज—राठौड़ । पाट—सिंहासन । त्रम्बाट—नगाड़े । रुड़—बजने की ध्वनि का भाव । संहसबळ—सहस्रबल, महान् बली । आगै—अगाड़ी । मैंगळ—हाथी । मुड़—लौट गया, पीछे मुड़ कर चला गया ।

३. हरियंद सुतन—हरिसिंह का पुत्र जसवंतसिंह । साभाव—स्वाभाविक गति से । हालतौ—जाता, चलता । भौमन—मन से भयभीत । अमर सुजाव—अमरपाल का पुत्र । भयौ—हुआ । इण—इस । नहराळ—सिंह । काळमूँह—मृत्युमुख । गह—गर्व, बहादुरी । तज—त्याग कर । पाल—विजयपाल । दंताळ—हाथी ।

४. असमर—युद्ध, तलवार । धरा—भूमि । धूणियां—झकझोरता, धुनता । नडीयां—बांधे हुए । कमां तणा—कर्मसेन का । मद—मद, मस्ती में बहने वाला रस । रद—दांत । माडेचौ—यादव विजयपाल । जैसलमेर भूभाग का प्राचीन नाम माड था । माड पर शासन रहने के कारण यादवों (भाटियों) को माडेचा कहते हैं । खेड़ैचा—खेड़ स्थान का निवासी, राठौड़ । रिणखेत—रणस्थल ।

६. गीत महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ रौ

प्रथम तेज प्रहास ओजास सारी प्रथी, वळे जसवास जग जास वाजा ।
सेर जिम अग्राजै अजौ नवकोट सिर, मेर सिर धू जिही माहराजा ।।१।।

चाप असपत हुकम वहै च्यारू चकां, चलै नर अवर ग्रह नखित्र चाळौ ।
वडै गिर जोधपुर सिरै राजा वडौ, अचळ धू जिम रहै जसै वाळौ ।।२।।

वळावळ उडयणां जेम खटतीस वंस, चाक चढ़िया रहै दियां चांटी ।
अचळ आसत लीयां गजण दूजौ अभंग, मेर मुरधर सिरै रहै मांटी ।।३।।

राइजादा वीयां मंडळी नीचै रहै, सुर सीस साहजादा सकोई ।
किलम रा ऊमरां नरां ऊपरै कमध, कमध ऊपर अवर नह कोई ।।४।।

—जीवणदास कल्ला रौ कह्यौ

---

६ गीतसार—ऊपरांकित गीत महाराजा अजितसिंह राठौड़ जोधपुर के प्रताप और पराक्रम पर कथित है । गीत में वर्णन है कि अन्य राजपुत्र और शाहजादे महाराजा अजितसिंह के अधीन सेवारत रहते हैं । और वह सुमेरु गिरि की भांति सदैव रणभूमि में स्थिर-चरण रहता है ।

---

१. प्रहास—प्रकाश, तलवार । ओजास—प्रकाश, तेज । सारी—समस्त । प्रथी—संसार । वळे—पुनः । जसवास—यशरूपी सौरभ । जास—जिसके । वाजा—वाद्य । अग्राजै—गर्जना करता है । अजौ—महाराजा अजितसिंह । नवकोटसिर—प्रसिद्ध नव दुर्ग वाले मारवाड़ राज्य के सिंहासन पर । मेर सिर—सुमेरुगिरि । धू—ध्रुव, अडिग । जिही—ज्यों ।

२. चाप—पैरों के चलने की आहट, गति । असपत—अश्वपति, बादशाह । वहै—चलते हैं । च्यारु चकां—चारों दिशाओं में । अवर—अपर, दूसरे । ग्रह नखित्र—ग्रह और नक्षत्र । चाळौ—चाल, छेड़छाड़ । वडेगिर—सुमेरुगिरि । सिरै—श्रेष्ठ, पर । अचळ—अचल । जसैवाळौ—महाराजा यशवंतसिंह प्रथम का पुत्र अजितसिंह ।

३. वळावळ—बराबर, बलात् । उडयणां—नक्षत्रों, सितारों । खटतीस—छत्तीस । चाक चढ़िया रहै—चक्रित रहते हैं, चलायमान रहते हैं । चांटी—दौड़-भाग, सेवा चाकरी । आसत—शक्ति, अस्तित्व । गजण दूजौ—द्वितीय गजसिंह, महाराजा अजितसिंह । अभंग—वीर । मेर मुरधर—मारवाड़ रूपी सुमेरुगिरि । मांटी—मर्द, पति, राजा ।

४. वीयां—दूसरे । मंडळी—राजा । नीचै—अधीन । सकोई—सब कोई । किलम—मुसलमान । उमरा—उमराव, सामंत । कमध—राठौड़, अजितसिंह । नह—नहीं ।

७. गीत महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ जाेधपुर रौ

दिल्ली पांण मेटे मांण असुरां दुझल, साह चो कांण मेटे सुवायौ ।
राख हींदवांण मरजाद हेकोक रहण, अजौ दईवांण जोधाण आयौ ।।१।।

भींव रै प्राकरम जसा रै समौभ्रम, दुइण खागां मुंहां गाढ़ दोटां ।
राख ओटां घांणेराव राणां सरण, कमध ले आणीयौ नवां कोटां ।।२।।

सूर जिम जगत ढाप रहवै सूरहर, देख अंजस न करै दूवौ ।
हींदवा ढाल अजमाल आगै हुतौ, हिमै अजमाल पतसाह हूवौ ।।३।।

बराबर तेज परताप बे बरोबर, तखत बे बराबर बखत ताज ।
हीमै राज करो दिल्ली सिर हैवैपत, राज मुरधरा करौ महाराज ।।४।।

—जीवणदास कल्ला रौ कह्यौ

---

७. गीतसार—उपर्युक्त गीत राठौड़ नरेश महाराजा अजितसिंह जोधपुर के राजनैतिक प्रभाव का बोधक है। गीत में अजितसिंह को दिल्ली के बादशाह का मान-मर्दक, हिन्दुत्व की मर्यादा का रक्षक और हिन्दू-पति मेवाड़-नरेश का शरण-रक्षक चित्रित किया गया है।

---

१. पांण—कांति, प्रतिष्ठा, बल । मांण—सम्मान । असुरां—मुसलमानों का । दुझल—योद्धा, वीर । साह ची—बादशाह की । कांण—मर्यादा । राख—रक्षा कर । हींदवांण—हिंदूत्व, हिंदू-धर्म । हेकोक—एक-एक । अजौ—अजितसिंह । जोधाण—जोधपुर ।

२. भींव—महाबली भीम पांडव । प्राकरम—पराक्रम । जसारै—राजा यशवंतसिंह राठौड़ के । समौभ्रम—पुत्र, समान भ्रांति देने वाला अजितसिंह । दुइण—शत्रु । खागां मुंहां—तलवारों की नोकों में । चाढ़—चढ़ा कर । दोटां—प्रहार ।
ओटां—आड, रोक । घांणेराव—मारवाड़ और मेवाड़ की सीमा का एक कस्बा । राणां—मेवाड़ के महाराणा । सरण—शरण में । कमध—राठौड़ नरेश अजितसिंह । आणीयों—लाया, बुलवाकर लाया । नवां कोटां—नव किलों के लिए प्रसिद्ध मारवाड़ ।

३. सूर—सूर्य । जिम—ज्यों । ढाप—ढक्कन, रक्षा । सूरहरै—राजा शूरसिंह का पौत्र-अजितसिंह । अंजस—अभिमान । दूवौ—अन्य कोई । हींदवा ढाल—हिन्दू समाज का रक्षक । अजमाल—महाराजा अजितसिंह । आगै हुतौ—पूर्व से ही था । हिमै—अब । पतसाह—बादशाह, सम्राट् ।

४. बे—दोनों । बरोबर—समतुल्य । तखत—तख्त, सिंहासन । बखत—भाग्य । हैवैपत—बादशाह । मुरधरा—मारवाड़ देश ।

८. गीत महाराजा अजीतसिंघ राठौड, जोधपुर रौ

रामां अवतार अजौ महाराजा, सांम-धरम पेखै सवळ ।
उण हणवंत वभीखण अरघै, इण अरघै गोकळ अवळ ।।१।।

सांच वाच देखै मंत्रेसर, सुत दसरथ जसवंत सुत ।
पवन सुजाव थपै लंका वुथपै, सुंदर रौ जेही सुमत ।।२।।

पाळ बांधत लंकापत रुघपत, कीया अचळ ज्यूं क्रपा कर ।
मुहता भूप हरा सिर माथै, हाथ दिया गजबंध हर ।।३।।

सूधमनौ सांचौ संपेखै, लाखां दीयण वधारण लाज ।
ज्यां साम्हौ जोयौ जोधपुरौ, तिकै हुया सारां सिरताज ।।४।।

—जीवणदास कल्ला रौ कह्यौ

---

८. गीतसार—उपर्युक्त गीत मारवाड़ राज्य के शासक महाराजा अजितसिंह राठौड़ पर रचित है। गीत में अजितसिंह को श्रीरामचन्द्र और उनके आमात्य गोकुलदास मुहता को वानरराज हनुमान तथा राजा रावण के भ्राता विभीषण के समान वर्णित किया है। कवि कहता है कि अजितसिंह ने जिसे पवित्र माना और सत्यवादी पहिचाना उसे अपनी उदार कृपा से लाभान्वित कर सब से अधिक सम्मान प्रदान किया।

---

१. रामां—श्रीरामचन्द्र। अजौ—अजितसिंह। सांम धरम—स्वामिधर्म। पेखै—देखता है। उण—उन्होंने। हणवंत—हनुमान। अरघै—सम्मानदिया। इण—इन्होंने। गोकळ—गोकुलदास मुहता। अवळ—अव्वल, सब से प्रथम।

२. सांच वाच—सत्यभाषी। मंत्रेसर—मंत्री। जसवंत सुत—महाराज यशवंतसिंह का पुत्र अजितसिंह। पवन सुजाव—पवन पुत्र हनुमान। वुथपै—अधिकार च्युत किया। सुंदर रौ—सुंदरदास का पुत्र गोकुलदास। सुमत—सुमंत, श्रीरामचन्द्र के मंत्री का नाम।

३. पाळ—पैज, मर्यादा। लंकापत—राजा रावण। रुघपत—रघुपति, श्रीरामचंद्र। भूपहरा—भूपत के पौत्र को। सिर माथै—सब के ऊपर। गजदन्ध हर—राजा गजसिंह का पौत्र अजितसिंह।

४. सूधमनौ—पवित्र मन का। संपेखै—देख कर। दीयण—दानदाता। वधारण—वृद्धि करने। ज्यां—जिन के। साम्हौ—सामने। जोयौ—देखा। जोधपुरौ—महाराजा अजितसिंह ने। तिकै—वे। सारां—सब से।

९. गीत महाराजा विजैसिंध राठौड़, जोधपुर रौ

राड़ौ फैलतां सामंद्र रूप अथग्गां कूरमां थाट, औनाड़ौ पटेल धसे ग्राह ज्यूं अठेल।
हैकम्पे ढूंढाड़ौ राजा करी ज्यूं बेहाल होतां, आयौ मारवाड़ौ राजा हरी ज्यूं उबेळ ॥१॥

भड़ां वेग सालुळै बाणास चक्र तोक भुजां, धोक तोप जड़तां जंजीरां फंद घात।
अंबनैर नाथ गै विजौ गहंतां वेळ आयौ, नाथ जोधाण ज्यूं त्रिलोकवाळौ नाथ ॥२॥

मदां पांण छीजतां विरूथां फंद गैमरां ज्यूं, ऊजळा माहेस राज धाम ज्यूं आराह।
पतौ गै करंतां ररी नाम ज्यूं पुकार पीड़ा, सागै भीड़ पूगौ श्रीराम ज्यूं विजैसाह ॥३॥

पाणां चक्र खाग ले गनीमां ग्राह प्रहारियौ, जेण चीज हत्थां काज सारियौ जांमेर।
आधपत्ती धारियौ आलेख लेज दूजै अजै, अभैराज करे करी तारियौ आमेर ॥४॥

—वदनजी मीसण रौ कह्यौ

---

९. गीतसार- उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा विजयसिंह राठौड़ द्वारा जयपुर पर महादाजी सिंधिया के आक्रमण करने पर जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह की सहायता करने के वर्णन का है। गीत में कहा है कि समुद्र रूपी अथाह सेना सजा कर ग्राह रूपी महादा-पटेल के आक्रमण करने पर ढूंढाड़ नरेश सवाई प्रतापसिंह के विकल होने पर विजयसिंह ने भगवान विष्णु की भांति सहायता कर उनकी रक्षा की।

---

१. राड़ौ—भयानक युद्ध। सामंद्र—समुद्र। अथग्गां—अथाह। कूरमां—कछवाहों। थाट—सेना, समूह। औनाड़ौ—निर्बंध, स्वेच्छागामी। धसे—प्रवेश करते। अठल—जो पीछे न धकेला जा सके। हैकम्पे—भय से कांपते हुए। करी—हाथी। बेहाल—विकल। हरी—विष्णु भगवान्। उबेळ—रक्षा करने, सहायता करने।

२. सालुळै—चलते। बाणास—तलवार। तोक—प्रहार हेतु ऊपर उठाये। धोक—घोष। जड़तां—जटित करते, बाँधते। घात—डाल कर। अंबनैर नाथ—आमेर राज्य का महाराजा सवाई प्रतापसिंह। गै—हाथी। विजौ—महाराजा विजयसिंह जोधपुर। गहंतां—पकड़ते समय। वेळ—सहायतार्थ। नाथ जोधाण—जोधपुर नरेश। त्रिलोकवाळौ—त्रिलोकी का।

३. मदां पांण—मंद और बल। छीजतां—क्षीण होते। विरूथां—सेनाओं। गैमरां—हाथियों। ऊजळा—उज्ज्वल। आराह—आराधना। पतौ गै—गजरूपी महाराजा प्रतापसिंह जयपुर। र री—र अक्षर का उच्चारण करते, राम कहते। सागै—साथ, साक्षात्। भीड़—विपत्ति में, सहायतार्थ। पूगौ—पहुँचा। विजैसाह—महाराजा विजयसिंह जोधपुर।

४. पांणा—हाथों में। चक्र—सुदर्शन चक्ररूपी। खाग तलवार। गनीमां ग्राह—शत्रुओं रूपी मगरमच्छ। प्रहारियौ—प्रहार किया, संहार किया। सारियौ—सिद्ध किया। जांमेर—उस समय (?) दूजै अजै—दूसरे अजितसिंह ने, महाराजा विजयसिंह ने। अभै—अभय। तारियौ—उद्धार किया।

१०. गीत महाराजा विजैसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

उतन नरवदा परै दळ तीड़ नेपत असंक, च्यार चक फिरै धर करै चखणी ।
आवीयां मुरधरा अेक नह ऊबरै, दुजड़ विजपाल मरै दिखणी ॥१॥

सतारे हुवै फौजां पैदास सलभ, चावि सारै गया दाढ़ चाळे ।
विधाता लिखत अणचूक अेकन वचै, गनीमां वखत सुत रूक गाळे ॥२॥

हुवै पैदास दिखण दिखण हजारां, प्रथी हैरान कण न छोडै पाव ।
वचै किम वीस विसवा लिखत विसम्भर, अजाहर तणै खग गनीमां आव ॥३॥

ऊपजे दिखण माळव धरा ऊछरै, लखां डंड भरै कोई न करै लाग ।
चंदेरी दिली गुजरात चहुं दिस चरै, खपै मरहठो राठौड़ रै खाग ॥४॥

लाख दळ हूंत गळ गयौ आपौ लड़े, इळा मझि सुणै चहुंवळ आवाजां ।
तीड़ दिखणाण दळ मरै आवै तिकै, रूक वळ गजन हर राजा ॥५॥

---

१०. गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा विजयसिंह राठौड़ और जयअप्पा सिंधिया के मध्य हुए मेड़ता के युद्ध और तदनन्तर नागौर में जयअप्पा के मारे जाने से सम्बन्धित है। कवि ने जयअप्पा की मरहठी सेना को टिड्डी दल के रूप में वर्णन करते हुए उसे विनष्ट करने का श्रेय विजयसिंह को दिया है।

---

१ उतन—वतन। नरवदा परै—नर्वदा नदी के उस पार। दळ तीड़—सेना रूपी टिड्डी समूह। नेपत—उत्पन्न होते हैं। असंक—असंख्य, अगणित। च्यार चक—चारों दिशाओं में। फिरै—फिरते हैं। धर-पृथ्वी की। चखणी—चखना, स्वाद लेना। आवीयां—आने पर। ऊबरै—जीवित रहे, शेष रहे। दुजड़—तलवार। विजपाल—विजयसिंह के। दिखणी—मरहठे।

२. सतारे—पूना सतारा। पैदास—उत्पत्ति। सलभ—टिड्डे। चावि चवा गए। सारै—समग्र। दाढ़ चाळे—दाढ़ों को चलाकर। अणचूक—अचूक। वचै—बचता है। गनीमां—वैरियों। वखत सुत—महाराजा बखतसिंह का पुत्र विजयसिंह। रूक—तलवार के। गाळे—ग्रास, निवाला।

३. दिखण हजारां—टिड्डी जो हजारों की संख्या में होती है। प्रथी—संसार, पृथ्वीलोक। कण—अन्न का कण। पाव—एक पाव तोल जितना भी। विसंभर—विश्वम्भर। अजाहर तणै—महाराजा अजितसिंह के पौत्र विजयसिंह के। खग—तलवार।

४. ऊपजै—उत्पन्न हुए। ऊछरै—उत्सर्जन, पोषण पाने के लिए जाना। लखां डंड भरै—लाखों रुपयों का दण्ड भरते हैं। लाग—पीछा। चरै—चर्वण करते हैं। खपै—खपता है, मरता है। मरहठो—महाराष्ट्रीय। खाग—खड्ग।

५. लाख दळ—एक लाख सैनिक। हूंत—से। गळ गयौ—मर गया, पिघल गया। आपौ—[illegible]। इळा मझि—संसार में। चहुंवळ—चौतरफ। तीड़—टिड्डे, [illegible]। गजन हर—महाराजा गजसिंह के वंशधर विजयसिंह।

११. गीत महाराजा विजैसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

गुमर भर लियां साथ चालै मधौ नाव गत, वंस पैंतीस सिर पाथ बटका।
अभंग भाराथ रचि अंबनयर आवतां, असमरां नर समंद नाथ अटका ॥१॥

हांकिया गुराबां जेम खळ मरहठे, कमळ जळ खत्री कुळ राह कीधौ।
कमधपत जाग छळ सहायक कूरमां, दुगम दळ हळोहळ बंध दीधौ ॥२॥

चालियौ जिहाजां जेम दिखणी चढ़ै, अंब अनि त्रिगुट राजां अछायौ।
पता काजां विजौ भूप छौळां प्रबळ, उभळ पाजां उदध रूप आयौ ॥३॥

अजाहर हसम दरियाव दीधा उभळ, अथग जळ बिचै पड़ नाव ऊंधी।
गड़ूथळ खावती अंवाळां पड़ गयौ, सतारा तणा अमराव सूधी ॥४॥

---

११. गीतसार— उपर्युक्त गीत महाराजा विजयसिंह राठौड़ और ग्वालियर राजवंश के मूल-पुरुष महादाजी सिंधिया के युद्ध से सम्बद्ध है। गीत में महादाजी को जलयान और महाराजा विजयसिंह को अटक समुद्र (अटक नदी) अंकित कर युद्ध का रूपक रचा गया है। महादाजी ने जयपुर नरेश प्रतापसिंह पर हमला किया तब विजयसिंह ने जयपुर के पक्ष में शामिल होकर लड़ाई लड़ी थी।

---

१. गुमर भर—घमण्ड से भरकर। मधौ—महादाजी पटेल। नाव गत—नौकागति से। पाथबटका—मार्ग। अभंग—अटल, वीरतापूर्ण। भाराथ—युद्ध। अंबनयर—आमेर नगर पर। असमरां—तलवारों। नर समंद—सेना नायक, मारवाड़। नाथ अटकां—अटक-सागर।

२. गुराबां—छोटी तोपें, घोड़े ऊँटों पर चलने वाला तोपखाना। खळ—दुष्ट, शत्रु। कमल जळ—जल में कमल की भांति। खत्रीकुळ—क्षात्रकुल। राह कीवौ—मार्ग किया। कमध पत—राठौड़ों का स्वामी, महाराजा विजयसिंह। जागछळ—युद्धरूपी यज्ञ। कूरमां—कछवाहों के। दुगम दळ—दुर्गम सेना, अपार और विकट सेना। हळो ळ—समुद्र। बंध—बाधा।

३. जिहाजां—जहाजों की तरह। जेम—ज्यों। दिखणी—दक्षिण वाला, मरहठा। अंब—जल कमल। अनि—अन्य। त्रिगुट—त्रिकुट—लंकासागर, अटक समुद्र। पता काजां—महाराजा सवाई प्रतापसिंह के लिए। विजौ भूप—महाराजा विजयसिंह जोधपुर। छौळां—लहरें, तरंगे। ऊभळपाजां—सीमोल्लंघन, हद से बाहर उछलकर बहना। उदध—समुद्र।

४. अजाहर—महाराजा अजितसिंह का पौत्र विजयसिंह। हसम—सेना। दरियाव—समुद्र। उभळ—प्रवाह की टक्कर। अथग जळ—अगाध सागर, अथाह जलराशि। ऊँधी—उलटी। गड़ूथळ—कुलांचे, ऊपर नीचे पड़ता लुढ़कता। अंवाळां—ऊहावली, कूड़ा कचरा के साथ बहता हुआ। तणा—का। सूधी—सहित।

१२ गीत महाराजा विजैसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

सधर अडर उर किरमर सुकर धर समोसर, पसर लसकर डंमर सुनर प्राझै ।
जवर तप गहर धर छतरधर विजैसुर, सरभर सतरहर समर साझै ॥१॥
बरड़ रत दरड़ पड़ फरड़ घावां प्रघळ, तीब छड़ खरड़ झड़ कंध तूटै ।
सिंह जड़ थाट थड़ सुभड़ तड़ बखत सुत, प्रघड़ दड़ दड़ अचड़ अरि त्रिजड़ फूटै ॥२॥
रूंदण मोखण हण दिखण दळ दळण खग, जिपण रण रखण पण गजण जोड़ै ।
प्रघण घण जणोजण हुवै कण कण पिसण, गहण दावण दिखण धरण गोड़ै ॥३॥
अकळकळ अजाहर सवळ बीजळ अयळ, जुधां भुजबळ तरळ अमळ जूटा ।
सिंधियौ सुदळ दळ विकळ चळ चळ सकळ, प्रवळ खळ अतुळ वळ पांव छूटा ॥४॥
वयळ कळ वयळ वंस नूर झळहळ विमळ, रूक झळ कमळ रिम मसळ मारे ।
त्रम्वागळ वजे जय अचळ धर तेज हूं, हुये माधौ अवळ विपळ हारे ॥५॥

१२. गीतसार—ऊपरांकित गीत जोधपुर के महाराजा विजयसिंह राठौड़ पर रचित है। इसमें कवि ने माधव राव सिंधिया को पराजित करने का वर्णन करते हुए गीत-नायक के शौर्य, साहस और आतंक का वर्णन किया है। गीत में यह भी उल्लेख किया है कि विजयसिंह के प्रताप और प्रभाव का समान वैभव वाले राजा आदर-सम्मान करते हैं।

१. सधर—धैर्यवान। किरमर—तलवार। सुकर ध[र]—स्वहाथ में ले, शुभ हाथ में पकड़। समोसर—समान, सम अवसर। पसर—फैलकर। डंमर—आडम्बर, सेना का ठाट-वाट। प्राझै—अपरिमित, बहादुर। छतरधर—छत्रधारी। विजैसुर—महाराजा विजयसिंह। सरभर—समान, समवल। सतरहर—शत्रुओं, शत्रु घरों को। साझै—मारता है, निशाना साधकर।

२. वरड़—टूटते समय होने वाली ध्वनि। रत—लोहू। दरड़—घने प्रवाह से गिरना। फरड़—ध्वनि विशेष जो फटते समय होती है। प्रघळ—प्रचुर, वहुत। तीव—लोहे का नुकीला भाग, जोड़ युक्त भाग। छड़—शर, माला। खरड़—शस्त्र की प्रहार ध्वनि, रगड़ की ध्वनि। तूटै—टूटते हैं। थाट—सैन्यदल। सुभड—सुभट। वखत सुत—महाराजा वख्तसिंह का पुत्र विजयसिंह। दड़दड़—ध्वनि-विशेष। त्रिजड़—तलवार, कटार।

३. रूंदण—कुचलने। मोखण—मुक्त करने। हण—मार। दिखणदळ—मरहठी सेना। खग-तलवार। जिपण—विजय करने। पण-प्रतिज्ञा, वल। गजण—महाराजा गजसिंह की। प्रघण—प्रचुर, अधिक। घण—घना। पिसण—वैरी। गहण—पकड़ने। गो[ड़ै]—पास, पैर नीचे।

४. अकळकळ—बुद्धिवल से। अजाहर—महाराजा अजितसिंह का पुत्र विजयसिंह। बीजळ—तलवार। अयळ—शस्त्र। सिंधियौ—ग्वालियर वालों का पूर्वज महादाजी सिंधिया। चळचळ—विचलित, चलायमान। खळ—शत्रु। अतुल—अतुल्य। पांव—पैर। छूटा—उखड़ गए।

५. वयळ—सूर्य। कळ—भांति, किरण। वयळवंस—सूर्यवंशी। नूर—कांति। रूक—तलवार। झळ—ज्वाला, आतप। रिम—वैरी। त्रम्वागळ—नगाड़े। माधौ—महादाजी सिंधिया। अ[व]ळ—दलहीन, सेना नष्ट करवा कर। हारे—पराजित होकर।

१३. गीत महाराजा मानसिंह राठौड़ जोधपुर रौ

किले जालौर पधारे कई ऊगते भाराथ कीधा,
फतै बोहां लीधा रमे रीधा लोहां फाग ।

कोटां भांत रोटां के अढ़ारां गिरां चूर कीधा,
दाढ़ वाळे देवड़ां सिरोही दीधा दाग ।।१।।

फेट सूं उडाई लखां आई जो धखी ले फौजां,
तोपां घोर गजाई बजाई सिंधु तान ।

चढ़ाई बिरद्दां आब बरदाई, बिया चूंडा,
गाढ़ राव पाई फतै सवाई गुमान ।।२।।

---

१३. गीतसार–उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ के जालौर दुर्ग से सिरोही के शासक देवड़ा चौहान पर विजय प्राप्त करने का परिचायक है। गीत में देवड़ा से पेशकसी कर लेने तथा शरण आने पर रक्षा करने आदि का भी उल्लेख हुआ है। गीत में मानसिंह के इष्टदेव जालधंरनाथ की कृपा का भी संकेत किया गया है।

---

१. केई–कई बार, कतिपय। ऊगते–सूर्योदय होते। भाराथ–युद्ध। फतै–फतह। बोहां–बहुत अधिक। रमे–क्रीड़ा, विनोद करना। रीधा–प्रसन्न हुआ। लोहां फाग–शस्त्रों का फाग, युद्ध। कोटां–दुर्गों को। भांत–तरह। रोटां–रोटियां। अढ़ारागिरां–अठारह गिरि। चूर–चूर्ण। दाढ़वाळे–वाराहराज। देवड़ा–सिरोही राज्य के शासक देवड़ा। दाग–लांछन, पराजय जनित कलंक।

२. फेट सूं–टक्कर से। लखां–लाख संख्यक। धखी–सामने, इच्छा कर, कोपान्वित होकर। गजाई–गर्जला कर वायी। बजाई–ध्वनि करवायी। सिंधु तान–सिंधुराग की तानें, नगारे की ध्वनि, वीरों को उत्साहित करने वाली रागिनी। विरद्दां–विरुदों, कीर्ति, प्रशस्तियों। आब–आभा, कांति। बरद्दाई–वरदाता, वरदान प्राप्त। बिया चूंडा–द्वितीय चूंडा, महाराजा मानसिंह के पूर्वज राव चूंडा राठौड़। गाढ़े राव–दृढ़वीर। पाई–प्राप्त की। सवाई गुमान–महाराजा मानसिंह के पिता गुमानसिंह से सवा गुना अधिक।

घँसार सजीतां फेरे चीत्तौड़ आंवेर घेरे,
　　हेरे वीकुपुरां घोर वीता हैरांन ।
पेसकसी खजाना खालीसा ले लगाया पावां,
　　जीता मान राई-तना वदीता जहांन ॥३॥

जिकी रिद्धा राई सूं वधार कीवी मेर जोड़े,
　　कोपीयां ज्यां मार लीधा वात चोढ़ कांन ।
वोली वीच पधारने कीधा साथ भूप वीजा,
　　मारू ओट आयां त्यां साधार लीधा मांन ॥४॥

पढ़ेतां ऊवेड़ जाडां छल्ले जोस वरांपूर,
　　सोभा राग रंगां इंद्र अखाड़ां समान ।
सवाड़ा जालंध्रीनाथ प्रतपौ हजार सालां,
　　मारवाड़ पातसा प्रवाड़ा जीत मान ॥५॥

---

३. घँसार—सेना, समूह । सजीतां—सज्जित, विजय सहित । फेरे—चारों ओर फिराकर । आंवेर—कछवाहों के आमेर राज्य को । घेरे—घेरा डाल कर । हेरे—खोज ढूंढ़कर । वीकुपुरां—पंवारों की एक शाखा । पेसकसी—पेशकश नामक एक कर, नजराना । खलीसा—खलीते, आदेश पत्र । लगाया पावां—अधीन बनाए, मातहत किये । जीत—विजयी हुआ । मान—महाराजा मानसिंह । राईतनां—राजवंशी । वदीता—सराहा गया, प्रसिद्धि कही गई । जहांन—संसार ।

४. जिकी—जो । रिद्धा राई—ऋद्धि, ऋद्ध राजत्व । वधार—वृद्धि कर । मेर जोड़े—सुमेरु गिरी के बराबर । कोपीयां—कुपित हुए, नाराज हुआ । वीजा—दूसरे । मारु—मारवाड़ की, मारवाड़ नरेश मानसिंह की । ओट—आड़ में, रक्षा में । साधार—आश्रयता में ।

५. ऊवेड़—दमित कर । जाडां—घना । छल्ले—छलकते, भरपूर । जोस—जोश, उत्साह । वरांपूर—तेजस्वी, वरदानों युक्त । सोभा—शोभा । इन्द्र अखाड़ां—देवराज इन्द्र के नृत्य, गानादि अखाड़े । सवाड़ा—सवा गुना, सुरक्षित । प्रतपौ—राज्य वैभव का उपयोग करो । सालां—वर्षों तक । पातसा—बादशाह, राजा । प्रवाड़ाजीत—यश प्रशस्तियों वाला, योद्धा ।

१४. गीत महाराजा मानसिंह राठौड़ जोधपुर रौ

पाखां घण थटै भूपती सालुळे दळा संबंध ।
अडियौ थाहर ऊपरां, कवळौ मान कबंध ।।१।।

कटकां थाट बींट चहुंकांनी, अटकां पालग भड़ आया ।
खागां झाल बीजा हर खटकां, झटकां दे कटकां रटकाया ।।२।।

..........................कमधां नाथ मूंछ कर घाल ।
हाले जठी भड़ां हलकारै, अेकल रूप खळां ओखाळ ।।३।।

पिसणां रत चाळ ढींच कर पाणां, ... ।
रूकां झाल भूप रूप रै दियौ, दाढ़ाळौ गहीयौ बिण डांण ।।४।।

---

१४. गीतसार– उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ पर रचित है। गीत में महाराजा मानसिंह और महाराजा सवाई जगतसिंह के मध्य परबतसर परगने के गींगोली स्थान के युद्ध तथा तदनन्तर जोधपुर के घेरे का वर्णन है। कवि ने अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन करते हुए जोधपुर की विजय और जयपुरकी पराजय का वर्णन किया है। गीतकार महाराजा मानसिंह का आश्रित कवि था।

---

१. पाखां–पक्षों। घण–घने। थटै–समूह, सेना। सालुळे–चले। थाहर–कंदरा। कवळो–सूअर, शूर। मान–महाराजा मानसिंह। कवंध–राठौड़।

२. कटकां–सेनाओं का। थाट–समूह। बींट–घेरा देकर। चहुंकांनी–चौतरफा। अटकां–अटक, रोक, अवरोध। पालग–रोकने वाले, झेलने वाले। भड़–योद्धा। खागाँ–तलवारें। झाल–ग्रहण कर। बीजाहर–महाराजा विजयसिंह का पौत्र महाराजा मानसिंह। झटकां–चोटें। रटकाया–टक्करें देकर मारे, पछाड़ें लगाई।

३. कमंधां नाथ–राठौड़ों का स्वामी मानसिंह। मूंछ कर घाल–मूंछों पर वल देकर। हाले–चाले। जठी–जिधर। हलकारै–आगे वढ़ावे। अेकल–एकाकी, वाराह। खळां–शत्रुओं को। ओखाळ–मारने वाला, रोकने वाला योद्धा।

४. पिसणां–पिशुनों, शत्रुओं। रत–रक्त। ढींच–हाथी (?)। पाणां–वल, शक्ति। रूकां–तलवारें। झाल–ग्रहण कर। दाढ़ाळौ–दाढ़ों वाला, सूअर। गहीयौ–चला। विण–विना। डांण–मद, चाल।

कटकां जगत इसी विध कहीयौ, जोधपुर थहीयौ जोधाळ।
जोस धरौ वयंडां भरड़क्के, वरड़क्के फाटै वघराळ ॥५॥

फाटां धड़ां घाव फरड़क्के, खरड़क्के, रूकां रत रवाळ।
.... ॥६॥

अच्छा जोध कड़च्छा उचक्के, पांव धरै नह पच्छा।
अंगां खळां धड़च्छा उडवै, तुच्छा द्रुम्म तड़च्छा ॥७॥

झाट उरड़ झड़ त्रजड़ झटक्कां, भड़ कूरम पड़ भागो।
जीतो मान अगंजी जाहर, ब्रहमंड सीस विलागो ॥८॥

लसकर खळां भजाड़ लड़ाकी, भारथ कथ साखी सिंभाण।
इळवारा अवतार अड़ाकी, दाढ़ां पर राखी दई वांण ॥९॥

—चालकदान खिड़िया रौ कह्यौ

---

५. कटकां—सेना। थहीयौ—हुआ। जोधाळ—योद्धा, जोधा का वंशज। वयंडां—हाथियों को। झरड़क्के—विदीर्ण करे, फाड़े। वरड़क्के—फटते समय होने वाली ध्वनि। फाटै—फटते हैं। वघराळ—मोटे छेद।

६. फरड़क्के—घावों से रक्तप्रहार। रूकां—तलवारें। रतखाळ—रुधिर के नाले।

७. कड़च्छा—उछांट खाकर। उचक्के—उछलते हैं, त्वरा से ऊपर कूद कर गिरते हैं। नह—नहीं। पच्छां—पीछे की तरफ। धड़च्छां—लम्बे टुकड़े। तुच्छा—तुच्छ, त्वचा। द्रुम्म—द्रुम, पेड़, दुम। तड़च्छा—तड़फड़ाहट करते, तड़छ खाकर।

८. झाट—शस्त्र की प्रचण्ड मार। उरड़—जोशीली। त्रजड़—तलवार। कूरम—कछवाहा, जयपुर नरेश महाराजा सवाई जगतसिंह। भागो—भाग गया। जीतो—विजयी हुआ। अगंजी—अपराजयी। जाहर—प्रकट। विलागो—जा लगा।

९. लसकर—लश्कर, सेना। भजाड़—भगा कर। लड़ाकी—लड़ाकू, वीर। भारथ—युद्ध। साखी—साक्षी। सिंभाण—शंभु। इळवारा—पृथ्वी पर अपने समय वाला। अड़ाकी—अड़ने वाला। दाढ़ा—द्रंष्टाओं। दईवांण—राजा, महान् योद्धा।

१५. गीत महाराजा मानसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

संभू तापहारां तणौ पापहारां रौ प्रयाग सोभा,
ओपै दापधारां रौ दजौण नको आड़ ।
रैणा जुगां नारां रौ अवतारां रौ औतंस राजा,
अजौ दूजौ सारां छत्रधारां रौ औछाड़ ॥१॥

राजनीतां दासरथ्थी हल्ला रौ पारथ्थी रिमां,
दूल्हे सदा सौभाग भल्ला रौ मौड़ देख ।
धणी जोधांण किल्ला रौ उरव्वी सीस छत्र धारे,
हिन्दूथांन जिल्ला रौ मुरव्वी मान हेक ॥२॥

---

१५. गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ पर रचित है । गीतकार ने महाराजा मानसिंह को ताप नाशक शिव, पाप नाशक तीर्थराज प्रयाग, स्वाभिमान धारियों में दुर्योधन, राजनीतिज्ञों में दशरथ और शत्रुओं का संहार करने वालों में अर्जुन के समतुल्य अंकित किया है । पृथ्वीलोक के राजाओं में उन्हें अवतार अंशी उद्घोषित किया है ।

---

१. संभू—शिव । पापहारां रौ—पापहर्त्ताओं में । ओपै—शोभा पाता है । दाप धारां रौ—गर्व धारियों में । दजौण—दुर्योधन । न को—अन्य कोई नहीं । रैणा—पृथ्वी । औतंस—अवतंस । अजौ दूजौ—दूसरा अजितसिंह, महाराजा मानसिंह । सारां—समस्त । छत्रधारां—छत्रपतियों, राजाओं । औछाड़—आच्छादन, रक्षक ।

२. दासरथ्थी—राजा दशरथ, श्रीरामचंद्र । हल्ला रौ—युद्ध का । पारथ्थी—अर्जुन । रिमां—शत्रुओं । भल्ला रौ—ललाट का, भलपनता का । मौड़—मुकुट, सिरमौर । धणी—स्वामी, राजा । उरव्वी—पृथ्वी । सीस—सिर, पर । जिल्ला रौ—जिला का, देश का । मुरव्वी—प्रत्यंचा खींचने वाला । मान—महाराजा मानसिंह । हेक—एक, अकेला ।

कोड़ गणां गाथा रौ कीरत वींद नवेकोटो,
देण गजां मद्दां जाडा रौ सुदान ।
रोड़ धूंसा जंगां काथी वातां रौ निभाऊ राजा,
मौड़ प्रथीनाथां रौ राठौड़पती मान ॥३॥

धेखदारां केतांरा हवाई सुणे माण धूजै,
थिरू देसां दुवाई वरत्तो थांन थांन ।
ग्रान छाई रजाई रवाई सारी जेण ग्रोले,
गवाई नौखण्डां क्रीत सवाई गुमान ॥४॥

प्रभा सेस मणी रै धारियां पूर खत्री पणौ,
दानीसूर कणी रै न भावै वांसे दाद ।
सिधांनाथ रह्यौ वेल जोधाण धणी रै सदा,
महीपाल तणी सारी वणी रै ग्रजाद ॥५॥

---

३. कोड़–करोड़ । गुणां गाथां रौ–गुणों की कीर्ति गाथाग्रों का । वींद–दुल्हा । नवे कोटो–मारवाड़ के नव दुर्गों का पति । देण–देने में । गजां मद्दां– उन्मत्त-हाथियों । जाड रौ–धने को । रोड़–वजवाकर । धूंसा–एक वाद्ययंत्र विशेष । काथी–वैभव प्रदर्शक, वृत्तान्त कथाएं । निभाऊ–निर्वाहक । प्रथीनाथां रौ–राजाग्रों को । राठौड़ पती–राठौड़ का स्वामी ।

४. धेकदारां–द्वेषियों, वैरियों । केतां रा–कतिपय के । माण–मान । धूजे–कांपने लगे । थिरू–स्थिर । दुवाई–राजाज्ञा घोषणा । वरत्ते–ग्रमल करे । थांन थान–स्थान-स्थान । रजाई–राजापन । रवाई–रावत पना । सारी–समस्त । ग्रोले–ग्रोट में । गवाई–गायन करवाई गई । क्रीत–कीर्ति । सवाई गुमान–महाराजा मानसिंह के पिता का नाम गुमानसिंह था, यहां कवि ने मानसिंह को गुमानसिंह से सवा गुना ग्रधिक यश-भागी वर्णन किया है ।

५. प्रभा–कांति । सेस मणी–शेपनाग की मणि । धारियां–धारण किये । पूर–पूर्ण । खत्री पणी–क्षत्रियत्व । कणी रै–किसी के । भावै–पसंद ग्राये । वांसे–पीछे । दाद–सग्रह । सिधांनाथ–सिद्धनाथ, महाराजा मानसिंह के गुरु देवनाथ ग्रथवा लाडूनाथ । वेल–सहायता । जोधाण धणी रै–जोधपुर के स्वामी के । महीपाळ–राजा । तणी–की । सारी–समस्त । वणी रै–वनी रहे । ग्रजाद–मर्यादा ।

१६. गीत महाराजा मानसिंघ जोधपुर रौ

सिधां समाज सोहणी भ्रमां विहंडणी घणी सोभा,
जांणी सिरताज मेधा मंडणी जिहांन् ।
पुराणां कै नुवां ग्रंथां जेण आगै भरै पांणी,
मोददा प्रकासै वांणी प्रथीनाथ मांन ॥१॥

जुड़ै कड़ा आखरां अनोठी वातां घड़ा जाग,
आवै तुकां गैणमाग ऊतरी अनूप ।
सूणै तवै पासंड़ी ऊकत्ता अलोकीक साखां,
रचै आंणंदीक भाखा छत्रधारां रूप ॥२॥

ऊघड़ै प्रबंधां मुदा प्रेम रै प्रवाह ओघ,
सदां खेम रै ठाहां गणा भावै सार ।
सूधमें वंकाई मझै दया ग्यान ध्यान-सा,
अजौ दूजौ करै नाथ गाथ रौ ऊचार ॥३॥

सूवै सिधी अलंकारां ऊमदां विचारां साज,
दफै हुवै सांभळतां विना पारां दोस ।
श्री गुमाननंद री भारती भागीरथी सुभ्र,
जालंधरी पारावार मिळी छोळां जोस ॥४॥

---

१६. **गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा मानसिंह की नाथ भक्ति पर रचित नाथवाणी ग्रंथ की सराहना पर है। गीत में महाराजा मानसिंह की निर्दोष काव्य रचना, भाषा अलंकार और अद्वितीय उक्ति चातुर्य का उल्लेख किया गया है।**

---

१. सिधां–सिद्ध, नाथ मतानुयायी । सोहणी–सुंदर । भ्रमां–भ्रमों, सन्देहों । विहंडणी–नाश करने वाली । घणी–घनी, अधिक । मेधा–बुद्धि । मंडणी–रचने का भाव । नुवां–नवीन । जेण आगै–जिसके आगे । भरै पांणी (मु०) निरस और साधारण लगते हैं। मोद दा–मोदित करने वाली । मांन–मानसिंह ।

२. जुड़ै–जोड़ । कड़ा–तुक, पंक्तियों का जोड़ । आखरां–अक्षरों के । तुकां–तुकें, कड़ी । गैणमाग–आकाश पथ । ऊतरी–अवतरित होकर । तवै–कहते हैं । ऊकत्ता–उक्तियाँ । साखां–साक्षियाँ । भाखा–भाषा ।

३. ऊघड़ै–उद्घटित होती है । प्रबंधां–प्रबंधकाव्यों में । ओघ–सन्तोष, समूह । सूध में–सहजता में । वंकाई–वक्रता । मझै–मध्य । अजा–अजितसिंह । दूजौ–द्वितीय ।

४. सूवै सिधी–स्पष्ट सीधी, प्रत्यक्ष सिद्धि । दफै–नाश । सांभळतां–सुनते समय । सुभ्र–धवल, पवित्र । पारावार–समुद्र । छोळां–तरंगे ।

१७. गीत राव कलियाणमल राठौड़ बीकानेर रौ

माछां महिरांण मोरां मेह मिणधरां मळैतर,
गयंदां रैवांण नदि पाळै वडगात्र ।
पाळै रितिराउ रूखां पावासर हंस पाळै,
पाळगां कल्याण राउ पाळै कविपात्र ॥१॥

मीनां दधि सिखां मेघ भुवंगां सोरंभ मूळ,
वारिणी नूं वरतण पत्ति महावन्न ।
वसंत वरतै ब्रख सरि हंसां वरतारौ,
वीकाहरौ वरतावै अढ़ार सुव्रन्न ॥२॥

जळचर जळनिधि जळिहर कूंभ जेम,
चतुरवांदिन्नि हाथी वींझवन चाइ ।
सुवाइ महाध्रू सोहा राव कल्यांण सुसरि,
पात्र सोहा राव कल्याण पसाइ ॥३॥

हरि रूपां सुख हेम मंजरां कमोद हर,
नीलचरां नव नाथ गैंमरां निवांण ।
माधव पायाळ मुखां कमळां आधार मांण,
रैणुवां आधार राव राठौड़ां रौ रांण ॥४॥

—आसा बारहठ रौ कह्यौ

---

१७. **गीतसार—उपरिलिखित गीत राव कल्याणमल्ल राठौड़ बीकानेर पर रचित है। कवि कहता है कि जिस प्रकार मत्स्यों को समुद्र, मयूरों को मेघ, नागों को मलयतरु, हाथियों को रेवानदी, हंसों को मानसरोवर और ऋतुराज वृक्षों का पालन करता है उसी प्रकार कवियों का राव कल्याणमल्ल पालन करता है।**

---

१. माछां—मछलियों । महरांण—समुद्र । मोरां—मयूरों । मेह—मेघ । मिणधरां—सर्पो । मळैतर—मलयतरु । गयंदां—हाथियों । रैवांण नदि—रेवानद । पाळै—पोषण करते हैं । वडगात्र—विशालकाय । रूखां—वृक्षों को । पावासर—मानसरोवर । कवि पात्र—कवि पात्र, कवियों को ।

२. दधि—समुद्र । सिखां—मयूरों । भुवंगां—सांपों को । सोरम मूळ—चन्दन वृक्ष, मलय वन । वारिणी—हथिनी । महावन्न—कदलीवन । ब्रख—वृक्ष । सरि—सरिता । अढ़ार—अठारह । सुव्रन्न—सुवर्ण ।

३. जळचर—मछलियां । जळिहरि—बादल । कूंम—हाथी । वींझवन—विंध्यगिरि । चाइ—चाह, इच्छा । पसाइ—प्रसाद । सुसरि—गंगानदी । पात्र—कवि, याचकजन ।

४. नीलचरां—मछलियां, पक्षियों । गैंमरां—हाथियों । निवांण—जलाशय । माधव—वसंत ऋतु । पायाळ—पाताललोक । रैणवां—याचकों, चारण कवियों ।

१८. गीता राव कलियाणमल राठौड़ बीकानेर रौ

खरहंड मेलि सगह खेडेचा, अभंग असंकित अमलीमांण ।
भव लग नहीं विसारै भाटी, करग जुतैं लाया कलियांण ॥१॥

वे पख सूध विरदपति विजड़े, चढ़ि चापड़ जु दीनी चोट ।
खेहां हेठि कीया खांडाबळि, केल्हण अनै विकुंपुर कोट ॥२॥

मेळे दळ सबळ कला मारहथा, सुजड़ां पांण वडा सत्र साझि ।
वसता रहीया नहीं विकुंपुर, भाटी सिंघळ गै गा भाजि ॥३॥

—चांगा मेहड़ू रौ कह्यौ

---

१८. गीतसार—उपर्युक्त गीत बीकानेर के राव कल्याणमल्लकी विकमपुर (विकमकोर) के भाटियों पर विजय पाने का परिचायक है । कवि कहता है कि राव कल्याणमल्ल ने अश्व सेना को सज्जित कर भाटियों पर ऐसा आतंककारी आक्रमण किया जिसे वे जीवन-पर्यन्त नहीं भूल सकेंगे । केल्हण और विकमपुर के किलों को ध्वस्त कर भूमि में मिला दिये ।

---

१. खरहंड सेना—अश्व । सगह—सगर्व, दृढ़तापूर्वक । खेड़ेचा—राठौड़ । अभंग—अखंडित, वीर । अमळीमांण—ऐश्वर्यभोगी, दातार, ताजी फौज । भव लग—जन्म तक । विसारै—भूलेंगे । करग—हाथ ।

२. वे पख—मातृ और पितृकुल, दोनों पक्ष । सूध—शुद्ध, निष्कलंक । विजड़े—तलवार । चापड़ै—युद्ध । खेहां—धूलि, गर्द । हेठि—नीचे । खांडा बळि—कृपाण बल से । केल्हण—केलणकोट अथवा केलणोत भाटी । अनै—अन्य, और । कोट—किला ।

३. मेळे—मिला कर । दळ—सेना । सबळ—सबल, बलवान । कला—राव कल्याणमल्ल । मारहथा-संहारक, वीर । सुजड़ां-तलवारों, शस्त्रों । पांण—बल से । सत्र—शत्रु । साझि—मारकर । वसता—निवास करते । सिंघळ—सिंहलद्वीप (?) । गै—हाथी । भाजि-भगकर, दौड़ गए ।

१६. गीत राजा रायसिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

सहि सींघ किया तैं आप सारिखा, लास ग्रास दे भेद लधै ।
सुपह प्रमांणै वधै सेवकर, वेलां रूंख प्रमांण वधै ॥१॥

कीया जैत समवड़ी कलावत, पुरखे जे सेविया पगे ।
मोटिम अेह पारिखौ मारू, लता वधै तर सीस लगे ॥२॥

तौ दिसि नमिया जिके एकंतता, नर त्यां लागौ जगत नमौ ।
ऊगैतां तौ पगां आसनौ, व्रख करे ताइ आप समौ ॥३॥

किताई कीया गजबंध कवेसुर, लाखे लिखरा करगि लिखि ।
आप समा करि की अंजसीयै, वेलि अमेतूं कलप व्रखि ॥४॥

—दुरसा आढ़ा रौ कह्यौ

---

१६. गीतसार--उपर्युक्त गीत बीकानेर के शासक राजा रायसिंह राठौड़ का है। कवि दुरसा-आढ़ा ने गीत में गीतकार की उदारता का वर्णन करते हुए कहा है कि राजा रायसिंह ने अपने सामन्तों, सेवकों और कविपात्रों को भूमि, ग्राम और द्रव्य प्रदान कर अपनी बराबरी तक पहुंचा दिये। सत्य है कि जैसा बड़ा स्वामी होगा वैसे ही बड़े उसके कर्मचारी होंगे। वेलें वृक्ष के अनुरूप ही ज्यादा कम बढ़ती हैं ।

---

१. सहि–सभी। सींघ–रायसिंह ने। सारिखा–समान। लास-अश्व। ग्रास-भोजनादि, ग्रामों के पट्टे। सुपह–राजा, स्वामी। वधै–बढ़ते हैं। सेवकर–सेवक। वेलां–लताएँ। रूंख वृक्ष।

२. जैत–जैतसिंह के। समवड़ी–समान बड़ा। कलावत–कल्याणमल के पुत्र ने। पुरखे जे–जिन पुरुषों ने। सेविया–सेवा की। पगे–चरणों की। मोटिम–बड़प्पन। अेह–यही। पारिखौ–परीक्षण। मारू–राठौड़ राजा रायसिंह। तर सीस–वृक्षों के सिरों तक।

३. तौ दिसि–तुम्हारी तरफ। नमिया–झुके, सेवक बने। जिके–वे। एकतंत–एकाकी अकेले। ऊगैतां–उदयकाल से ही। पगां–पैरों का। आसनौ–आशा, आश्रय। व्रख–पेड़। ताइ–उसे। समौ–समान।

४. किताई–कितने ही। गजबंध–हाथी रखने में समर्थ, हाथी बँध। करगि–हाथ से। लिखि–लिखकर। समा–सदृश। अंजसीये–गर्व करे। वेलि–वल्लरी। कलप व्रखि–कल्प वृक्ष, देव वृक्ष।

२०. गीत राजा रायसिंघ कल्याणमलोत बीकानेर रौ

रिम सेन सगह बूहा जुध रासै, रूकां पांण कनोजै राय ।
पळ भखती राती पळ पंखणी, गत सेती राता गिरराय ॥१॥

रहचे जु तैं पिसुंण-दळ रासा, धारां मूंहे निजोड़ घड़ ।
गिळती मांस रची रिण ग्रींभण, ऊडंती रचिया अनड़ ॥२॥

सुत कलियाण साहि भुज सुजड़ो, अरि संमहरि साझे औनाड़ ।
चुगती चोळ थई चंचाळी, पसरी चोळ थई पहाड़ ॥३॥

केवी राव राइसिंघ कोपे, जुड़ि खागां मुंह कीध जूवा ।
रातळि सुरंग थई भख रैहती, हाली भाखर सुरंग हूवा ॥४॥

---

२०. गीतसार— उपर्युक्त गीत बीकानेर नरेश राजा रायसिंह राठौड़ पर रचित है। गीत में कवि ने गीतनायक की युद्धवीरता का वर्णन करते हुए कहा है कि रायसिंह ने युद्ध स्थल में शत्रुओं का ऐसा संहार किया कि गृद्ध-पक्षियों के रक्त-रंजित पंखों को झपट्टों से पहाड़ तक रक्त रंग से रंग गये।

---

१. रिम सेन—शत्रु सेना। सगह—सगर्व। बूहा—वरसा, प्रहार किये। रासै—रायसिंह ने। रूकां पांण—तलवार-बल से। कनौज राय—कन्नौज का राजा। पळ—मांस। भखती—भक्षण करती। राती—लालरंग की। पंखणी—गृद्धिनी। गत सेती—गमन सहित। गिरराय- पर्वतराज।

२. रहचे—संहार किये। पिसुणदळ—वैरी समूह। धारां मूंहे—शस्त्रों की तीक्ष्ण धाराओं के आगे। निजोड़—संधिविहीन। घड़—शरीर। गिळती—निगलती। ग्रींभण—गृद्धिनी। रचिया—रंगे। अनड़—पहाड़।

३. साहि—उठाकर, प्रहार हेतु पकड़ कर। सुजड़ो—खांडा, खड्ग। अरि—वैरी। संमहरि—समरभूमि। साझे—मारे। औनाड़—निर्बंध, वीर। चोळ—लाल। थई—हुई। चंचाळी—गृद्धिनी। पसरी—फैली।

४. केवी—वैरियों पर। कोपे—कुपित होकर। जुड़ि—भिड़ कर। खाँगां मुंह—तलवारों की धाराओं में। जूवा—जुदा, अलग। रातळि—गृद्धिनी विशेष। सुरंग—लाल। भख रैहती—भक्षण करती। हाली—चली, उड़ी। भाखर—पहाड़।

२१. गीत राजा रार्यासिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

मारू राव राइसिंघ अणडोल मन, धरा कमधां धणी आज रखपाळअन ।
वहै मद वरिसता पुहवि कांठी वरन, क्रीत पति कुंजरां चढ़ी दूजा करन ॥१॥
झम झमै वीर घंट चिहुं दिसि झळहळी, हेम नैं असटगिर समंद लग हींडुळी ।
पैंज राव लूणकंन तणी रासा पळी, पाट पति मैंगळे चढ़ी वळि पांगळी ॥२॥
सिंघळी वगसिया करंता गाज सर, होड केही करौ मने अनि रायहर ।
कलावत किया संसार सारे सुकर, प्रसिद्ध वेंडे चढ़ी दियैं देसे पसर ॥३॥
गढ़ै लग कामरू माळवै गिरवरे, पछिमधर काछ दक्षिणरिध समंदां परे ।
उत्तारा पंथ रा गाइयै औसरे, धरा वौह चढ़ीजै विचित धोतंवरे ॥४॥

—किसना मेहड़ू री कह्यौ

---

२१. गीतसार—उपर्युक्त गीत बीकानेर के दानवीर राजा रार्यासिंह की उदारता की प्रशंसा का है। गीत में कवि ने कहा है कि राजा रार्यासिंह दृढ़ एवं उदार चित वाला तथा पृथ्वी का पोषक है। उसकी कीर्ति मेघ घटा की भाँति हाथियों पर चढ़ी आठों पर्वतों और समुद्र के उस पार तक फैली हुई है।

---

१. मारू राव— मरूदेश का राव, रार्यासिंह के पूर्वज राव बीका, जोधपुर के राव जोधा के पुत्र थे इसलिए गीतनायक को मारूराव कहा है। अणडोल–स्थिर। धरा कमंधां धणी—राठौड़ राज्य का स्वामी। रखपाळ—रक्षक। वहै–बहते हैं। वरिसता—बरसाते। पुहवि-पृथ्वी। कांठी वरन— मेघघटा वर्णीय, गजराज। क्रीत–कीर्ति। कुंजरां–हाथियों। दूजा करन— द्वितीय कर्णसिंह, राव रार्यासिंह।

२. झमझमैं–झणकार ध्वनि करते। वीर घंट—गजों के घंटे। झळहळी—जगमगाती, चमकती। हेम—स्वर्णगिरि, हिमालय। नै–और। असट गिर– आठों पर्वतों। हींडुळी–झूलती। पैंज–मर्यादा। तणी–की। रासा—रार्यासिंह। पळी—पालन हुई, निभाई हुई। पाटपति–सिंहासन का स्वामी। मैंगळे—हाथी पर। वळि–पुन:। पांगुळी– कीर्ति।

३. सिंघळी–श्रेष्ठ हाथी। गाज–गर्जना। सर–समुद्र, स्वर। होड—स्पर्द्धा। केही—कई। मने-मन में। अनि—अन्य। रायहर–राजागण। कलावत—कल्याण-मल्ल पुत्र ने। सारे-समस्त। सुकर—सुंदर कर, सरल। वेंडे-हाथी, वितुण्ड पर। पसर—फैलकर।

४. लग–तक। गिरवरे-पार्वत्य देश। काछ-कच्छ देश। परे–उसपार। औसरे—अवसर (?)। धोतंवर- धवलित।

२२. गीत राजा रायसिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

सलख चुंडराव वीर रिणमल जोधे सखा, अखा भाखर लखा पात अड़साळ।
वैरस मयंक कांधाळ चाढ़ौ वडम, राइसिंघ वंस अजुवाळ रखपाळ ॥१॥
सांड अड़बाळ वाळा जगड़ रूपसी, ऊधरण नाथ चंपा करण आज।
दांन खग रूप हापां लखां डूंगरां सींघ सींघ नव साहसी भूप सिरताज ॥२॥
जोध विधि जोध मंडळीक सकतैं जिसा, अभंग हद सायरां-जस उजासौ।
आज सह वंस राजा करौ ऊजळा, राव राठौड़ जग मौड़ रासौ ॥३॥
वीक क्रन जैत वरसिंघ सूजा विदुर, भारमल दुरीसल भेद खट भाख।
कलाउत भवाड़ै भलां ऊनातकर, सवा कोडां दीयण तेरही साख ॥४॥

---

२२. गीतसार—उपरिलिखित गीत राव रायसिंह बीकानेर की उदारता, श्रेष्ठता और वीरता के वर्णन का है। गीतकार ने रायसिंह द्वारा (शंकर बारहठ को) सवा करोड़ का दान देने की सराहना करते हुए गीतनायक को उसके पूर्व पुरुष राव सलखा, चूंडा, वीरमदेव, रणमल्ल और राव जोधा की भाँति उदार और वीर वर्णित किया है।

---

१. पात–पात्र, कवि। अड़साळ–अरिशल्य। मयंक–सिंहा। कांधाळ–कांधिल, स्कंध-धर। अजुवाळ–ऊज्ज्वल करने वाला। रखपाळ–रक्षपाल।
२. खग-तलवार। सींघ–राव रायसिंह। नवसाहसी–मारवाड़ में नव सहस्र ग्राम थे अतः रायसिंह को 'नवसाहसी' कहा गया है।
३. जोध–योद्धा। अभंग–अखण्डित। हद–सीमा। जस–यश। उजासौ–प्रकाश। ऊजळा–उज्ज्वल, कीर्तित। जगमौड़–संसार का सिरमौर। रासौ–राव रायसिंह।
४. वीक–राव वीका, रायसिंह का पूर्वज और बीकानेर का प्रथम शासक। क्रन–कर्णसिंह। जैत–जैत्रसिंह। विदूर–वीदा। दुरीसल–दुर्जनशाल। खट भाख–षट् भाषाओं का मर्मज्ञ। काळउत–कल्याण मल्ल का पुत्र। भवाड़ै–भ्रमित करता है, घुमाता है। भलां–अच्छा। ऊनातकर–अभाव करनेवाली (?)। तेरही साख–राठौड़ों की तेरह प्रमुख शाखाएँ कहलाती है।

२३. गीत महाराजा रामसिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

सकति सोसिवा श्रोणि सिव सीस कजि सांवहे, समळपळ काज प्रव ग्रेह सूधौ।
खांति करि राम अंतरीक रथ खेड़ीया, तै रंभ चै रथे विमाग रूधौ ॥१॥
चौसठी चोळ कजि कमळ कजि विखचरण, पायळ कजि ग्रीधणी पंख करि पूर।
आहंचै राम वर परिणिवा आवत्यां, सुरत्रिया रूंधियौ पंथ रथ सूर ॥२॥
रगत कजि चाउंडा रुंडची माळ रुद्र, मांस कजि अखि विहंग वन छांह वळिया।
नहंगपुर रूंधीयौ माग लाभै नही, भांण रथ रंभरथ आइ मिळिया ॥३॥
रगत कजि जोगणी ईस उतवंग रचे, खगां खळ पूरवै खळ दळे खाग।
सुतन कलियांण वीर रंभ पौहतौ सरगि, मीत मुगतौ हूवौ प्रांमियौ माग ॥४॥

महाराज प्रथ्वीराज राठौड़ रौ कह्यौ

---

२३ गीतसार—उपर्युक्त गीत बीकानेर नरेश के भाई महाराज रामसिंह राठौड़ पर कथित है। गीत में युद्ध की भयानकता का चित्रण करते हुए कवि ने कहा है कि रक्त पान के लिए चण्डिका, मुण्डमाला के लिए शंकर, मांस के लिए गृद्धपक्षी और पति प्राप्ति के लिए अप्सराओं का आकाश में ऐसा जमघट्ट हुआ कि सूर्य के रथ को चलने के लिए मार्ग नहीं मिला।

---

१. सासवि-पान करने। श्रोणि—श्रोणित। कजि—लिए। सांवहे—साथ चलते हैं। समळ—चील, गृद्ध। पळ—मांस। प्रव—पर्व। सूधौ—सीधा। खांति करि—ध्यान कर, विचार कर। अंतरीक—अंतरिक्ष, आकाश। खेड़ीया—चलाए। रंभ चै—अप्सरा के। विमाग—पथ। रूधौ—रुक गया।

२. चौसठी—चौसठ योगिनियाँ। चोळ—लोहू। कमळ—सिर। विखचरण- विषपायी, शंकर। पायळ—मांस (?)। ग्रीधणी-गृद्धिनि। पूर—पूर्ण, फैलाकर। आहंचे-मरते समय, गर्व पूर्वक। राम—रामसिंह। परिणिवा—विवाह में। आवत्यां—आते हुए। सुरत्रिया—अप्सरा। रूंधीयौ-अवरुद्ध किया। सूर—सूर्य।

३. रगत—रुधिर। चाउंडा—चामुण्डा देवी। रुंडची—मुण्ड की। माळ—माला। अखि—भक्षण। विहंग-पक्षी, गृद्ध। वळिया—लौटे। नहंगपुर-आकाश तल, आकाशपुरी। माग मार्ग। लाभै—मिलता। भांण—सूर्य का।

४. जोगणी—रणचंडिका। ईस-शंकर। उतवंग—उत्तमांग, शीश। खगां—तलवारों से। पूरवै-पूर्त्ति करे। दळे—समूह, नाश करे। वरि—वरण कर। पौहतौ—पहुँचा। मीत—मित्र, सूर्य। प्रांमियौ—पाया, मिला।

२४. गीत महाराजा रामसिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

ढाल नेजां सिरै हसतीये ढळकती, कळहकळहां सिरै मांचतै कांमि।
सालिस्यै त्यांर कलीयांण रौ सींघळौ, सिर धणी मुरधरा सळखहर सांमि ॥१॥
वाजतै जांगीए अणी वांटीजितै, वळै झालै नहीं अणी वांमौ।
रूप नवसाहसी धरा रखपाळ गर, राव चीतारिस्यै तरैं रांमौ ॥२॥
फौजरै सिणगार नह कोइ पूठी फिरै, साईए साईयां माचिस्यै भीर।
सिंघ त्यार चीतारिस्यै रामसिंघ, वीर वर लखमणा सारिसौ वीर ॥३॥

—महाराजा प्रिथीराज राठौड़ रौ कह्यौ

---

२४. गीतसार—उपर्युक्त गीत बीकानेर महाराजा रायसिंह के अनुज महाराज रामसिंह पर कथित है। गीत में रायसिंह की मृत्यु पर दुःख व्यक्त करते हुए कवि ने कहा है कि बीकानेर नरेश के विरुद्ध कभी यद्ध का अवसर आ पड़ेगा तब रामसिंह की मृत्यु का अभाव खटकेगा। और तब हे महाराजा रायसिंह! तुम रामसिंह को रामचंद्र ने लक्ष्मण की मूर्छा पर याद किया था वैसे ही याद करोगे, विलाप करोगे।

---

१. नेजां—निशान। सिरै—सिर, पर। हसतीये—हाथियों के। ढळकती—झूलती। कळह—युद्ध, विपत्ति। कळहां—युद्धकारी शत्रुओं के। मांचतै—छेड़ते, होते। सालिस्यै—चुभेंगे, खटकेंगे। त्यांर—तब। सींघळौ—सिंह, वीर। सिरधणी—स्वामी, राजा। सलखहर—सलखा की संतति वालों के। सांमी—स्वामी।

२. जांगीए—नगाड़े। अणी—सैन्य पंक्ति। वांटीजितै—वांटी जाते समय। वळै—फिर। झालौ—लेने वाला, दायित्व लेने वाला। वांमौ—वाम भाग की। नवसाहसी—राठौड़-सेना का। रखपाळ—रक्षक। चीतारिस्यै—याद करोगे, पश्चात्ताप करोगे। तरैं—तब। रांमौ—रामसिंह को।

३. नह—नहीं। पूठी—पीछे की ओर। फिरै—घूमे। माचिस्यै—मचेगी, होगी। भीर—सहायता, पक्ष, संकट। सिंघ—महाराजा रायसिंह। लखमणा—लक्ष्मण। सारिसौ—सदृश।

२५. गीत राजा दलपतसिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

भागौ भै वात न माची भारथ, नमी चींत फर नींगमीयौ ।
जै हूं साह जांणतौ जोखौ, जोइ दलौ सोइ जोखमीयौ ॥१॥

असुरां घरि तावूत न आवै, हेवै राइ नचींत हूवौ ।
पली पुकार पीटणा न पड़ै, मारण हारौ कमंध मूवौ ॥२॥

किलवां कांमणि सीसन कूटै, जोखिम भागौ टळै जूऔ ।
सवदी दलो हीयै सुरतांणां, हूंतौ साल सु सरगि हूऔ ॥३॥

---

२५. गीतसार—उपर्युक्त गीत बीकानेर के राजा दलपतसिंह राठौड़ पर रचित है । गीत में दलपतसिंह की मृत्यु पर बादशाह के मुख से कवि ने कहलाया है कि—बादशाही के लिए जो भय माना जाता था वह भय दलपतसिंह के निधन के साथ ही मिट गया है । और अब युद्ध में मारे जाने वाले यवन योद्धाओं के तावूत उनके घरों पर नहीं आते हैं । बादशाहत का शल्य दलपतसिंह स्वर्ग चला गया ।

---

१. भागौ–दूर हुआ, मिट गया । भै वात–भय, भय वार्ता । मांची–मचा, हुआ । भारथ–युद्ध । नींगमीयौ–चला गया, बीत गया । हूं–मैं । जोखौ–खतरा । जोइ–वही । दलौ–राजा दलपतसिंह । जोखमीयौ–मर गया ।

२. असुरां– मुसलमानों के । तावूत–अर्थी, शव । हेवै राइ–अश्वपति, बादशाह । नचींत–निश्चित । पली–रुकी । पीटणा–रुदन । कमंध–राठौड़ ।

३. किलवां–मुसलमान, कलमा पढ़ने वाले । कांमणि–कामिनी, नारी । सीसन कूटै– अपने पतियों के मर जाने से सिर पीटती थी वे अब सिर नहीं पीटती हैं । टळै–अलग हट कर । जूवौ–जुदा । सवदी–शब्द (?) । हीयै–हृदय । हूंतौ–था । साल– शल्य । सु–वह । सरगि–स्वर्ग ।

२६. गीत राजा सूरसिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

अखा पाळ कांधाळ वैरा लखा ऊधरण, नाथ ऊन रूप बाले बलू नीर।
जोध चंप मयंक संड पतौ सकतौ जगौ, सायरां भाखरां आभरण सूर ॥१॥
वीक सामंत सत्रसाल दूदा विदुर, भारमल सिवौ नींवौ बड़ा भूप।
जोध विध सूर वरसिंघ जोगै जिसा, रयण वणवीर कूंपै कमैं रूप ॥२॥
कोपीयै जास मैंवास पाधर कीया, पहि ओहास अभिहास सदन पूर।
वसुह रिणमाल चूंडा वडां वीर गुर, सलख सह उपीया दीपीयै सूर ॥३॥
प्रभत गत दुरत राइसिंघ रै पाटपत, देसपत करै कुण ईढ़ दूजौ।
धाराण हार जोधार अरि धूंखळै, साख सिणगार जणियार सूजौ ॥४॥

---

२६. **गीतसार—ऊपर लिखित गीत में बीकानेर नरेश शूरसिंह राठौड़ की वीरता और अपने कुल पुरुषों की परम्परा के पालने वाले के रूप में वर्णन किया है। गीत नायक के पूर्वजों और उसके पूर्ववर्ती श्रेष्ठ चरित्र राठौड़ योद्धाओं के कार्य और गुणों का धारणकर्त्ता शूरसिंह को वर्णित कर सराहा गया है।**

---

१. अखा—अखैराज। पाळ—गोपाल। कांधाळ—कांधिल। ऊधरण—उद्धरण, उद्धारक। चंप—चांपा, चम्पतराय। आभरण—आभूषण। सूरराजा—शूरसिंह।

२. वीक—राव वीका। विदुर—बीदा। जोगै—जोगीदास। रयण—रतनसिंह। कूंपै—कूपकर्ण। कमैं—कर्मसिंह। इस द्वाले में प्रसिद्ध राठौड़ शासकों तथा सामन्तों का नाम निर्देशन है।

३. कोपीयै—क्रुद्ध होने पर। जास—जिसके। मैंवास—पहाड़ी, शरणस्थल, किले, घाटियों के आश्रय स्थान। पाधर—सीधे सपाट। पहि—पथिक, राजा। ओहास— (?) पूर—पूर्ण। वसुह—पृथ्वी। वीरगुर—वीरश्रेष्ठ, वीरमदेव। सह—समस्त। उपीया—शोभित हुए। दीपीयै—दैदीप्यमान होने से। सूर—शूरसिंह।

४. प्रभत—प्रभुता। दुरत—जबरदस्त, भयंकर। पाटपत—राजसिंहासन का अधिकारी। देसपत—राजा। ईढ़—बराबरी। दूजौ—दूसरा। जोधार—योद्धा। अरि—शत्रुओं। धूंखळै—युद्ध में। साख—राठौड़ की शाखाओं का। जणियार—ज्ञाता। सूजौ—राजा शूरसिंह।

२७. गीत राजा रायसिंघ राठौड़ बीकानेर रौ

वंगाळ जुड़े नीजुड़े वहादर, गुड़े गड़ूथळ मद गहण ।
खित गुजरात निघात खेलतौ, रायसिंघ फावियौ रिण ।।१।।

दूभर खग ऊचंड माराक डंड, नाड़ सूंड नीजुड़े नियाव ।
ईड तैं रुहिर कहणिया ऊपर, रिण फावियौ पारुवौ राव ।।२।।

वांह प्रलंव नेत सिर वांधै, हसम असंक चाढ़ीयै हीये ।
ओपीयौ सिंघ वगतरां ऊपर, करवत रोहणियास कीये ।।३।।

पड़ गौरीयां तणा छूटा पग, आगै ऊलक वांधियौ आंण ।
अंतर खेत सावरत ऊभौ, कलियाणोत तणौ केवाण ।।४।।

— माला सांदू रौ कह्यौ

---

२७. गीतसार—उपर्युक्त गीत में वीकानेर के राजा रायसिंह की गुजरात के युद्ध में प्रदर्शित वीरता का वर्णन है। कवि ने गीतनायक की युद्ध सज्जा तथा विपक्षी सेना को गजपंक्ति पर आक्रमण करके पराक्रम दिखाने का अंकन किया है।

---

१. वंगाळ–मुसलमान। जुड़े–शामिल हुए, लड़ने लगे, युद्ध। नीजुड़े–मारे काटे, संहार किये। गुड़े–लुढ़के। गड़ूथळ–कुलांचे खाना। मद गहण–मदवहते हाथी। खित–पृथ्वी। निघात–प्रहार करता, जवरदस्त। फाभियौ–शोभित हुआ। रिण–युद्ध में।

२. दूभर–दुःसह्य, दुस्तर। खग–तलवार। ऊचंड–ऊंचा, उछल कर। डंड–दण्ड। नाड़–गर्दन। सूँड–शुण्ड। नीजुड़े–कटे। नियाव–न्याय ही, उचित ही। ईड–वरावरी, शत्रुता। रुहिर–रुधिर। मारुवौ राव–मारवाड़ का राजा, रायसिंह के पूर्वज राव वीका ने मारवाड़ से जाकर वीकानेर का राज्य स्थापित किया था, इसलिए गीत नायक को मारवाड़ का राजा सम्वोधित किया है।

३. वांह प्रलंव–आजानुवाहु। नेत सिर वांधे–मस्तक पर वीरता का प्रतीकाभूषण धारण किये। हसम–सेना। असंक–निर्भीक। ओपीयौ–शोभित हुआ। सिंघ–राजा रायसिंह। वगतरां–कवचों। करवत–करपत्र, करोत उपकरण।

४. गौरीयां–मुसलमानों के। छूटा पग–पग छूट गये, भाग गये। आगै–आगे, अगाड़ी। आंण–आगमन कर। सावरत–रक्त से भीगा। ऊभौ–खड़ा हुआ। कलियाणोत–राव कल्याणसिंह का पुत्र राजा रायसिंह। केवांण–तलवार।

२८. गीत महाराजा गजसिंघ बीकानेर रौ

गजण कहै महाराज नरप बियां मेधा गहर, ऊचर टीका सहत ग्रंथ अमध ।
समझ दन दीयै धन जिकै समधा सही, समझ दन न दीयै जिकै किसूं समध ।।१।।

पींगळां डींगळां थूथीयां पानड़ां, कीत न रहै जुगां वात कोड़ै ।
जांण पण थाय धन न दीधा जांण पण, जांणपण अजाणपण तणै जोड़ै ।।२।।

समझ री बतावै रीत नवसांहसौ, दान आगाहटां गजां दीजै ।
वीद्रवौ मता जस रता कर दूवाळी, कीतवाळी कीतवाळी करै नांव कीजै ।।३।।

अदतण गजण दूजौ अनौ अवतरे, दुनी क्रन भोज रौ सुजस देखौ ।
समझ दन दीयै हाटक सुगंध सहेतो, लोह दुरगंध कदतार लेखौ ।।४।।

---

२८. गीतसार— उपर्युक्त गीत बीकानेर महाराजा गजसिंह राठौड़ की उदारता का द्योतक है । कवि ने महाराजा गजसिंह के विचारों को अपनी भाषा में व्यक्त करते हुए कहा है कि महाराजा गजसिंह अपनी बराबरी वाले अन्य बुद्धिमान राजाओं से कहते हैं कि पिंगल और डिंगल के वे काव्य व्यर्थ हैं जिनमें कीर्ति के स्वर नहीं है । जो अवसर पर दान देता और यश-संग्रह करता है, वह व्यक्ति समझदार है । और अवसर खो देता है, वह कैसा बुद्धिमान है ।

---

१. गजण—महाराजा गजसिंह । वियां—दूसरों को । मेधा—बुद्धि । गहर—गंभीर । ऊचर—उच्चारण कर । अमध—गर्व रहित, अबोध । समधा—ज्ञानी । समध— समझदार, गर्वीले ।

२. डींगळां—डिगळ भाषा । थूथीयां—थोथे, व्यर्थ । पानड़ा—पत्र । कीत—कीर्ति । जुगां— युगों के । जांणपण—जानकारी । थाय स्थिर । अजाणपण—अज्ञानता । तणै—के । जोड़ै—बराबर ।

३. नवसांहसौ—राठौड़ नरेश गजसिंह । आगाहटां—चारणों को दान में प्राप्त वह भूमि भाग जो राज्य-कर आदि से मुक्त होती है । गजां—हाथी । वीद्रवौ—दान दो । मता—वन । जस रता—यश, अनुरक्त । दूवाळी—आशीर्वाद, आज्ञा । नांव—नाम ।

४. अदतण—अदातार; कंजूस । दूजौ अनौ—महाराजा द्वितीय अनूपसिंह, गीत नायक गजसिंह के लिए प्रयुक्त शब्द । अवतरे—अवतार लिया । दुनी—संसार । क्रन—राजा कर्ण । सुजस—सुयश । हाटक—स्वर्ण । सहेतो—सहित, प्रीतिपूर्वक । लोह दुरंगध— लोहा रूपी दुर्गन्ध, अपकीर्ति । कदतार— कृपण, कंजूस । लेखौ – लिखत, हिसाब ।

२९. गीत महाराजा रतनसिंघ बीकानेर रौ

थाटां सोहड़ां के वांण बंधां मांण पांण धराथंभ,
　　आंण प्रांण वचै सो हिन्दवा भाण ओट ।
दहु राहां सिरैं राज देसांण धणी रौ दीधौ,
　　कीधौ अंबा अगंजी बीकाण थिरू कोट ॥१॥
रिधू सामंद्र की पाज इन्द्र की चाळ सो रूप,
　　इळा रुखाळ सोहै धूठाळ सो उरंग ।
कुमेर आथ रौ नगां माळ सो चौफेर कड़ौ,
　　दोयणां काळ सो नरां नाथ रौ दुरंग ॥२॥
धरा चक्र कूंट रौ अनम्मी जिकां हिये धोखौ,
　　घड़े पोलां सफीलां बुरज्जां चोखौ घाट ।
जेण सूर चंद इळा आभ जैतै नावै जोखौ,
　　बीजा गाजी साह तणौ अनोखौ वैराट ॥३॥
नौबतां वाजतां तासा त्रंबाळां छेहड़ो नको,
　　आरंभां अैवासां इन्द्र जेहड़ो उदार ।
बाथ धल्ले गयणंग नूं आसंगे केहड़ौ बूतो,
　　प्रथीनाथ तणे हाथ अेहड़ो प्राकार ॥४॥

---

२९. गीतसार—ऊपर लिखित गीत बीकानेर के महाराजा रत्नसिंह राठौड़ की वीरता, वदान्यता, वैभव और बीकानेर दुर्ग को अजेयता पर सर्जित है। गीत में गीतकार ने बीकानेर के योद्धाओं की वीरता, आराध्य देवी करणीजी का वरदान और बीकानेर के किले की दृढ़ता का वर्णन करते हुए किले को अपराजित घोषित किया है।

---

१. थाटां—सेना, समूह। सोहड़ां—सुभटों। केवांण—तलवार। बंधां—बांधने वाले। मांण—मान, वैभव का उपभोग। पांण—बल, हाथ। धराथंभ—पृथ्वी के स्तम्भ। आंण—मर्यादा, मान। भाण—भानु,सूर्य, राजा। ओट-आड में। सिरै—श्रेष्ठ। देसाण धणी—देशनोक की स्वामिनी। दीधौ—दिया हुआ। अंबा—अम्बिका, करणीदेवी। अगंजी—अजेय। बीकांण—बीकानेर। थिरू—स्थिर। कोट—दुर्ग।
२. रिधू—स्थिर। पाज—पाल, मर्यादा। चाळ—भवन, लोक। इळा—पृथ्वी। सोहै—शोभित है। आथ रौ—धनाढ्यता में। नगां माळ—पर्वत माला, रत्नों की माला। कड़ौ—घेरा, परकोटा। दोयणां—वैरियों के लिए। काळसो—मृत्यु तुल्य। दुरंग—किला, दुर्ग।
३. चक्रकूंट—चक्रव्यूह, चारों दिशाओं। अनम्मी—अविनीत। जिकां—जिनके। हिये—मस्तिष्क, हृदय। पोलां—पोलियां, दरवाजे। बुरज्जां—बुर्जें। चोखौ—श्रेष्ठ। घाट—आकृति, बानक। आभ—आकाश। नावै—नहीं आयेगा। जोखौ—खतरा। वैराट—विराट।
४. तासा—वाद्य विशेष। त्रंबाळां—नगाड़े। छेहड़ो—अन्त। नको—नहीं। अैवासां—भवनों। जैहड़ो—जैसा। बाथधल्ले—भुजपाश में जकड़ने की चेष्टा। गयणंग—आकाश। आसंगे—अधिकार में लेवें। केहड़ो—कैसा। अेहड़ो—ऐसा। प्राकार—परकोटा।

ठौड़ ठौड़ हलक्का अग्राजै गजां खंभू ठाणां,
मोल करोड़ां केकाणां तबेलां छाजै मन ।
भाळतां अबीढ़ां साजां बीजा गढ़ां मांण भाजै,
राजै नवां खंडां रूप भूपाळां रतन ॥५॥
पैदलां थंभ चहुंबळां दाबसी पार को देस,
ईसौ तेज पुंज में आचार को ऊजास ।
दिल्ली रा धणी सूं बारोबार को सिवाय दीपै,
मारूवां राव रै तपै सार को मेवास ॥६॥
चलै धीठ सत्ता माथै चौफेर अदीठ चक्र,
दुनी पीठ रखै क्रीत दखै सातों दीप ।
जोड़ै नको दूसरौ आसेर बीकानेर जेहो,
मेर छायां हेटे अेहो न कोई महीप ॥७॥

---

५. हलक्का—एक सौ हाथियों का समूह एक हलका कहलाता है । अग्राजै— गर्जना करते हैं । गजां— हाथियों । खंभू ठाणां—गजशालाओं में, हाथियों के स्थान । मोल—मूल्य । केकाणां—घोड़े । तबेलां—पायगाह । छाजै—शोभित है । भाळतां—देखते । अबीढ़ां—अद्‌भुत, भयानक । साजां—साज, बनाव । बीजां—दूसरों । मांण—प्रतिष्ठा । भाजै—नष्ट होजाता है । राजै—शोभा पाता है । भूपाळां—राजाओं के ।
६. थंभ—स्तंभ । चहुंबळां—चारो ओर । दाबसी—अधिकृत करेगा । पार को—दूसरों का । ईसौ—ऐसा । आचार—आचरण । ऊजास—प्रकाश । धणी—स्वामी । बारोबार—बार बार । दीपै—दीप्त होता है । मारूवां राव रै—मारवाड़ के राजा के, रतनसिंह के पूर्वज जोधपुर से गये हुए होने कारण रतनसिंह को 'मारूवां राव' कहा है । सार—लोह का । मेवास—किला, आश्रय स्थल ।
७. धीठ—धृष्ट, वीर । अदीठ—अदृष्ट । दुनी—संसार । क्रीत—कीर्ति । दखै—कहते हैं । जोड़ै—बराबरी में । नको—कोई नहीं । आसेर—किला । जेहो—जैसा । मेर छायां—सुमेरुगिरि की छाया । हेटे—नीचे । अेहो—ऐसा । न कोई-कोई भी नहीं । महीप—राजा ।

३०. गीत महाराजा वहादरसिंघ किसनगढ़ रौ

तूंहीं आंगमै वहादरसिंघ लाख दळां तत्ती,
इको कुळां पत्ति छत्तीसां अनम्मी आप कंध ।
वड़ी धरा वेळ माधोसाह हूंतां तेग वांधी,
वळे माधो मल्हार सूं ऊभौ तेग वंध ॥१॥

अंहो वीर चाळा वीर आरंभौ राजानवाळा,
धूत दळां सिद्धां वाळा विरव्धां धरोळ ।
आंवेर री पूर फौजां हींचोळ पहल्ला ऊभौ,
हींचोळे सतारा फौजां आंवेरां हरोळ ॥२॥

---

३०. गीतसार—उक्त गीत किशनगढ़ के महाराजा वहादुरसिंह की युद्ध-वीरता पर रचित है। वहादुरसिंह ने जयपुर के महाराजा माधवसिंह प्रथम की ओर से महादाजी सिंधिया से युद्ध लड़ा था। गीत में वहादुरसिंह द्वारा एक वार माधवसिंह के विपक्ष में और एक वार पक्ष में लड़ कर यश प्राप्त करने का वर्णन है।

---

१. आंगमै—अंगीकार करता है, पराक्रम करता है। तत्ती—क्रोधित। इको—अकेला, एक मात्र। छत्तीस—राजकुलों में। अनम्मी—अविनीत, किसी के आगे न नमने वाला। कंध—स्कंध, कंधा। वेळ—सहायता। माधोसात—महाराजा माधवसिंह कछवाहा। हूंतां—से। तेग वांधी—युद्ध किया, तलवार उठाई। वळे—फिर। मल्हार-मल्हारराव हुल्कर इन्दौर वालों का पूर्वज। ऊभौ—खड़ा। तेग वंध—खड्ग-धारी, योद्धा।

२. वीरचाळा—वीरकृत्य, युद्ध। आरंभौ—आरंभ करने वाला। राजानवाळा—महाराजा राजसिंह के पुत्र। धूत दळां—वीरसेना। सिद्धांवाळा—सिद्धिवाला। विरव्धां—विरुदों, विरोधियों। धरोळ—खलवली पैदा करने वाला, विद्रोह करने वाला। पूर—सम्पूर्ण। हींचोळे—आन्दोलित कर, चलायमान कर। सतारा—पूना सतारा वालों की। आंवेरां—जयपुर वालों, कछवाहों की।

सेळतां ऊमरां थाट गैजूहां घूमरां माथै,
रूकां झाट रचन्ता अम्मरां सुरां रीध ।
कूरमांपती सूं चौड़ै आहुड़ अछूती कीधी,
कूरमां मदद तूं ही गनीमां सूं कीध ।।३।।

उथारा विसाय आंटा घाय दळां घाये आडै,
ईस चंडी रूप वीजा रिझाये अडीर ।
आंट पड़्यां सगां सूं असग्गो होय जीत ऊभौ,
भीड़ पड़्यां सगां सूं सगां री हुवौ भीर ।।४।।

हर्‌यौ मान ढूंढ़ाहड़ां मान रां औछाड़ हूवौ,
वाढ़े खाग झड़ां घडां कंवारी वरेस ।
ऊभौ भांज गनीमां सतारा तणी पाड़े आव,
नवे कोटां चाढ़ आव आवियौ नरेस ।।५।।

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

३. थाट–समूह। गैजहां–गजसेना। घूमरां–घेरा, झुंड। रूकां झाट–तलवारों के आघात। रीध–प्रसन्न हुए। आहुड़–युद्ध लड़कर। अछूती–अभूतपूर्व, नवीन। कूरमां–कछवाहों की। गनीमां-वैरियों।

४. उथारा–दूसरों के स्थान पर, बदले में। विसाय–खरीद कर। आंटां–वैर, बदला। रूप वीजा–दूसरे रूपसिंह। अडीर–महावीर। आंट–विरोध। सगां सूं–सम्बन्धियों से। असग्गो–विरोधी, वैरी। भीड़–संकट। भीर–सहायक।

५. हर्‌यौ–हरण किया। मानरां–मानसिंहोत कछवाहों का। औछाड़–ढाल, रक्षक। वाढ़ै-संहार करे। खाग झड़ां–खड्गाघातों की बौछारें। घडां कंवारी–बिना युद्ध लड़ी सेना। वरेस–वर कर, वरने वाला। आब–कांति, प्रतिष्ठा।

३१. गीत महाराजा बहादुरसिंघ किसनगढ़ रौ

जूझ ठैल चसम्मा अमाप जोस नाराज ऊरसां झलै,
            मारू राण छापै कौ दूथणी जायौ मीढ़ ।
धूतठेल हैंजम्मा उधारी लेतौ नहीं धापै ,
            आप वीर अठैल कंठीर गै अवीढ़ ॥१॥
अख.ड़ै वहादरेस जाडा थंडां ऊछरैळ,
            सत्रां मूंछरैळ आडा लोहड़ां समूह ।
राड़िगारौ रूक वागां गिणै लाखां तूछरैल,
            जोरावार दूछरैल कोपेन्द्र गैजूह ॥२॥
खेड़ैच अढ़ंगा जंगां भारां ची निराट खांत,
            अड़ै मूंछारां ची अणी भूहारां सूं आय ।
सरोतरां ऊपटै सारां चीं झाट वागां समै,
            ऊभै भुजां त्रहूं जोरावरां ची आकाय ॥३॥

---

३१. गीतसार— ऊपर लिखित गीत किशनगढ़ के महाराजा वहादुरसिंह राठौड़ के युद्ध-पराक्रम पर सर्जित है। कवि का कहना है कि वीरवर वहादुरसिंह अपरिमित उत्साह पूर्वक शत्रु-समूह का संहार करता है। उसके समतुल्य वीर जो पराये युद्धों को स्वेच्छा से लड़ना स्वीकार करते हैं अन्य कौन है ? लंका में महावीर हनुमान ने जिस प्रकार संहार किया था उसी प्रकार वहादुरसिंह ने जयपुर पर आक्रमण करने पर मरहटों की सेना का संहार किया। वह संसार में अपने विरोधियों से प्रतिशोध लेने वालों में अद्वितीय वीर है

---

१. जूझठेल—युद्ध विजयी। चसम्मा—नेत्रों। अमाप—अपरिमित। नाराज—तलवार। ऊरसां—आकाश। छापै—आकृति वाला, मुद्रावाला। दूथणी—द्विस्तनी, नारी। जायौ—जन्मा। मीढ़—वरावरी का। धूतठेल—योद्धो। हैंजम्मा—सेना। उधारी-लेतौ—दूसरों के वदले में लेता। धापै तृप्त होता है। अठैल—अडिग। कंठीर—सिंह। गै—हाथी। अवीढ़—भयंकर, विकट, अनोखा।
२. अखाड़ै—युद्ध के मैदान में। वहादरेस—महाराजा वहादुर सिंह। जाडा थंडां—सैन्य-समूह। ऊछरैल—जवरदस्त, प्रवेश करने वाला। सत्रां—शत्रुओं। मूंछरैल—मूँछों-वाला, त्राण करने वाला। आडा लोहड़ां—तिरछे शस्त्र प्रहारों से, सामने के वारों से। राड़िगारौ—युद्ध-प्रेमी, योद्धा। रूक वागां—तलवारों के आघात होते समय। तूछरैल—तुच्छ, नगण्य। दूछरैल—सिंह। कोपेन्द्र—कुपित होने वालों का राजा। गैजूह—गजव्यूह।
३. खेड़ैच—राठौड़, जोधपुर के शासकों की प्राचीन राजधानी खेड़ में थी, इसलिए राठौड़ों के लिए यह सम्बोधन प्रचलित हुआ। अढंगा—भयंकर। जंगां भारां—युद्ध भार, विकट युद्ध। ची—की। निराट—जवरदस्त, वहुत। खांत—विचार, दक्षता। अड़ै—छती है। मूंछरां ची—मूँछों की। अणी—नोक। भूंहारां—भ्रकुटि। सरोतरां—वरावरी वालों। ऊपटै—उमड़े, उखड़े। सारां ची—आयुधों की। झाट वागां—प्रहारों की बौछार होते। समै—समय। ऊभै—दोनों। त्रहूं—तीनों। आकाय—शक्ति, वल।

आगै ई अढंगौ छौंर राजा राड़ छंदां आयौ,
वीर लांधौ छौंर वातलायौ लंका वाट ।
पटैत केहरी छौंर कीं पूछणां भूखौ पछै,
नाग छौंर आठूं भाटी छाकियौ निराट ॥४॥

गाढ़ैराव दूजौ मान धाड़ राड़ गेहरीक,
लागणौं सिधवां पैलां छेहरीक लाग ।
वीजूजळां खळां वाढ़, फीफरैल वेहरीक,
नंद वात केहरीक वीफरैल नाग ॥५॥

राजांन रौ हणूमान वाघ गै अढंगां रंगां,
छिवै गेण मग्गां वैण रढंगां छांटैत ।
रूपहरौ आज जठी तठी सूं उछांटी रूकां,
आपा ऊपैहरौ मांटी प्रथी सूं आंटैत ॥६॥

—हुकमीचन्द खिड़िया रौ कह्यौ

---

४. आगैई—पहिले से ही । अढंगौ-विकट, बांकुरा । छौंर—था और फिर । राड़ छंदां—युद्ध कुतूहल । लांधौ—लंगड़ा, हनुमान । वातलायौ—वतलाया, वायु प्रेरित अग्नि । लंका वाट—लंका के पथ पर । पटैत—सिर की केशावली वाला । केसरी—वर्बर सिंह । पूछणौ—पूछना, कहना । भूखौ—क्षुधित । पछै—फिर । नाग—सर्प, हाथी । आठूं भाटी—आठ बार भट्टी निकाली हुई मदिरा । छाकियौ—उन्मत्त । निराट—अद्भुत ।

५. गाढ़ैराव—महान् वीर, दृढ़ वीर । दूजौ मान—द्वितीय महाराजा मानसिंह, महाराजा-बहादुरसिंह । धाड़ राड़—धन्यवदाह्य युद्ध । गेहरीक—गेहर नृत्य के समान युद्ध लड़ने वाला, विकट योद्धा । पैलां—विपक्षियों, पहिले ही से । वीभूजळां—तलवारों से । वाढ़—संहार । फीफरैल—फेफड़े । बेहरीक—विदीर्ण करने वाला, फाड़ने वाला । नंद वात—पवन पुत्र हनुमान । केहरीक—केशरीवाला, हनुमान । वीफरैल—क्रुद्ध । नाग—सर्प ।

६. राजांन रो नंद—महाराजा राजसिंह का पुत्र बहादुरसिंह । वाघ—सिंह । गै—हाथी । अढंगां रंगां—अनूठे रंग से, विकट रंग ढंग से । छिवै—शोभा पाता है । गैणमग्गां—आकाश मार्गी । रढंगां—युद्धकारी । छांटैत—बोलने वाला । रूपहरौ—महाराजा रूपसिंह का पौत्र बहादुरसिंह ।जठी तठी सूँ—जहां तहां से । ऊछांटी—बलपूर्वक प्रहार हेतु उठाई हुई । रूकां—तलवारें । आपा ऊपैहरौ—अपने बल से अधिक कार्य करने वाला । मांटी—मर्द-पौरुष वाला । आंटैत—विरुद्ध चलने वाला, वैर रखने वाला ।

३२. गीत महाराजा बहादरसिंघ किसनगढ़ रौ

महाक्रोधंगी गनीमां हूंत हूचक्कै नरेन्द्र माधौ,
भूचक्कै भूलोक बाधौ चक्कै कोल भार।
वौमंगी अरावां झाळ बैताळ बभक्कै वक्कै,
वाजिदां वहादरेस हक्कै तेरा वार ॥१॥
कंपै कोल तुंडां कासवांणी छायौ वाय कुंडा,
गै अढ़ांणी भ्रसुंडा भमायौ भूगोल गाज।
रत्थां देव रंभां गैरा अधोपै अचंडा रोकै,
राजा राड़िगारौ झोंकै ऊंडा वाजराज ॥२॥
हैजम्मा हिलोळ हत्थां तेगां ऊछाटीलौ हल्ले
साथ वीर चल्ले चंडी चाटीलौ समंद,
वेढ़ धंकां जंगां मेळ वारंगां बांटीलौ वींद,
कैवाणां कोमंखी वागौ आंटीलौ कमंद

---

३२. गीतसार—उपरांकित गीत किशनगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह राठौड़ द्वारा जयपुर के महाराजा माधवसिंह प्रथम के पक्ष में इन्दौर वालों के पूर्वज मल्हारराव हुल्कर से युद्ध लड़ने का द्योतक है। गीत में बहादुरसिंह की वीरता और मल्हारराव की पराजय का वर्णन है। युद्ध वर्णन में रणचण्डी, अप्सराओं और भैरवों का आगमन तथा धरा-कम्पन आदि का आलेखन कर भयावहता प्रकट की गई है।

---

१. महाक्रोधंगी—महाक्रोधी। गनीमां हूंत—वैरियों से। हूचक्कै—युद्ध लड़ता है। माधौ—माधवसिंह। भूचक्कै—भूलोक चक्कर काटने लगा, भूमि चक्राकार घूमने लगी। वाधौ—समस्त। चक्कै—डिगता है, चक्राकार घूमता है। कोल—वराह। भार—वजन से। वौमंगी—आकाशीय। अरावां—तोपें। झाळ—ज्वाला, आग। बभक्कै—भभकते हैं, वक्कै—बकते हैं, बोलते हैं। वाजिदां—घोड़े। हक्कै—चलाता है। तेणवार—उस समय।

२. कंपै—कम्पित होकर। कोलतुंडा—सूअर की तुण्ड, वराह की तुण्ड। कासवांणी—सूर्य। छायौ—छागया, छिपगया। वायकुंडा—वात्यचक्र से। गै—हाथी। अढ़ांणी—भयंकर। भ्रसुंडा—हाथी की शुण्ड। भमायौ—भ्रमित किया। गाज—गर्जना से। रंभां—अप्सराएं। गैरा—गगन, आकाश। अधोपै—अर्द्धाकाश में। अचंडा-शांति पूर्वक। राड़िगारौ—कलहप्रिय। झोंकै—धकेलता है। ऊंडा—गहरे समूह में। वाजराज—श्रेष्ठअश्व।

३ हैजम्मा—सेना। हिलोळ—आन्दोलित कर। हत्थां तेगां—खड्ग प्रहारों से। ऊछांटीलौ—त्वरगति से प्रहार करने वाला। वीर—बावन भैरव। चंडी—रण चण्डी। चांटीलौ—वीरभद्र, सेवक, फुर्तीला। समंद—उन्मत्त। वेढ़—युद्ध। धंकां—इच्छा। वारंगां—अप्सराओं को। वांटीलौ—बाँटने या देने वाला। वींद—दुलहा। कैवाणां—तलवार। कोमंखी—क्रोधी, वीर। वागौ—लड़ने लगा। आंटीलौ—बाँकुरा, शत्रुओं से प्रतिशोध लेने वाला, गर्वीला। कमंद—राठौड़।

ओड़ै वीर घटा घोख मातंगां ताजांन वाळौ,
रोड़ै वीजै विखम्मी वाजान वाळौ रीठ ।
ओक जगां अेराक ले भूडंडां आजान वाळौ,
निहंगां राजान वाळौ हाकळै नत्रीठ ॥४॥
जोमंगी भंडीस ज्याग आयौ ज्यूं चंडीस जायौ,
राजपत्री आयौ ज्यूं उचंडी व्याळरेस ।
ओडंडीस असीसतौ लांघड़ौ कपीस आयौ,
कोडंडीस कसीसतो आयौ गुडाकेस ॥५॥
आसमान लाग धू त्रिभागा कीधां सेल आयौ,
जाडी भार झेल आयौ लोह जंगी जीप ।
आडा मारहट्टां चौ सांकड़ौ थाट ठैल आयौ,
माधवेस वेळ आयौ वांकड़ौ महीप ॥६॥
जाजुळी वहादरेस भूप देव अंसी जोध,
वीर नारसिंघ रूप धेठो क्रोधवार ।
भूलेगौ गसत्ती भौम आघो व्है असत्ती भागौ
मसत्ती न लागौ फेर हसत्ती मलार ॥७॥

---

४. घोख—घोष, ध्वनि । मांतंगां—हाथियों । ताजाँन वाळो—हृष्टपुष्ट, घोड़ों वाला । रोड़ै—ध्वनि करवाता है । विखम्मी—भयावह । वाजानवाळै—वाद्य यंत्रों वाला, वाजिराजों वाला । रीठ—प्रहार, युद्ध । ओक—अञ्जलि, घर । अेराक—शराव, तलवार । भूडंडां—भुजदण्ड । आजानवाळौ—आजानुबाहु वाला । निहंगां—घोड़े, अकेला । राजानवाळौ—महाराजा राजसिंह का पुत्र वहादुरसिंह । नत्रीठ—नि:शंक, योद्धा ।

५. जोमंगी—जोशीला । भंडीस ज्याग—दश प्रजापति के यज्ञ में । चंडीस जायौ—वीरभद्र, चण्डी और ईश से उत्पन्न होने वाला । राजपत्री—गरुड़ । उचंडी—उछलने वाला, उठा कर ऊपर ले उड़ने वाला । व्याळरेस—सर्पों को मारने वाला । ओडंडीस—वलवान, भुजवली । असीसतौ—आतुर होता हुआ, उफनता हुआ । लांघड़ौ—लंगड़ा, हनुमान । कपीस—वानरराज । कोडंडीस—धनुष । कसीसतौ—प्रत्यंचा चढ़ाता हुआ । गुडाकेस—वीर अर्जुन ।

६. धू—ध्रुव, मस्तक, पर । त्रिभागा—तीन भाग, एक भाग पीछे और शेष तीन प्रहार के लिए आगे । सेल—भाला । जाडी भार—अधिक वजन, घनादायित्व । झेल-सहन कर, उठाकर । जीप—विजयकर । चौ—को । सांकड़ौ थाट—सन्निकट सेनादल । ठैल—पीछे धकेल । वेळ—सहायता । वांकड़ों—विकट, वांकुरा ।

७. जाजुळी—तेजस्वी, क्रुद्ध । जोध—योद्धा । धेठो—धृष्ट, शक्तिशाली वीर । भूलेगौ—भूल गया, पस्त हिम्मत हो गया । गसत्ती—मटरगश्ती । असत्ती—पापी । मसत्ती—मस्ती । हसत्ती—हस्ति, हाथी । मलार—मल्हार राव हुल्कर इन्दौर

३३. गीत महाराजा बहादुरसिंघ किशनगढ़ रौ

वड़ा राग रा हुवै सुर अछर घूघर वजै,
ठणक रिख जंत्र सिव उगठ ठांणे ।
दलां उचरंग रै जगीचै वहादरे,
जंग रै वगीचै रंग जाणै ॥१॥
नांम मद छाक चित्र धाम जंगी हवद,
वीर नृत कांम नटवर वणावै ।
जाम खग ताळ सुर ग्राम जोगण जमै,
पोह कंवर तांम आरांम पावै ॥२॥
त्रंबक धुन अदंग विकराळ रज धोम तम,
ज्वाळ धख मसालां तोप ज्वाळा ।
भामणां कितां कितां अनभामणां,
असी अध्रियामणां कमंधवाळा ॥३॥

---

३३. गीतसार–उपर्युक्त गीत किशनगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह पर कथित है। कवि ने गीत में युद्ध का उद्यान के साथ सावयव रूपक बनाकर वर्णन किया है। सिंधुराग तथा अप्सराओं की पैंजनियों की ध्वनि ही संगीत तथा नर्त्तकियों की नृत्यध्वनि है। घायल वीरों की आंतें बेलों के तन्तु समूह हैं। घावों से प्रवाहित रुधिर ही जल के फव्वारे हैं। और तोपों के गोलों की ध्वनि ही भ्रमरों की गुंजनध्वनि है।

---

१. वडारागरा–सिंधुराग का। सुर–स्वर। अछर-अप्सरा। घूघर–घुघरू। ठणक–ठणण की ध्वनि। रिख–ऋषि नारद। जंत्र–यंत्र, वीणा यंत्र। दळां–सेना, पत्र। उचरंग रै–उत्सव के। जगीचै–स्थान (?) वहादरे–महाराजा बहादुरसिंह। जंग रै-युद्ध के। वगीचै–उद्यान, वगीचा।

२ हांम–इच्छा। मद छाक–मदिरा की छाक। चित्रधाम– रंगमहल, चित्रसार। जंगी हवद–युद्ध में हाथियों पर रहने वाला हौदा। वीर–बावन वीर। नृत–नृत्य। खग–तलवार। ताळ सुर–संगीत के ताल व स्वर। जोगण–रणदेवी। पोह–राजकुमार, प्रभु। तांम–तव।

३. त्रंबक धुन नगाड़े की ध्वनि। धोम–धूम्र। तम–अंधकार। ज्वाळ–ज्वाला। धख–क्रोध, धक्का। मसालां–मशालें, चिरागें। भामणां–पसंन्द आने वाले, मन भाने वाले। कितां-कितने ही। अनभामणां–अन भाते, बिना मन पसंद के। असी–ऐसी। अध्रियामणां–भयावह, नाशकारी, वीर। कमंधवाळा–राठौड़ नृपति बहादुरसिंह वाले।

अंत तर घायलां लता तंत अळूझै,
फवै रुधिर हौद चादर फुहारां।
कीत वाणी सझै रातळां कोकिलां,
वधै आणंद दिलां तैंण वारां ॥४॥
पेख सिव नौख रिम सीस चाढ़ै पौहप,
औख खत्रवाट कुळवट अराधो।
सौख माणै जसी रमै रांमत ससत्र,
जौख माणै असी रायाजाधो ॥५॥
सार भरमार गुलजार पळ गूद सत्र,
अलल गुंजार गोळा अलीजै।
साजधर जरद सामाज धर सांतरा,
राजधर नरेसुर सुतन रीझै ॥६॥
प्रथी भुगतै तरण फतै पणै।
हूंसनायक पणै मुनंद हंसियौ।
मानहर धाड़ रे धाड़ जौवन मसत,
राड़ रै वगीचै तणौ रसियौ ॥७॥

—हुक्मीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

४. अंत–आँते, अंत्रावली। तर–तरु, पेड़। लता तंत–लताओं के तन्तु। अळूझै–उलझे हुए, फँसे हुए। फवै–शोभित हैं। रुधिर–लोहू के। हौद चादर–हौदों की चादरें, होदों से नीचे गिरने वाली जलकी धारा। फुहरां–फव्वारे। कीत वाणी–कीर्ति वर्णन के बोल। सझै–बोलते है,। राताळां–मांसभोजी रातल पक्षी। वधै–वढ़ता है। दिलां–हृदयों में। तैंण वारां–उस समय।
५. पेख–देखकर। नौख–अनौखा। रिमसीस–शत्रुओं के मस्तक रूपी। चाढ़ै–चढ़ाते हैं, अर्पित करते हैं। पौहप–पुष्प, फूल। खत्रवाट–क्षत्रिय-आनंद। धर्मपथ। कुलवट–कुलमर्यादा। अराधो–आराधना, इरादा। सौख–शौक, माणै–भोगते हैं। जसी–जैसी। रमै–रमण करता है। रांमत–क्रीड़ा। ससत्र–शस्त्रों की।
६. सार–लोहा। गुलजार–उद्यान, बाग। पळ–मांस। गूद––मज्जा। सत्र–शत्रु। अलल–भ्रमर। गुंजार–गुंजन। गोळा–तोप के गोले। अलीजै–गूंजते हैं। साजधर–युद्ध की साज सज्जा। सांतरा–सुन्दर, उत्तम। राजधर–महाराजा राजसिंह के। सुतन–पुत्र। रीझै–प्रसन्न होता है।
७. भुगतै–भोगते हैं, उपभोग करते हैं। तरण–तरुण, तरुणी, नायका। फतै–फतह। पणै–पन। हूंसनायक–रसिक, शौकीन छैला। मुनंद–मुनि नारद। मानहर–महाराजा मानसिंह का पौत्र बहादुरसिंह। धाड़ रे धाड़–धन्य है धन्य है। जौबन–यौवन। मसत–मस्त। राड़ रै–युद्ध के। तणौ–कौ। रसियौ–रसिक, वीर।

३४. गीत महाराजा बहादुरसिंघ किसनगढ़ रौ

डंडे खांन रौ मेवास दिली आगरो साहरौ डंडै,
आंन रौ कीं गिणां बेहू राह रौ अनेक ।
आंटीपणौं सोवादार सतारा नाथ नूं आखै,
हिन्दूवां में मांटीपणौं राजान रौ हेक ॥१॥

छंडै पांव पाछा जंगां पेस दै छूटिया छत्री,
आछा आछा देस नेस लूटिया अनूप ।
कहै सेनापती मैं पहादरेस कीधा केई,
भूलोक अनम्मी हेक वहादरेस भूप ॥२॥

तोपां री अग्राजां मांहे संजिया न कोट कितां,
महाबीर साजां मांहे भंजिया अमात्र ।
मारहठो कहै मैं गंजिया लोक पाजां मांहे,
राजां मांहे अगंजी रंजियौ मारूराव ॥३॥

सतारानाथ नूं अेम समाचार लिखै सोवौ,
जदां पाछौ कागदां में मोकळै जवाव ।
मान रा पौतरा हूंत उखेलो मांडजो मती,
वीजा राई तणां नखै उरी लीजौ वाव ॥४॥

---

३४. गीतसार—ऊपरलिखित गीत किशनगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह राठौड़ पर रचित है। गीत में वहादुरसिंह के आतंक, साहस और शक्ति का वर्णन है। कवि कहता है कि वह खांन-नवाबों के निवासों तथा शाही राजधानी दिल्ली और आगरा तक से दण्ड लेता है। हिन्दू और यवन दोनों धर्मों वालों में अनेकों से दण्ड वसूल करता है। पूना-सतारा की मरहठाशक्ति तक की वह परवाह नहीं करता और उनके विरुद्ध चलता है।

---

१. डंडे—दण्ड लेता है। मेवास—निवास, आश्रय स्थल। सांहरौ—वादशाह को। आंनरौ—अन्य किसी का। कीं गिणां—क्या गिनती करें। वेहूंराह—हिन्दू और यवन दोनों धर्मों वाले। आंटीपणौं-शक्ति, शत्रुता। सोवादार—प्रान्तपाल, राज्यपाल। आखै—कहलवाता है। मांटीपणौं—मर्दमी, शक्तिपना। राजान रौ—महाराजा राजसिंह का पुत्र। हैक—एक, अकेला।

२. छंडै—त्यागते हैं। पाछा—पीछे की ओर। जंगां-युद्धों की। पेस दै—पेशकश, या नजराना देते हैं। छूटिया—बंधनमुक्त हुए। छत्री—क्षत्रिय, शासक। नेस—घर, कुल। पहादरेस—सीधे, ऋजु। अनम्मी—किसी के आगे न झुकने वाला।

३. अग्राजां—गर्जनाएँ। भंजिया—तोड़ दिये। अमात्र—असीम, वहुत। मारहठो—मरहठा, पूना सतारा वालों का सूबेदार। गंजिया—नष्ट किये। पाजां—पाज, सीमा। अगंजी—अजित, अपराजयी। रंजियौ—शोभित हुआ। मारूराव-राठौड़ नरेश वहादुरसिंह।

४. अेम—यों। सोवौ—सूबा, प्रांत का सैनिक अधिकारी। जदां—जब। मोकळै—भेजता है। पौतरा—पौत्र। हूंत—से। उखेलो—युद्ध। मांडजो मती—रचना मत, ठानना नहीं। वीजा—दूसरा। राई तणां—राजाओं के। नखै—पास से। उरी लीजौ—इस ओर लीजिए, भले ही प्राप्त कर लेना। वाव—कर, लगान विशेष।

३५. गीत महाराजा बहादरसिंघ किसनगढ़ रौ

लेवै मार पैलां भौम बहाद्रै स महालोभी,
तोभी धापै नथी जे बे सतारौ ताठौड़।
रीझां वाज आछा देवै नां न कहवै गूंगो राजा,
रौळा पांव पाछा देवै न पांगळौ राठौड़। १॥
सारी जमी दाटवी लालची आही बंछै सदा,
धू सत्रां तवाई लाखां फतै पावै धींग।
मा कहेबै अ कथां नाटरी मा आला भलो भाई,
माफी जंगां अचाळा बिजाई मानसींग ॥२॥
भुजां इळां खाटवे स्वारथी खारा झालै भूरौ,
सालै पातसाहां सीधां दकालै समाथ।
नाकारै न चाले जीहां पालै रोर नीपणां चा,
पाछा पणै भाराथां न हालै प्रथीनाथ ॥३॥
जुधां जोत बाजराज देवाळ भौगणा जमी,
आठ दिसां लेवाळ सौगुणां आपताप।
हूं भामी राजान नंद या त्रहू औगुणां हेत,
प्रथीनाथ चौगणां सूं चौगुणौ प्रताप ॥४॥

३५- गीतसार-उपर्युक्त गीत किशनगढ़ महाराजा बहादुरसिंह पर कथित है। गीत में कवि ने गीत-नायक को युद्ध-लोभी, याचकों को इन्कार न करने में मूक, रणभूमि में पंगु अर्थात् मृत्युभय से रण त्याग न करने वाला आदि निंदात्मक शब्दों का प्रयोग कर स्तुति की है। निंदास्तुति अलंकार का यह गीत सुन्दर उदाहरण है।

---

१. लेवै-लैता है। पैलां-दूसरों की। भौम-भूमि। तोभी-तब भी। धापै नथी-तृप्त नहीं होता है। जेवे-जेब में लेने का प्रयत्न करता है, अपने अधीन बनाना चाहता है। ताठौड़-छीननेवाला। रीझां-प्रसन्न होकर। वाज-घोड़े। नां न-मना नहीं करता है, नहीं शब्द नहीं कहता है। गूंगो-मूक, इन्कार करने में मूक। रौळा-युद्ध, विग्रह। देवै-देता है। पांगलौ-पंगु, राव जयचंद के पास असंख्य सेना होने के कारण उसकी संततिवाले राठौड़ों का 'दळ पांगळां' विरुद प्रसिद्ध है।
२. सारी-समस्त। दाटवी-अधिकार में ली। आही-यही। वंछै-चाह करता है। धू-सिर। सत्रां-शत्रुओं के। धींग-वीर, जबरदस्त। मा-मत, नहीं। नाट री-मना करने की। अचाळा-अचल। विजाई-द्वितीय।
३. इळां-भूमि, राज्य। खाटवे-प्राप्त करने। खारा-कड़वा। झालै-लिए हुए। भूरौ-सिंह तुल्य वीर। सालै-खटकता है, चुभता है। दकालै-ललकारता है। समाथ-समर्थवीर। नाकारै-नकार 'न' कथन। जीहां- जिह्वा से। पालै-दूर हटाता है, रोकता है। रोर-दरिद्रता। नीपणां च-निपुणों का, चारण कवि विद्वानों का। पाछा पणै-पीछे की ओर। भाराथां-युद्धों से। हालै-चले, चलता है।
४. जुधांजीत-युद्ध विजयी। बाजराज-उत्तम श्रेणी के घोड़े। देवाळ-दानी। भोगणां-याचकों को, भोक्ताओं को। लेवाळ-लेनेवाला। आपताप-प्रताप, सूर्य। हूं-मैं। त्रहुं-तीनों। औगुणां हेत-अवगुणों के लिए।

३६. गीत महाराजा प्रतापसिंघ किसनगढ़ रौ

वागा दुजीह ऊगतै भाण भेड़ियौ गिरंद्रां वीच,
क्रोधंगी रेड़ियौ करिंद्रां तोड़ कंध।
पै हक्कां वाजतां वाजा खेड़ियौ सामुहौ पत्तौ,
मांभी आप मत्तौ इसौ छेड़ियौ मयंध ॥१॥
काचा डांण नाकारियौ राहरी देखतां क्रान्त,
सूधौ लल्लकारियौ केहरी झांप संध।
हाकारियौ देहरी वटैत जम्भरूप व्है सो,
वाकारियौ केहरी कवंध नेतवंध ॥२॥
आवियौ चळूळां चखां ऊजास भाल रौ अग्रम,
भूतनाथ माळ रौ ठाळ रौ पिण्ड भूप।
जंगां निराताळ रौ तूंहीं रायजादा,
सागै पूत काळ रौ लंकाळ रो सरूप ॥३॥

---

३६. गीतसार—ऊपर कथित गीत किशनगढ़ नरेश प्रतापसिंह द्वारा की गई सिंह-आखेट पर है। गीत में सिंह को हाके द्वारा उठा कर ललकारते हुए मारने का वर्णन है। सिंह के क्रोध और क्रुद्धाकृति का चित्रोपम चित्रण है। उसे यमराज का पुत्र व्यक्त किया है।

---

१. वागा—ध्वनित हुए। दुजीह—नगाड़े। ऊगतै—उदय होते ही। भाण—सूर्य। भेड़ियौ—घेरे में लिया। गिरंद्रां—पहाड़ों। क्रौधंगी—क्रोधी, वीर। रेड़ियौ—घेरा, उठाया। करिंद्रां—हाथियों के। कंध—स्कंध। पै—पैदल। हक्कां—हाके। खेड़ियौ—चलाया। सांमुहौ—सामने। पत्तै—महाराजा प्रतापसिंह। आपमत्तै—स्वेच्छाचारी। इसौ—ऐसा। मयंध—मृगेन्द्र, सिंह।

२. काचा डांण—कायरता के कदम। नाकारियौ—अस्वीकार किया। क्रान्त—कांति, मय। सूधौ—सीधा, सामने से। झांप—छलांग। हाकारियौ—हांका हुआ। देहरी—शरीर का। वटैत—बांटने वाला, भागीदार। जम्भरूप—यमस्वरूप। वाकारियौ—ललकारा। कवंध—राठौड़। नेतवंध—वीरता का भूषण या बाना धारण करने वाला।

३. चळूळां—रक्त सदृश लाल। चखां—नेत्र। ऊजास—चमकते, उज्ज्वल। भाल—ललाट। भूतनाथ—शिव की। माळ रौ—माला का, मुण्डमाला का। ठाळ रौ—चुनिन्दा। पिण्ड—शरीर। निराताळ रौ—भयंकर। सागै—साक्षात्। पूत काळ रौ—यमराज का पुत्र, मृत्यु पुत्र। लंकाळ—सिंह। सरूप—स्वरूप, आकृति।

भसम्मा करेवा ज्यूं रूठवा दैत छटा भाल,
आंख तीजी जटावाळी खूटवा अमोह ।
कीधा कोप आवियौ भूटवा काज घटा काळी,
छटा वीरभद्र वाळी छूटवा छछोह ॥४॥
कोपियौ लोयणां रूप रत्ता रौ वणाव कीधां,
दूठ नूर चत्ता रौ ओपियौ जाम दोय ।
अक्खै जूझ मत्ता रौ तमासो भाण आभ ऊभौ,
जूटवौ पता रौ नौहत्थां रौ जोर जोय ॥५॥
सीधा धाव दाव में ताव में अवस्साण लायौ,
इखै तंवा छत्री पणौ दवा धौ अवीह ।
आवधी अराधौ विसेस सरक्कि……सव्व आच,
सागै विरद्द स विरूथै बेग सींह ॥६॥
छटां छंक नौखी तवां वाखरिणयौ वींद छैल,
आसीस दे सुरभ्भी ऊभारिणयौ चैन अंग ।
वाघंवरां सिधां ले वाखांरिणयौ राजाण वीजा,
आखेट रमंतां जम्मी जारिणयौ अभंग ॥७॥

हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

४. भसम्भा—भस्मी भूत । करेवा—करने के लिए । रूठवा—रुष्ट होने । दैत—दैत्य, भस्मासुर । छटाभाळ-ललाट की शोभा । आंख तीजी-तृतीय नेत्र, शिव नेत्र । जटावाळी-शिव की । खूटवा—खुलने, उघड़ने । कोप—क्रोध । भूटवा—टक्कर लेने । काज—लिए, कार्य । घटाकाळी—श्याम घटा, गजसेना । छटा—शोभा, आभा । छटवा—छोड़ने । छछोह—तीव्रगामी ।

५. लोयणां—नेत्रों । रत्तारौ—रक्तिम । वणाव—बनाव, शृंगार । दूठ—जबरदस्त, वीर । नूर—कांति । चत्ता रौ—चितकबरे, चगत्तों वाला । जाम—याम । दोय—दो । जूझ—लड़ने । मत्ता रौ—मतिवाला, मस्तीवाला । भाण—भानु, सूर्य । आभ—आकाश में । ऊभौ—खड़ा । जूटवौ—लड़ना भिड़ना । पत्तारौ—प्रतापसिंह का । नौहत्थां रौ—नव हाथ लम्बे शरीर वाले का, सिंह का ।

६. धाव—धावा, आक्रमण । दाव—दावपेंच । अवस्साण—अवसर । इखै—देखती है । तंवा—पृथ्वी । छत्री पणौ—क्षत्रित्व । अवीह—अभीत, निडर । आवधी—आयुधी, आयु । अराधौ—आराधना, विचार । आच—हाथ । सागै—साक्षात् । विरद्द स—महाराजा विरुदसिंह । विरूथै—सेना, समूह ।

७. छटां—सिंह की गर्दन की केशावली, बिखरे केश—समूह । नौखी—अनौखी, सुन्दर । वाखारिणयौ—वखान किया । वींद छैल—रसिक दुलहा । सुरभ्भी—गाये । वाघंबरां—सिंहत्वचा । सिधां—सिद्धों, योगियों । राजाण वीजा—द्वितीय राजसिंह, महाराजा प्रतापसिंह । जम्मी—पृथ्वी लोक । अभंग— सम्पूर्ण, वीर ।

३७. गीत महाराजा कल्याणसिंघ किसनगढ़ रौ

उदध उभैळां सोखणी धुवी वड़वा अगन, अद्रहिम सिर क्रमैं कवण इसड़ो ।
रूप विकराळ जमदूत रांमत रमैं, किसनगढ़ आंगमैं नरिन्द किसड़ो ।।१।।
सुरां लपत हिलोळै कवण तमगण सदन, चील ताखा तणौ वदन चूंमे ।
वाथ नभ भरे झळ वहादर विया रै, लोह मैं किले खळ किसौ लूमे ।।२।।
खैंग कुण लंकरा भंवर माथै खड़ै, सिव कड़ै हेट निकसे सनेहो ।
देव नरसींघ सूं पड़ै वाथां दुसह, कला रा दुरंग सूं अड़ै केहो ।।३।।
तेग धर कमंध अवतार पत्ता तणा, अभंग ओरै समर वाज ऊंडौ ।
अर चमू वीच कुण फेंट खावै अणी, किसनगढ़ जोगणी तणौ कूंडौ ।।४।।

— कविराज वांकीदास आसिया रौ कह्यौ

---

३७. गीतसार—उपरिवर्णित गीत किशनगढ़ के महाराजा कल्याणसिंह राठौड़ पर सर्जित है। गीत में गीतनायक के पौरुष और उसके द्वारा रक्षित किशनगढ़ दूर्ग की अपराजयता तथा सुदृढ़ता का वर्णन है। दुर्ग को हिमालय, सर्पराज का मुख, शिव का भस्मी कंकन और रणदेवी के पात्र के समान अमोघ प्रभाव वाला चित्रित किया है।

---

१. उदध—सागर। उभैळां—तरंगें। धुवी—धधकती। अद्रहिम—हिमालय। क्रमैं—चले, चल सकता है। इसड़ो—ऐसा। रांमत—क्रीड़ा। रमैं-खेले, करे। आंगमैं—साहसपूर्वक अंगीकार करे।

२. हिलोळै—आन्दोलित करे। कवण—कौन। तमगण—अहंकारी। चील ताखा—तक्षक नाग। तणौ—का। वदन—मुख। चूंमे—चुम्वन ले। वाथ—भुजपाश। झळ—ज्वाला। वहादुर—महाराजा वहादुरसिंह। वियारै—दूसरे के। लोहमैं—लोहामय। खळ—वैरी। लूमे—पकड़ कर नीचे झूमे, लटके।

३. खैंग—घोड़ा। कुण—कौन। लंकरा भंवर—मेघनाद। माथै—पर। खड़ै—हांके। चलावे। सिव कड़ै—रुद्र के भस्मी कंकन। हेट—नीचे। निकसे—निकले। सनेहो—प्रीति सहित। नरसींघ—नृसिंह। दुसह—वैरी, असह्य। कला रा—महाराजा कल्याणसिंह के। दुरंग—दुर्ग। अड़ै—सामना करे। केहो—कौन ऐसा है।

४. कमंध—राठौड़। पत्ता तणा—महाराजा प्रतापसिंह के पुत्र महाराजा कल्याणसिंह से। अभंग—वीर। ओरै—प्रविष्ट करे, झोंके। समर—युद्ध। वाज—घोड़ा। ऊंडौ—गहरा, घनी भीड़ में। अर—वैरी। चमू—सेना। फेंट खावै—टक्कर ले, सामना करे। अणी—सेना की अग्रिम पंक्ति, सैन्य। जोगणी—महादुर्गा। कूंडौ—पत्र, खप्पर।

३८. गीत कुंअर उदैभांण चुवाण कोठारिया रौ

अनड़ जोध चहुआंण चीतौड़ थांने अड़े, कटक दिल्ली तणौ द्रहवाट कीधो ।
वापरै हुकम उदैभाण भरे वगल दंताळो पगां तळ वाढ़ि दीधो ॥१॥

भांजे पोळ वार ही कुअर भेळ पाड़्यो भलो, तणी वेळां टळीयौ सुरतांण ।
जीत धर राण री उसर कर जुजुआ, भुजां वळ झंडो ते लीयौ उदैभांण ॥२॥

तांहरै ताप रावत रुखा तणी टेक वडी मेल साहिजादो टळीयौ ।
नीझोले उदैभाण घुरंते नगारे, वडो सामंत कुंअर घरे वळीयौ ॥३॥

—सीधा वांमण रौ कह्यौ

---

३८. गीतसार- उपर्युक्त गीत कुंवर उदयभानु चौहान क्षत्रिय योद्धा पर रचित है। उदयभानु ने चित्तौड़ दुर्ग के द्वार के वाहर ही शाही सेना पर आक्रमण कर उसे मार काट कर पीछे धकेल दिया था। बादशाही सेना में मार काट मचाकर वह सकुशल विजय के नगाड़े वजवाता हुआ घर लौटा। कवि ने गीतनायक के साहस और वीरता का गीत में वर्णन किया है।

---

१. अनड़-अविचल, पर्वतसम अडिग। जोध–योद्धा। थांने–स्थान, सैनिक चौकी। अड़–शत्रुओं का सामना कर। कटक–सेना। तणौ–को। द्रहवाट–नष्ट भ्रष्ट, नेस्तनावूद। वापरै–पिता के। भरे वगल–भुजाओं में लेकर। दंताळो–हाथी। पगां तळ–पैरों के नीचे, पैर नीचे। वाढ़ि दीधो–काट दिया, मार डाला।

२- भांजे–नाश कर। पोळ–द्वार, प्रतोली। भेळ–मिलावट, शत्रुओं से लड़ने के लिए उनसे टक्कर लेने को मिलते। वेळां–समय। टळीयौ–बचगया। जीत–विजय। उसर–असुर। जुजआ–अलग अलग, युद्ध में मार कर। झंडो–ध्वज।

३. तांहरै–तुम्हारे। ताप–आतप, भय। रुखा–रुक्मांगद। टेक–प्रतिज्ञा। घुरंते–नाद करते हुए। नगारे–नगाड़ा, दमामा। घरे–गृह। वळीयौ–लौटा, लौटकर आया।

३९. गीत महाराजा बलवंतसिंघ रतलाम रौ

व्है व्है खीरोद हीलोळां पंगी त्रिलोक प्रचारां हकै,
वकै वेग पारां डकै पारावार वूंत ।
ढूकौ दैण चाळै यूं पहाड़ हेम धारा ढकै,
संचैगारा संकै वारा अंके तूं वळूत ॥१॥

लाखां में सुबोल दूरा ओक ओक लागै,
सूरां लोकां लोक लागै कीरती प्रसार ।
रोक लागै कीधा पूरा मादीलां मीढरां रुपै,
ओहि भोक लागै भूरा वादीला उदार ॥२॥

काट तीन तेण नूं विधाता हेम खेल कीधौ,
ऊगां गैल कीधौ अहीफैण नूं ऊताळ ।
आढ़ फैल कीधौ जोस जेण नूं अैकला चाखै,
दैण नूं न सैल कीधौ टेकलां देवाळ ॥३॥

---

३९. गीतसार—उपर्युक्त गीत रतलाम के महाराजा वलवंतसिंह राठौड़ पर रचित है। गीत में वलवंतसिंह की उदारता के कारण समुद्रों के उस पार विदेशों तक में फैली कीर्ति का वर्णन किया गया है। वलवंतसिंह अपने समय के राजाओं में सर्वाधिक चर्चित दानी और उदार राजा गिना जाता था।

---

१. खीरोध—क्षीरोध, समुद्र। हीलोळा—हिलोरें। पंगी—कीर्ति। प्रचारां—प्रचार करती, फैलती है। हकै—हाक लगाती, चलती है। वकै—बोलती है। डकै—उछलती कूदती। पारावार—पार निकलती। ढूकौ दैण—देने लगा। पहाड़ हेम—स्वर्ण गिरि। ढकै—छिप जाता है। संचैगारां—संग्राहक, कृपण। संकै—शंकित होते हैं। वळूत—महाराजा वलवंतसिंह।

२. ओक ओक—घर घर। प्रसार—फैलाव। मादीलां—मदमस्तों। मीढ़रां—बराबरी वालों। भोक—शाबाशी। वादीला—शौकीन, हठीला।

३. हेम—स्वर्ण। ऊगां—उदय। गैल—पीछे, राह। अहीफैण—अफीम। सैल—पहाड़ टेकला—प्रणधारी, टेक रखने वाला।

मण दूजा अंगौटै विलाली रीत जंग माझी,
रही खाली अँण दूजा देसोतां मरौड़ ।
हींठा सौभा नैण दूजा मिचाय पंगुळी हाली,
रैण दूजा झाली तैंह अंगुळी राठौड़ ॥४॥

— महाकवि सूरजमल मीसण रो कह्यौ

४. मैंण–कामदेव । अंगोटै–अंगकी आकृति । विलाली–उदारता की, रसिकता की । अँण–घर । देसोतां–राजाओं । मरौड़–एँठ । हींठा–नीचे नमे हुए । मिचाय–बंद करवा कर । पंगुळी–कीर्ति । हाली–चली । रैण–रतनसिंह । झाली–पकड़ी, धारण की ।

---

४०. गीत महाराजा बलवंतसिंघ रतलाम रौ

साजां सुरंगां जलूसां कीधी सुघाटां सहायजादी,
पंगी धायजादी गढ़ां काटां पैलै पार ।
पातां सवी गढ़ास लछेरी रीझां पायजादी,
सायजादी दीधी भूरा हेड़ री सिंगार ॥१॥

४०. गीतसार–उपर्युक्त गीत रतलाम के राजा बलवंतसिंह राठौड़ की दानवीरता पर कहा गया है । गीतनायक ने गीतकार को दान में एक उत्तम कोटि की घोड़ी दी थी । कवि ने उस घोड़ी की प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह संगीत के तालों पर नृत्य करने वाली, पवन की तरह सवेग चलने वाली, बानर की भाँति कूदने वाली और चित्रों में चित्रित की जाने जैसी सुन्दर आकृति वाली है ।

१. साजां–सजावट, साज सज्जा में । सुरंगी–विभिन्न सुन्दर रंगों । जलूसाँ कीधी–उत्सवों के लिए सजाई हुई हो जैसी । सुघांटां–सुन्दर अंगों वाली । पंगी–कीर्ति । धायजादी–जानेवाली । पैलै पार–उस पार । पातां–कवियों को । लछेरी–लक्ष्मी–सी । रीझां–रीझ मौज से । पायजादी–प्राप्त की जाने वाली । सायजादी–शाहजादी । भूरा–उदार और वीरत्व का विशेषण । हेड़–समूह, अश्व समूह की ।

गजेन्द्रा वयानां मोर जचेरी अछैरी गातां,
सिखंडां तछेरी ग्रीवा गछेरी समाज ।
ताती झाळ पूळा नाळ संगीतां नचेरी ताजा,
राजा दीधी हेतवां वछरी वाजराज ॥२॥

सवेग वाग में मागां दैत री समीर सोभा,
फाळ में लंगूर रा पाछा दैत री फैराव ।
काठीवाड़ा खेतरी तयारी लूमझूमां कीधी,
हियारा हेत री तैं समापी हैराव ॥३॥

उरंगी बाजोट चंगी सरारा भुजंगी याळां,
भैचक्के ताव में डारां कुरंगी भूळंत ।
लेजावे माहुतां छोगा जंगी हौदां झांप लेतां,
विडंगी अेरसी दैतां झोकरे वळूत ॥४॥

---

२. वयानां–वर्णनों । मोर–पीठ । जचेरी-जचती, शोभती । अछेरी-अच्छे । गातां–गात्र की । सिखंडां–मोर पक्षी । तछेरी-तक्षकी, तत्क्षणी । ग्रीवा-गर्दन । गछेरी–द्रुत गामिनी । ताती–तेज, त्वरित । झाळ पूळा–महा क्रुद्ध, अग्नि में डाले हुए पूले जैसी । नाळ–पैरों के नीचे जड़ा जाने वाला लोहे का उपकरण, टाप । नचेरी–नाचने वाली । हेतवां–प्रिय जनों को, हितचिंतकों को ।

३. वाग-लगाम । मागां–मार्गों । फाळ–छलाँग, कूदान । दैतरी–देने वाली । खेतरी–क्षेत्र की । लूमां झूमा–आभूषणादि लटकनों से सज्जित । हेतरी–प्रीति की । समापी–सर्मपित की । हैराव–घोड़ी ।

४. उरंगी-छाती । भुजंगी–सर्पिनी । यांळां–अयालों की, गर्दन के केशों वाली । भै चक्के–भय चकित । डारां–मृग समूह । कुरंगी–मृगी । माहुतां–महावतों के । छोगा–सिर की पगड़ियों का तुर्रा । झांप-उछलने का भाव । विडंगी–घोड़ी । अेरसी–ऐसी । झोकरे–वीर, वाह वाही । वळूत–राजा बलवंतसिंह ।

कीधाँ आगी सतावी सावात सोर कळा कांटे,
आठवां सफीलां फाटे फेंट में उमंग।
चौजां गेंद वहांतहां उलट्टां पलट्टां चालै,
पव्वा वाळे गुणां सांटै वरीसी पमंग ।।५।।

धीमां सैलां सुभावां असीला बानां धरीतीरे,
चावाँ फरीतीरे हंसां पजोवै चढ़ांण ।
तडां वे वे भडज्जां कदम्मा भरीतीरे तोफां
आच पल्ला परीतीरे यूं चीतीरे उडांण ।।६।।

छेक में तड़च्छी मच्छी जौर की लखावै छंद,
सूमां धू निहावां नाळां ठौरकी सनेम।
लड़ी तूटी हिंडोर की पूरपट्टी लीधां ।
जांणे छूटी जौर की गुलाल मूंठी जेम ।।७।।

---

५. आगी–आगे । सतावी–शीघ्र । सावात–सुरंग । सोर–बारूद । सफीलां–दीवारें । फेंट में–टक्कर से । चौजां–मौज, आनन्द, उमंग । उलट्टां पलट्टां– उलट पलट, फेर बदल । पव्वा वाळे–राजा पर्वतसिंह के राजा बलवंतसिंह । गुणां–गुण, काव्य प्रशंसा । सांटै–परिवर्त्तन में । वरीसी–बख्शी । पमंग–घोड़ी ।

६. सैलां–सैर सपाटे के समय । असीला–सुशील । धरीती रे–रखती, धारण करती । चावां–चाह, प्रसिद्धि । फरीती रे–फिरने के । हंसां–हंसों । पजोवै–पराजित करे, वंधित करे । चढांण–सवारी, बढ़ती । तड़ां–दल, पंक्ति । वे वे–दोनों । भड़ज्जां–घोड़ों । भरती रे–चलते, चलते । तोफाँ–उपहार, तौफः । पल्ला–मंजिल तक पहुँचने, दौड़कर जाने । चीती रे–चीता नामक हिंस्र जन्तु । उडांण–उड़ने, तेजी से उछलने ।

७. छेक में–दौड़ने में साथ वाले को पीछे छोड़ जाने का भाव, आगे बढ़ने वाला । तड़च्छी–शरीर को उछालने में । मच्छी–मछली । लखावै–आभासित होती है, जान पड़ती है । छंद–कुतूहल, प्रदर्शन में । सूमां–कृपणों के । धू–सिर । निहावां–प्रहारों । नाळां–पदचाप, टाप । ठौर की–आघात की ध्वनि । लड़ी–लड़, झूमक । हिंडौर की–झूले की । पूर पट्टी–पूर्ण वेग से दौड़ते । छूटी–खुली, फेंकी गई । मूंठी–मुष्टिका ।

वधै आव जावा कावा नासी वजावै वंसी,

पंछी धावा हुलासा री छजावै प्रकास ।

आरोहां अपार हूंत आसारी तरंग आंणै,

ब्रवी राव मारू रांन खासा री ब्रहास ।।८।।

बीजे पदम्मेस लागै लंकरै उदार वापो,

आधार आडा अंकरै अभंग ।

दूजा छत्रधारी कै चित्रांमां ज्यूंहीं धार देखै,

श्रीहथां आचार लेखे ऊवारी सुरंग ।।९ ।

---

८. वधै–आगे वढ़े । कावा–सीधी दोड़ती हुई तुरन्त दांयें-वांयें मुड़ने । नासी–नासिका । वंसी–वांसुरी, मुरली । धावा–धावन, चलने । छजावै–शोभा देती । आरोहां–सवारी, सवारों । आसारी–उत्तम कोटि की शराव, आसव । ब्रवी–प्रदान की । ब्रहास–घोड़ी ।

९. पदम्मेस–राजा पद्मसिंह ने । लंक रै । लंका के, स्वर्ण के, दान । आडा अंक रै–अवरोध के, भाग्य के वंधन के, वेहद । अभंग–अखंड, वीर । चित्रांमां–चित्रों में, भित्ति चित्रों में । लेखे–हिसाव, लिए । ऊवारी–रक्षा की, वचाई ।

१४. गीत गजगत राठौड़ बल्लू चांपावत रौ

गजगत गहगड़ी रे, अंबर हूं अड़ी; चित वलभद्र चडी रे, वरवा बड़ वड़ी।
वड़ वड़ी टोप अनोप वीरत रूप रे खग राखड़ी।
पाटंवर घाघर घरर पाखर जरद कांचु तन्न जड़ी ।।
कट मेखळा जमदाढ़ किरमर कांम कांमत कामणी।
नांखती वाण कटाछ नयणे ओप सावळ नख अणी ।।
खटतीस सज सिणगार सोळह हाथ चीरक हाथळां।
किरमाळ वरमाळ करगह हसत दंत मोताहळां ।।
किरमाळ री वरमाळ करगां हींस हैंमर हड़वड़ी।
वळवंत वरिवा वीन वळभद्र अरस लागो ऊपड़ी ।।१।।

---

४१. गीतसार—उपर्युक्त गीत राठौड़ वीर वल्लू चांपावत राठौड़ पर रचित है। बल्लू ने नागौर के राव अमरसिंह के शव को प्राप्त कर आगरा में शाही सेना से लड़ाई की थी। गीत में युद्ध का विवाह के साथ रूपक बांधा गया है। युद्धोपकरणों टोप, कवच, कटार, तलवार, भाला आदि आयुधों की आघात क्रियाओं को रखड़ी, कटिमेखला, नयन-कटाक्ष और वरमाला आदि की क्रियाओं में घटित किया गया है। अरि सेना को नायका बनाकर यह वर्णन किया गया है।

---

१. गजगत—डिंगल का गीत विशेष। गहगड़ी—घनी गमक। वरबा—वरण करने के लिए। खग—तलवार। राखड़ी—रखड़ी नामक आभूषण। पाटंवर—वस्त्र। घाघर—लहंगा। पाखर—प्रक्षर, कवच। जरद—जिरह बख्तर। कांचु—कंचुकी। जमदाढ़—कटारी। किरमर—तलवार। नांखती—गिराती, करती। सावळ—भाला। किरमाळ—तलवार। करगह—हाथ में पकड़ कर। मोताहळां—मौक्तिक। करगां—हाथों में। हींस—अश्व ध्वनि। हैंमर—श्रेष्ठ घोड़ा। वीन—वर, दुलहा। अरस—आकाश के। ऊपड़ी—उमड़ कर।

घरघेर घूमती रे, रमवा रिण रती, मारू महपती रे परणण पीनता।
पीनती परणण वीन पौढ़ो वदन विलखै विगसती।
अत कोड आतस धमंकतै उर मछर मलफै मुळकती ।।
घण थाट गयंदां घाट गुराट प्रकट गात प्रचंड पूढळ यूं।
काय नेजा धुज पताखां विमळ वैणी मंड यूं।
गजघंट नेवर रौळ पै गळ हार चीर सनाहड़ां।
कंठसिरी वांधी कंठ सोभा वयण लोयण वंकड़ा ।।
सुरधमळ मंगळ राग सिंधु सखी अपछर सींघणी।
सुरताण घड़ गोपाल संभ्रम वरण आवै वीनणी ।।२।।

गहमह गज दळां रे, वळ वळ वीजळां, वळभद्र सवळा, भामी भुजवळां।
भुजवळां भामी वीन वळभद्र विढ़ण ऊठी वड़ वड़े।
आदीत दुवादस वदन ऊगा, मौड़ जस मसतक जुड़े ।।
जोधार रिड़मल अनै जोधा अभंग जानी आंवळा।
सेसरा फटै लाग समहां अखत कैंवर ऊजळा ।।
आरती कुंता थाळ ओढ़ण लोय दीपक लोहड़ां।
ऊतरै माथा घड़ां ऊपर विस वखत वड वेहड़ां ।।
आंमहीं सांमहीं समळ आवै वाज त्रांबक गड़ियड़े।
वंगाळ भड़वा लाल वरणण रहस तोरण रण चडै ।।३।।

---

२. रमवा–रंमण करने, क्रीड़ा करने। रिणरती–युद्ध रूपी सुन्दरी। मारू–पति, राठौड़। पीनती–क्षीण कटि। पौढ़ो–प्रौढ़। विगसती–विकसित। कोड–हर्ष, उत्साह। आतस–अग्नि, तोपें। मछर–मात्सर्य। मलफै–छलांगे भरकर। मुळकती–स्मित हास्य। घण-घने। थाट–समूह, सजधज। गयंदा–हाथियों के। गुराट–भारी। पूढ़ळ–प्रौढ़ा। नेजा–भाला, निशान। धुज–ध्वज। रौळ–नाद। सनाहड़ां–सन्नाह, कवच। वयण–वचन। लोयण–लोचन, नेत्र। घड़–सेना। संभ्रम–पुत्र, समान भ्रांति देने वाला।

३. गहमह–भीड़। वळ वळ–पुनः पुनः। वीजळां–तलवारें। भामी–न्यौछावर। विढ़ण–लड़ने। आदीत–आदित्य, सूर्य। वदन–मुख। ऊगा–उदय हुए। मौड़–मुकुट। जस–यश। अभंग–वीर। जानी–वराती। आंवळा–सजे हुए। अखत–अक्षत। कैंवर–शर, वाण। कुंता–भालों से। ओढ़ण–ढाल। लोय-दीपक–दीपक की लौ। लोहड़ां–शस्त्रों। घड़ा–घट, शरीर। वेहड़ां–द्विघट। आंमहीं-सांमही-एक दूसरे के सम्मुख। समळ–चील, रणदेवी। त्रांवक–नगाड़े। गड़ियड़े–गड़गड़ाहट की ध्वनि। वंगाळ–यवन।

पंखरण पळचरी रे, पंखा पुड़ धरी, कमंधज केहरी रे, अबरी घड़ बरी।
वर सोह दूलह बलु बरियौ असंभ मांढो आगरे।
विपरीत साहो काळ वेळां बिसम गोधम वापरे।।
हुय वेदमय धुन कळळ हूंकळ रिख्ख नारद रण रमै।
तैतीस करोड़ त्रिगुणत्र सगत ब्रम हरि हर विभ्रमै।।
पिंड पड़ होम हुबियो धोम पूरतै आभ धुबियो ऊपरां।
चापड़े चंवरी कमंध चढ़ियौ आय पूंखैं अपछरां।।
फिर चढ़ै फौज सिंघार फेरा मार कै गिर मंडळी।
दुलहणी परणी ऊजळे दिन साहरी घड़ सांमळी ।।४।।
धिन धिन धूहड़ा रे, परणी पर घड़ा, तूटे अजड़ां रे, छटे छेहड़ा।
छेहड़ा छूटा अजड़ तूटा पिलंग धड़ पुड़ पाथरे।
श्रोणहर पाधर समध समधर अंकमाळा असमरे।।
गळ बांह मिळिया होय गळोबळ भाव दाव भयामणां।
रिण रंग जंग अनंग रचियौ वींद धी नवेढ़ीमणां।।
राठौड़ लाडो सेज रिण भुय सूरतन सुहागणी।
रिण पिलंग मांणी रहस रूके किलम धर चतुरंगणी।।
छवतीस हार सिंगार छूटा कसण जूसण कचुवा।
चामीर हीर गयंद चंचळ जोध पड़िया जुजुवा ।।५।।

---

४. पंखण–पक्षी। पळचरी–मांसभक्षी। पुड़–पुट पृथ्वी। अबरी घड़–अविवाहित सेना, बिन लड़ी फौज। बरी–विवाही। असंभ–असंभम, भयावह। माँढ़ो–विवाह मंडप। साहो–मुहूर्त्त, विवाह दिवस। काळ वेळां–मृत्यु समय। गोधम–झगड़ा वापरे–व्यवहृत, होना। कळळ–युद्ध का कोलाहल। हूंकळ–घोड़ों की हिनहिनाहट। रिख्ख–ऋषि। त्रिगुणत्र सगत–नव दुर्गाएँ। ब्रम–ब्रह्मा। हरि–विष्णु हर–शिव। विभ्रमै–अचंभित। पिंड–शरीर। होम–यज्ञ। हुवियो–प्रज्ज्वलित। धोम–धूम्र। पूरतै–पूर्णतः, समस्त। आभ–आकाश। धुवियो–प्रज्वलित हुआ। चापड़े–युद्ध। पूंखै–स्वागत करने। सिंघार–शृंगार, संहार। फेरा–भांवरे। परणी–विवाही। ऊजळे दिन–धोले दिन। सांमळी–श्यामल, सम्मुख।

५. धूहड़ा–धूहड़ वंशीय, बल्लू। पर घड़ा–दूसरे की सेना। तूटे–टूटना। अजड़ां–तलवारें। छेहड़ा–घूंघट, छोर। पाथरे–बिस्तर। श्रोणहर–रुधिर। अंकमाळा–क्रोड़, गोदी। असमरे–तलवारों की। गळबांह–कंठालिंगन। गळोवळ–प्रगाढ़ आलिंगन। भयामणाँ–भयानक। अनंग–कामदेव। वींद–दुलहा। धी–कन्या। नवेढीमणा–नवोढ़ा। लाडो–दुलहा, प्यारा। रिण भुय–युद्ध भूमि। सूरतन–वीरता। सुहागणी–सौभाग्यवती। मांणी–रति क्रीड़ा की, भोगी। रूके–तलवारों से। किलम–मुसलमान। चतुरंगणी–सेना। कसण–कसनें। जूसण कंचुवा–कवच रूपी कंचुकी। चामीर–स्वर्ण। हीर–हीरे। गयंद–हाथी। चंचळ–घोड़े। जूजुवा–जुदा जुदा।

पात सावज संमळा रे, पळचर प्रघळा,
मांगण मांगण मोकळा रे, भोजन भटकळा।
भटकळा सबळा हुवा भेळा जूथ भैरव जोगणी।
नहराळ पंखी अनै निसचर समळ सावज साकणी॥
वैताळ खेतर चीर चेड़ा खेचर भूचर खेचरां ....
पोखिया पात अनेक पळचर करग धन कमधज राज।
पतसाह मांढ़ै वड़ा परणी त्याग आतम आपीयौ।
सिस अनै सूरज हुवा साखी दायजो जस दीपियौ।
भेदियौ सूरज मंडळ बळभद्र जोत मदिर जोड़ियौ।
क्रम बंधण जामण मरण कंकण छेतरे जुग छोड़ियौ॥ ६॥

केसोदास गाड़ण रौ कह्यौ

---

६. सावज–शावक। संमळा–चील्ह। पळचर–गृद्धादि मांसाहारी पक्षी। प्रघळा–अत्यधिक। मांगण–याचक। मोकळा–बहुत। भटकळा–मांस, मांस प्रिय योद्धा। भेळा–एकत्रित। जूथ–यूथ, समूह। नहराळ पंखी–नखों वाले पक्षी। समळ–चील्ह। शाकणी–शाकिनी, प्रेतनी। वैताळ खैतर–वेताल और क्षेत्रपाल। चीर-चेड़ा–भूत प्रेत, शिशु प्रेत। खेचर भूचर खेचरां–आकाश व भूमि पर विचरण करने वाले राक्षस-राक्षसनी। पोखिया–पोषण किये। पात–पात्र, कवि। करग–हाथ। कमधज–राठौड़वंशीय, गीत नायक बल्लू। मांढ़ै–बलात् मंडप में। आपीयौ–अर्पित किया। सिस–शशि, चन्द्र। दायजो–दहेज। जोत–ज्योति। जामण–जन्म। छेतरे–रणभूमि में, स्मशान में, संहार करके।

४२. गीत ठाकर बल्लू चांपावत हरसोलाव रौ

धड़ लाकड़ बळै ढळै हंस धूंवौ, झाळ हुवौ रिणताळ झलू।
विलगौ खाग अभाग बैरीयां, बळती आग ब्रजाग बलू॥१॥

---

४२. गीतसार–उपर्युक्त गीत मारवाड़ के हरसोलाव ठिकाने के ठाकुर बल्लू चांपावत पर कथित है। वीरवर बल्लू ने आगरा में नागौर के राव अमरसिंह के मारे जाने पर शाही सेना से युद्ध कर वीरगति पाई थी। गीत में लिखा है कि योद्धाओं के शरीर रूपी लट्ठ जलने लगे। प्राण वायु रूपी धूम्र उड़ने लगा। रण क्षेत्र में अग्नि ज्वालामय हो उठी। वैरियों के लिए दुर्भाग्य बना वह वीर बल्लू वज्राग्नि के तुल्य प्रकट हुआ।

---

१. धड़–कबंध, विना सिर के शरीर। लाकड़–लट्ठ, ईंधन। बळै–जलते हैं। ढळै–मरे हुए, निकले हुए, उड़ते हुए पड़ाव डाले हुए। हंस-प्राण। धूंवौ-धूम्र। झाळ–अग्नि। रिणताळ–समर भूमि, रण वेला में। झलू–दायित्व लेने वाला, प्रज्ज्वलित करने वाला। विलगौ–लगा, संलग्न हुआ। खाग–खड्ग। अभाग–दुर्भाग्य। बळती–ज्वलित। ब्रजाग–वज्राग्नि।

ऊपर सत्र पडंतां ईंधण, घ्रत रत दरड़ पूर घणौ।
पौरस झाळ काळ पंडवेसां, तगस भट कीयौ पाल तणौ ॥२॥
मेछां घड़ां अभिनमौ मांडण, बाळण कजबिलगौ सबळ।
बटका व्है कटका बाणांसां, झटका बटका सोम झळ ॥३॥
हाथां मछर केवांण हींचाया, सुरताणां माथै अर सूळ।
असुरां काठ थाट आवटीयौ, मंगळ जद करीयौ कळमूल ॥४॥

केसवदास गडण रौ कह्यौ

---

२. सत्र–शत्रु। पडंतां–गिरते। घ्रत–घृत। रत–रक्त, रुधिर। दरड़–वेग से गिरने से उत्पन्न ध्वनि। पूर–पूर्ण, डालना। घणौ–घना। पौरस–पौरुष। काळ–मृत्यु। पंडवेसां–बादशाहों का, मुसलमानों का। तगस–अग्नि। पाल तणौ–ठाकुर गोपालदास तनय बल्लू।

३. मेछां–यवनों की। घडां–सेनाओं। अभिनमौ–अभिनव, नूतन। मांडण–गीत-नायक का पूर्वज राव मांडण। बाळण–दग्ध करने के। कज–लिए, कार्य। सबळ–सबल, समर्थवीर। बटका–टुकड़े। कटका–सेना, कटकट की ध्वनि। बांणांसां–तलवारों के। झटका–प्रहार। सोम–अग्नि।

४. मछर–मात्सर्य, मदमस्त। हींचाया–प्रहार कर मारे, चोटें देकर रण से भगा दिये। सूळ–शल्य, त्रिशूल। असुरां–मुसलमानों। काठ–काष्ठ, लकड़ी। थाट–सेना। आवटीयौ–तप्त होकर उछलने लगा। मंगळ–अग्नि। कळमूळ–युद्ध।

४३. गीत ठाकर लालसिंह चांपावत हरसोलाव रौ

बागी काळताळी निटूंठी गनीमां सीस तूठी बीज,
ऊघड़ै कपाळी नेत्र ऊठी प्रळै आग।
रूठी थाटां आसुरां भखेवा महाकाळी रूप,
खपाटां विछूटी रायजादा वाळी खाग ॥१॥

---

४३. गीतसार–ऊपर लिखित गीत मारवाड़ के हरसोलाव के ठाकुर लालसिंह चांपावत की युद्ध वीरता से सम्बन्धित है। लालसिंह ने महाराजा विजयसिंह के पक्ष में मरहठों से युद्ध कर शौर्य प्रदर्शित किया था। मरहठा सेना की पराजय का गीत में उल्लेख हुआ है। गीतकार ने गीतनायक की तलवार को विद्युत, शिव के तृतीय नेत्र की प्रालेय अग्नि तथा महाकालिका के रूप में वर्णित की है।

---

१. बागी–बजी। काळताळी–यमराज की समाधि, शिव की समाधि, मृत्यु की ताली। गनीमां–वैरियों के। तूठी–टूट कर गिरी। बीज–विद्युत। ऊघड़े–खुले। कपाळी नेत्र–शिव का तृतय नेत्र। प्रळै आग–प्रलयाग्नि। रूठी–रुष्ट हुई। थाटां–सेनाओं, समूह। आसुरां–दैत्यों, असुर प्रकृति वालों का। भखेवा–भक्षण करने। खपाटां–म्यान से। विछूटी–छूटी, चाली। खाग–तलवार।

वाज घाई त्रमाटां विलागौ वोम तेण वेळां,
साकळां बिछूटे थाई घड़ा करी सींघ ।
भाई भड़ां हाकळे ठाकरां अग्र वधे भूरै,
साकुरां उठाई वागां दूजे हरीसींव ।।२।।

जटाधारी हुकम्मा विछूटौ वीरभद्र जाणौ,
कनां रूठौ कंधारी सुथंभा नागकेत ।
विजा छत्रधारी चाड छतीसां आवधां वूठौ,
खांन हूंता गिरव्धारी जूटौ वीरखेत ।।३।।

खटै फतै अछूती वड़ाळो खाग थटै खेत,
भड़ां लालो भाळियो तारीफ रटै भाण ।
काळचाळौ मंड मारहट्टां वे वे टूक कटै,
रूक सुरत्तेसवाळौ आछटै आराण ।।४।।

---

२. वाज–ध्वनित हो । घाई–चोट । त्रमाटां–नगाड़ों की । विलागौ–जा लगा । वोम–आकाश । तेण वेळां–उस समय । सांकळां–जंजीरें । थाई–हुई । घड़ा करी–गज सेना । सींघ–नाहर, सिंह । भड़ां–योद्धाओं । हाकळे–ललकारे, प्रोत्साहित करे । अग्र वधे–आगे वढ़कर । भूरै–सिंह जैसे वीर, वब्बरसिंह । साकुरां–घोड़ों की । वागां–लगामें । दूजे–दूसरे ।

३. जटाधारी–शिव । हुकम्मा–आज्ञा से । कनां–किंवा, अथवा । रूठौ–नाराज हुआ । कंधारी–कंधार देशीय, स्कंधधारी । सुथंभां–सुन्दर स्तंभों से । नागकेत–गजराज (?) । विजा–विजयसिंह । चाड–सहायता । आवधां–शस्त्रों । वूठौ–बरसा, प्रहार, झड़ी लगाने लगा । खांन–खानूजी मरहठा । हूंता–से । जूटौ–युद्ध लड़ा ।

४. खटै-प्राप्त करे । खाग-तलवार । खेत–क्षेत्र, रणक्षेत्र । भड़ां–योद्धाओं । लालो-लालसिंह । भाळियो–दिखाई दिया । रटै-उच्चारण करता है । भाण-सूर्य । काळचाळौ–युद्ध । मंड–रचकर, ठानकर । मारहट्टां–मरहठों से । वे वे–दो दो । कटै–कटे, टुकड़े हुवे । रूक–तलवार । सुरत्तेसवाळौ–ठाकुर सूरतसिंह वाला, ठाकुर लालसिंह । आछटै-प्रहार करता है । आराण-युद्ध, लड़ाई ।

चौड़ै धाडे लेगयौ सतारा दळां छाती चाढ़,
सामध्रमी नाहरौ जैतवारां सीम।
छांहगीर चम्मरां नगारां नेजां छोड छोड,
गया हईवारां हुवे हैरान गनीम ॥५॥
घोड़ा भड़ां थाट लींधां ध्रमाड़े वयंडां घड़ा,
राजा चाड चांपौ फतै पावै राड़ राड़।
दूजा वलू तणी तेग भट्टां ताप छट्टा देखे,
मारहट्टा कदेई न आवै मारवाड़ ॥६॥

सुरता सांदू सीऊ रौ कह्यौ

---

५. चौड़ै धाड़े-दिनदहाड़े। सतारा—पूना सतारा की। दळां-सेनाओं को। छाती चाढ़-सामने चढ़ाकर, मुंहआगे से पीछे धकेलकर। सामध्रमी-स्वामिधर्म। नाह रौ-स्वामी का। जैतवारां—विजय वेला की, विजयों की। सीम-सीमा, हद। छांहगीर-राजचिह्न विशेष, छत्ता। चम्मरां-चमरों। नेजां-निशान। गनीम-वैरी।

६. थाट-समूह, ठाठबाट। ध्रमाड़े-चोटें, संहार करे। वयंडां घडा—गजसेना। चाड-मदद। चांपौ—चांपावत शाखा वाला ठाकुर लालसिंह। राड़ राड़-प्रत्येक लडाई में। वलू—गीतनायक का पूर्वज ठाकुर वल्लू चांपावत जिसने आगरा के किले में राव अमर सिंह राठौड़ के मारे जाने के वाद शाही सेना से लड़कर वीरगति प्राप्त की थी। तेग-भट्टाँ-तलवारों के प्रचण्ड प्रहार। ताप-आतप, आंतक की। छट्टा-शोभा। कदेई-कभीभी, फिर कभी। न आवै—नहीं आयेंगे, फिर मारवाड़ में आक्रमणार्थ पैर नहीं रक्खेंगे।

---

४४. गीत ठाकर बखतसिंह री जुद्ध वीरता रौ

धरे वाग खगतेस धारे नजर ऊधरी, अखरी परी कज लोह आडे
तोरियां फौज सारी अगर वध तुरी, लखै घड़ कंवारी वरी लाडे ॥१॥

---

४४. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर बखतसिंह की वीरता तथा युद्ध मृत्यु से सम्बंधित इसमें जोधपुर और जयपुर के मध्य लड़े गये युद्ध का वर्णन है कि ठाकुर बखतसिंह ने स्वामी का हित साधते हुए वीरगति प्राप्त की। गीतकार ने गीत के वर्णन क्रम में विवाह की क्रियाओं का निर्वाह किया है।

---

१. वाग-घोडे की लगाम, प्रेम। ऊधरी-ऊँची, वड़प्पन की। परी कज-परायी के लिए, अप्सरा के लिए। लोह आडे—तिरछे प्रहारों। तोरियां-हांकने पर, चलाने पर। सारी-समस्त। अगर-आगे। वध-वढाकर। तुरी-घोड़ी, घोड़ा। घड़ कंवारी-विना लड़ी सेना। वरी-विवाही। लाडे—दूल्हे ने।

करे कंठ गान मंगळ अछ्छर कांमणी, भणी रुच वेद रिख अरक भाळे ।
चढ़ी सावे पिसण सैन चतुरंगणी, अणी परणी कमंध भूप वाळे ।।२।।
चीर पचरंग धज सार काजळ चखां, पछट वह सुमुख इक अखत पूजे ।
कछ्वघड़ दुलह थई मौड़ कस, दुलह व्याही दुजड़ कले दूजे ।।३।।
साम रौ रिजक सीले पछट सात्रवां, रूक उरवस अछ्छर नेह रसियौ ।
पतंग भेदे मंगळ साहजादौ पनौ, वनी लीधां वनौ सुरग बसियौ ।।४।।

लाल सांदू रौ कह्यौ

---

२. अछ्छर-अप्सरा । कांमणी । भणी-वाचनकिया, पढ़ी । रुच-ऋचाएँ । रिख-ऋषि, नारद । अरक-सूर्य । भाळे-देखते हुए । सावे-विवाह का मुहूर्त्त । पिसण-शत्रु । चतुरंगणी-चारों अंगों वाली । अणी-पंक्ति । परणी-विवाही ।

३. पचरंग-पांचरंगों की । धज-ध्वजा । सार-लगाना, लोहा, शस्त्र । चखाँ-नेत्रों । पछट-प्रहार, पछांट । अखत-अक्षत, अखंडित चावल । कछ्व घड़-कछ्वाहों की सेना । थई-हुई । मौड़ कस—मुकुट बाँधकर । व्याही—शादी की । दुजड़-तलवार । कले-कल्याणसिंह ।

४. साम रौ-स्वामी का । सीले-सफल करके । पछट-पछाड़कर, शस्त्रों की चोटें देकर । सात्रवां-शत्रुओं को । रूक-तलवार । उरवस—उर्वशी । अछ्छर-अप्सरा । नेह-स्नेह,

---

४५. गीत ठाकर भभूतसिंघ पोकरण रौ

वाळा हूंकळै हजारी वाज भड़ां रा समाज बेस,
मैंगळां वणाव भारी फवै तोपां माळ ।
सामानां अखूट किलो साझियौ अनोखै सूत,
थारी वेळां वाजियौ भभूत भलां थाळ ।।१।।

---

४५. गीतसार—ऊपरांकित गीत मारवाड़ के ठिकाने पोकरण के भभूतसिंह और उनके ठिकाने के मुख्यालय पोकरण दुर्ग की सुदृढ़ता, सामरिक उपयोगिता तथा बनावट की सराहना पर कथित है । पोकरण की शहर पनाह, बुर्जे, खंधकें और दुर्ग के रक्षक सैनिकों का वर्णन किया है ।

---

१. हूंकळै—कोलाहल करते हैं, जोश में भरे आवाजें करते हैं । वाज—घोड़े । भड़ां रा—योद्धाओं का । मैंगळां—हाथियों का । फवै—शोभा पाते हैं । तोपों की पंक्तियाँ । अखूट—अपार । साझियौ—सजाया हुआ । सूत—विचार, भाँति । वेळां—समय । वाजियौ—बजाया गया ।

सेरपन्ना भुरज्जाळां परखा संगरां सोभा,
बंदूकां जंजाळां न्हाळे फाटे खळां वाक ।
पाखरां सन्नाहां तुरां सूरमां सुभट्टां पांण,
धड़क्के अैवाक सिद्धां पड़ै तूझ धाक ।।२।।

सूरां मौड़ रिड़मल्लां दूसरा सवाईसींघ,
अंगेर्ज न दाव दियां धाराण ऊखेळ ।
खागां वेधनी न आवै जे सूं करे खांत,
मेदनी कांकड़ां वाळा राखे तोसूं मेळ ।।३।।

सालमेस नंद चांपा ऊजळा सुभावां सोहै,
राई तन्ना वड़ां ज्यूं ठिकाणां सामराथ ।
ओठीवारां वणै जदी ध्राव मां औसाप असौ,
नीपणा ऊवारै सदा धिनौ पौढ़ीनाथ ।।४।।

—खेतसी बारहठ मथाणिया री कह्यौ

---

२. सेर पन्ना—शहर पनाह । भुरज्जाळां—बुर्जे । परखा—परकोटा । संगरां—युद्धों की । जंजाळां—ऊँटों पर रख कर चलाई जाने वाली तोपें । न्हाळे—देखने पर । फाटै—विदीर्ण हुये । वाक—मुँह । पाखरां—गजाश्वों के रक्षा कवच । सन्नाहां—कवचों । पांण—बल । अैवाक—समाधिस्थ, मौन । सिद्धाँ—सिद्धों । धाक—रौब, आतंक ।

३. अंगेजें—स्वीकार करे । दाव—दबाव । ऊखेळ—युद्ध । वेधनी—युद्धार्थ । जे सूं—जिससे । खांत—विचार, गौर । कांकड़ां वाळा—सीमावर्ती, पड़ौसी ।

४. सोहै—शोभापाते हैं । राईतन्ना—राजवंशीय । सामराथ—समर्थ । ओठीवारां—संकट का समय । जदी—जब । ध्रावमां—उदारता में, संहार में । औसाप—साहस, पराक्रम । असौ—ऐसा । नीपणा—चारणों को । ऊबारै—रक्षा करता है । पौढ़ीनाथ—पोकरण का स्वामी, प्रौढ़ नरेश ।

४६. गीत ठाकर लिछमणसिंघ चांपावत अड़वड़ रौ

आंटे पालटे धरारैं गोपीनाथ धूजेड़ियौ आम,
धावे अलेड़ियौ धांक चसम्मा धारैल ।
थटै द्रोह भीमेण खेड़ियौ वीदावतां थंड,
वाघ चांपौ छेड़ियौ नौहथौ बावरैल ।।१।।
हल्ले चौतरफां नाळां लुकम्मान हाथ वाळी,
सत्रां प्राणघात वाळी कराळी साचोट ।
आंटेत केहवौ छाती चढ़े लच्छा पायवाळी,
चापां छातावाळी फेंट पटैतरी चोट ।।२।।
कटै लुटै कै केवांण बागौ काटकूटौ,
केतां प्राण छूठौ पूठौ न व्है कौ औधार ।
रीठ वूठौ आवधां रिमां धू प्रळैकाळ रूठौ,
जूटौ कंठीर ज्यूं देवीसींघ रौ जौधार ।।३।।

---

४६. गीतसार–उपरांकित गीत अड़वड़ ठिकाने के ठाकुर लक्ष्मणसिंह चांपावत की बहादुरी का परिचायक है । गीतकार ने लक्ष्मणसिंह को सिंह उपमित कर गीत में उसकी युद्ध कला का चित्रण किया है । चापांवतों की भोपतोत उपशाखा और राठौड़ों की बीदावत शाखा के बीच हुई लड़ाई का गीत में उल्लेख हुआ है ।

---

१. आंटे–वैर, बदला लेने के लिए । पालटे–पलटे–पीछे लगे । धरा रैं–पृथ्वी के । गोपीनाथ–गोपीनाथ चांपावत । धूजेड़ियौ–कंपित किया । आभ–आकाश । धावे–आक्रमण, दौड़ कर । धांक–जोश उत्साह । चसम्म–नेत्रों । थटै–खदेड़ने । भीमेण–महाराजा भीमसिंह जोधपुर ने । खेड़ियौ–चलाया, भेजा । बीदावतां–बीकानेर के बीदावत सरदारों पर । थंड–समूह, सेना । चांपौ–चाँपावत । छेड़ियौ-छेड़छाड़ किया हुआ । नौहथौ-नव हाथ लंबाई वाला । बावरैल–बब्बर सिंह ।
२. हल्ले हमले में, चले । नाळां–तोपें । लुकम्मान–लुकमान । सत्रां–शत्रुओं । कराळी–विकराल । आंटेत–विरोधी, ऐंठ रखने वाला । केहवौ-कैसा । छाती चढ़ै-सामने आये, मुकाबला करे । लच्छा–लक्ष्मणसिंह । चाँपा छात वाळी–चांपावतों के मुखिया की । फेंट–टक्कर । पटैत री–सिंह की ।
३. कटै लुटै–कटे हुए धरती पर लौटते हैं । कै–कई । केवांण–तलवार । बागौ–चोटें देने लगा । काट कूटौ–मार काट । केतां–कितने ही । पूठौ–पृष्ठ रक्षक, पीछे की ओर । रीठ–प्रचण्ड प्रहार । वूठौ–बरसाने लगा । आवधां–हथियारों । रिमां धू–शत्रुओं के मस्तकों पर । रूठौ–रुष्ट हुआ । कंठीर–सिंह । जोधार–योद्धा ।

थायौ घोरां-रंम रभ खाळां चलै चमू थाटां,
भिड़े सामां उराटां दिनेस रीधौ भाळ ।
वेढ़ मेळे तुराटां भेळिया आठ होय बाटां,
लच्छे खळां खाग झाटां बिरूथे लंकाळ ।। ४ ।।

वागा तेगां ऊनग्गी भाराथ भोपतोत वीदा,
नोखै ख्याल रीघा भाण भूतेस निहार ।
देसां देसां सांभळे देसोत घणां रंग दीधा,
कीधा वैकुण्ठ रा वास श्रीराजकंवार ।। ५ ।।

—— गंगादान सांदु रौ कह्यौ

---

४. थायौ—हुआ, मचगया । घोरारंभ—घनघोर, भयानक मारकाट । रत्र—लोहू । खाळां चलै—नाले नालियों में वहता है । चमू थाटां—सैन्य समूह । सामां—सम्मुख । उराटां-छाती, हृदय, वक्षस्थल । दिनेस—दिनपति, सूर्य । रीधौ—प्रसन्न हुआ । भाळ—अवलोक कर । वेढ़—युद्ध । मेळे—मिलाकर, भिड़ाकर । तुराटां—घोड़े । भेळिया—मिलाये, शस्त्राघात करने के लिए झोंके । आठ होय बाटां—इधर उधर फैलकर । लच्छे—गीतनायक लक्ष्मणसिंह ने । खाग झाटां—तलवारों के प्रबल प्रहार । विरूथे—सेना । लंकाळ—सिंह ।

५. वागा—लड़ने लगे । ऊनग्गी—नंगी । भाराथ—युद्ध । भोपतोत—ठाकुर भोपतसिंह के वंशज, चांपावतों की भोपतोत शाखा वाले । वीदा—राव वीदा की संतान वाले, बीदावत शाखा के राठौड़ । नोखै—अनोखे, विचित्र । ख्याल—खेल, क्रीड़ा । भाण—भानु, सूर्य । भूतेस—भूतनाथ, शिव । निहार—देखकर । सांभळे—सुनें । देसोत—देशपति, राजा । घणां रंग दीधा—खूब शावाशी दी । वास—निवास ।

४७. गीत ठाकुर जोरावरसिंघ चांपावत किसारी रौ

दगौ विचारें सांवते लोक फेरियौ कमंध दोळौ,
फेटो जम्रदूत सो हेरियौ फयंद ।
टीपां लाग सिंघू काळ बेरियौ जोर सूं टोळौ,
मातारोस रत्तो सेर घेरियौ मयंद ॥ १ ॥
सोर घोर हवाई आतसां खुल्ले जोम संका,
रीठ तोपां वन्दूकां धमाई धकारीस ।
काळनाग जंगां काची रत्तीरी न लाया काई,
प्रळैकाळ रूपी चांपै सचाई पांडीस ॥ २ ॥

---

४७. गीतसार— यह गीत नागौर परगने के किसारी ठिकाने के ठाकुर जोरावरसिंह चांपावत शाखा के राठौड़ पर रचित है। जोरावरसिंह महाराजा जसवंतसिंह द्वितीय जोधपुर का कृपापात्र सरदार था। वह विनोद ही विनोद में महाराजा के कहने पर बागी हो गया था। अनेक वर्षों तक बागी रहा। अन्त में मारवाड़ के खैरवा ठिकाने के कुंवर द्वारा धोखे से मारा गया। महाराजा जसवंतसिंह जोरावरसिंह को छल से मारने के लिए खैरवा वालों पर बड़े रुष्ठ हुए। गीत में जोरावरसिंह के साहस, युद्ध-वीरता, निर्भीकता और वचन दाढ़र्य का वर्णन किया गया है।

---

१. दगौ—धोखा, छल। सांवते लोक—सामन्तगण, योद्धा लोग। फेरियौ—फेरा। कमंध—राठौड़, ठाकुर जोरावरसिंह। दोळौ—चारों ओर। फेटो—फेंट, टक्कर। जम्रदूत—यमदूत। हेरियौ—खोजने, ढूंढ़ने की क्रिया का भाव। फयंद—विकट, भयानक। टीपां लाग—तान, रागिनी का स्वर। सिंघू—सैंधव राग। टोळौ—समूह, टल्ला, टक्कर। मातारोस रत्तो—क्रोध में आरक्त हुआ। घेरियौ—घेरे में लिया। मयंद—सिंहराज।

२. सोर—बारूद। घोर—भयंकर। हवाई—आकाशी। आतसां—अग्नि, आतिश। रीठ—प्रहारझड़ी। धमाई—धमाधम की ध्वनि। धकारीस—महाकुपित। जंगां—जंग में। काची—कायरपन। रत्ती—तनिक-सा। प्रळैकाळ—प्रलयकालीन। चांपै—गीतनायक जोरावरसिंह चांपावत। पांडीस—तलवार।

हुवे हास मुनिन्द्रा अयास मगां झल हल्लै,
चंगी ग्रीध सालूळै वरंगी पंखचार।
बैठ रत्थां देवबाळा सुरंगी जैकार बोले,
धकालै ऊनंगी तेगां चल्लै ओणधार ॥ ३ ॥
केहके हयदां कै ऊभक्कै आण सूखै केतां,
अनेकां उचक्कै धावां बक्कै ओड़ ओड़।
काळीय धड़क्कै काचां तक्कै पंथ कोरा,
रोसांण अछक्कै माण मूक राठौड़ ॥ ४ ॥
चल्लै रुद्र खाळका बखाण जयो जैत चंडी,
नच्चै प्रेत बाळका पिसाच खोले नेत।
कुळां उजाळका चांपा संग्राम पालटे कांसू,
खागां प्रल्लै झाळका आछटे बीर खेत ॥ ५ ॥
धड़क्कै उरेब काचां वीर ऊघड़ेबा लागा,
केक जोधा केवाणां झड़ेबा लागा काथ।
जोर लक्खां लोक सूं अड़ैबा लागा जोम जड़ं,
भ्रसुण्डा पड़ेबा लागा अनेकां भारार्थ ॥ ६ ॥

---

3. हास—हास्य। मुनिन्द्रा—नारदादि मुनियों। अयास मगां—आकाश मार्गों। झूल—समूह। हल्लै—चले। चंगी—युवा। ग्रीध—गृद्धपक्षी। सालुळै—चली। पंखचार—पक्षी। देवबाळा—अप्सराएँ। सुरंगी—बनीठनी, । धकालै—धकेलता। ऊनंगी—नग्न। औणधार—लोहूधारा।

४. केहके हयंदा के—कई कई के। ऊभक्कै—चौंकने से। केतां—कितनेही के। उचक्कै—उछलकर जाना, कूदना। बक्कै—विक्षिप्त सदृश बोलना, बकवास करना। काळीय—कलेजा। तक्कै—ताकते हैं। रोसांण—रोषान्वित। अछक्कै—अपार, अतृप्त। माण मूक—मान प्रतिष्ठा त्याग कर।

५. खाळका—नाले खाले। जयो—जय हो। जैत—विजय। चंडी—चण्डिका। प्रेत बाळका—प्रेतों के बालक, भूत भैरव आदि। पिसाच—दैत्य। खोले नेत—नेत्र खोले, निद्रा से जगे। कुळां उजाळका—वंश उज्ज्वल करने वाले। कांसू—कैसे। खागां—तलवारों। प्रळै झाळका—प्रलयाग्नि। आछटे—प्रहार करे, वार करे।

६. उरेब—छाती। ऊघड़ेवा—उद्‌घाटित। केक—कई। केवाणां—कृपाणों से। झड़ेवा—गिरने लगे। काथ—तत्परता मे। अड़ेवा—अड़ने, टकराने लगे। भ्रसुण्डा—मस्तक, गजशुण्डदण्ड। भाराथ—युद्ध।

ओडे किल्लो खैरवे भूलोक सारे फेट आखी,
अद्र लोड़ै अजादां जगायो वेर आंण।
चाढ़ै नीर किसारी सेघणी हुवौ प्रथी चावौ,
पाड़ै भौच पछै पौढ़ै अनम्मी पीठांण ॥ ७ ॥

फैल आडम्बरां सत्रां सहेती वखेरे फौजां,
चीत वसु डंवरां वरेवा परी चाव।
सूरां लोक सिधायौ संभरा कुरांधीस साचा,
रायजादे ढुळंतां चम्मरां मारूराव ॥ ८ ॥

— वखतावर सांदू रो कह्यौ

———

४८. गीत ठाकर बखतावरसिंघ आऊवा रौ

छटीक देस देसां हवाई तवाई पड़ी छत्रधारां,
घड़ी पातसाई सीस सवाई घैधींग।
लाख बखत्तेस भूपमान री भराई तोपां,
जिकै खाली कराई बिजाई जैतसींग ॥१॥

तोड भैंसां छल्लारै ललाई जळाबोळ ताबै,
अपा सजळाई भलौ भल्लारै उमंग।
जोर राजा टल्लारै टळाई नीठ नीठ जिकै,
आवासां किल्लारै सीस बलाई अभंग ॥२॥

लाग वीर ताळियां अच्छरां आधंतरां लूंब,
झड़ै चहुहासां सूरांत्राळिया जरूर।
आईदान दूजा सोर झाळियां लगाई आभ,
पाई फतै नालियां गजाई बरांपूर ॥३॥

---

४८. गीतसार—उपरांकित गीत मारवाड़ के आउवा ठिकाने के ठाकुर बख्तावरसिंह चाँपावत पर रचित है। बख्तावरसिंह ने महाराजा मानसिंह के शासनकाल में जोधपुर की सेना का सामना कर साहसिकता का परिचय दिया था। यह लड़ाई आउवा के किले पर लड़ी गई थी।

---

१. हवाई—तोपों के प्रहार। तवाई—ताप, दबाव। घड़ी—घटी, सेना। पातसाई—बादशाही। घधींग—जबरदस्त, गजराज। जिकै—वे। बिजाई—द्वितीय।

२. जळाबोळ—भयंकर, जलप्लावित। ताबै—अधीन, लिए। सजळाई—प्रज्वलित की, सजलता। भल्लारै—अच्छाई के लिए। टल्लारै—टक्कर के। टळाई—अलग की, उपेक्षा की। नीठ नीठ—कठिनाई से। आवासां—निवास। अभंग—अखंड, वीर।

३. वीर—बावनवीर। अच्छरां—अप्सराएं। आधंतरां—अकाश के मध्य में। लूंब—लटकना, समूह। सोर—बारूद। झालियां—ज्वाला। आभ—आकाश, बादल। नाळियां—तोपें। गजाई—गर्जना करवाई। बरांपूर—पराक्रमी, तेजस्वी।

ऊभौ ठहे चौसरां तणावे माधोसींव वाळौ,
फेर फौजां आपाण जणावै फुणां फेर।
तमाम नगारबंधां नूंतौ अणावै तोपां,
आऊवौ आप ज्यूं भलां बणावै आसेर ॥४॥

—जवान आढा रौ कह्यौ

---

४. ऊभौ–खड़ा। ठहै–सज्जित, स्थान पर। चौसरां–पुष्पाहार। आपाण–वल। जणावै–जताता है, प्रकट करता है। नूंतौ–निमंत्रण। आसेर–किला।

४९. गीत राव करमसी जोधावत नाहड़सर रौ

वाजन्ते वार विखम वाढाळी, वंस छतीसां नवै व्रन।
कटकां भागां पछै करमसी, मेर चलै तौ चलै मन ॥१॥
राव रखपाळ वंस छळ राखण, राव करमसी रहे रिण।
जण जण पवण फरूकै जाए, परवत किम डोलै पवण ॥२॥
अनड़ करमसी रहे अलोपम, आगै अदभू रैण अधार।
ऊभै राव जिके आंतरीया, ऊंचा आवै जेण अधार ॥३॥

---

४९. गीतसार–जोधपुर के राव जोधा का लघु पुत्र राव कर्मसिंह नाहड़सर (खींवसर) का शासक था। कर्मसिंह ने जोधपुर के शासक और बीकानेर के शासक राव लूणकर्ण सहित नारनोल पर आक्रमण किया था। युद्ध की विपरीत स्थिति से भयभीत होकर कथित दोनों शासक रणभूमि से भाग गये, पर राव कर्मसिंह युद्ध से नहीं हटा और जूझता हुआ नारनोल में काम आया। गीत में नारनोल स्थान पर पठानों से लड़ने का वर्णन है।

---

१. वाजन्ते–शस्त्र चलते, प्रहार होते। वार विखम–विषम वेला में। वाढाली–तलवार, कटार। व्रन–वर्ण। कटकां–सेनाओं के। भागां–भगने। पछै–बाद में। मेर–सुमेरु गिरि जो अविचल माना जाता है। चलै–विचलित हुए।
२. रखपाळ–रक्षक। वंस छळ-जातीय युद्ध। जण जण–जन जन। फरूकै–स्फुरण। किम–कैसे। डोलै–विचलित हुये, चलायमान हुये। पवण–पवन, वायु।
३. अनड़–वीर, अडिग, निर्वन्ध। अलोपम–गुप्त, लुप्त, अटल। आगै–अग्रिम। रैण–रात्रि। ऊभै राव–राव पदवाले दोनों। आंतरीया–अलग हट गए, दूर हो गए। जेण–जिससे, जिस। अधार–आधार, सहारा।

५०. गीत राव पंचायण करमसियौत खींवसर रौ

इळि अंतरमाळ जिसुं अवदारह, लोहे अरि वहि लीयै लंभ ।
थांणे थोभण वार स थापे, थांणे जोधां तणौ थंभ ।।१।।

कमधज सिमराजौत कमावत, विखम भूमि वसावण वासि ।
मूंका अचळ पंचाइण माल्है, चावा थांणे सेन चकासि ।।२।।

वंधव अवळ पंचाइण बेऊ, दोमभि दारण वडा दुरंभ ।
रांणा तणै राजि रेहळिवा, रैणहरा वसिया रिणथंभ ।।३।।

नैडौ राव दुरंग नाडूला, अनं भय तंन भय रहिया ताप ।
तै परभूमि वसण परियावट, अचळ पंचायण थांणे आप ।।४।।

---

५०. गीतसार—उपरि अंकित गीत में राव पंचायन कर्मसिंहोत राठौड़ खींवसर के अधिपति की वीरता का वर्णन है। पंचायन ने ऊपरमाल के नाडौल सैनिक थाने पर चित्तौड़ के राणा कुंभा को अचलदास समरावत के सहयोग से पराजित किया था। गीत में राजा कुंभा के रण-पलायन का उल्लेख हुआ है।

---

१. इळि, पृथ्वी । अंतरमाळ—मारवाड़ और मेवाड़ की सीमा का पर्वतीय भाग । जिसुं—जिससे । अवदारह—विभाग, सीमा भाग । लोहे—शस्त्र । अरि—वैरी । वहि—चलाकर । थांणे—सैनिक चौकी । वार—समय । थापै—स्थापित किये । जोधां तणौ—राव जोधा की संतान वालों का । थंभ—स्तंभ ।

२. कमधज—राठौड़ । सिमराजौत—समरसिंह का पुत्र अचलदास । कमावत—कर्मसिंह का पुत्र पंचायन । विखम—विषम । वसावण—बसाने के लिए । वासि—आवास । मूंका—त्यागा । माल्है—दौड़े । चावा—प्रसिद्ध । चकासि—संहार कर, युद्ध में मार कर ।

३. बेऊ—दोनों । दोमभि—युद्ध में । दारण—शक्तिशाली, प्रचण्ड । दुरंभ—योद्धा । रेहळिवा—विनष्ट करने, लूटने, मारने । रैणहरा—रणमल्ल के वंशज । रिणथंभ—रण में स्तंभ तुल्य अचल ।

४. नैड़ौ—समीप । दुरंग—किला । नाडूला—नाडोल स्थान का । अनं—अन्न । तंन—शरीर । पर—दूसरों की । वसण—बास करने ।

५१. गीत ठाकर हरदास करमसियौत डांवरा रौ

आगै आदि प्रथमाद कासिब हूं ऊपनी, आपि मुख ब्रंहम हूं वेद उकता ।
नव खंडे हालियौ मेर हूंता नदी, त्यौं हालीया जंग हरदास हूंता ।।१।।

ईस हूं जोग चवदह रतन उदधि हूं, हुए आदीत हूं दसम जूवा ।
पहप पनरैं तिथैं सोम हूं प्रगटीयै, त्यौं हदै हूं सदा संग्राम हूवा ।।२।।

मुकत चौ प्रगटीयौ वुध गौरख महा, वड वडां सांवतां जोध वीया ।
महि मंडळ करन दांन द्रिगपति दीया, त्यौं करमसीहरै भाराथ कीया ।।३।।

राजगति इंद हूं अंत जमरांण हूं, सीत हिमज हूं वन गहण सूळ ।
वडा आरंभ चै रांम हु वाधीया, मथन मधकर तणौ कमध कळमूळ ।।४।।

कीया वैराट चौ घाट करणा करण, मांड माथां वडां वडि मचैमौड़ ।
हेक वळि केळवण जोधविधहरौ, भांजण घड़ण कीध राठौड़ ।।५।।

---

५१. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर हरिदास कर्मसिहोत राठौड़ डांवरा की युद्धवीरता पर रचा हुआ है। कवि ने गीतनायक की वीरता की प्रशंसा करते हुए बताया है कि जिस प्रकार आदिकाल में राजा कश्यप से सृष्टि उत्पन्न हुई। ब्रह्म के मुख से वेद की उक्तियां प्रारंभ हुई, नवों खण्डों में सुमेरु गिरी से सुरसरी का प्रारंभ हुआ, महादेव से योग-विद्या तथा समुद्र से चौदह रत्न आदि निकले उसी प्रकार युद्ध का प्रचलन हरिदास से ही वस्तुतः हुआ है।

---

१. आगै-पूर्वकाल में। प्रथमाद—पूर्व दिशा में, पहिले पहल। कासिब हूँ—राजा कश्यप से। उकता—उक्ति। हालियौ—चला, फैला। मेर हूंता—सुमेरुगिरि से। जंग—युद्ध।

२. ईस—शिव। उदधि—समुद्र। आदीत—सूर्य। जूवा—जुदा। पहप—पुष्प। तिथैं—तिथियाँ। सोमहूं—चन्द्रमा से। हदै हूं—हरिदास से।

३. मुकत—मुक्ति। चौ—को। गौरख—गोरक्षनाथ। सांवतां—सामन्तों। करन—राजा कर्ण। द्रिगपति—हाथी। करमसी हरै—कर्मसिंह के पौत्र ने। भाराथ—युद्ध।

४. राजगति—राजनीति। इंद हूं—राजा इन्द्र से। अंत—मौत। जमरांण हू—यमराज से। सीत—शीतलता। हिमज—हिमालय, चन्द्रमा। वडा आरंभ—महान् कार्य। चै—के। मधकर तणौ—महेशदास तनय। कमध—राठौड़। कळमूळ—युद्ध।

५. वैराट—विराट। करणा करण—करुणाकर, ईश्वर। माथां—मस्तकों। हेक—एक। वळि—बलवान। भांजण घडण—विनाश और सर्जन।

५२. गीत ठाकर महेसदास पंचायणोत खींवसर रौ

आयौ खुरसांण मंडोवर ऊपर, आगालगि घण झूझ अणी।
आझै उदकू दियै आंजळियां, तरणी सूर मेहस तणी ॥१॥

धर लीजै आया धुणहीं धर, धमचक्क हुवैं मरै वर वीर।
पांचा उतरी पहिला पहिलौ, नारि निरोहे दीन्हौ नीर। २।

सही मरै भरतार सझूझौ, कमधज ऊणौ सहै न कोइ।
पतिसाही हूवौ पाखरणौ, पछि यछि जळ दीन्हौ पहिलोइ ।३॥

ऊभौ इळा न दीन्ही असुरां (नूं), सूरां जेमि मरै प्रीसारि।
जोधपुरै रै पतै जांणीयौ, कीयौ तरपण राजकुंआरि ॥४॥

---

५२. गीतसार—उपरलिखित गीत खींवसर डांवरा के स्वामी महेशदास पंचायनोत राठौड़ की वीरता पर कथित है। महेशदास राव मालदेव की ओर से मेड़ता पर शरफुद्दीन राव जयमल मेड़तिया की संयुक्त सेना से लड़कर काम आया। गीत में मंडौर पर मुसलमानों के आक्रमण करने पर उनका सामना करने का वर्णन है।

---

१. खुरसांण—बादशाह। आगालगि—निरन्तर। घणं—घनी। झूझ—युद्ध। अणी—सेना। आझै—वीर, युद्ध। उदकू—जल। आंजळियां—अञ्जलि भर कर। तरणी—तरुणी, पत्नि। सूर—सूर्य। महेश तणी—महेशदास की ने।

२. धुणहीं—मारने वाले। धमचक्क—युद्ध। वर वीर—श्रेष्ठ योद्धा। पांचा—पंचायनोत महेशदास। निरोहे—युद्ध स्थल, शान्त मन से। नीर—जल।

३. भरतार—भर्तार, पति। सझूझौ—युद्ध करते हुए, युद्धवीर। ऊणौ—न्यूनता, खिन्नता, चिन्ता। सहै—सहन करे। यछि—अप्सरा, नारि। पहिलोइ—पहिले ही।

४. ऊभो—खड़ा, बिना घायल हुए या मरे। इळा—पृथ्वी। असुरां—मुसलमानों को। सूरां जेमि—शूर वीरों जैसे। प्रीसारि—पति तलवारों से कटकर मरा। पतै—पति, राजा, पता। तरपण—तर्पण।

५३. गीत ठाकर खेतसिंघ महेसोत नाहड़सर रौ

ऊघड़ीयै चूक ओछड़ी असते, झालणवाळी न कांइ झंत्र ।
तैं खटतीस मुहरै खेतसी, काढ़ी साइ जांणै किलंव ।।१।।
पौह पड़ीयै जमदढ़ पिड़ीयारां, मधकर का हुडतै उपमादि ।
बांथ पड़ती जु तैं संवाही, असपति करैस बात अयादि ।।२।।
दूभर चूकि साच जिण दीन्हौ, दईत लीयौ सिध वधे दळ ।
तो खूंदालिय वदै खेतसी, बिहूं वेढ़ीयौ तणौ बळ ।।३।।
पड़ियौ रणि रज राखि पछिलकै, चढ़ि वीजळी पहिलकै चोट ।
सूर सामळा जिही खेतसी, करतब वदै दुवाहा कोट ।।४।।

---

५३. गीतसार—उपर्युक्त गीत में राठौड़ों की कर्मसिंहोत शाखा महेशदास के पुत्र ठाकुर खेतसिंह का वर्णन है। खेतसिंह बादशाही मन्सबदार था। गीत में शत्रु को कटार से मारने के उपलक्ष्य में हिन्दू और मुसलमानों द्वारा खेतसिंह के साहस की प्रशंसा की गई है।

---

१. ऊघड़ीयौ—प्रकट होने पर, उद्घाटित होने पर। चूक—छलाघात। ओछड़ी—खींचकर, छिपने। असते—डरपोक, अधर्मचारी। झालणवाळी—पकड़ने वाली। झंत्र—सहारा, समूह। मुहरै—अगाड़ी। काढ़ी—निकाली। साइ—सभी, बादशाह। किलंव—कलमा पढ़ने वाले, मुसलमान।

ा, राजा। पड़ीयै—घायल होकर पड़ने पर। जमदढ़—कटार। पिड़ीयारां—युद्ध करने वाले शत्रुओं। मधकर का—महेशदास का पुत्र खेतसिंह। हुडतै—होते समय। बांथ—भुजपाश। संवाही—सम्हाली, ग्रहण की। असपति—बादशाह। अयादि—याद।

३. दूभर—मुश्किल, असह्य। दईत—दैत्य, मुसलमान। सिध—सिद्ध, सफल। वधे—बढ़कर, मारकर। दळ—समूह, सेना। खूंदाळिम—बादशाह। वदै—सराहना करता है। बिहूं—दोनों। वेढीयौ तणौ—संहारक का।

४. रणि—युद्ध में। रज—क्षत्रियत्व। पछिल कै—पिछले का, परम्परा का। वीजळी—तलवार की अथवा कटार की धार। करतब—कर्त्तव्य, उत्तम कार्य। दुवाहां कोट—महान् वीर, दोनों हाथों से प्रहार करने में प्रबल।

५४. गीत लखमीदास पातावत रौ

समीयाणै तणा मेळि दळ सबळा, वडौ खत्री पाखरि वरहास ।
आयौ परदळखांन ऊपरै, दूठ महाभड़ लखमीदास ॥१॥
वांटे अणी कोट सहू वीटे, भुज नीमज परियां दिसि भाळि ।
सूरज ऊगै समौ सांफळौ, पातल रै कीधौ पूंचाळ ॥२॥
हिंदू तुरक लोह में हिंचीया, पनंग तणै सिर रोपै पांव ।
सांगाहरे पाड़ियौ समहरि, औरंगजेब तणौ उमराव ॥३॥
साभे असुर लीयौ समीयांणौ, घणी भौमि जसवास घणौ ।
कमधां घरे ऊगिवै कविळा, ताइ प्रताप लखधीर तणौ ॥४॥

—तेजसी खिड़िया रौ कह्यौ

---

५४. **गीतसार—उपर्युक्त गीत राठौड़ वीर लक्ष्मीदास पातावत कर्मसिहोत पर रचित है । गीत में गीतनायक द्वारा बादशाह औरंगजेब के सेनानायक परदलखां को सिवाणा के युद्ध में पराजित करने का वर्णन है । कवि का कथन है कि लक्ष्मीदास ने अपने योद्धाओं को पंक्तियों में विभाजित कर सुर्योदय के साथ सिवाणा दुर्ग पर आक्रमण किया और शत्रुओं को मारकर सिवाणा पर अधिकार स्थापित किया ।**

समीयाणै—मारवाड़ का सिवाना परगना और इसी नाम का दुर्ग । मेळि दळ—सेना एकत्रित कर । पाखरि—प्रक्षर, कवच । वरहास—घोड़ा । परदलखांन—बादशाह औरंगजेब की ओर से नियुक्त सिवाने का सैनिक अधिकारी । दूठ—शक्तिशाली, क्रोधीला । महाभड़—महान् वीर ।

२. वांटे अणी—सेना को विभिन्न पंक्तियों में विभाजित कर । कोट—किला । सहू वीटे—सब ने घेरा । नीमज—ठान कर, घुसकर । परियां दिस—पूर्वजों की परम्परा की ओर । भाळि—देखकर, विचार कर । ऊगै—उदय होते । समौ—समय । सांफळौ—युद्ध । पताल रै—प्रतापसिंह के लक्ष्मीदास ने । पूंचाळ—भुजबली, शक्तिशाली ।

३. हिंचीया—लड़ने लगे । पनंग तणै—शेषनाग के, पाताल लोक तक । रोपै—दृढ़ता से स्थिर किये । सांगाहरे—संग्रामसिंह के पौत्र । पाड़ियौ—गिराया । समहरि—युद्ध में । तणौ—को ।

४. साभे—मारे । असुर—मुसलमान । जसवास—कीर्ति । कमधां—राठौड़ के । ऊगिवौ—उदय होना, सफल होना । कविळा—बादशाह । ताइ—अत्याचारी, तहां ।

५५. गीत ठाकर प्रिथीराज दलपतौत पीपाड़ रौ

बड़ा जांण महिरांण असमांन छिवता वहै, दुयण भांजण दीयण दांन दावा ।
मुरधरा मांझ हूवा कमंध मारका, च्यारि प्रिथीराज दस देस चावा ।।१।।
असपती मारीया ऊठ ऊवारीया, भांजीयै जंग अणभंग जीपै ।
कलारौ जैतरौ बलूरौ जेम कहि, दलारौ त्यां तिसौ कळह दीपै ।।२।।
भींच अकबर तणौ मालरौ जै न भड़, गजन रै भींच गैघड़ा मौड़ी ।
जादवां तणी जौड़ी गिळै जीरवी, जसारौ भींच त्यां तणी जौड़ी ।।३।।
जांणपण जैतहर पंचाइण तणौ महाजुध, करमवळी तेजहर गात कूंभौ ।
धवळ हरदास हर लाज भुज धारीयां, अंति प्रिथीराज त्यां तिसौ ऊभौ।।४।।

—नाथा बारहठ रौ कह्यौ

---

५५. गीतसार—उपर्युक्त गीत पीपाड़ के स्वामी ठाकुर पृथ्वीराज दलपतसिंह के पुत्र पर रचित है। गीत में कवि ने पृथ्वीराज की वीरता के लिए चारों दिशाओं में प्रसिद्धि का वर्णन करते हुए कहा है कि मारवाड़ में जिस प्रकार पृथ्वीराज कल्याणोत, पृथ्वीराज जैतावत और पृथ्वीराज बलुओत प्रसिद्ध थे उसी प्रकार यह दलपतोत पृथ्वीराज भी प्रसिद्ध है।

---

१. महिरांण—राजा, योद्धा। असमांन—आकाश। छिवता—शोभापाते। दुयण—वैरियों का। भांजण—मारने। मुरधरा मांझ—मारवाड़ में। कमंध—राठौड़। मारका—महावीर। चावा—प्रसिद्ध।

२. असपती—बादशाह। ऊवारीया—रक्षा की। भांजियै—संहार करते। अणभंग—अखंड, योद्धा। जीपै—विजय करे। कला रौ—कल्याण का पुत्र पृथ्वीराज बीकानेर। जैतरौ—पृथ्वीराज जैतावत बगड़ी का। बलू—बलभद्र का पुत्र पृथ्वीराज। जेम—जैसे ही। दला रौ—दलपतसिंह का पुत्र गीतनायक पृथ्वीराज। त्यां—उन। तिसौ—तैसा, जैसा ही। कळह—युद्ध में। दीपै—चमकता है, शोभा पाता है।

३. भींच—योद्धा। अकबर तणौ—बादशाह अकबर का। माल रौ—राव मालदेव का सेनानायक पृथ्वीराज जैतावत। भड़—योद्धा। गजन रै—राजा गजसिंह के वीर पृथ्वीराज ने। गैघड़ा—गज सेना। मौड़ी—पराजित कर पीछे लौटाई। गिळै—निगलकर, जीरवी—हजम की। जसारौ—जसवंतसिंह का।

४. जांणपण—प्रसिद्धि में। जैतहर—जैतावत पृथ्वीराज। पंचाइण तणौ—पंचायन का वंशज पृथ्वीराज इस गीत का नायक। तेजहर—तेजसिंह का वंशज। गात—गात्र, शरीर। कूंभौ—हाथी जैसा, कुंभकर्ण। धवळ—बलवान्, बैल। अंति—अंतिम समय, अन्त में। ऊभौ—खड़ा हुआ है।

५६. गीत सिवराज जोधावत दूनाड़ा रौ

वपड़ाऊ खावड़ि वाहड़गिरि, समीयांणौ नीलवौ सकाज ।
पहछहटणि अनियै पोहकरणा, सात कटक भांगा सिवराज ।।१।।

मुर चित्र सैन महा रिणमालां, सक सिमराज निजोड़े सार ।
पवंग पलांणि पांगुरणि पहिरणि, झाड़ि झाड़ि कीया झूझारि ।।२।।

मालां सैन सपत मुंहि छूटै, अति गहि आवंतै अहंकारि ।
जोधावत मिळीया जुडंतै, बंधू विलाया बांह उपगारि ।।३।।

खट ने एक भांजीया खांडे, खेध चमीरौ खंवै खळ ।
दळ हूं सिवै कीया दहवाटां, तिकै देवीदासां तणां दळ ।।४।।

---

५६. गीतसार—ऊपरांकित गीत राठौड़ वीर शिवराज जोधावत की युद्ध-प्रशंसा का है । गीत में शिवराज द्वारा रावल देवीदासोतों के अधीनस्थ वपड़ाऊ, खावड़, बाडमेर, सिवाणा, नीलवा, चौहटन और पोकरण सात स्थानों की सेनाओं को पराजित कर विजय प्राप्त करने का वर्णन है ।

---

१. पह—योद्धा । अनियै—अन्य । कटक-सैन्य दल । भांगा—नष्ट किया ।

२. मुर चित्र—तीन और चार, कुल सात । रिणमालां—राव रणमल्ल की प्रतापी संतान वाले । सक—शख्स, वीर । निजोड़े—नृथक् कर, संहार कर । सार—तलवार, अस्त्र शस्त्र । पवंग—घोड़ा । पलांणि—जीन कर । पांगुरणि—रेशमी वस्त्र । पहिरणि—पहिनने को । झाड़ि झाड़ि—पटक पछाड़ कर, तितर बितर, छोटे कंटीले पेड़ । झूझारि—जूझार, परहित हेतु लकड़र मरनेवासा योद्धा ।

३. मालां—रणमल्ल के वंशजों की । सपत—सप्त, सात । गहि—धारण कर । जुडंतै—लड़ते, भिड़ते । बांह—भुजा, रक्षक बनकर । उपगारि—उपकार ।

४. खट नै एक—सात स्थानों की सेना । भांजीया—भंजन किया, संहार किया । खेध—विरोध । हूं—से । सिवै—शिवराज ने । दहवाटां—नाश, तहस-नहस । तिकै—वे, उन । देवीदासां—देवीदास की संतानवालों के ।

५७. गीत अचळदास सिवराजौत दूनाड़ा रौ

अणी लाख दस करे कस तूसन जोधपुर, वींटीयौ कोट रणतूर वायौ।
सींघळा सीह अणवीह सिमराजरा, अचळगढ़ डूठि पतिसाह आयौ ॥१॥
गांण गुण गाजीयौ ग्रीधती गहमहै, वहै नळीयार झूझार ताजौ।
गाजि आवाज असुरां तणी अभंगभड़, सांसवै अचळ किम डील साजौ ॥२॥
प्रोळियां सारहे विढ़ण कजि ग्रह ग्रहे, लंघीयै सीह पीठांण लाधौ।
तखत पतिसाह रौ तोड़ि त्रिजड़ां मुंहे, खांन मुहमार कौ अचळ खाधौ ॥३॥
जाळ जमहर जुगति मरण प्रांमै मुगति, चंदनांमै करे अणी चढ़ीयौ।
अचळ अपछर वरे सूर साखी करे, वीवीयां वरे बुलवाक पड़ीयौ ॥४॥

---

५७. गीतसार—उपरिलिखित गीत में राठौड़ वीर अचलदास शिवराज के पुत्र दूनाड़ा के स्वामी की युद्धवीरता का वर्णन है। अचलदास ने राव मालवदेव के पक्ष में जोधपुर दुर्ग पर आक्रमण कर शाही सेनाध्यक्ष ममारख खांन को मार कर वीरगति प्राप्त की थी। अचलदास की स्मृति में जोधपुर किले पर छत्री है। गीत में अचलदास की बहादुरी तथा कीर्ति का आख्यान है।

---

१. अणी—सेना।—कस—बाँधकर, कस कर। तूसन—तौशन, घोड़ा। वींटीयौ—चारों ओर से घेरे में लिया। कोट—किले। रणतूर—रणतूर्य, बाजा विशेष। वायौ—बजाया। सींघळा सींह—श्रेष्ठ सिंह। अणवीह—निडर। सिमराज रा—शिवराज का पुत्र। अचळ—अचलदास। गढ़—किले पर। पतिसाह—बादशाह।

२. गांण गुण—गुणगान। गाजीयौ—गरजने लगा। ग्रीधती—गृद्धनियाँ। गहमहै—उत्सव मनाने लगी, भीड़ करने लगी। वहै—वहती है। नळियार—तलवार, रक्त(?)। झूझार—जुझार, योद्धा। ताजौ—जबरदस्त, तुम्हारा। गाजि—गर्जना। असुरां तणी—मुसलमानों की। अभंग भड़—दृढ़ निश्चयी वीर, अखण्ड वीर। डील—शरीर। साजौ—सावित, स्वस्थ।

३. प्रोळियां—मुखद्वार पर, प्रतोली पर। सारहे—शस्त्रों से। विढ़ण—लड़ने मरने के लिए। लंघीयै सींह—भूखा सिंह। पीठांण—युद्ध। लाधौ—मिला। त्रिजड़ां—तलवारों के। खांन मुहमार कौ—ममारख खांन। खाधौ—खागया, मारडाला।

४. जाळ—पाश, ज्वाला। जमहर—जौहर, रण कौशल प्रकट कर। प्रांमै—प्राप्त कर। चंदनांमै—कीर्ति अमर कर। अणी—शस्त्रों की नोक। वरै—विवाह कर। सूर—सूर्य। साखी—साक्षी। बुलवाक हाहाकर।

५८. गीत राव अखैराज रिणमलौत बगड़ी रौ

सूरा भड़ भिड़ै ऊछळै ओणी, सूर संपेखै सतर घण।
मालां साथि अखै माचवीयौ, वे सांमी ले ले विढ़ण ॥१॥

रिड़ै रत रथ अरक राखीयौ, सूर सार सांमहाँ सहै।
माले कांधिल अखै महा रिण, वीथ पड़ै हथियार वहै ॥२॥

रिणमालौत अनै रूणेचाँ, आखै अरक इसी अपवार।
विढ़ै वळै वळि वेगि वीछुड़ै, विढ़ै वळै वळि वारोवार ॥३॥

---

५८. गीतसार—उपर्युक्त गीत राव अक्षयराज रणमल्लोत राठौड़ बगड़ी के स्वामी पर रचित है। अक्षयराज ने राव रणमल्ल के अन्य वंशधरों के साथ सम्मिलित होकर अनेक युद्धों में वीरता दिखाकर यश अर्जित किया था। उसने राठौड़ों की सिंघल शाखा के चरड़ा से बगड़ी छीन कर बगड़ी को अपनी राजधानी बनाई। गीत में कांधल के साथ अक्षयराज और रुणेचों के युद्ध करने का संकेत है।

---

१. भड़—वीर। ऊछळै—उछला। ओणी—लोहू। सूर—सूर्य। संपेखै—देखता है। सतर—शत्रु। मालां—रणमल्लोतों के। अखै—गीतनायक अक्षयराज। मांचवीयौ—लड़ा। विढ़ण—युद्ध।

२. रत—रुधिर। अरक—सूर्य। सूर—वीर। सार—लोहा। सांमहां—सम्मुख। सहै—सहन करते हैं। कांधिल—रावत कांधल। अखै—राव अक्षयराज। वहै—प्रहार होते हैं, चलते हैं।

३. रिणमालौत—राव रणमल्ल के वंशज। अनै—अन्य। रुणेचां—रूण स्थान वाले, सोलंखी। आखै—कहता है। अपवार—बुरा समय, युद्धकारी समय, बहुत अधिक। विढ़ै—लड़ते हैं, मरते हैं। विळै वळि—निरन्तर, बलात्। वेगि—त्वरा से। वीछड़ै—बिछुड़ते हैं। वारोवार—बार बार।

५६. गीत राव अखैराज रिणमलोत बगड़ी रौ

अनिकारां देव खत्री अनिकारां, वरस छमासी विढ़ण वरैं।
सूरिज तैं अखैराज सांफळौ, किलंब घड़ा सूं नित्त करै ॥१॥

दूजा देस देसपति दूजा, भव किणहीं मचवै भाराथ।
अंग नित अखौ चढ़ावै अणीये, जुधि नित जुड़ै भिड़ै जगनाथ ॥२॥

अरक सांफळौ पहरे आठे, नीवड़ि जाइ अनेरा नाह।
एकै दहि अखौ आरोड़ै, विहु चिहु पैसे ऊभी वाह ॥३॥

तरुण अखैमल वहतै त्रिजड़े, तुरक घडा सूं निभैतण।
करै संग्राम सदा कासिव सुत, रिणमल सुत नित चढ़ै रिण। ४॥

---

५६. गीतसार—उपर्युक्त गीत राव अखैराज राठौड़ वगड़ी के स्वामी पर कहा हुआ है। कवि ने गीत में कहा है कि अन्य वीर क्षत्रिय और वीर देवता कभी वर्ष छह मास में युद्ध में भाग लेते हैं, पर सूर्यदेव और अखैराज नित्य प्रति असुर सेना से लड़ते रहते हैं।

---

१. अनिकारा—योद्धा, अन्य वीर। खत्री—क्षत्रिय। छमासी—छह मास में। विढ़ण—युद्ध। वरैं—वरण करते हैं। सांफळौ—युद्ध। किलंब—मुसलमान। घड़ा—सेना।

२. देसपति—राजा। दूजा—दूसरे। किणहीं—कभी कभास। मचवै—लड़ते हैं। भाराथ—युद्ध। अखौ—अखैराज। अणीये—अस्त्रों शस्त्रों की नोक। जुड़ै—करते है। भिड़ै—लड़ते हैं। जगनाथ—सूर्य।

३. पहरे आठे—आठ प्रहर। नीवड़ि घने। अनेरा—अन्य। नाह—राजा। दीह—दिन। अखौ—अखैराज। आरोड़ै—लड़ता है। विहु—दोनों। चिहु—चारों। पैसै—पैठते हैं। ऊभी—खड़ी।

४. तरुण—युवा। वहतै—प्रहार करते। त्रिजड़े—तलवार से। निभैतण—निडर, निर्भीक। कासिव सुत—सूर्य। रिण—युद्ध।

६०. गीत राव पंचाइरण अखेराजौत बगड़ी रौ

मोटा पह साख पंचायरण मांगै, मिरण मथ अेह गिरणै उनमांन ।
बैठा तूझ तरणै वारंतर ·· ····, पांचां देसां तरणौं प्रधांन ।।१।।

निखत पंचाइरण इसौ निमंधीयौ, नर कोसां नह मुहर खड़ै ।
तूंझ तारै सो कटक ऊतरै, तूं चाढ़ै सो कटक चड़ै ।।२।।

धीर अमल रिड़माल कळोधर, लागूवे वचंने चलंरण लीयै ।
पोह इम बीजा कहै पंचाइरण, देस वसां जो सीख दीयै ।।३।।

बगड़ी धरणी चाकरी विखधै, नर पूरब दिखरणाध नर ।
अखा समोभ्रम तरणै अनेरा, हुकम चलै सोहो रायहर ।।४।।

---

६०. गीतसार–उपर्युक्त गीत राव पंचायन अखैराजोत बगड़ी के स्वामी पर रचित है। गीत में उल्लेख हुआ है कि पंचायन ऐसे बलवान् नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ है जिसका सभी पर प्रभाव है। बड़े बड़े राजा तक पंचायन की साक्षी का विश्वास करते हैं। वह जिस पर सेना का आक्रमरण करना सोच लेता है उसी पर आक्रमरण हो जाता है और जिसकी रक्षा करना विचार लेता है वह बच जाता है।

---

१. मोटा पह–बड़े राजा, बड़े योद्धा। साख–साक्षी। वारंतर–द्वार के बाहर। प्रधांन–मुख्य आमात्य, प्रधान मंत्री।

२. निखत–नक्षत्र। इसौ–ऐसा। निमंधीयौ–रचा गया, बनाया। कोसाँ· मीलों तक। मुहर· आगे। खड़ै–चलते हैं। तारै–उद्धार करे, रक्षा करे। कटक–सेना। ऊतरै–उतरती है, घेरा उठाती है। चाढ़ै–चढ़ाई करवाता है।

३. धीर–धैर्यवान्। कळोधर–कला को धारण करने वाला। लागूवे–वैर रखने वाले, पीछा करने वाले। बीजा–अन्य। वसां–निवास करें, आबाद करें। सीख–स्वीकृत, विदाई।

४. धरणी–स्वामी। विखधै–भोगता है। पूरब–पूर्व धरा। दिखरणाध–दक्षिण धरा। अखा–अखैराज। समोभ्रम–पुत्र, समता की भ्रांति देने वाला पंचायन। अनेरा–दूसरे। सोहो–सभी। रायहर–राजा।

६१. गीत राव जैता पंचाइणोत बगड़ी रौ

नव लाख कटक निमंधे नेजाइत, गिड़ थरहरै गढ़ां गजगाह।
जैता तणा भुजाडंड जोइवा, सूर पधारीयौ पहिर सनाह ॥१॥

साथ उभै लख धीर सनाहां, गजदळ ढोये गमागमै।
पांणि पठांणि लड़ै पाचावत, खेड़ नरेसुर भार खमै ॥२॥

मुर खट लाख मेछ दळ मेळै, सूर सम चढ़े मंडोवर सींम।
जोगिणपुरौ आवीयौ जोइवा, भुज राठौड़ तणा गज भींम ॥३॥

रिणमलहरौ मूंवौ पग रोपै, घणां जंगां जे मरि घणा।
ऊभौ करि जोइयौ असुरे, तंई भुजाडंड जैत तणा ॥४॥

---

६१. गीतसार—उपर्युक्त गीत मारवाड़ के बगड़ी ठिकाने के राव जैता (जैत्रसिंह) की युद्ध-वीरता के वर्णन का है। राव जैता राव मालदेव का बड़ा सामंत था। राव जेता ने मालदेव की ओर से दिल्ली के बादशाह शेरशाह शूरी की सेना से अजमेर के समीपस्थ गिररी समेल पर विकट युद्ध कर वीरगति प्राप्त की थी। जैत के पराक्रम और साहस की बात सुनकर शेरशाह स्वयं रणक्षेत्र में उसके मृत शरीर को देखने के लिए आया था।

---

१. कटक—सेना। निमंधे—तैयार। नेजाइत—भाला धारी, ध्वजधारी। गिड़—वाराह, जिसके दाढ़ पर पृथ्वी ठहरी हुई मानी जाती है। थरहरै—कंपित होता है। गजगाह—युद्ध, वीर। जोइवा—देखने के लिए। सूर—शेरशाह शूरी। सनाह—जिरह बख्तर।

२. उभै लख—दो लाख। धीर—धैर्यवान। सनाहां—कवचधारी। गज दळ—गज सेना। ढोये—आक्रमण किये हुए। गमागमै—चारों ओर। पांणि—भुजा, हाथ। पठांणि—शेरशाह पठान। पांचावत—पंचायन का पुत्र जैता। खेड़—मारवाड़ में राठौड़ों की प्राचीन राजधानी। खमै—सहन करता है।

३. मुर खट—नव। मेछ दळ—यवन सेना। जोगिणपुरौ—दिल्ली का बादशाह। भींम—भयानक, जबरदस्त।

४. मूंवौ—मृत्यु को प्राप्त हुआ। रोपै—जमा कर। घणां—घने। ऊभौ करि—खड़ा करके। असुरे—मूसलमान ने, बादशाह ने। तंई—शत्रु, तव। जैत तणा—जैता के।

६२. गीत राव जैता पंचायणोत बगड़ी रौ

पारंभ पतिसाह थयौ पारंभगुर, चक्रवति ताइ गिर सिर चड़िया ।
विढ़वा काजि जैत सिर गहमह, उभै पहर दळ आहुड़िया ॥१॥

आलम आप सधर आहेड़ी, सुपहरी हालि जिकै सूधा ।
कवळ वाराह जैत सिर कळियळ, आठ घड़ी छट आलूधा ॥२॥

लोध करे सुरतांण लोधीया, पूरबीया मुगल पतिसाहि ।
पहरि सनाह विडारण पांचावत, घणा कटक धवीया घणघाहि ॥३॥

जैत सूर सरस अत जुडंतै, सोह वधारे तेरह साख ।
आधौ दीह कटक आहुड़िया, निवड़ वाराह सरसि नव लाख ॥४॥

---

६२. गीतसार–उपरांकित गीत राव जैतसिंह पंचायनोत बगड़ी के स्वामी की रणवीरता पर लिखित है । गीतकार ने जैतसिंह का दर्शन करते हुए लिखा है कि बादशाह ने युद्ध करने का संकल्प किया और चक्रवर्ती (राव मालदेव) भयातुर होकर पहाड़ों की शरण में जा चढ़ा । किन्तु, जैतसिंह युद्ध में डट गया और दो प्रहर तक उसके सिर पर शस्त्रों के अघात होते रहे ।

---

१. पारंभ–युद्ध, आरंभ । थयौ–हुआ । पारंभगुर–आरंभ किए हुए कार्य को पूरा करने वाला । ताइ–वह, तब, तप्त होकर । गिर सिर–गिरि शिखरों पर । विढ़वा–लड़ने । गहमह–भीड़ । उभै पहर–द्वि प्रहर तक । दळ–सेना । आहुड़िया–टक्करें लेते रहे ।

२. आलम–संसार, बादशाह । सधर–सधैर्य, सीधा । आहेड़ी–आखेटक, शिकारी । सुपहरी–दो प्रहर, राजा । हालि–चलकर । जिकै–जो, वे । कवळ वाराह–सूअर । किळियळ–योद्धा, लड़ाई । छट–तक, अनवरत । आलूधा–उलझे रहे, लड़ते रहे ।

सनाह–जिरह बख्तर । विडारण–युद्ध लड़ने लगा । पांचावत–पंचायनसिंह का पुत्र जैतसिंह । कटक–सैन्यदल । धवीया–ध्वस्त किये, बरसा । घण घाहि–घनघोर, मेघ की तरह बरसते हुए ।

४. सूर–सूअर । सरस–सदृश । जुड़ंतै–भिड़कर, टक्कर लेते । सोह–सब । वधारे–वर्द्धित किये, प्रशंसित किये । निवड़–दृढ़, भयंकर । वाराह–सूअर । सरसि–समान ।

६३. गीत राव जैता पंचायणोत बगड़ी रौ

घातै घड़ तिस रूपी घोड़ो, मुरास महाग्रह मोगर मोड़ो।
पदम पहास दीयै पाहोड़ो, जैतै नैं साह आलम जोड़ो ॥१॥

रहतां जैत सरस रवताळां, बे झड़पड़िया वींनड़ियाळां।
साहिजादी लोधियां सुवाळा, वीवी जोवै वाट वंगाळां ॥२॥

पाधरि राव विढ़ीयौ पचाणी, सारै जैतौ घड़ सुरतांणी।
पी जोवै तावूत पठांणी, मीर वची रूनी मिलकांणी ॥३॥

पर दळिया परिगह पांचरणौ, मोगर चढीया मीर मुंहांणौ।
सूतो दै सेलार सिरांणो, जैतड़ौ भगवट जाइ न जांणौ ॥४॥

---

६३. गीतसार–ऊपर लिखित गीत राव जैतसिंह राठौड़ बगड़ी ठिकाने के अधिपति पर कहा गया है। गीत में लिखा है कि राव जैतसिंह रणभूमि में लड़ता हुआ धराशायी हो गया। वह रणभुमि से पलायन करना नहीं जानता। अनेक शाहजादियां अपने पतियों के आगमन की प्रतीक्षा में थीं, किन्तु उनके स्थान पर उनके शव ही वापस पहुंचे।

---

१ घातै–प्रहार करके, शत्रु। घड़–सेना, शरीर। मुरास–मनुष्य। महाग्रह–विकट युद्ध। मोड़ो–मोड़ने वाला, पीछे धकेलने वाला। पदम–मद्म नामक। पहास–घोड़ा, चमकीला।

२. रवताळ–रावत पद वाले, योद्धा। वे–दोनों, वे। झड़पड़िया–लड़कर धराशायी हुए। सुवाळां–सुन्दरियां। वाट–मार्ग। वंगाळां-मुसलमानों।

३. पाधरि–सीधे रणभूमि में। विढ़ीयौ–लड़ा। पंचाणी–पंचायन का पुत्र जैतसिंह। सारै–लोहे शस्त्र। पी–पति। तावूत–अर्थी, जनाजा। मीर वची–अमीर कन्या। रूनी–रोदन किया। मिलकांणीं–मलिका।

४. परिगह–परिग्रह, सैनिक। पांचाणौ–पंचायनसिंह के पुत्र। मुहाणौ–मुखाग्र। सूतो–सोया। सेलार–भाला। सिरांणौ–सिरहाने। जैतड़ौ–जैतसिंह। भगवट–भगने का मार्ग, भग जाना। न जांणौ–नहीं जानता है।

६४. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

सुकरि सेल सिंदूरियै सूर आखाढ़ सिध,
जस मुकट बांधियै नादि साजै ।
प्रिथीमल अभंग अखईहरौ पाटपति,
भागळां आगळी केम भाजै ॥१॥

नवां कोटां सुछळि नेत्र वाधै निलै,
मेर मांझी कळह मारकी मूठि ।
सारभै पूठि जेजे पहै दीन्ही सदा,
पहां तां किम दियै प्रिथीमल पूठि ॥२॥

---

६४. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि का कथन है कि अखैराजोत राठौड़ के पट्ट का स्वामी पृथ्वीराज कायरों की भाँति युद्ध भूमि को पीठ देकर कैसे भाग सकता है जबकि उसके सुन्दर हाथ में सिंदूरी रंग में चर्चित भाला है, यशरूपी मुकुट धारण किये हुए है और युद्ध वाद्यों से सज्जित है । वह तो स्वयं रणकला में प्रवीण है, फिर भगौड़ों का अनुकरण कैसे कर सकता है ।

---

१. सुकरि-सुन्दर हाथ । सेल—भाला । सिंदूरियै—सिंदूरी रंग, लाल रंग । आखाढ़ सिध—रणकला में प्रवीण, महान्‌भट । जस मुकुट—यश रूपी मुकुट । नादि—नर्दन, बादित्र । साजै—सज्जित, साज़बाज । अभंग—विकट वीर । अखई हरौ—अखैराज का पौत्र गीतनायक पृथ्वीराज । पाटपति—सिंहासन का स्वामी । भागळां—भगौड़ों, कायरों । आगळी—आगे, सामने से । केम—किस प्रकार । भाजै—भाग सकता है ।

२. नवां कोटां—नव कोटों, मारवाड़ के प्रसिद्ध नव दुर्गों । सुछळि—युद्ध । नेत्र वाधै—वीरता सूचक आभूषण विशेष । निलै—ललाट । मेर मांझी—मुखिया । कळह—युद्ध । मूंठि—मूंठ, तलवार । सारभै—लोहा बजने पर । पूठि—पीठ । पहै—योद्धाओं ने । पहां—योद्धों । तां—उनको ।

जैतउत जोध जग जेठ जांणै जगत,
मुणिसन तणौ सिरि बाधियै मौड़ ।
रेह लागी भड़ां जियां नूं वीररसि,
रिहै तां आगिळी निविजै राठौड़ ।।३।।

सावळे मेड़तै तणा ध्रुवतौ सुहड़,
कमळि बांधै विरद मुरधरा कांम ।
नमेळां आगळीं गात्रि अण नामीयै,
सरग पाधारियौ रिणमलां सांमि ।।४।।

---

३. जैतउत–राव जैता का पुत्र पृथ्वीराज । जोध–योद्धा । जग जेठ–सूर्य । मुणिसन–मनुष्यों । तणौ–को । सिरि–मस्तक । मौड़–मुकुट । रेह–कलंक । भडां–योद्धाओं । जियां नूं–जिनने । वीररसि–वीर रस की, युद्ध की । रिहै–कलंकी, रहे । आगिळी–अग्रिम । निविजै–अपराजित ।

४. सावळे–भाले । मेड़तै–मेड़ता स्थान, मेड़तिया राठौड़ । ध्रुवतौ–संहार करते, वर्षा करते । सुहड़–सुभट, योद्धा । कमळि–सिर । विरद–विरुद । मुरधरा–मारवाड़ । कांम–कार्य । नमेळां–वैरियों, अमित्रों । गात्रि–शरीर । अणनामीयै–बिना झुकाये । सरग–स्वर्ग । पाधारियौ–पधार गया । रिणमलां–राव रणमल की संतति वालों का । सांमि–स्वामी, मुखिया ।

६५. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

सहि सासिन ध्राप सुहड़ सांकीया, साख धणी सात्रवां सल ।
सेन मंडोवर तणी सचींतौ, मरण तुहाळै प्रिथीमल ।।१।।

आप रखा सत हू औछड़िया, करगि सुपह न ग्रहै केवांण ।
अंत ताहरै रयणाहर ऊपम, मारू ऊपड़ियौ मेल्हांण ।।२।।

सार पहार भवे समहरिया, सी पैठौ ठाकुरां सही ।
जोखिम तूझ तणौ जैताउत, नवसहसा दळ थंभै नहीं ।।३।।

जुड़ि जीपतौ कळह जैताउत, जड़ वाजी राठौड़ जुवांण ।
मांण मलांणौ तणौ मुरधरा, मरण मुहाळै अंमळीमांण ।।४।।

---

६५. गीतसार—गीतनायक पृथ्वीराज की रणभूमि में मृत्यु पर कवि कहता है—हे पृथ्वीराज ! तेरे सामने सभी योद्धा सशंक रहते थे। शत्रुओं के हृदय में तुम सदा शल्य बने चुभते थे। तुम्हारी मृत्यु से मंडोर (मारवाड़) की सेना में चिंता व्याप्त हो गई है।

---

१. सहि—समस्त। ध्रापै—थक गए, तृप्त हो गए। सुहड़—सुभट। सांकिया—शंका करने लगे। साख—शाखा। धणी—स्वामी। सात्रवां—शत्रुओं का। सल—शल्य। सचींतौ—सचित्य, चिन्तित। तुहाळै—तुम्हारे। प्रीथीमल—पृथ्वीराज।

२. आप रख—अपनत्व रखने वाला। औछड़िया—आच्छादित। करगि—हाथ, कराग्र। सुपह—योद्धा, राजा। केवांण—तलवार। अंत—मृत्यु। ताहरै—तुम्हारी। ऊपम—उपमा। मारू—मरुदेशीय वीर। ऊपड़ियौ—रणभूमि में लड़ मरा।

सार—लोहा, तलवार। पहार—प्रहार। समहरिया—युद्धवीर। सी—शीत, कायरता। पैठौ—घुस गया। सही—सत्य ही। जोखिम—मृत्यु। नव सहसा—राठौड़ वीर। दळ—सेना। थंभै—रुके, ठहरे।

४. जुड़ि—भिड़कर। जीपतौ—विजय करता था। वाजी—बाजी, खेल। जुवांण—युवा। मांण—मान, प्रतिष्ठा। मुहाळै—मुंह आगे। अंमळीमांण—सजी हुई सेना का उपभोग करने वाला।

६६. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

चांपौहरौ एक वांधीयां चाळां, खार खधा सांम्हा खड़ीया।
मेड़तीया पीथल सूं मांझी, वारोवारी सौह विढ़ोया ॥१॥

जैमल करण ईसरौ अचळौ, सूर अजा सौह संफळीया।
ऊगै अरक विची आफळीया, ढोवै गयंद वड़ा ढळीया ॥२॥

वारह अखैराज जिसा वेरूंड़े, मोटा नर मारीया मरौड़ि।
सूं परिवार दीहां सगळौ, रामायण कीधौ राठौड़ि ॥३॥

अंग आवधे अणी सर फूट, पड़ै न पांचाहरौ पठि।
दूदाहरै दिहूं होइ दोळै, हेक घणै मारीयौ हठि ॥४॥

—रायमल वहीयावट रौ कह्यौ

---

६६. गीतसार—उपर्युक्त गीत मारवाड़ के बगड़ी ठिकाने के अधिपति पृथ्वीराज जैतावत राठौड़ और मेड़ता के शासक राव जयमल्ल के पारस्परिक युद्धाभियानों से सम्बद्ध है। कवि ने गीत में कहा है कि राव चम्पतराय के कुलोद्भव पृथ्वीराज से राव दूदा मेड़तिया के वंशज राव जयमल्ल, कर्ण, ईश्वरदास, अचलदास और अजा सभी ने बारी बारी से लड़ाई की और सभी मिलकर एकाकी पृथ्वीराज को कठिनता से मार पाये।

---

१. चांपौहरौ—राव चांपा का वंशज पृथ्वीराज। वंधीयां चाळां—वस्त्र के छोर बांधकर, कमर कसकर। खार खवा—कुपित हुआ। साम्हाँ—सम्मुख। खड़ीया—चला, गया। पीथल सूं—पृथ्वीराज से। मांझी—मुखिया। वारोवारी—क्रमशः। सौह—सभी। विढ़िया—लड़े।

२. संफळीया—लड़ाई की। ऊगै—उदय। अरक—अर्क, सूर्य। आफळीया—टक्करें ली, भिड़ें। ढोव—आक्रमण में। गयंद—हाथी। ढळीया—गिरे, मारे गये।

३. मरौड़ि—कुचल कर, मरौड़कर। दीहां—दिनों। सगळौ—समस्त। रामायण—भयानक संग्राम, स्वर्गवास। कीधौ-किया।

४. आवधे—हथियारों से। अणी—नोक। सर—बाण, सिर। फूटैं—पार निकले, आर-पार निकल कर। पांचाहरौ-पंचायन का वंशज पृथ्वीराज। पठि-पट्ठा, बली। दूदाहरे—राव दूदा मेड़तिया के वंशज जयमल्ल वगैरह। दोळै—चारों ओर। हेक—अकेले को। हठि—हठ ठान कर।

६७. गीत राज प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

कूंभकरनि घणौ पराक्रम कहता, भिड़ हणमंत जीतौ भाराथि।
पीथा तणौ प्रवाड़ौ पिड़ भुंइ, हेकण किण्हीं न चढीयौ हाथि ॥१॥

सुत विसवास पमण सुत सारे, भिड़तै कपि जीतौ भाराथि।
जता तणा तणौ तण जीपण, हेकै प्रिसण न चढीयौ हाथि ॥२॥

रांमण तणौ भीछ वडरावत, जीतौ रांम तणै भड़ जोइ।
भीछ माल चा तणौ हेक भड़, कांधै विरद वहै नह कोइ ॥३॥

पनरहसै कळहीया प्रिथीमल, लोह मराट तणी म्रत लीह।
दोढ़ौ हणू पाड़ीयौ दोमझि, दूणौ पड़ीयौ पूगै दीह ॥४॥

---

६७. गीतसार–उपर्युक्त गीत बगड़ी के स्वामी पृथ्वीराज जैतावता राठौड़ पर कथित है। कवि कहता है कि संसार में कुंभकर्ण सर्वाधिक पराक्रमी कहा जाता था पर उस पराक्रमी कुंभकर्ण को युद्ध में हनुमान ने मार गिराया था। परन्तु, पृथ्वीराज की बराबरी में अकेले लड़ने की अन्य किसी भी योद्धा की हिम्मत नहीं हुई।

---

१. कूंभकरनि–राजा रावण का भाई कुंभकर्ण। घणौ–अधिक। भिड़–लड़कर। हणमंत–हनुमान। जीतौ–विजय किया। भाराथि–युद्ध। पीथा–पृथ्वीराज जैतावत। प्रवाड़ौ–युद्ध वीरता की ख्याति। पिड़ भुंई–रणभूमि। हेकण–एक ने। किण्हीं–किसी।

२. पमण सुत–पवन पुत्र हनुमान। सारे–तलवार, शस्त्र। कपि–वानर, हनुमान। जैता तण–जैतसिंह का पुत्र पृथ्वीराज। तण–तन। जीपण–विजय करने। हेकै–एक। प्रिसण–पिशुन, वैरी।

३. भीछ–योद्धा। वडरावत–बड़ा–उमराव। तणौ–के। भड़–योद्धा। माल चा–राव मालदेव का। कांधै–कंधों पर। विरद–विरुद। वहै–वहन करे।

४. पनरहसै–संवत् पन्द्रह सौ में। कळहीया–युद्ध लड़ा। लोह मराट–लोह स्तंभ, विकट वीर। म्रत–मृत्यु। दोढ़ौ–डेढ़ा। हणू–हनुमान। दोमझि–युद्ध। पूगै दीह–आयु का अन्तिम दिन आ पहुंचने पर, दिन पूरा होने पर।

६८. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

वडौ केसरीसिंघ वडगात वीरमहरौ, वीडरे न गौ रणतूर वायें।
प्रिथीमल निवड़ राठौड़ वड़ परिणवा, आभि लागौ भलौ कांमि आयें ॥१॥

धड़ै मनि ध्रू जिसैं कीयै धजवड़ हथौ, धड़े अरीयण तणौ वाहतौ धार।
आवीयें भारि राठौड़ आखाढ़ सिंघ, वौम लग वाधीयौ भलौ जुधवार ॥२॥

कलंक लागै नहीं तेणि वंसि तिणि कीयें, अभिनमौ रयणहरि सूर ऊगौ।
प्रिथीमल प्रघट प्रिसणां घड़ा ऊपरी, पतंगरा पुड़ लगें भलौ पूगौ ॥३॥

करे अखीयात अत घात अविचल करे, कळह सुत जेम सत्र पाड़ कूंता।
प्रिथीमल तणौ सुर थांनि पाधारीयौ, हंस हरि हंसरा मंडळ हूंता ॥४॥

---

६७. गीतसार—उपरिलिखित गीत बगड़ी के स्वामी पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा युद्ध में वीरता प्रदर्शित कर वीरगति प्राप्त करने का परिचायक है। गीतकार कहता है कि राव वीरमदेव का वंशज पृथ्वीराज केशरीसिंह के तुल्य पराक्रमी था। युद्धतूर्य की ध्वनि होने पर वह युद्ध के मैदान से डर कर नहीं भागा। वह तो शत्रु सेना को पराजित करता हुआ रणखेत में काम आया। और यों वड़प्पन प्राप्त कर आकाश तक जा लगा।

---

१. केसरीसिंघ—बब्बरसिंह। वडगात—वड़े शरीर वाला। वीरम हरौ-राव वीरमदेव का वंशज। वीडरे—डर कर। न गौ—नहीं गया। रणतूर—रणतूर्य—रण वाद्य विशेष। वायें—बजने पर। निवड़—अधिक, भयंकर। घड़—सेना। परिणवा—परिणय करने। आभि लागौ—आकाश से जा लगा। कांमि आयौ—काम आया, मारा गया।

२. घड़ै—शरीर, पक्ष। ध्रू—ध्रुव, अटल। जिसैं—जैसे। धजवड़ हथौ—खड्गधारी वीर। अरीयण—शत्रु। वाहतौ—प्रहार करता। धार—तलवार, शस्त्र की धार। भारि—वजन। आखाढ़सिंघ—युद्ध कला में प्रवीण। वौम लगे—आकाश तक। वाधीयौ—बढ़ा। जुधवार-युद्ध के समय।

३. अभिनमौ—अभिनव। रयण—रणमल्ल (?)। सूर—सूर्य। ऊगौ-उदित हुआ। प्रघट—प्रकट। प्रिसणां घड़ा—शत्रु सेना। पतंग रा—सूर्य के। पुड़—तल, लोक। पूगौ—पहुँचा।

४. अखीयात—अक्षय यश वार्ता। कळह—युद्ध। सत्र—शत्रु। पाड़—पटक कर, मार कर। कूंता—कुन्ति, भाला। पाधारीयौ—पधार गया। हंस—प्राण। हरि हंस रा—सूर्य लोक। हूंता-से।

६९ गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

सिव आगीं सकति पयंपै सांचौ, सारि चडावे घणा सत्र ।
पिड़ि पांडवां न सकीयै पूरे, पीथल ताई पूरीया पत्र ।।१।।
माहाभारथि मेड़तै प्रिथीमल, घट थट चाढ़ेय लोहि घणै ।
अरिजण आगा रहिया आधा, ताइ पत्र भरीया जैत्र तणै ।।२।।
खवीयां जेह अढ़ारह खोहणि, आधी रहीया तां आगांह ।
चौसटि खापरि भरीया चळूवळी, हेकण कमंध तणी हथवाह ।।३।।
सुरे नरे सारां कहीयौ समहरि, हींदू नमौ तुहाळा हाथि ।
सलखाहरा तणै म्रत श्रोणी, सकति तणौ सौह धायौ साथि ।।४।।

—रायमल खिड़िया रौ कह्यौ

---

६९. गीतसार—उपरांकित गीत राठौड़ वीर पृथ्वीराज जैतावत पर रचित है। गीत में कवि ने पार्वती और शिव के परस्पर वार्तालाप के माध्यम से गीतनायक की युद्ध-वीरता की सराहना की गई है। कवि वर्णन करता है कि पार्वती शिव से सत्य ही कह रही है कि आज तक अनेक युद्ध लड़े गए हैं और कितने ही योद्धाओं का शस्त्रों से प्राणान्त हुआ है। महाभारत जैसे विकट युद्ध में पाण्डवों द्वारा खप्पर पूर्ण नहीं किया जा सका था लेकिन पृथ्वीराज ने मेड़ता के युद्ध में उस खप्पर को रक्त से पूर्ण कर दिया।

---

१. आगीं—सामने, समक्ष। सकति—शक्ति, पार्वती। पयंपै—कहती है। सारि—अस्त्र शस्त्र, तलवार। घणा—घने। सत्र—शत्रु। पिड़ि—युद्ध में, महाभारत में। न सकीयै—नहीं कर सके। पूरे—पूर्ण। पीथल—पृथ्वीराज ने। ताइ—वह, उस। पूरीया—पूर्ण किया, भर दिया। पत्र—पात्र, खप्पर।

२. प्रिथीमल—पृथ्वीराज। घट थट—सैन्य समूह, शरीरों का समूह। चाढ़ेय—चढ़ाये। लोहि—लोहा, शस्त्र, लोहू। अरिजण—अर्जुन पाण्डव। आगा—आगे, पूर्व। भरीया—परिपूर्ण किया। जैत्र तणै—जैतसिंह तनय ने।

३. खवीया—खाये, आहार किये। जेह—जो, धनुष की डोरी। अढ़ारह खोहणि—अठारह अक्षोहिणी सेना। आगांह—आगे। चौसटि—चौसट चण्डिकाएँ। खापरि—खप्पर। चळूवळि—लोहू। कमंध—राठौड़। हथवाह—हस्तप्रहार, हाथ के वार।

४. सारां—समस्तों ने। समहरि—युद्ध। तुहाळ—तुम्हारे। सलखाहरा—राव सलखा से वंशोत्पन्न। श्रोणी—लोहू। सौह—समस्त। धायौ—तृप्त हुआ। साथि साथ वाले।

७०. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

अनिकारा ऊवंध वहैं अमग दिसि, जम संकळि तांणतां जगि ।
पीथल किम लोपै परोयावट, पिड़ि वंधण वंधीयौ पगि ।।१।।

सैंधै मुहे जुरणि सांकळीयौ, अखई हरा भुजे अनमंध ।
लाज तणौ वंधण पग लागौ, वंधण किम लोपं सत्रवंध ।।२।।

माल सुछळ सड़ ववेउ मेड़तै, जावौ निवहि निबंध जण ।
पिडि संकळ संकळीयौ पोथल, पीथल सकळीया प्रिसण ।।३।।

सांमिज मेल्है विमुहि संचरै, आऊ गमण करै उरि अंध ।
तैं जगि अव वरण तणै जैतावत, बंध निरवाहि हूवौ निरवंध ।।४।।

—रामां सांदू रौ कह्यौ

---

७०. गीतसार—गीत में गीतकार ने गीतनायक पृथ्वीराज की वीरता की सराहना करते हुए लिखा है कि अन्य वीर कहे जाने वाले योद्धा यमराज के पाश में वंध कर अगम्य दिशा में प्रयाण करते हैं, किन्तु पृथ्वीराज अपनी कुल-परम्परा का कैसे उल्लंघन कर सकता है ? क्योंकि उसके पैर तो कुलमर्यादा के गौरव और युद्धपरम्परा से आवद्ध है । अतः वह तो युद्ध में प्राण त्याग कर बंधन-मुक्त हो गया ।

---

१. अनिकारा–योद्धा, अन्य । ऊवंध–वंधन रहित, मर्यादा भंग करते हुए । वहैं–चलते हैं । अगम दिसि–दुर्गम दिशा । जम संकळि–यमराज का पाश । तांणतां–खींचते लोपै–उल्लंघन करे । परीयावाट–पीढ़ियों की मर्यादा । पिड़ि–युद्ध । पगि–पैर ।

२. सैंधे–जानते पहचानते । मुहे–मुख, सामने । जुरणि–जरा, मृत्यु । सांकळीयौ–लोह शृंखला से वंधा हुआ । अखईहरा–अखैराज का पौत्र पृथ्वीराज । अनमंध–जिसे कोई बांध नहीं सकता, निर्बंध । लाज तणौ–लज्जा का । वंधण–वंधन, रस्सा । सत्रवंध–शत्रुओं को बांधने वाला, शत्रुओं का वंधन स्वीकार कर ।

३. माल–राव मालदेव जोधपुर । सुछळ–युद्ध । ववेउ–बढ़ कर, कटवा कर । निर्वाहि–निभाकर, वहनकर, समूह । निवंव–निर्बंध, मुक्त । संकळ–जंजीर । संकळियौ–बंधा हुआ । संकळीया–बन्दी बनाये । प्रिसण–वैरी विरोधी ।

४. सांमिज–स्वामी को, सामने से । मेल्है–छोड़कर जावें । विमुहि–विमुख, विरुद्ध । संचरै–चले, गमन करे । आऊ–आयु । गमण–विताना, खोना । उरि–हृदय का । निर्वाहि–निर्वहन करे । निरवंव–मुक्त ।

७१. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

हरि माळ रंभ तोडर हीचंतौ, धीर चलण चंपतौ धड़।
सिंदूरीयौ प्रिथीमल सोहै, घाइ डहळी डोहतौ घड़ ॥१॥
नीग्रहि वहि राठौड़ निहसतौ, निवहि निडारि बांधीयै नेत्ति।
जळ दळ प्रघळ डोहि जैताउति, खळभळ रतन कीया रणखेत्रि ॥२॥
पिड़ि मांझी चुणतौ पांणीहंड, वीर कळोधर सूध वंस।
पीथल क्रम अरि सिरि परठवतौ, हिलियौ सांम्हौ सेन हंस ॥३॥
वडै संग्रामि हालीए विहंगे, वप धीरठ तन हार विहार।
आठी सीप घडा भंजे अरि, अखाहरौ विवनौ ऊदार ॥४॥

—रामा सांदू रौ कह्यौ

---

७१. गीतसार—उपरांकित गीत में कवि ने गीतनायक पृथ्वीराज को हंस तथा शत्रुओं के घटों को मोती उपमित कर युद्ध रूपक की रचना की है। कवि कहता है कि पृथ्वीराज रूपी हंस शिव माला (नर मुण्ड) अप्सरा और पदाभूषण (टोडर) को घसीटता हुआ शत्रुओं के शरीर को रौंदता चलता है। वह रक्त रंग में सना हुआ यों शत्रु सेना का मंथन करता शोभा पाता है।

---

१. हरि—शिव, प्राणवायु। माळ—माला। रंभ—अप्सरा। तोडर—राजा द्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठा सूचक स्वर्ण पदाभूषण। हीचंतौ—घसीटता हुआ। धीर—हंस, योद्धा। चलण-पैर। चंपतौ-रौंदता। धड़—धट, बिना सिर के शरीर। सिंदूरियौ—रक्त-रंजित। सोहै—शोभा पाता है। घाइ—घायल। डहळी—तलवार। डोहतौ—विलोड़न करता, नाश करता। घड़—सेना।

२. नीग्रहि—दमन करता रोकता हुआ। वहि—चलता। निहसतौ—संहार करता, प्रहार करता। निवहि—समूह, निर्वहन करता। निडारि—निडर। नेत्ति—वीरता के प्रतीक स्वरूप भुजाभूषण। जळदळ—जलरूपी सेना। प्रघळ—अपार। डोहि—मथ-कर। खळभळ—विचलित। रण खेत्रि—युद्ध क्षेत्र।

३. पिड़ि—युद्ध। चुणतौ—चुनता। पांणीहंड—मोती। वीर कळोधर—राव वीरम का कुलदीपक। क्रम—पैर। अरि—शत्रु। परठवतौ—धरता हुआ। हिलियौ—चला। सांम्हौ—सामने।

४. विहंगे-पक्षी, हंस। वप—शरीर। धीरठ—हंस। हार विहार—आहार विहार। सीप घड़ा—सीप रूपी सेना। भंजे—नाश करके। विवनौ—मारा गया, मृत्यु को प्राप्त हुआ।

७२. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

पूरिसातन नमौ तुहाळा पीथल, पिड़ि वाहंतां चंद्रप्रहास ।
चळण तणौ बलि चील चांपीयौ, असिमर ऊकसीयौ आकास ॥१॥

जोर जुतैं कीयौ जैतावत, खळ सिरि वाहंतां खड़ग ।
पुड़ ऊपड़े मुहे पड़ियालग, पांए चांपांणी पनंग ॥२॥

अखईहरा जुतैं अतुळीवळ, अति सूरति दाखीयौ अभंग ।
नग मांडीया नाग सिरि निसिचळ, नल व्रंन ऊपड़ीयौ नहंग ॥३॥

वासिग ब्रहमंड वैरि वहंतैं, पगि पडियाळगि पीड़वीया ।
श्रग पायाळ सत्रे सूरातन, कमधज तणा वखांण किया ॥४॥

---

७२. गीतसार—ऊपरलिखित गीत पृथ्वीराज जैतावत पर रचित है । गीत में गीतनायक के पौरुष की वन्दना करते हुए लिखा है—हे पृथ्वीराज ! तुम्हारे पौरुष को धन्य है, जब तुम तलवार से शत्रुओं पर प्रहार करते हो तब तुम्हारे पैरों के दवाव से पाताल लोक में शेषनाग अकुला जाता है और प्रहार हेतु ऊपर उठी हुई तलवार आकाश से जा लगती है ।

---

१. पुरिसातन-पौरुषता । तुहाळा—तेरा । पीथल—हे पृथ्वीराज । पिड़ि—युद्ध में । वाहंतां—चलाते, वार करते । चंद्रप्रहास—तलवार । चलण—पैर । चील—सर्प, शेषनाग । चांपीयौ—दवा दिया, कुचल डाला । असिमर—तलवार । ऊकसीयौ—ऊंचा किया हुआ ।

२. जोर—वल । जैतावत—जैतसिंह के पुत्र । खळ सिरि—शत्रुओं के सिरों पर खड़ग—तलवार । पुड़—तल । ऊपड़े—उखड़ती है । पड़ियालग—तलवार । पाँए—पैर । चांपाणी—दव गया । पनंग—सर्प ।

३. अखईहरा—अखैराज का पौत्र । सूरति—सूरत । दाखीयौ—कहा । अभंग—वीर । नग—पैर । मांडीया—रोपे, चित्रित किये । नाग—सर्प । निसिचळ—स्थिर, अडिग । नहंग—आकाश ।

४. वासिग—वासुकी, सर्प । पगि—चरण । पीड़वीया—पीड़ित किया । श्रग—स्वर्ग । पायाळ—पाताल । सत्रे—शत्रु । सूरातन—शूर वीरता । कमधज तणा—राठौड़ पृथ्वीराज का । बखांण—वर्णन ।

७३. गीत राव प्रिथीराज जैतावत बगड़ी रौ

वाहू मंड नीमजि कोटि दुवाहै, धारण सांची कूंत धरि।
असि असवार सहित ऊपाड़े, पिथै नांखीया भींम परि ॥१॥

संतनहरा जिहीं नवसहसै, ऊकळीयै कांकळि असम्मि
भड़ नैं भिड़जि चाढ़ि मुंहि भाल, गयण तणै नांखीया गम्मि ॥२॥

पिड़ि पंचयणाहरै जिम पंडव, सेल सुकरि साहे तरसि।
ऊचंडीया जैताउति ऊंचा, अखै सारिसा सहित असि ॥३॥

भींम जिहीं प्रिथीराज मछरि भरि, तुड़ि चढ़ि चाढ़ै कूंति तरैं।
पूगै दहि भलां पूजवीया, पवंग प्रिसण आकास परैं ॥४॥

---

७३. गीतसार-यह गीत पृथ्वीराज जैतावत राठौड़ का है। कवि ने गीत में कहा है कि पृथ्वीराज ने भीमसेन पाण्डव वीर की भांति युद्ध की भयानक स्थिति में अश्व और अश्व-सवारों पर आक्रमण किया। अंततः उसने शत्रु योद्धाओं और अश्वों को धराशायी कर मृत्यु का वरण किया।

---

१. वाहूमंड-भुजदण्ड। नीमजि-युद्ध कर। दुवाहै-दोनों हाथों से प्रहार कर। कूंत-भाला। असि-घोड़ा। असवार-अश्वारोही। ऊपाड़े-तेजी से दौड़ा कर, उठाकर। पिथै-पृथ्वीराज। नांखीया-डाले। भींम परि-भीम सेन की तरह।

२. संतनहरा-शान्तनु पौत्र, भीमसेन। जिही-जैसे ही। नव सहसैं-राठौड़। ऊकळीयै-धधकते, उबलते। कांकळि-युद्ध। असम्मि-भयावह, असंभव। भड़-वीर। नैं-और। भिड़जि-घोड़ा। मुंहि-मुख। गयण-आकाश। नांखीया-डाले।

३. पिड़ि-युद्ध। पंचयणाहरै-पंचायन का वंशज। सुकरि-हाथ। साहे-उठाकर, पकड़ कर। तरसि-शीघ्र, तृषित, प्रबल इच्छा वाला। ऊचंडीया-ऊपर की ओर फेंके। जैताउति-जैता का वंशज, पृथ्वीराज। अखै-अखैराज, अक्षत। सारिसा-सदृश। असि-घोड़े।

४. मछरि भरि-मात्सर्य पूरित हो। तुड़ि-सेना। कूंति-भाले। तरैं-तब, तरह। पूगै दीह-आयु की पूर्णता पर। पवंग-घोड़े। प्रिसण-वैरी। परैं-उस पार तक, ऊपर।

७४. गीत राणा देवीदास जैतमालोत सिवाणा रौ

नह वळियौ वैर कनै नाराइण, दससिर सीत हरी तिण दोख ।
सिंधल देवीदास संघरिया, सुरग कीयौ बिजपाळ संतोख ॥१॥

घर भारमल तणौ धण धारौ, जुड़े नांखीयौ जुवो जूवौ ।
सवा लाख बेटां हूं सरसौ, हेको देवीदास हूवौ ॥२॥

बाप बंधव सुरग अकठा बैठा, रिमहर वेधे रोहणियास ।
माथै कंवर लोक मेहणौ, दीन्हौ नह देवीदास ॥३॥

भेळे देवीदास भाद्राजण, वि जैवैर आपमल वहियौ ।
कमध हंसै पास सूं कन्हला, रांमण काळमुखै रहियौ ॥४॥

---

७४. गीतसार–यह गीत सिवाना के शासक राणा देवीदास पर रचित है । देवीदास के पिता राणा विजयपाल को जोधपुर के राव जोधा के संकेत से आपामल सिंधल ने छल से मार डाला था । देवीदास ने आपामल सिंधल को मार कर अपने पिता का वैर-शोधन किया और पुनः सिवाना पर अपना अधिकार स्थापित किया । गीत में भाद्राजून के स्वामी आपामल सिंधल के मारने का वर्णन है ।

---

१. नह–नहीं । वळियौ–लौटाया जा सका, लिया गया । कनै–पास, से । दससिर–रावण । सीत–सीता । हरी–अपहरण किया । तिण–उस । दोख–दोष । सिंधल–राठौड़ों की एक शाखा । संघरिया–संहार किया । बिजपाळ–सिवाना का शासक विजयपाल, राणा देवीदास गीतनायक का पिता ।

२. धण–अत्यधिक । धारौ–रिवाज, प्रचलन । जुड़े–युद्ध लड़कर । नांखीयौ–डाला, गिराया । जुवो जूवौ–अलग अलग । हूं–से । सरसौ–सदृश, अधिक । हेको–अकेला, एक ।

३. अकठा–एकत्रित, एक हाथ । रिमहर–शत्रु । वेधे–युद्ध । रोहणियास–नाश किया । माथै–सिर पर । लोक–लोग, संसार । मेहणौ–उपालंभ, लांछन । दीन्हौ–दिया । नह–नहीं ।

४. भेळे–आक्रमण किया । विजै–राणा विजयपाल । आपमल–आपामल सिंधल भाद्राजून का स्वामी । वहियौ–बहा, चला, मारा गया । कमध–राठौड़ विजयपाल । कन्हला–निकट वालों से । कालमुखै–कलंकित, लांछित ।

७५. गीत भगवानसिंघ दळावत राठौड रौ

मद मोकळ थकौ भटकतो मैंगळ, थरकै गढ़ भांजणौ थटे।
भगवानो गजराज भयंकर, पहलूणी आवीयौ पटे ॥१॥
राजां नै खांनै रायजादो, अर आंगमण न आवै आज।
छिलतै पटे दलै रौ, छावो, रिण खहतौ बहतौ गजराज ॥२॥
सत्रजण साझियां सांफळियौ, जिके चढ़ै वळि डांण जूवौ।
जम घूमता जिसौ जोधपुरौ, हालाहळ सारिखौ हूवौ ॥३॥
दीवा लाय जाय कुंण देखै, तातो पड़ै सत्रां जड़ तोड़।
ओ आवरत थकौ आखाड़ो, जोधहरो बहै तळ तोड़ ॥४॥
राहग वीर अभिनमां रामां, काळा भुजंग ग्रहिये केवांण।
छोडीया भला दला रै छावे, दळ खुरसांण तणौ सिर डांण ॥५॥

—ईसरदास सांदू रौ कह्यौ

---

७५. गीतसार—उपर्युक्त गीत राठौड़ वीर भगवानसिंह दलपतसिंहोत की युद्ध वीरता पर रचित है। गीत में भगवानसिंह को उन्मत्त गजराज के समान वर्णित किया गया है। कवि का कथन है कि वीर भगवानसिंह मदमस्त हाथी की भाँति शत्रु-गढ़ों के टक्कर मारता हुआ घूमता है। बैरियों का जड़-मूल से विध्वंस करता है।

---

१. मोकळ—छोड़ता, घना। थकौ—हुआ। भटकतौ—घूमता। मैंगळ—गजराज। थरकै—भय से कांपता। भांजणौ—ध्वस्त करता। थटे—सेना, सज्जित। पहलूणी—पहली वार। पटे—गर्दन की केशावली।

२. अर—रिपु। आंगमण—अधिकार में। सत्रजण—शत्रुसमूह। छिलतै—छलकते, वहते। दलै रौ—दलपतसिंह का। छावो—पुत्र। खहतौ—टक्कर देता। वहतौ—चलता।

३. साझियां—संहार किया। सांफळियौ—युद्ध लड़ा। जिके—वे, जिस। डांण—मद। जूवौ—अलग, समाप्त हुआ। जम—यम। हालाहळ—विष।

४. दीवा—दीपक। लाय—अग्नि। तातो—तप्त, तेज। जड़—जड़मूल। आवरत—साक्षात्। थकौ—है। तळ—अधीनता, जड़मूल।

५. राहग—रण रीति का ज्ञाता। अभिनमां—अभिनव। रामां—रामसिंह। काळा भुजंग—काला नाग। केवांण—तलवार। खुरसाण—बादशाह, मुसलमान। तणौ—के।

७६. गीत अमरसिंघ रौ गोठ रा भाव रौ

हैथाट कळळ दमंगळ हूंकळ, भटकळ विमळ अनैसो भांत ।
अमर ऊठ पाहुणो आयौ, अचळ सबळ दळ ले अधरात ॥१॥
भटके सुं धन परोसैं जाभौ, दड़ड़ै तत रत घ्रत दड़ड़ ।
अमरो अभूगत करैं आपरी, भुगत विरणासैं नहीं भड़ ॥२॥
अमरा तणौ नेसगो ऊपड़, जड़ळग मुंहड़ें जूवो जुवै ।
अचळा जिसा प्राहुणां आया, हुवै वैरहर जिसौ हुवै ॥३॥
अमरो कहै भलांही आयौ, अटके प्राहुणो अचळ ।
धड़चे धार अधार धूंकळें, वाढ़ै ढूंढ़ै कटक वळ ॥४॥
हूंकळ सबळ दळ बादळ दौळां, खाग खिमण सिर खरहंड ।
परबत विहंड मालवत पाळग, सीस सिथर सूखसंक वस हंड ॥५॥

---

७६. गीतसार—उपरांकित गीत अमरसिंह और अचलसिंह के पारस्परिक युद्ध का परिचायक है। अचलसिंह ने अमरसिंह पर आक्रमण किया। अमरसिंह ने वीरता पूर्वक मुकाबला कर उसकी वीरोचित आवभगत की। उस वीर ने खड्गाघात से सुद्रव रूपी भोजन करवाया और रुधिर रूपी घृत का परिवेषण कर तृप्त कर दिया। इस प्रकार प्रशंसनीय स्वागत सत्कार किया।

---

१. हैथाट—अश्व समूह। कळळ—कोलाहल। दमंगळ—युद्ध। हूंकळ—घोड़ों की हिनहिन ध्वनि। भटकळ—मांस मदिरा का आहार। अनैसी—अद्भुत। पाहुणो—अतिथि। अचळ—अचलसिंह। अधरात—अर्द्ध रात्रि।
२. भटके—तलवार का प्रहार। परोसै-परोसना। जाभौ—बहुत अधिक। दड़ड़ै-दड़ दड़ की ध्वनि। तत—तप्त, ताजा। रत घ्रत—रक्त रूपी घृत। अभूगत—अभुक्त, अव्यवहृत। भुगत—भुक्ति, दावत, भोजन। विरणासैं—नाश करे।
३. नेसगो-घर, निवास। ऊपड़—उठ गया, उखड़ गया। जड़ळग—तलवार। मुंहड़े—मुख, धारा। जूवो जुवै—अलग अलग। प्राहुणां—मेहमान। हुवै—हो। वैरहर—शत्रुता। जिसौ—जैसा।
४ भलांही—अच्छा ही। अटके—रोकने वाला। धड़चे। टुकड़े टुकड़े। धार—तलवार। धूंकळें-लड़ाई। वाढै—मारे। ढूढे—खोज कर। कटक—सेना। वळ-भोजन, शक्ति।
५. हूंकळ-कोलाहल, अश्वों की हिनहिनाहट ध्वनि। दौळां—चारों ओर। खाग—तलवार। खिमण चमक। खरहंड— सेना, चिता। विहंड—विध्वंस। मालवत—मालदेव का पुत्र। वस-वज्जा। हंड—हड्डियां, घूमना।

७७. गीत भींवसिंघ हींगोलावत राठौड़ रौ

रणखेत धुके कुरखेत र वणायै, हाथी ऊचंडतौ सुजि हाथ ।
आगै ही लेखवतां अरजण, भीम तणै माथै भाराथ ।।१।।

पैलां दळ कैरव पाणीहड, अणियै ऊचंडतौ अफर ।
रूपा वाळो भीम रूंधियौ, पांडव वाळा भीम पर ।।२।।

साबळ अणी भांजियौ सिलहां, ध्रवी बखतरां ऊपर धार ।
गदा ब्रिकोदर तणी गिणाणां, हींगोळावत तणा हथियार ।।३।।

भार नींबाहर ओडि भुजाडंड, थाहर सांचो भीम थयौ ।
मार बिहार साहतौ माथै, गदा बाहतौ धरण गयौ ।।४।।

बधियौ भीम भीम हूं बीरत, अत टाळग परमेसर मौड़ ।
पांडव भीम पराक्रम पड़ियौ, रिण हूं ऊखणियौ राठौड़ ।।५।।

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

७७. गीतसार—उपरांकित गीत भीमसिंह हींगोलावत राठौड़ वीर पर लिखित है। कवि माला सांदू कहता है कि भीमसिंह कौरव रूपी शत्रुओं को विनष्ट करता हुआ महावीर भीमसेन पांडव के समान लक्षित हुआ। भीमसिंह वीरता में महान्‌वीर भीमसेन से भी बढ़कर हुआ। भीम पाण्डव की गदा की भांति ही भीमसिंह के भाले और तलवार की ख्याति हुई।

---

१. धुके—क्रोधान्वित हुआ। कुरखेत—कुरुक्षेत्र। ऊचंडतौ—ऊपर फेंकता। आगैही—पहले ही। लेखवतां—जानते थे। अरजण—अर्जुन। तणै—के। माथै—पर। भाराथ—युद्ध।

२. पैलांदळ—शत्रुसेना। पाणीहड—मोती, हाथी। अणिये—भाले की नोक। अफर—पीछे न फिरने वाला। रूपा वाळो—रूपसिंह वाला पुत्र। रूंधियौ—रौंद डाला, रुद्ध कर दिया। पर—भांति।

३. सावळअणी—भाले की नोंक। भांजियौ—ध्वस्त किया। सिलहां—कवच। ध्रवी—बरसी, गिरी। वखतरां—जिरहवख्तर। धार—तलवार। ब्रिकोदर—भीमसेन। गिणाया—गणना हुई। हींगोलावत—हींगोलदास का वंशज। तणा—का।

४. भार—दायित्व। नींबाहर—निम्बकरण का पौत्र। ओडि—अपने ऊपर लेकर। थाहर—सिंह की गुफा, स्थान। थयौ—हुआ। विहार—विदीर्ण कर।

५. बधियौ—बढ़ कर हुआ। हूं—से। बीरत—वीरत्व। टाळग—पृथक् करने। रिण—युद्ध। ऊखणियौ—उठा, उठाया गया।

७८. गीत नरहरदास कांधळोत राठौड़ रौ

कसिया सक सूर निकसिया कायर, सेळां तणौ विरोळे सायर।
वाहां तळ पड़िया बहादर, नेजां गयौ बहंतां नरहर ।।१।।

हिचे करे लेगौ दळ हटके, वळ कर हाड भांजतौ वटके।
झरतै रुधिर झारीयौ झटके, कांधळहरो वाजियौ कटके ।।२।।

तेगां आसमान लग तांणी, अणियां ऊपर खिवें ऊवांणी।
पूगौ पार सार तिर पांणी, ऊंडै राव ऊंडौ ऊदांणी ।।३।।

---

७८. गीतसार—यह गीत राठौड़ों की कांधलोत शाखा के वीर नहरिदास पर रचित है। गीतकार कहता है कि वीर नरहरिदास युद्ध में शत्रुओं को अपने धक्के चढ़ाकर पीछे धकेल ले गया। वह भालों और तलवारों के आघातों से शत्रुओं को धराशायी करता हुआ रण-समुद्र के उस ओर निकल गया।

---

१. कसिया—कटिबद्ध होकर। सक-शख्स मर्द। निकसिया-निकले। सेलाँ तणौं—भालों का, भाले रूपी। विरोळे-मंथन कर। सायर—सागर। वाहाँ—प्रहारों, वाहुओं। तळ-नीचे, स्थल, धरती। नेजां—भालों, ध्वजाओं। वहंतां—प्रहार होते, चलते हुए। नरहर—गीतनायक नरहरिदास।

२. हिचें—प्रहार, टक्कर। दळ—समूह। हाड—हड्डियाँ। भांजतौ—तोड़ता हुआ। वटके—टुकड़े, खण्ड। झरतै-प्रवाहित। झारीयौं—पटका, काट कर डाला। झटके-तलवार का प्रहार। कांवलहरो—राव कांधिल राठौड़ का वंशज। वाजियौ—लड़ा, युद्ध किया। कटके—सेना।

३. तेगां—तलवारें। असमान लग—आकाश तक ऊपर। तांणी—खेंची, उठाई। अणियां—नोकें, पैनी धाराएँ। खिवै—चमकती है। ऊवांणी—नग्न, बिना म्यान के। पूगौपार—उस ओर पहुंचा। सार—शस्त्र, तलवार के। तिर—तैर कर। पाणी—जल; रुधिर। ऊंडै—गहरे, अगाव। ऊंडौ—गंभीर, गहरा। ऊदांणी—उदयसिंह का पुत्र, नरहरिदास।

७६. गीत भाखरसिंघ राठौड़ रौ

अनकारां कंवरमप वप आगै, अवधारवै मया असगाह ।
तैं भुजपांण कहर भाखरसी, सकव थकै रीझवीयौ साह ।।१।।
बीजा मया करावै बीजी, धर भोगवै तजे खत्र घौड़ ।
चढ़ीयौ तूं पतसाह तणौ चित, मांटी थकौ करनहर मौड़ ।।२।।
बळ छोडीयै संतोखै बीजा, क्रोध बेध तज समय कया ।
अकबर कीध भाखरे ऊपर, मछर मुणसवट तणी मया ।।३।।
असपत राय तणौ अनकारां, सक कूवथण माथे सहीयौ ।
हमस कहर दरबार हरावत, तूं रजपूत थकौ रहीयौ ।।४।।

---

७६. गीतसार—उपर्युक्त गीत भाखरसिंह राठौड़ के पराक्रम का परिचायक है । गीत में वर्णन है कि अन्य राजपुत्र तो बादशाह अकबर को देह समर्पित कर कृपापात्र बने हैं और भाखरसिंह ने अपने पराक्रम के बल पर कृपा प्राप्त की है । इस प्रकार शाही दरबार में भाखरसिंह ने क्षत्रियत्व के बल पर सम्मान लिया है ।

---

१. अनकारां—वीर, अन्य कार्य । समप—समर्पित कर । वप—वपु, शरीर : अवधारवै—ग्रहण करके, विचार करके । मया—कृपा । असगाह—बिना संबंध के । तैं-तुमने । भुजपांण—भुजबल से । कहर-युद्ध, शत्रु । सकव—मर्दमी । थकै-से, होता हुआ । रीझवीयौ—प्रसन्न हुआ । साह—बादशाह ।

२. बीजा—दूसरे राजवंशी । धर भोगवै-धरा का भोग करते हैं, राज्य करते हैं । तजे—त्याग कर । खत्रघौड़—राजपूती और घोड़े । चढीयौ—पसन्द आया, मन चढ़ा । पतसाह तणौ—बाहशाह के । मांटी—पुरुषार्थ, मर्दमी । थकौ—से । करनहर मौड़—करणसिंह के कुल वालों का सिरमौर ।

३. वळ—बल, शक्ति । संतोखै—सन्तुष्ट करते हैं, प्रसन्न करते हैं । वेध—लड़ाई, विरोध । कया—शरीर । कीध—की । भाखरे—भाखरसिंह । मछर—मात्सर्य । मुणसवट—मर्दानगी ।

४. असपत—अश्वपति, बादशाह । सक—शख्स । कूवथण—बुरा वतन; बुरी बात । माथै—पर । सहीयौ—सहन किया । कहर—विपत्ति, युद्ध । हरावत—हरिसिंह का पुत्र । रहीयौ—रहा ।

८०. गीत कंवर रामसिंघ राठौड़ री वीरता रौ

गया सार वेळां चढ़ै गयंद खाथा गुड़ा, जोर तज सोर मुंह फौज जाडी ।
काळ धाराळ ची पाळ रांमो कंवर, अंत दे वधी भगवान आडी ।।१।।
तोप जळ भाव रा जाळ भालां तणौ, ऊतरौ पार नह सार ऊंडे ।
सिंघ रा केसरीसिंघ छूटे समंद, वांध पुळ अतळ बळ फौज वूंडे ।।२।।
सांकियौ हसम सोह विसम पड़तां समौं, साथ भाराथ कर तूझ सारू ।
तारकां डोलियां गहण भालां तणौ, महण फूटौ अजादा वांध मारू ।।३।।
दुरड़ियां गुड़ै गज वाज पासै दहूं, चालियौ नेट दळ फेंट चडियौ ।
अटक कटकां करै जोधहर आभरण, पाज पड़ि वांध गजराज पड़ियौ ।।४।।

—माला सांदू री कह्यौ

---

८०. **गीतसार—उपरांकित गीत राठौड़ वीर रामसिंह की युद्ध-वीरता के वर्णन का है। गीतकार का कथन है कि जब युद्ध भयावह रूप में होने लगा तब सेना के प्रचण्ड योद्धा तक आशंकित हो उठे। उस समय वह वीर अपनी सेना को विजय के लिए आश्वस्त करता हुआ जूझकर वीरगति को प्राप्त हुआ।**

---

१. गयंद—हाथी। खाथा—तीव्रता से। गुड़ा—लुढ़का कर। सोर मुंह—तोपों के मुख। फौज जाडी—सघन सेना। काळ—मृत्यु, यमराज। धाराळ ची—योद्धा की, सागर की। पाळ—रोक, पाल, पैज। रांमो कंवर—कुंवर रामसिंह। आडी—सामने, तिरछी।

२. जळ भाव रा—जल के भाव का। जाळ—जाल, जाली। भालां तणौ—भालों का। पार—इधर से उधर जाना। नह—नहीं। सार—लोहा। ऊंडे—गहरे। समंद—समुद्र। वांध पुळ—पुल बांधकर। अतळ वळ—अतुल बल, अपार शक्ति। वूंडे—डूबना, जल में समाहित होना।

३. सांकियौ—शंकित हुआ। हसम—सेना, फौज। सोह—समस्त। विसम—विकट, विषम। समौं—समय। भाराथ—युद्ध। सारू—लिए, वास्ते। तारकां—तैराकों। डोलियां—डोली, घायलों को उठाकर लेजाने का एक उपकरण। महण—महार्णव—महासागर। फूटौ—मर्यादा छोड़ कर बहने लगा। अजादा—मर्यादा, पाळ।

४. दुरड़िया—नालियां, घोरे की नाली का अग्र भाग। वाज—हाथी। पासै—पार्श्व, पास में। दहूं—दोनों। नेट—अन्त में, कठिनता से, धैर्यपूर्वक। दळ—समूह। फेंट—टक्कर, मुकाबले। अटक—बाधा, रोक। कटकां—सेना। जोधहर—राव जोधा का वंशज। पाज—पाळ, पैज।

८१. गीत ठाकर रूपसिंघ राठोड़ रौ

विखम हाक वीरां डमर डाक जटधर बगै, येळा पड़ धाक दिनकर अचंभा ।
पाक सूरत निरख रूप खग पछटतां, रूप सूं थई मसताक रंभा ।।१।।
अगन चख ऊंच पौसाख जंवहर अतर, वरहर हणै खग नगन वाहे ।
लखे नाहर सुतन ईसी लागी लगन, मगन अपछर रथां गगन मांहे ।।२।।
सेन बेहूं चकी बकी किलकी सगत, तोप भभकी भुकी तिमर ताजो ।
चक चकी रीभ की बीभकी तकीछक, छकी व्रंदारकी देख छाजां ।।३।।
आस यंद पुर हरी रूपकी आसकी, चितोव्रत जरहरी नेह चौजां ।
तजे रथ थरहरी बीज बादळ तसी, परहरी बीच गजां फौजां ।।४।।

८१- गीतसार–उपरांकित गीत ठाकुर रूपसिंह की रणवीरता पर कहा हुआ है । रूपसिंह ने नागौर के राजाधिराज बखतसिंह की ओर से गगवाणा के मैदान में महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर की विशाल वाहिनी सेना से युद्ध लड़ा था । यह वीर जयपुर की प्रबल सेना से दो वार इधर से उधर निकल कर वीरगति को प्राप्त हुआ था ।

---

१. विखम हाक–विषम आवाजें । वीरां–बावन वीरों । डमर–डमरू बाजा । डाक–ढाक नामक बाजा । जटधर–शिव । बगै–बजे । येळा–पृथ्वी । दिनकर–सूर्य । पाक–पवित्र, सुन्दर । निरख–देखकर । रूप–रूपसिंह । खग पछटतां–तलवार के प्रहार करते । थई–हुई । मसताक–मस्त, लुब्ध । रंभा–अप्सरा ।

२. अगन–अग्नि जैसे धधकते । चख–चक्षु, नेत्र । जंवहर–जवाहरात । अतर–इत्र । वरहर–वैरी । हणै–मारता है । खग–तलवार । नगन–नग्न । वाहे–चलाकर । लखे–देखे, जाने । नाहर सुतन–नाहरसिंह का पुत्र रूपसिंह को । मगन–मग्न । अपछर–अप्सरा । गगन–आकाश ।

३. बेहूं–दोनों । चकीबकी–चकित । सगत–शक्ति, देवी । भभकी–भभक ने का भाव तिमर–अंधकार, धुंआ । चकचकी–चकवा चकवी (?) । बीभकी–चौंकी । छक–तृप्त हुई । व्रंदार की–देवबाला, अप्सरा । छाजो–छबीला, सुन्दर वर ।

४ आसकी–आशिक । चितोव्रत–चित्तवृत्ति । नेह–स्नेह । चौजां–उमंग, दिल्लगी । थरहरि–कांप उठी । बीज–विद्युत । बादळ–मेघ । तसी–तैसी, जैसी । परहरी–छोड़ी । गजां–हाथियों की ।

वखतसी मोहोर कूरम दळां वीढ़तां, वाढ़ अरहर घणौ समर वढीयौ ।
वर अच्छर आंवेरे धरे वप, चांमरे ढुळंतां रथे चढियौ ।।५।।

पीयो प्याला महत राग नित परी रा, जड़त जिग मंदिरां दीप जूपै ।
सुरपुर विचाळै यंदपुर समौसर. रूपपुर वसायौ कमंध रूपै ।।६।।

---

५. वखतसी–राजाधिराज वखतसिंह नागौर के। मोहोर–मुंह आगे, अगाड़ी। कूरम दळां–कछवाही सेना से। वीढ़तां–लड़ते। वाढ़–काट कर। अरहर–शत्रुओं को। वढियौ–कट मरा। अच्छर–अप्सरा। वप–वपु, शरीर। चांमरे–चंवर। ढुळंतां–भलते हुए।

६. राग–प्रेम रस। परी रा–अप्सरा के। जड़त–जटित। जूपै–दीप्त होता है, जलता है। विचाळै–मध्य में। यंदपुर–इन्द्रपुरी। समौसर–समान, बराबर। कमंध–राठौड। रूपै–रूपसिंह ने।

---

८२. गीत उदैसिंघ लखधीर भावसी चांदावत नौखा नींबडो रौ

उदैसींघ नरसींव लखधीर आवतां, वींद वणीया चहु नगारां वावतां ।
रेवतां ओरतां वाहतां रावतां, चाढ़ीयौ मेड़तै नीर चांदावतां ।।१।।

---

८२. गीतसार—यह गीत राठौड़ की मेड़तिया शाखा की चांदावत प्रशाखा के वीर उदयसिंह, नृसिंह, लखधीरसिंह और भावसिंह नौखा नींबड़ी ठिकाने वालों की युद्ध-वीरता का है। उल्लिखित चारों वीरों ने कछवाहों की सेना पर आक्रमण कर शौर्य प्रदर्शित कर वीरगति प्राप्त की।

---

१. घड़–सेना। आवतां–आते समय। वींद- रण दूलहा। नगारां-वावतां–युद्धकारी नगाड़े बजते। रेवतां–घोड़े। ओरतां–धकेलते। वाहतां–चलाते। नीर–आब।

वेढ़तो धरर थरर चहुं वै वळां, झाट पड़ कैमरां साट भरळक झळां।
खाट खड़ ढालड़ां टूक ऊडै खळां, वाज गरकाव कीधा समर बाघळा ॥२॥

धज विलंद ओरीया स्यामध्रम धारीयां, कूरमां तणा दळ वीच अहंकारिया।
चाहतां साहतां औसरां वारीयां, अखाड़ै ऊडीया वूर तरवारीयां ॥३॥

गाघरा वाघरा फाट पड़ियागरे, कारिमां कांचुवा जरद टुकड़ा करे।
ओढ़णी झिलंव वरुकां झपट ऊतरे, वीनणी कूरिमा तणी कमधांवरे ॥४॥

जेहड़ी टिकोरां टूक उड़ि जूजुवा, चूड़ कट हाथळां घाव श्रोणि चुवा।
दुधारां कटारां पड़ै गैहणां दुवा, हेत कर पौढीया लूथवाथां हुवा ॥५॥

विजा रौ भावसी तणा बाखाणीया, जोसरा बींटिया चार चक जांणिया।
तिलक कर ललाटां अच्छरां तांणिया, बराबर विमाणां वीच वैसाणिया ॥६॥

---

२. वेढ़तो–लड़ाई करते। धरर थरर–पृथ्वी के कंपित होने की ध्वनि, गर्जन और थरर ध्वनि। झाट–चोट। कैमरां–धनुषों की। साट–गोफन। भरळक–चमक। झळां–ज्वाला। खाट खड़–खट खट की ध्वनि। ढालड़ां–ढालों की। टूक–टुकड़े। खळां–दुश्मनों के। वाज–घोड़े, लड़कर। गरकाब–गर्क। बाघळा–सिंह।

३. धज–अश्व, वीर। विलंद–भाग्यशाली, वड़ा। स्यामध्रम–स्वामिधर्म। अहंकारीया–अंहकारी। साहतां–नाश करते। औसराँ–अवसरों। वारीयां–वार, समय। अखाड़ै–युद्ध के मैदान में। वूर–बुरादा, चूर्ण।

४. गाघरा–लंहगे। बाघरा–विदीर्ण कर। कारिमां–कायरों। जरद–कवच। झिलंब–गर्दन की सन्नाह। वीनणी–दुलहिन, सेना। कमधां–राठौड़। वरे–वरण करे।

५. जेहडी–जैसे ही, डोरी। टिकोरां–ध्वनि। जूजुवा–अलग अलग। चूड़–चूडा, दस्ताने। हाथळाँ–हाथों के। श्रोणि–लोहू। चुवा–टपका, बहने लगा। दुधारां–दोधारें। गैहणां–आभूषण। हेत कर–प्रीति पूर्वक। लूथ बाथां हुवा–भुजपाशों में लिपटे हुए।

६. विजारौ–विजयसिंह का। बींटिया–परिपूर्ण, भरे हुए। चार चक चारों–दिशाओं में। अच्छराँ–अप्सराएँ। तांणिया–अपनी ओर खींच कर ले गई। वैसाणियां–बैठाकर।

८३. गीत राव कल्ला राठौड़ सिवाणा रौ

केवांणमेर भुज वांमसे सकसे, भारथ वहसि न हसीयौ भंत।
खत्रवट समंद मथे खेड़ेचा, अत काढ़ीयौ अमोल अंत ।।१।।

रूक घाय वाय नेत रिसा, भारी रयण तणा भाराथ।
रजवट चै मथते महणारव, हीरो मरण चढ़ियौ हाथ ।।२।।

चंद्रप्रहास मेर चालवते, कला भला धिन हाथ क्रत।
हद रज ध्रम तणौ हीलोहळ, मथ काढ़ीयौ अमोलक अत ।।३।।

हीलोहळ तैं हीलोळ वैरहर, घटै मांहि नर मांछ घणौ।
भलो अवख अंतकाळ भांजीयौ, तोटौ मोटा वोल तणौ ।।४।।

---

८३. गीतसार—ऊपरकथित गीत मारवाड़ के सिवाना राज्य के अधिपति राव कल्याणसिंह राठौड़ की युद्ध-वीरता का है। कवि कहता है कि हे राव कल्ला! तूने तलवार रूपी मथनी से रणभूमि रूपी समुद्र का विलोड़न कर मृत्यु रूपी अमूल्य रत्न को खोज निकाला।

केवांण—तलवार। मेर—सुमेरुगिरी, मुखिया। सकसे—शख्स। भारथ—युद्ध। वहसि—जोश में भरकर। भंत—भांति। खत्रवट—क्षत्रियत्व। समंद—समुद्र। मथे—मंथन करके। खेड़ेचा—राठौड़, राठौड़ों का खेड़ स्थान पर शासन करने के कारण कवि ने इस शब्द का कल्ला के लिए प्रयोग किया है। अत—अत्यन्त, अति, अंत। काढ़ीयौ—निकाला। अंत—मृत्यु।

२. रूक—तलवार। घाय—चोट, घाव। नेतरिसा—मंथनरज्जु-तुल्य। भारी—विशाल, वज़नी। रयण—समुद्र, रण। तणा का। रजवट—क्षत्रित्व, शौर्य। चै—के। मथते—मंथन करते। महणारव—समुद्र, महार्णव।

३. चन्द्रप्रहास—तलवार। चालवतै—चलायमान होते। कला—राव कल्ला। क्रत—करता, कृत। हद—सीमा, वेहद, प्राज। रजध्रम—क्षात्रधर्म, वीरों का धर्म। हीलोहळ—समुद्र। मथ—मंथन कर। अत—मौत।

४. हीलोळ—मंथन कर, आन्दोलित कर। वैरहर—वैरियों। घटै—घट गए, नष्ट होने से कम हो गए। मांछ—मत्स्य, मगरमच्छ। घणौ—अधिक। अवख—कठिन, संकट। अंतकाळ—मृत्युकाल। तोटौ—कमी, अभाव। मोटा—बड़ा। तणौ—को।

८४. गीत उदैसिंघ राठौड़ बघेरा रौ

खंचे राह रूपी बघेरे सतारा सेन आय खत्ती,
सको वत्ती अराबे लागीये हेके साथ।
ग्रहांपत्ती अचंभैन कौतकां थभे गैण,
भूपत्ती ऊदलै ओहे आरंभे भाराथ।१।
किल्ला मत्थे मरेठां हजारां आण हल्ला कीधा,
जल्ला भांजे दीह अंगी विछोड़ जरद।
जमींदार भल्लां भल्लां नमैं पै अल्ला जोध,
मल्लां तणा रचै जुधाँ मामल्ला मरद।।२।
राग थंडे सिंघवी उमंडे सैन घटा रूप,
सिंधुरां घुमंडे नेजा छटा चे ओसांण।
पांण छंडे अनेरां धू मंडे नको गढ़ां पती,
आसती बीजाई अखै उमंडे आरांण।।३।

—चतरभुज खिड़िया रौ कह्यौ

---

८४. गीतसार—ऊपरलिखित गीत अजमेर मेरवाड़ा के ठाकुर उदयसिंह राठौड़ के पराक्रम का द्योतक है। उदयसिंह ने बघेरा स्थान पर मरहठों की सेना के आक्रमण करने पर उनका साहस पूर्वक सामना किया था। गीत में गीतकार ने गीतनायक की बहादुरी और निर्भीकता की प्रशंसा की है।

---

१. राह—राहु। बघेरे—बघेरा स्थान। सतारा—पूना सतारा। खत्ती—त्वरा से, नुकसान पहुंचाने वाली। सको—सब कोई। वत्ती—पलीता। अराबे—तोपखानें। हेके—एक। ग्रहांपत्ती—सूर्य। कौतकां—कौतुक के साथ। थंभे—रुका, ठहरा। गैण—आकाश। ऊदलै—उदयसिंह। आरंभे प्रारंभ किया। भाराथ—युद्ध।

२. मत्थे—ऊपर। आण—आकर। हल्ला—आक्रमण। जल्ला—जिला, सेना। भांजे—नाश कर। विछोड़—त्याग कर। जरद—कवच। भल्लां भल्लां—अच्छे अच्छे, बड़े बड़े। नमैं—झुकते हैं। अल्ला—यवन (?)। मल्ला—मालदेव। तणा—के।

३. थंडे—(स्वर) समूह। सिंघवी—सिंधुराग, युद्धोत्साही राग। उमंडै—उमड़ती। घटा—रूप—मेघ घटा स्वरूप। सिंधुरां—हाथियों। घुमंडे—घूमते। नेजा—निशान, भाले। पांण—शक्ति। अनेरा—अन्य अनेक। धूमंड—सिर उठाते हैं, सामना करने का साहस करते हैं। नको—कोई नहीं। आसती—शक्ति, साहस। बीजाई—दूसरे। अखै—अक्षयराज। आरांण—युद्ध।

८५. गीत राव सगतसिंघ जोधा खरवा रौ

सुरयंद भूतेस अरक-वंसनायक, वासव हर दणियर वर वीर।
माधवान संकर हंस जादम, धरपत सिव सूरज रिणधीर ।।१।।

दुरभख अघ तम गमण रौर दुख, प्रज संत कव सुपातां पाळ।
सिध देवां मुनी ग्रहां नरां सिध, कौसक त्रिचख तरण खळ काळ ।। ।।

वज्रधर वाम बयळ अथ वंटण, सुरपत रुद्र दिनकर नरसूर।
तण कसप विध कसप जोध तण, पुळिन्द्र जटी सामळ छकपूर ।।३।।

धुज गज सांड सपतास विड़ंग धुज, कुळस पिनाक किरण केवाण।
गणहर परम जगतमिण सगतो, सक्र सिंभ रिव देव सुजाण ।।४।।

— किरपाराम बारहठ रौ कह्यौ

---

८५. गीतसार–उपर्युक्त गीत राव शक्तिसिंह जोधा राठौड़ के विभिन्न गुण-वर्णनों का है। कवि गीतनायक को देवराज, महादेव, सूर्यवंशनायक राघवेन्द्र, श्रीकृष्णचंद्र और सूर्य के समान गुणों वाला तथा अकाल, पाप, अंधकार, दरिद्रियों और दुखियों का उद्धारक चित्रित किया है।

---

१. सुरयंद–सुरेन्द्र, इन्द्र। भूतेस–शिव। अरकवंश नायक–सूर्यवंशी श्रीरामचन्द्र। दणियर–सूर्य। माधवान–इन्द्र। हंस–सूर्य। जादम–श्रीकृष्ण।

२. दुरभख–दुर्भिक्ष, अकाल। अघ–पाप। तम–अंधकार। गमण–नाशक। रौर–दरिद्रता। प्रज-प्रजा। संत–साधु। सुपातां–सुपात्र, याचक। पाळ–पालक, पोषक। कौसक–रामचन्द्र। त्रिचख–त्रिचक्षु, शिव। तरण–सूर्य। खळ काळ–दुष्टों के लिये यमराज।

३ वज्रधर–इन्द्र। वाम–वामदेव, महादेव। वयळ–सूर्य। दिनकर–सूर्य। तण कसप–सूर्य। जोध तण–जोधा का पुत्र। पुळिन्द्र–इन्द्र। जटी–महादेव। सामळ–श्रीकृष्ण। छकपूर–गर्वित, मदमस्त।

४. धुज–ध्वज। सांड–नंदि। सतपास–सप्ताश्व। विड़ंग–अश्व। कुळस–कुलिश, इन्द्रायुध। पिनाक–धनुष। केवाण–तलवार। गणहर–गणधर, शिव। जगतमिण–सूर्य। सगतो–शक्तिसिंह। सक्र–इन्द्र। सिंभ-शंभु। रिव–सूर्य। सुजाण–सुजान, ज्ञानवान।

८६. गीत राव खंगार जोगावत राठौड़ रौ

नगअेम जोइया खंगार नरेसुर, देस विदेसे दूजा ।
अेक पहुर ताहरौ न हालै किणही राव कनौजा ॥१॥

जगदातार सैण जोगावत, ताहरौ तूझ तिहाये ।
चौथा भाग तणौ चहु पहुरे, रांणौ हुवै न राये ॥२॥

सांचौ कहूं सलखहर स्वांमी, दिन हूंता दूमाळै ।
पहुर अमे कहियौ पांतरीये, अेका घड़ी न हालै ॥३॥

---

८६. गीतसार–उपर्युक्त गीत राव खंगार जोगीदासोत राठौड़ की वदान्यता की प्रशंसा का बोधक है । गीतकार ने कहा है कि अन्य राजाओं का दिया हुआ दान एक प्रहर तो क्या घड़ी भर के लिए भी पर्याप्त नहीं होता है और खंगार द्वारा प्रदत्त द्रव्य जीवन-निर्वाह के लिए आयु भर पर्याप्त होता है ।

---

१. अेम–ऐसे, इस तरह । जोइया–देखे । दूजा–दूसरे, अन्य । पहुर–प्रहर । ताहरौ–तेरा, तुम्हारा, उनका । हालै–चले, पूर्ण हुए । किणही–किसी का भी । कनौजा–कान्यकुब्ज के स्वामी खंगार, राठौड़ों के पूर्वजों का मारवाड़ में आने से पूर्व कन्नौज पर शासन रहा था; इस लिए राठौड़ कन्नौजे कहलाते हैं ।

२. जगदातार–महादानी । सैण–मित्र, स्नेही । जोगावत–जोगीदास का पुत्र राव खंगार । ताहरौ–तेरा, तुम्हारा । तिहाये–तृतीय भाग । तणौ–को । चहु–चार । पहुरे–प्रहर । राये–राय अथवा राव पद वाले ।

३. साँचौ–सत्य । सलख हर–राव सलखा के वंशधर राव खंगार । हूँता–से । दूमाळै–कठिनता से पूरा पड़ता है, तंगी । अमे–मैंने । पांतरीयै–भूल कर, भ्रम से । हालै–चलता है, पूर्ण पड़ता है ।

८७. गीत राव खंगार जोगावत राठौड़ रौ

पूजारा सुकवि करै गुण पाती, आखर अगर तणा उदगार ।
विकसै पुह मुख झालर वाजै, खत्री माळ गुण चढै खंगार ॥१॥

ईहग देस देस चा आवै, धू धारण वांधीयै घड़ै ।
जग चखता पहिलौ जोगावत, चौसर माळा जगत चढ़ै ॥२॥

कवि सेवगर तूझ राव कमधज, आखर पहुप करै अणपार ।
जोधाहरा पूजीयौ जुग पुड़, दिणयरता पहिलौ दातार ॥३॥

---

८७. गीतसार—उक्त गीत राव खंगार राठौड़ की वदान्यता के वर्णन का है । कवि कहता है कि राव खंगार का मुख सूर्योदय होते ही याचकों को दान देने के लिए विकसित होता है । कवि लोग अक्षर-रूपी पुष्पों से उसकी पूजा करते हैं । ऐसा वह दातार राव जयशाह वरसिहोत से खारिया स्थान पर लड़ता हुआ मारा गया था ।

---

१. पूजारा—सेवक, पुजारी । गुण पाती—गुणानुवाद, गुणों की पात्रता । आखर अगर, तणा—अक्षर रूपी अगुरु का । उदगार—उद्गार, प्रकट । विकसै—खिलता है, उत्कलित होता है । पुह—राजा, पुष्प । झालर वाजै—झल्लरि वजते ही, प्रातःकाल होते ही । खत्री—क्षत्रिय । माळ गुण—गुणों की माला, यशकाव्य का पुष्पहार । चढ़ै—भेंट होती है, अर्पित होती है ।

२. ईहग—चारण कवि, याचक । चा—का । धू धारण—ध्रुव धारणा लिए हुए, अटल । घड़ै समूह, झुण्ड । जग चखता—संसार का चक्षु, सूर्य । चौसर माळा—फूलोंकी माला

३. कवि सेवगर—कवि रूपी पुजारी । कमधज—कर्मध्वज राठौड़ । आखर पुहप—अक्षर-(काव्य) रूपी पुष्प । अणपार—अपार । जोधाहरा—राव जोधा का वंशज । जग पुड़—पृथ्वीतल, पृथ्वी-लोक । दिणयरता—सूर्योदय । दातार—दानदाता ।

८८. गीत चन्द्रभाण दुवारकादासोत राठौड़ पांचला रौ

सभै सार सिणगार खटत्रीस सोलह सरस, विकस खत्र सोहलै चढ़ै वारू ।
कंवारी परिणवा काज आए कठठि, मूंगळ घड़ा चंद्रभाण मारू ॥१॥

कसै कांचू जिरह टोप महमद कमळ, विमळ हाथळ सबाहू वणाई ।
दुलह द्वारक तणौ पेखि करजि दुलहणी, उवर सूं जुड़ण चित चाल आई ॥२॥

अंगि विरहा अगनि अरावां ऊछळै, लाज तजि परिणवा कोडि लेखै ।
नवौढ़ा बींदणी काज आए निकट, बींद प्रौढ़ा तणौ मगज पेखै ॥३॥

ठेलि तोरण खगां गजां कूंभांथळां, वडै मांढै दिली समर वागौ ।
लाडली वरण चलि आवीयौ, लाडलौ, लोह चंवरी विचै आभ लागौ ॥४॥

---

८८. गीतसार— उपर्युक्त गीत ठाकुर चन्द्रभानु द्वारिकादासोत राठौड़ की युद्धवीरता पर रचित है। गीत में कवि ने युद्ध की क्रियाओं को विवाह-कार्यों से सादृशता दिखाते हुए रूपक का विधान किया है। गीत नायक ने महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर के निधन पर शिशु नरेश अजितसिंह की रक्षा में दिल्ली में युद्ध लड़ कर वीरगति प्राप्त की थी।

---

१. सभै-सजकर। सार—शस्त्रों का। सिणगार—शृंगार। खटत्रीस—छत्तीस। सोलह—सोलह गहने। सरस—सुन्दर। विकस—विकसित हो। खत्र—वीरता। सोहलै—सावे, विवाह मुहूर्त्त। परिणवा—ब्याहने। कठठि—जोश में भर कर। मूँगळ घड़ा—मुगल सेना। मारू—मारवाड़ वाला।

२. कसै—कसे हुए। कांचू जरद—कवच रूपी कंचुकी। अहमद—शीश पर धारण किया जाने वाला गुच्छा तुल्य आभूषण विशेष। कमळ—शीश। विमळ—निर्मल। हाथळ—हथेली, पञ्जा। सबाहू—भुज मूल सहित। द्वारक तणौ—द्वारिकादास का पुत्र। पेखि—देख कर। उवर—छाती। जुड़ण—मिलने, आलिंगन करने। चाल—चल कर।

३. अंगि—अंग में। विरहा—विरह। अगनि—अग्नि। अरावाँ—तोपों की। उछळै—उछलती है। परिणवा—परिणय हेतु। कोडि—प्यार लाड। बींदणी—वधू। बींद—पति वर। प्रौढ़ा तणौ—प्रौढ़ का। मगज—मस्तक।

४. ठेलि—धकेल कर। खागां तलवारों। कूभांथळां—कुम्भस्थलों। मांढै—मण्डप, कन्यापक्ष का घर। वागौ—हुआ। लाडली—दुलारी। लाडलौ—प्रिय। आभ—आकाश के।

ऊचरै जेथि धवळ मंगळ अपछरा, हुवै धुनि वेद गहमह हजारां ।
ऊमरां खूमरा कमंध रां ऊपरां, सेहुरा चौसरा दीयै सारां ॥५॥

खेचरां भूचरां पळचरां मिळै, नारद सकत रुद्र मेळा ।
जगत परणीजतै जुवा रहता जके, भांण परणीजतै हूवा भेळा ॥६॥

सारधारां मिळे सजन सुहामणा, विघन वाधावणा चढै वांनी ।
मेछ तैं वार अणपार मांढ़ी मुड़े, जुड़े जोधार सिरदार जांनी ॥७॥

घुरंतां नगारां अनैं गाजी घड़ां, रळी ग्रीधां करै वीर रोळै ।
गजां नेजां तण सीह कर तोड़तौ, धरा मुंह परणीयौ दीह धौळै ॥८॥

उरड़ि मुरड़ि भुजां सेज रिण आंगणै, लोह वोहां मिळे मांण लीधी ।
पौढ़ी निरखि आसा तणौ पोतरौ, कुसम वरखा सुरां हरख कीधी ॥९॥

— जीवण कल्ला रौ कह्यौ

---

५. जेथि–जहां । धवळ मंगळ–विवाहादि शुभावसरों पर गाये जाने वाले मांगलिक गीत । अपछरा–अप्सरा । धुनि वेद–वेद मंत्रों की ध्वनि । गहमह–धूमधाम, भीड़ । ऊमरां–उमरा । खूमरां–मुसलमान उमरा । सेहुरा–मुकुट, मौर । चौसरा–चौलड़े हार । सारां–शस्त्रों के, लोहे के, समस्त ।

६. खेचरां–भूतप्रेत, नभचारी । भूचरां–शिव तथा उनके गण । पळचरां–मांसहारी । सकत–शक्ति, देवी । जुवा–जुदा, अलग । जके–जो, वे । भाण–उदयभानु के । भेळा–शामिल ।

७. सारधारां–शस्त्रधारा । सुहामणा–सुहाने वाले, अच्छे लगने वाले । वाधावणा–वर्द्धन करने वाले, स्वागत करने वाले । मेछ–मुसलमान । तैं वार–उस समय । मांढ़ी–कन्या पक्ष वाले । मुड़े–पीछे फिरे । जानी–बराती, वरयात्री ।

८. घुरंतां–घोष करते, नर्दन करते । अनैं और । घड़ां–सेना । रळी–खुशी । ग्रीधां–गृद्धों । रोळै–शोरगुल । नेजां–झण्डे, निशान । परणीयौ–विवाह किया । दीह धोळै–दिन में, दिन दहाड़े ।

९. उरड़ि मुरड़ि–जोश में आगे बढ़ और पीछे लौटकर । रिण आंगणै–रणांगण । वोहां–वहु, प्रहारों । मांण–उपभोग । पौढ़ी–शयन की हुई, प्रौढ़ा नायिका । पोतरौ–पौत्र । वरखा–वर्षा । हरख–हर्षित होकर ।

८९. गीत कीरतसिंघ पूरणमलौत राठौड़ रो

आझा लग वीर साझिवा अवसर, रिण रीझल सूंतीयै रिण ।
खांगां तणै अखाड़े खिणहण, कीता जिम आवै कमण ॥१॥

पूरण पीठ पीठ पूरावत, रावत पतौ उघाड़ै रूक ।
आवै कूळ सभाय आप रै, चाय धाय रमिवा अणचूक ॥२॥

चंदपहास पूजिवा चाचर, धहड़ चित धारियै सधीर ।
अण तेड़ीयौ थकौ वीह आवै, विण छेडीयौ जागतौ वीर ॥३॥

आंगमण वार खंगार अभिनवौ, उगिम लग खागवोह उपाड़ि ।
आवै कीरतिसिंघ अखाड़े, वीरत करण प्रवाड़े वाडि ॥४॥

---

८९. गीतसार—उपरांकित गीत कीर्तिसिंह पूर्णमलोत राठौड़ की युद्ध-वीरता पर सर्जित है। कीर्तिसिंह बिना निमंत्रण स्वेच्छा से रावत प्रतापसिंह की सहायतार्थ रण में जूझने के लिए आया था। कवि कहता है कि वह वीर जिस प्रकार रण में आया उस प्रकार अन्य कौन आ सकता है।

---

१. आझा लग—इच्छा कर। साझिवा—सफल करने। रण रीझल—युद्ध पर अनुरक्त होने वाला, युद्ध पर रीझने वाला। खागां तणौ—तलवारों के। अखाड़े—अखाड़ा, रण-स्थल। खिणहण—शरीर गोदाने, घायल होने। कीता—कीर्तिसिंह। कमण—कौन।

२. पूरावत—पूर्णमल्ल का पुत्र कीर्तिसिंह। पतौ—प्रतापसिंह। उघाड़ै—नग्न। रूक—तलवार। कुळ सभाय—वंश के स्वभाव से। चाय—कामना कर। धाय—चलकर। रमिवा—लड़ने। अणचूक—अचूक।

३. चंदपहास—चन्द्रप्रहास, तलवार। चाचर—रण क्रीड़ा, मस्तक। धूहड़—राव धूहड़ राठौड़ का कुलोत्पन्न कीर्तिसिंह। अण तेड़ीयौ—बिना बुलाया। थकौ—हुआ। वहि—चलकर। छेड़ीयौ—छेड़छाड़ किया हुआ। जागतौ—जाग्रत, सजग।

४. आँगमण—साहस, अंगीकार कर। वार—समय। अभिनवौ—अभिनव। उगिम लग—दिन भर। खागवाह—तलवार के प्रहार, युद्ध। उपाड़ि—नाशकर। वीरत—वीरत्व के। प्रवाड़े—यश प्रशस्ति, युद्ध। वाडि—बाट, सीमा।

९०. गीत राव रतनसिंघ उदावत जैतारण रौ

राधव जिम नमौ बळाक्रम रतना उग्राहिया वैर असमांन ।
विढ़ त्रिगुट वैराट कियौ वसि, खिवियौ धरा सिर भाऊखांन ॥१॥

केसव जेम काढ़िया केवा, अतुळीवळ रयण आदेश ।
लंक वधनौर खड़ग वळ लीधी, दहकंध रोळवियौ दरवेस ॥२॥

रावतवट आंगमण रतनसी, घणौ सराहै सुपह घण ।
गढ़ पालटै रहचियौ असींग, त्रीकम जिम जैत तण ॥३॥

विढ़ नारायण वैर वाळवा, जूटा रयण ज तूं जमजाळ ।
पालट हेम दुरंग वैरपुर, चूरीयौ रांमण चांमरीयाळ ॥४॥

—चूंडा धधवाड़िया रौ कह्यौ

---

९०. गीतसार— उपर्युक्त गीत जैतारण के अधिपति राव रतनसिंह की युद्ध-वीरता पर कथित है। कवि ने रतनसिंह को राघवेन्द्र रामचन्द्र के समतुल्य वलाढ्य प्रकट करते हुए लिखा है कि श्रीराम ने लंकापति रावण को विजित कर लंका पर अधिकार किया और रतनसिंह ने भाऊखांन को परास्त कर वदनौर पर कब्जा किया। इस प्रकार रतनसिंह रूपी केशव ने यवन वादशाह रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर लंका रूपी वदनौर पर स्वशासन स्थापित किया।

---

१. राघव—श्रीरामचन्द्र। जिम—जैसे। बळाक्रम—वलाढ्यता। उग्राहिया—वदला लिया, वसूल किया। विढ़े—लड़ कर। त्रिगुट—लंका राज्य। वसि—वश में। खिवियौ—चमका। भाऊखांन—वदनौर का यवन शासक भाऊखांन।

२. काढ़िया—निकले। केवा—वदला। अतुळीवळ—अपार वली। रयण—राव रतनसिंह। आदेस—नमन। खड़गवळ—तलवार के वल से, युद्ध कर। दहकंध—राजा रावण। रोळवियौ-संहार किया। दरवेस—वादशाह मुसलमान।

३. रावतवट—रावत पने का वल, रावतपन। आंगमण—स्वीकार। सराहै—सराहना करते हैं। सुपह—योद्धा, राजा। घण—घने, वहुत। पालटै—पलटने पर। रहचियौ—संहार किया। असींग—महावीर। त्रीकम—त्रिविक्रम, श्रीराम। जैत तण—राव जैत्र के तनय।

४. विढ़—लड़। वाळवा—प्रतिशोध लेने। जमजाळ—वीर, यमपाश। हेम दुरंग—लंका-गढ़। वैरपुर—वदनौर। चूरियौ—मारा। चामरीयाळ-मुसलमान।

९१. गीत राव रतनसिंह उदावत जैतारण रौ

रिण मिळीयौ जितूं सींधळां रतनां, कूंत सजै मांचती कळळ ।
सोहड़ घणौ विढंते सीहौ, क्रम वाहै पुहतौ कुसळ ।।१।।

खाग झळां माथै खींमावत, तैं आवाहे निभय तण ।
वाहे चलण सुहड़ वाढ़ाडे, रायपुरै छांडियौ रण ।।२।।

सीहौ सत्र साभतै रतनसीं, दोमझि यूं दीठौ सकस ।
लसियै लांछण जकां लेखवी, ऊवरियै गिणीयौ अंजस ।।३।।

---

९१. गीतसार—उपरांकित गीत जैतारण के राव रतनसिंह उदावत पर रचित है। रतनसिंह ने सिहा सिंधल को युद्ध में मार कर सिंधलों पर विजय प्राप्त की थी गीतकार ने गीत में गीतनायक की युद्धवीरता की श्लाघा की है।

---

१. रिण मिळीयौ—युद्ध में मिला, युद्ध किया। सींधळां—राठौड़ों की एक शाखा के व्यक्ति। रतनां—राव रतनसिंह उदावत। कूंत—भाला। मांचती—होते समय। कळळ—युद्ध का कोलाहल। सोहड़े—योद्धाओं। विढंते—मारते, लड़ते। क्रम—क्रमशः, पैर। वाहै—प्रहार करते। पुहतौ—पहुंचा।

२. खाग झळां—खड्ग का ताप। माथै—पर, सिर। खींमावत—राव खेमकर्ण का पुत्र रतनसिंह। आवाहे—युद्ध, बुला कर। निभय तण—निर्भीकता पूर्वक। वाहे—प्रहार कर। चलण—पैर (?)। सुहड़—वीर। वाढ़ाड़े-संहार किये। रायपुरै—रायपुर स्थान के स्वामी ने। छांडियौ—छोड़ा, त्यागा।

३. सीहौ—सिहा सिंधल राठौड़। सत्र—शत्रु। साभतै—मारते। दोमझि—युद्ध। दीठौ—देखा। सकस—शख्स, वीर। लसियै—भागने का। लांछण—लांछन, कलंक। जकां—जो, जिनके। ऊवरियै—बच रहने वालों। अंजस—गर्व, खुशी।

९२. गीत राव रतनसिंघ उदावत जैतारण रौ

रावतवट तणै भरोसै रतनै, इम कहियौ मुरधरा श्रणी
धड़ श्रापणी धरा छळ धारां, श्रवियै नहीं ताइ किसा धणी ॥१॥

खापर धरा सरिस खेडेचै, घट श्राफळियौ लोह घणै ।
धरती तिकी रयण धणियापी, तिकी न छांडी खेम तणै ॥ ॥

धरती नियम धणी जोधाहर, वड रावत नह गयौ विदेस ।
जिण नीपनौ रयण नर नायक, नवसहसौ तिण रहियौ नेस ॥३॥

---

९२. गीतसार—उपरिलिखित गीत राठौड़ वीर राव रतनसिंह उदावत जैतारण पर रचित है। गीत में गीतकार ने राव रतनसिंह के मुख से कहलवाया है कि—"यह शरीर पृथ्वी की रक्षा के लिए धारण किया हुश्रा है; पृथ्वी पर शत्रु का श्राक्रमण होने पर उसे जो नहीं कटवाता है वह कैसा शासक है ?" उस वीर ने श्रपने शासक धर्म का निर्वाह किया श्रौर श्रपने शासित भूभाग का त्याग कर श्रन्यत्र शाही सेवा श्रादि के निमित्त विदेश में नहीं गया।

---

१. रावतवट–रावतपन। तणै–के। मुरधरा–मारवाड़ देश। श्रणी–सेना। धड़–घट, शरीर। श्रापणौ-श्रर्पित करना, श्रपना। धरा छळ–भूमि की रक्षा के युद्ध हेतु। धारां–धारण करते हैं। श्रवियै–संहार नहीं करवाये, कटवाकर नहीं गिरवाये। ताइ–वे। किसा–कैसा। धणी–स्वामी, राजा।

२. खापर–मुसलमान। खेडेचै–खेड़पति, राठौड़ों की पूर्व राजधानी खेड़ स्थान पर थी, इसलिए गीतनायक को खेड़ेचा कहा गया है। श्राफळियौ–तड़फड़ाया, टक्कर ली। लोह घणै–श्रस्त्र-शस्त्रों की सघन बौछारों में। तिकी–जो। रयण–रतनसिंह ने। धणियापी–श्रधिकार में रक्खी, स्वामित्व में ली। छांडी–छोड़ी। खेम तणै–खेमकर्ण के पुत्र राव रतनसिंह ने।

३. धणी–स्वामी। जोधाहर–राव जोधा का वंशज। वड रावत–वडा रावत। नह गयौ–नहीं गया। नीपनौ–जन्मा। नवसहसौ–मारवाड़ में ९ हजार ग्राम थे इसलिए राठौड़ों को नव सहस्र ग्रामों के स्वामी परक प्रशस्ति से संबोधित किया जाता था। तिण–उस, वह। नेस–घर, निवास।

९३. गीत राव रतनसिंघ उदावत जैतारण रौ

जिकै काबिल सुपह जातिवंत जमजड़ां, धू जिसा अडग नै सेर जेहवे घड़ा।
कसे भूथांण केकांण जेह वंकड़ा, खाग ग्रहे रतनसी दुवारि मुगलां खड़ा ॥१॥

वाहि कोदंड वरियांम चहु वै वळां, ऊलटै असंख धज घालियां आमळा।
नवां कोटां गढ़ां रयण राखण कळा, ऊठि खेमाळ रा अभंग आचागळा ॥२॥

खाग ऊनागीयां रीठ मातौ खळे, बाहतौ सार ब्रहमंड लगि बिळकुळे।
घडा पतिसाह रा बींद रतनौ बळै, ऊदहर तिलक सुर थान गौ आफळे ॥३॥

---

९३. गीतसार— **उपरांकित गीत राव रतनसिंह उदावत जैतारण की युद्धवीरता पर सर्जित है। गीत में लिखा है कि यमराज सदृश यवन योद्धाओं से रक्षित शाही सेना को रतनसिंह ने पराजित कर स्वर्ग प्राप्त किया। कवि ने शाही सेना को वराकांक्षिणी नायिका और रतनसिंह को दूल्हा बना कर गीत का रूपक बांधा है।**

---

१. जिके– वे। काबिल सुपह–काबुल में उत्पन्न योद्धा, योग्य वीर। जातिवंत–जाति के जमजड़ा–यमराज जैसे। धू–ध्रुव नक्षत्र। सेर–सिंह। जेहवे–जैसे। घड़ा–शरीर से बलिष्ट, आकृति वाले। कसे- बांधे हुए। भूथांण–भाथा, तूणीर। केकांण–घोड़े। जेह–जैसे, कमान का चिल्ला। वंकड़ा–बांकुरे। खाग ग्रहे–तलवार लिये हुए। दुवारि–द्वार पर।

२. कोदंड-धनुष। वरियाँम–श्रेष्ठ वीर। चहु वै वळां–चारों तरफ। धज–योद्धा, अश्व सैनिक। आमळां–सज्जित। अभंग–अडिग। आचागळा–दृढ़ वीर।

३. खाग–तलवार। ऊनागीयां–प्रहार के लिए ऊपर उठाई हुई। रीठ–युद्ध। मातौ–प्रचण्ड। बाहतौ–प्रहार करता। सार–शस्त्र, तलवार। बिळकुळे–जोश में उफनता, क्रुद्ध। घड़ा–सेना। बींद–वर। बळै–पुनः। ऊदहर–राव ऊदा का वंशज। सुरथान–देवलोक। आफळे–युद्ध कर के।

६४. गीत राव रतनसिंघ उदावत जैतारण रौ

रिण विढ़ियौ हेक रतनसी रूड़ां, दूजां कळहि न आयौ दाय।
मुगले डंडियौ राव मालदे, रावत सगळां डंडिया राय ।।१।।

पाछौ आवी न खूणै पैसौ, दोखीहरां न दीधी दौड़।
रिणमल चूंडा वीरम रावत, रतन मरण डंडीया राठौड़ ।।२।।

खांडेराव मूऔ खींवावत, हिव भागिल कूटसी हीया।
गरथ ठोक लीया गांगावत, कमधज हूंता तिसा किया ।।३।।

---

६४. गीतसार— उपर्युक्त गीत राव रतनसिंह उदावत जैतारण के शासक की रणवीरता पर सर्जित है। कवि कहता है कि वीर राव रतनसिंह ने लड़ते हुए मृत्यु का वरण किया। अन्य वीरों को युद्ध का वह मार्ग पसंद नहीं आया। बादशाह (शेरशाह सूरी) ने राव मालदेव को दण्डित किया और राव रतनसिंह ने रावतपद-धारी बड़े योद्धाओं को पराजित कर अपमानित किया।

---

१. रिण-युद्ध। विढ़ियौ—लड़ कर काम आया। हेक—एक। रूडां-सुन्दर। दूजां—दूसरों। कळहिं—युद्ध। दाय—पसंद। मुगले—बादशाह को, मुसलमान को। डयौ—दंडित किया। मालदे—जोधपुर का राजा राव मालदेव। रावत- पदवी-वशेष वाले। सगळां—समस्तों को। राय—राव, राव रतनसिंह ने।

२. खूणै—कोने में। पैसौ—बैठा, प्रविष्ट हुआ। दोखीहरां—शत्रुओं। दौड़—धावे, आक्रमण। रिणमल—जोधपुर के शासक राव वीरमदे, राव चूंडा और राव रणमल्ल जो राव रतनसिंह के भी पूर्वज थे। मरण—मरते ही।

३. खांडेराव—खड्गधारी योद्धा, महापराक्रमी वीर। मूओ—मर गया। खींवावत—खींवकरण का पुत्र। हिव—अब। भागिल—भगने वाले। कूटसी—पीटेंगे। हीया—छाती, हृदय, मस्तिष्क। गरथ—द्रव। गांगावत—राव गांगा का पुत्र राव मालदेव जोधपुर ने। कमधज—राठौड़। हूंता—था, होते। तिसा—तैसा ही, वैसा ही।

९५. गीत राव रतनसिंघ उदावत जैतारण रौ

सिंधड़ी पारकर सामां, प्रसिध समंदां पार।
रूपक देस विदेस रतनां, वाचीयै वडवार ॥१॥

पांगुरण जिण खंडपान पहरै, धूपि राचै धापांन।
गीतड़ा तिण भोम गावै, रतनसी राजांन ॥२॥

गुजरात पहु उतराध पूरब, निरत दखिण नरेस।
निज कीरती खेमाळ नंदन, वापरी वड देस ॥३॥

---

९५. गीतसार—उपर्युक्त गीत जैतारण के शासक राव रतनसिंह राठौड़ की युद्ध-प्रशंसा पर रचित है। कवि कहता है कि सिन्ध, पारकर, गुजरात, पूर्व, उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं के प्रान्तों में सर्वत्र रतनसिंह का यशकाव्य पढ़ा जाता है।

---

१. सिंधड़ी-सिंध प्रान्त। पारकर—थर पारकर प्रदेश। पार—उस ओर तक। रूपक—प्रशस्ति काव्य, वीरगीत। रतना—रतनसिंह गीतनायक। वडवार—बड़े वक्त, प्रातःकाल।

२. पांगुरण—वस्त्र, अंकुर निकलना। धूपि—तलवार, धूप। गीतड़ा—गीत, काव्य।

३. पहु—राजा, योद्धा। उपराध—उतर दिशा। निरत—नैऋत्य कोण। दखिण—दक्षिण। खेमाळ नंदन—खेमकर्ण के पुत्र राव रतनसिंह। वापरी—फैली, व्यवहृत। वड—बड़े।

९६. गीत राव रतनसिंघ उदावत जैतारण रौ

खुरसांणी घड़ा सरस खींमावत, सढ़ तिण रयण चईनौ सारि।
अण त्रिढ़ियां गढ़ न दीयै ऊदा, दूदै दीधा धरम दुआरि ।।१।

ईसर करण बोलतौ अंवळा, वीरत तजै गया दहवाट ।
रौद्र घड़ा सांह्मौ रतनसी, मिळियौ घावे लोह मराट ।।२।।

जग ऊजळी करे जैतारण, सिर सूं दीधी खेम सुजाय।
ऊभौ मेले दुरंग आपरौ, जैमल तौ जिम रयण न जाय ।।३।।

---

९६. गीतसार–उपर्युक्त गीत राव रतनसिंह राठौड़ जैतारण के स्वामी की वीरता की प्रशंसा पर है। कवि ने गीत में उदावतों की प्रशंसा और मेड़तियों की अपकीर्ति करते हुए कहा है कि उदावत राठौड़ों की भांति रणभूमि से पलायन नहीं करते हैं। राव रतनसिंह ने जीवित रहते जैतारण की भूमि शत्रुओं को नहीं दी और राव जयमल्ल मेड़ता का दुर्ग वैरियों को सौंपकर कर चला गया।

---

१. खुरसांणी–खुरासान वालों की, मुसलमानों की, बादशाह की। घड़ा–सेना। खींमावत–खेमकर्ण के पुत्र रतनसिंह। रयण–रतनसिंह। सारि–शस्त्र, तलवार। अण विढ़ियां–विना लड़े, विना युद्ध किये। ऊदा–राव ऊदा के वंश वाले, उदावत राठौड़। दूदै–दूदावत, मेड़तिया शाखा वाला राव जयमल्ल। धरम दुआरि–धर्मद्वार, धर्म की शपथ लेकर संकट से बाहर निकल कर जाना।

२. ईसर–ईश्वरदास मेड़तिया, राव जयमल्ल का भाई। करण–कर्णसिंह मेड़तिया। अंवळा–बांका-टेढ़ा। वीरत–वीरत्व। तजै गया–त्याग गया। दहवाट–दस दिशाओं में, दस मार्ग, डर। रौद्र घड़ा–मुसलमानों की सेना। सांह्मौ–सामने। मिळीयौ–मिला। घावे–घावों। लोह मराट–लोहपुरुष, प्रचण्ड वीर।

३. ऊजळी करे–कीर्तिमान करे, यश फैलाकर। खेम सुजाय–खेमकर्ण के पुत्र। ऊभौ मेले–विना लड़े मरे छोड़ कर। दुरंग–दुर्ग, किला। जैमल–राव जयमल्ल मेड़ता रतनसिंह जैतारण का शासक। रयण–राव रतनसिंह जैतारण का शासक।

९७. गीत राव रतनसिंघ उदावत जैतारण रौ

पुरिसातन गरब न चढ़ीया पिंडि भुइ, नरए पेखितां न्याउ।
साऊ खांनै हसति समपीया, सींह तलूंकौ खेम सुजाउ ॥१॥

तनि आफरौ न चढ़ियौ निय नति, आहव अगथि तणौ उनमांन।
केसरि ऊदैकरण कळोधर, खाधे हसति न धायौ खांन ॥२॥

.... विढ़ण कुंवारी घड़ा वरै।
मैंगळ मयद मुरड़ीयै पंच मुख, कमधज न क्यूं गरब करै ॥३॥

आथवियौ न क्यूं आखीजै, ऊगम लगै रयण अणनींद।
गौरी राव मदोगति गिळीयै, मल्हपै मारू राव मयंद ॥४॥

---

९७. गीतसार–उपरिलिखित गीत में राव रतनसिंह राठौड़ द्वारा मुसलमानों की सेना तथा खांन (हाजीखांन) को पराजित करने का वर्णन है। कवि कहता है कि सिंह रूपी रतनसिंह गज रूपी हाजीखां को खाकर के भी तृप्त नहीं हुआ। रतनसिंह के कथित पराक्रम पर राठौड़वंश का गर्वित होना उचित ही है।

---

१. पुरिसातन–पौरुष। गरव–गर्व। पिंड़िभुइ–रणभूमि। पेखितां–देखते। न्याऊ–न्याय ही, उचित ही। हसति–हस्ति, गज। समपीया–समर्पित किये। सलूंकौ–भूखा, शल्य। सुजाउ–पुत्र।

२. तनि–शरीर, तनिक। आफरौ–पेट फूलना, गर्व। निय–निज, अपने। आहव–युद्ध। अगथि तणौ–अगस्त्य मुनि के। उनमांन–अनुमान। केसरी–सिंह। उदैकरण–राव उदयकर्ण, ऊदा। कळोधर–कला को धारण करने वाला, वंशधर। खाधे–खाये। धायौ–तृप्त।

३. विढ़ण–युद्ध, कुंवारी घड़ा–विना युद्ध लड़ी सेना। वरै–वरण कर के, विजय करके। मैंगळ–हाथी। मयंद–सिंह। मुरड़ीयै–मरोड़ कर, लौट कर, दामित कर। पंच-मुख–सिंह। कमधज–राठौड़।

४. आथवियौ–अस्त हुआ। आखीजै–कहा जावे। ऊगम–उदय। अणनींद–जाग्रत। गौरी राव–बादशाह। मदोगति–हाथी। गिळीयै-निगले। मल्हपै–मस्त गति से चले। मारूराव–मारवाड़ निवासी राव रतनसिंह राठौड़।

९८. गीत कुंवर जसवंतसिंघ रौ

प्रथम ऊगै सूर पोहमी पुड़ पालटै, जूप जस धवळ न कीधी जे जेर।
मेर खसि जाइ थिति हूंत बीजै मंडळ, मरण दिनि मिटै जो जसो गिरमेर ॥१॥

जगतचख जौति जग ऊपरि वोहौ जंपै, वळै कंध न मंडै धमळ वाळा।
गिरांपत दईगति महा जाये गळै, अड़ै जो मुड़ै खतमाळ वाळा ॥२॥

धूमंडळ पालटे धरा औंधी ध्रवै, पाछा धोरीयां नहीं वळपूर।
नूरवट तरण जगत मुख निरखतां, सूरहर मिटै तो न ऊगै सूर ॥३॥

धरा सूधी रहौ वहौ मुकता धवळ, ठवै ऊगौ पतंग मेर ठिक ठौड़।
राखि जस भरोसौ गोमिंद रिधू, रायजादो खगे खेले गयौ रौड़ ॥४॥

---

९८. गीतसार—उपर्युक्त गीत शूरसिंह के पौत्र जसवंतसिंह नामक योद्धा पर रचित है। गीतकार का कथन है कि युद्ध का समय उपस्थित होने पर अगर जसवंतसिंह मृत्यु से किनारा काटे तो सूर्य पूर्व के स्थान पर पश्चिम दिशा में उदय होने लगे और सुमेरु-गिरि अपनी अडिगता का त्याग कर चलायमान हो उठे।

---

१. ऊगै—उदय हुये। पोहमी पुड़—धरातल। जूप जुतकर। धवळ—धवल, बैल। जेर—पराजित, वश में। मेर—सुमेरुगिरि। खसि जाइ—स्थान से खिसक जावे। थिति—स्थिरता से। बीजै—दूसरे। जसो—यशवंतसिंह।

२. जगतचख—सूर्य। वोहौ—चलने वाला, वहुत। जंपै—कहते हैं। वळै—वलवाल, फिर। मंडै—भार उठाने के लिए कंधा नीचे रखे। धमळ—बैल। गिरांपत—स्वर्णगिरि, हिमालय। दईगति—दैवगति से। गळै—पिघल जाय। अड़ै—टक्कर लेने पर। खतमाळ—खेतसिंह।

३. धू-मंडळ—ध्रुव-मण्डल। औंधी—उलटी, विपरीत। ध्रवै—गिरे, घूमे। धोरीयां—वृषभ, बैल। वळपूर—पूर्ण शक्ति, भरपूर ताकत। निरखतां—देखते, अवलोकन करते। सूरहर—शूरसिंह का पौत्र, कुंवर जसवंतसिंह। सूर—सूर्य।

४. वहौ—चलो। मुकता—वहुत अधिक। धवळ—वृषभ, बैल। ठवै—नियत स्थान पर। ऊगौ—उदय हुआ करे। पतंग—सूर्य। मेर—सुमेरुगिरि, उदयाचल। ठिक ठौड़—ठीक ठिकाने, सही स्थान। रिधू—अटल, दृष्ट। रायजादो—राजकुमार। खगे—तलवार। रौड़—युद्ध, बंधन।

६६. गीत ठाकर अमरसिंघ उदावत निंबाज रौ

भुजां सबळ क्रांमत कमळ जिम भळाहळ, खाग बळ पेख साबळ थका बहै खळ।
देखतां सकळ सीसोद कछवाह दळ, कमंध री बराबर नको धजबंध अकळ ॥१॥
जगत साधार नीजोड़वा कुरंद जड़, घाय सकजां भुजां मोड़वां गजां घड़।
भूप जैसींघ संगराम रा सको भड़, अजा रा भीच जिम नको खाटै अचड़ ॥२॥
करग आचार सैंसार ऊपर करग, खळां अणपार सिर खेरवा धारखग।
जोवतां ठौड़ चितौड़ आंबेर जग, अणी जोधाणगढ़ बियौ जगपत अडग ॥३॥
घड़ सुद नको मेवाड़ ढूंढ़ाड़ घर, समोसर नको नर अवर किरतब समर।
कुसळहर साख तणौ सहसकर, एक ऊभौ जिते लाख पाखर अमर ॥४॥

—लालजी सांदू रौ कह्यौ

---

६६. गीतसार—उपर्युक्त गीत नींबाज के ठाकुर अमरसिंह उदावत शाखा के राठौड़ पर रचित है। अमरसिंह जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का प्रीतिपात्र सामंत था। गीत में कवि ने जयपुर नरेश सवाई जयसिंह तथा मेवाड़ नरेश महाराणा संग्रामसिंह जोकि महाराजा अजितसिंह के समकालीन थे उन दोनों के सामंतों में अजितसिंह के सामंत ठाकुर अमरसिंह को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णित किया है।

---

१. सबळ—शक्तिशाली। क्रांमत—करामात। कमळ—मुख, मस्तक। भळाहळ—दीप्ति, आभा। खागबळ—शस्त्रशक्ति, खड्गबल। पेख—देख कर। साबळ—बल होते हुए भी, भाला विशेष। बहै—चलते हैं। खळ—वैरी। दळ—सेना। कमंध—राठौड़ अमरसिंह गीतनायक। न को—कोई नहीं। धजबंध—ध्वजाधारी, योद्धा, राजा। अकळ—समर्थ।
२. साधार—आश्रय, अवलंब। नीजोड़वा—तोड़ने, नाश करने। कुरंद जड़—दरिद्रमूल। घाय—प्रहार, घाव। सकजां—योद्धाओं। मोड़वा—पीछे धकेलने। गजां घड़—गज सेना, गजों के शरीरों को। जैसिंघ—जयपुर नरेश सवाई जयसिंह। संगराम—महाराणा संग्रामसिंह दूसरे (मेवाड़)। सको—सब कोई, समस्त। अजा रा—महाराजा अजितसिंह के। भीच—योद्धा। खाटै—प्राप्त करते हैं। अचड़—कीर्ति, सुकार्य।
३. करग—हाथ। अणपार—अपार। खेरवा—गिराने, संहार करने। धारखग—तलवार की धारा में। जोवतां—देखते। ठौड़—स्थान। अणी—पंक्ति, सेना, इसी प्रकार। बियो—दूसरा। जगपत—जगरामसिंह। अडग—अडिग, अचल।
४. घड़—शरीर, सेना। समोसर—समान। अवर—अपर, अन्य। किरतब—कर्त्तव्य। समर—युद्ध। कुसळहर—कुशलसिंह का वंशज। साख—शाखा, उपगोत्र। सहसकर—सूर्य। ऊभौ—खड़ा। जितै—जब तक, जहाँ तक। पाखर—अश्वादि, अश्व कवच, सेना। अमर—अमरसिंह।

१००. गीत ठाकर सुरतांणसिंघ उदावत नींबाज रौ

गिरां वाखांण जिम हेम नग संपेखे, सुरां वाखांण यंद्र जेम सरसै।
तरह छित आठ मिसलांण वाळा तिकै, देखतां कमंध सुरतांण दरसै ॥१॥

वरा अत प्रभत कूमेर दीठां वणै, चित सुरां सिरायत यंद्र चहजै।
मुरधरा धरापत तणा कटकां मही, करामत सिंभू सुत देख कहजै ॥२॥

कुळां पंड सोभ दिख पाथ जय काजरा, हद सिधां साजरा त्रैचख हरखै।
जेम महाराज रा दळां छित जांणजे, नाथ नींबाज रा दरस निरखै ॥३॥

ईखतां गुरड़ डोलत खगां सोभ अत, जिलहलक अतोलत गढ़ां जोपै।
भूपती छभा दौलत दूवौ भाळतां, ऊमरा सतोलत प्रभा ओपै ॥४॥

भड़ां नित थाट लीधां अणी भमर रा, धड़छ दळ समर रा जोम धारी।
विजाई अमर रा दरस दीठां वणै, भूप छत्र चमर रा तोल भारी ॥५॥

---

१००. गीतसार—ऊपरलिखित गीत मारवाड़ के नींबाज ठिकाने के ठाकुर सुरतांणसिंह उदावत राठौड़ पर सर्जित है। गीत में सुरतांणसिंह की उदारता और वीरता का चित्रण करते हुए उसे राठौड़ों की आठ पंक्तियों के ठाकुरों में उसी प्रकार श्रेष्ठ कहा है जिस प्रकार पर्वतों में सुमेरुगिरि और देवताओं में इन्द्र श्रेष्ठ माना जाता है। धनवानों में कुबेर और शरीरबल में अर्जुन के तुल्य वर्णित किया है।

---

१. गिरां—पहाड़ों में। वाखांण—वर्णन। हेमनग—सुमेरुगिर, पर्वतराज हिमालय। संपेखे—देखते हैं। सुरां—देवताओं। यन्द्र—इन्द्र। छित—पृथ्वी। आठ मिसलांण—मारवाड़ के आठ प्रमुख ठिकाने जिनमें रियां, कुचामन, मादराजून, नींवाज, खैरवा आदि मिसलें कहलाते थे। तिके—वे। दरसै—दीखते हैं, सबसे श्रेष्ठ लगते हैं।

२. प्रभत—प्रभुत्व, वैभव। कुमेर—धनपति कुबेर। दीठां वणै—देखते ही बनते हैं, तुल्य दीखते हैं। सुरां सिरायत—देवताओं का राजा। धरापत—पृथ्वीपति, राजा। कटकां मही—सेना में। करामत—चमत्कारिक। सिंभू सुत—शंभुसिंह पुत्र सुरताण-सिंह।

३. पंड—पाण्डव, शरीर। सोभ—शोभा। पाथ—पार्थ, अर्जुन। हद—सीमा। सिधां—सिद्धों में। त्रैचख—त्रिचक्षु, शिव। दळां—सेना। छित—पृथ्वी, राजा। दरस—दर्शन।

४. ईखतां—देखते। गुरड़—गरुड़। खगां—पक्षियों। जिल—कांति। अतोलत—अतोल, अप्रमाण। जोपै—शोभित होती है। छभा—सभा। दूवौ—दूसरा। भाळतां—देखते। ऊमरां—बादशाह के उमराव। ओपै—सुन्दर लगते हैं, शोभा पाते हैं।

५. भड़ां—योद्धाओं का। थाट—समूह। अणी भमर रा—सेना के दूल्हे। धड़छ—मार कर। जोम—गर्व। विजाई—द्वितीय। अमरा—अमरसिंह के।

१०१. गीत राव वीरमदेव दूदावत मेड़ता रौ

दुजड़ां हथ तूंग अभंग वीरमदे, खिति पुड़ि खेध खंधार खरै।
माला जोए रावत मुणसगुर, काळा जिम धकचाळ करै ॥१॥

मांडव जाइ आणिस्ये मूगल, दैत अगंजित असंख दळ।
बाघाहरा तणै सिरि वीरौ, काळौ चाळविस्यै कंदळ ॥२॥

मीर हमाऊ लीयै मछरियौ, रावां नूं न दीयै रहण।
देखिया जेम करै दूदाउत, गांगाउत माथै गहण ॥३॥

चक्रवति ले म्रिगनयणि चाढ़िस्यौ, माला ठावा करिज्यौ माल।
जोया छळि मेड़ता जुडंतौ, तौ तौ जकै करै रणताळ ॥४॥

—माला खिड़िया रौ कह्यौ

---

१०१. गीतसार—उपर्युक्त गीत मेड़ता के राव वीरमदेव दूदावत पर सर्जित है। वीरमदेव ने जोधपुर के राव मालवदेव से युद्ध किया था। उसने मांडव के बादशाह तथा बादशाह हुमायूँ से सैनिक सहायता प्राप्त कर मालदेव के विरुद्ध सैनिक संघर्ष कई वर्षों तक निरन्तर जारी रक्खा था।

---

१. दुजड़ां—तलवारें। हथ—हाथ। तूंग—सेना, पृथ्वी। अभंग—वीर, नहीं भागने वाला। खिति पुड़ि—धरातल, पृथ्वीलोक। खेध—विरोध। खंधार—सेना, राजा। खरै—नाश हुवै, निश्चय के साथ। माला—राव मालदेव। जोए—देखने की क्रिया का भाव। मुणसगुर—मानवगुरु, राजा, योद्धा। काळा—कालिय नाग। धकचाळ—युद्ध, उपद्रव।

२. मांडव—मालव प्रदेश का प्रसिद्ध नगर। दैत—दैत्य। अगंजित—अपराजयी। बाघाहरा—राव बाघा के पौत्र राव मालदेव के। वीरौ—वीरमदेव। काळौ—विकटवीर, सर्प। कंदळ—युद्ध।

३. मीर—अमीर। हमाऊ—हुमायूँ। रहण—रहने, शांति से बैठने। जेम—जैसे, ज्यों। दूदाउत—राव दूदा का पुत्र राव वीरमदेव। गांगाउत—राव गांगा का पुत्र मालदेव। माथै—सिर, पर। गहण—ग्रहण, बंधन।

४. म्रिगनयणि—मृगनयनी। ठावा—ठौर ठिकाने, विश्वसनीय। जोया—देखा। छळि—युद्ध। जुडंतौ—लड़ते, जुटते। जकै—वे, जो। रणताळ—युद्धस्थल में, युद्धारंभ के समय।

१०२. गीत केसवदास जैमलोत मेड़तिया परबतसर रौ

लख थाटां मोहर बाळछै लसकर, बाग न पूगा तणी ग्रहास।
असमर खळां हुरळतौ आयौ, दळां फुरळतौ केसवदास ॥१॥
सार पगार सूंड दांतूसळ, चींघासां ढहते चमर ।
करिवा कळह कटक केड़तीयौ, मेड़तीयौ वधियौ मुहर ॥२॥
चांकां ठौड़ न दीधा चाकर, धिन तैं जैमालोत धणी।
बूड़ी ठौड़ जैमलीये वीजै, अणी ठौड़ मेळीयै अणी ॥३॥
अनि नर आडे लोह आवीया, आडे दीन्हे वड़ अयार।
हिंदवै केसव वड़ोज हूंतो, विवड़ाई गयौ वधार ॥४॥

— माला सांदू रौ कह्यौ

---

१०२. गीतसार—प्रस्तुत गीत मेड़तिया शाखा के राठौड़ वीर केशवदास की रण-वीरता पर कथित है। कवि कहता है कि केशवदास लक्षाधिक सेना के सामने बढ़ आया। वह तलवार के प्रहारों से शत्रुओं को विचलित करता तथा सैन्य-समूह को यत्र-तत्र छिन्न-भिन्न करता हुआ लड़ने लगा और शत्रुओं की संख्या की तनिक भी पर्वाह किये बिना आगे बढ़ता गया। हिन्दूओं में वह जैसा बड़ा समझा जाता था उसी के अनुरूप वड़प्पन प्रकट कर वह वीरगति को प्राप्त हुआ।

---

१. लख थाटां—एक लाख सेना के। मोहर—मुंह आगे। बाळछै—घोड़े, घोड़े की दुम। लसकर—फौज। बाग—लगाम। पूगा—पहुंचे। तणी—की। ग्रहास—घोड़ा। असमर—युद्ध में, तलवार। खळां—दुष्टों को। हुरळतौ—संहार करता। दळां—समूह को। फुरळतौ—इधर उधर बिखेरता।

२. सार—शस्त्र, तलवार। पगार—पराक्रम, रक्षक। दांतूसळ—दन्त्यशूल, गजदन्त। चींघासां—चिंघाड़। ढहते—गिरते, धराशाही होते। करिवा—करने के लिए। कळह—लड़ाई। कटक—फौज। केड़तीयौ—पीछा करने वाला। वधियौ—आगे बढ़ा। मुहर—सामने।

३. चांकां—शस्त्रों के निशान, प्रहारों। दीधा—दिये। चाकर—सैनिक, सिपाही। धिन—धन्य। जैमालोत धणी—राव जयमल की संतान वालों के स्वामी। बूड़ी—भाले की छड़ के नीचे का भाग। जैमलीय वीजै—द्वितीय राव जयमल। अणी—नोक, तीक्ष्ण-धार। मेळीयै—मिलाई।

४. अनि—अन्य। आडे—तिरछे, सामने। आवीया—आये, मारे गए। अयार—अमित्र, वैरी। हिन्दवै—हिन्दुओं में। हूंतो—था। विवड़ाई—विशेष वड़प्पन, अधिक प्रशंसा। वधार—वर्धित कर, बढ़वा कर।

१०३. गीत ठाकर रामसिंघ मेड़तिया रौ.

बळ खाग खिवरण गजदंत खड़ाखड़, समहर तरणा भुजे दहूं सूत।
अंबर नूर सूरसिंघ आगै, रामसिंघ सांचो रजपूत ॥१॥
सार खेत चौदन्त सिधुरां, माथै कस जोवे पंचमोद।
पटहथ सेर समेर पंचमुख, राम सनाजे पार रोद ॥२॥
मंडोवर सामंत मेड़तियौ, अडग अचळ अपहड़ ओनाड़ ।
धोळीचार ऊपरै धूहड़, पाखर जे काळो पाहाड़ ॥३॥
रौरव इंद मेटे मेहरेळण, असिवर अमिट अघट आचार ।
कमधां ईसर को नवकोटी, रामसिंघ चौथी तरवार ॥४॥
क्यावर रोटे राव कहाणौ, प्रसध हूवौ तरवार पण ।
आप रौ राम नाम कर आयौ, देसोतां ऊपरां दिखण ॥५॥

---

१०३. गीतसार– उपर्युक्त गीत राठौड़ वीर रामसिंह मेड़तिया की वीरता का परिचायक है। रामसिंह ने दक्षिण में राजा शूरसिंह की सेना में रह कर यश अर्जित किया था। वह जैसा महान् वीर था वैसा ही बड़ा दानी भी था। तलवार और दान के कारण देशपतियों में उसकी अच्छी प्रसिद्धि हुई।

---

१. बळ खाग–खड्ग बल। खिवरण–चमक। गजदंत–हाथी के दांत। खड़ाखड़–खड़ खड़ की ध्वनि। समहर–समर, युद्ध। भुजे–भुजाएँ। दहूं–दोनों। सूत–खेंच कर, म्यान बाहर कर के। अंबर नूर–आकाश कांति, मेघ की कांति। आगै–अगाड़ी, सम्मुख। सांचो–सच्चा।

२. सार–आयुध, तलवार, रण। खेत–क्षेत्र, मैदान। चौदन्त–चार दांत, युवा। सिधुरां–हाथियों। माथै–सिर। पंचमोद–सिंह (?)। पट हथ–पट्टाधारी, योद्धा, हाथी। सेर–सिंह। समेर–सुमेरुगिरि, अडिग। पंचमुख–सिंह। सनाजे–सन्नाह, सज्जित, समान अन्दाजे वाला। रोद–मुसलमान, वैरी।

३. अचळ–स्थिर। अपहड़–अजेय, योद्धा। ओनाड़–निबंध। धौळीचार–स्थान विशेष। धूहड़–राठौड़। पाखरजे–कवचादि से सज्जित। काळो पाहाड़–काला पर्वत, सेनाओं का अवरोधक एक पहाड़ विशेष जो अलवर राज्य में है।

४. रौरव–निर्धनता। इंद–इन्द्र, राजा। मेहरेळण–परम उदार। असिवर–खड्गधर, योद्धा। कमधां–राठौड़ों का। ईसर–ईश्वर।

५. क्यावर–क्रियावर, कीर्त्तिवान। रोटे राव–आगन्तुकों को भोजन कराने वाला। तरवार पण–कृपाणधारी। देसोतां–राजाओं के। दिखण–दक्षिण प्रदेश।

१०४. गीत राजा सबळसिंघ मेड़तिया मारोठरा रौ

अथग वात आवात दळ अपंपर उलटतां,
तकर कर मकर निसचर तणायौ ।
सहायक करण तिण वार राजा सबळ,
ऊंतावळ जेम व्रजराज आयौ ॥ १॥
मेछ हीलोळ तळबोळ जळवोळ मझ,
धसळ छळ कर सबळ करि धायौ ।
करी करणा करण वयण साभळ कमध,
अफर धकपंख मोहर अगर आयौ ॥२॥
अमर तैतीस खटतीस पेखै अचंभ,
ऊबारे कमण वेळां अफारी ।
सतावी आवीयौ अरज सुण गरज सूं,
भार महलां पड़त वार भारी ॥३॥

---

१०४. गीतसार—प्रस्तुत गीत मारोठ राजा सबलसिंह मेड़तिया पर रचित है । सबलसिंह ने गीतकार कुंभकरण सांदू चारण के परिवार की मुगल सेना के आक्रमण से रक्षा की थी । कवि ने गीत में कवि-परिवार को गज और मुगल सेना को ग्राह अंकित किया है । सबलसिंह को गरुड़गामी विष्णु के रूप में रक्षक चित्रित किया है । उसने कहा है—

सबळ ऊबारे सहस्र बळ, कुंभकरण कविपात ।
जळावोळ मेछांण विच, छत्रपत दूदां छात ॥

---

१. अथग—अपरिमित । वात—वार्ता । आघात—आक्रमण, टक्कर । अपंपर—असीम । तकर कर—तकरार कर, वादविवाद कर । मकर—ग्राह । निसचर—यवन, दैत्य । तणायौ—रोपान्वित हुआ । तिणवार—उस समय पर । ऊंतावळ—त्वरा से । जेम—जिस प्रकार, जैसे । व्रजराज—विष्णु, श्रीकृष्ण ।
२. मेछ—म्लेच्छ, मुसलमान । हीलोळ—आन्दोलित, समुद्र । तळवोळ—पैंदे तक हिलाकर । जळवोल—डुबाना, नाश करना, अथाह जल । धसळ—बलप्रदर्शन कर पृथ्वी पर लम्बे डग भर कर । छळ—लड़ाई, छद्म । सबळ—बलवान । करि—हाथी । धायौ—चला, दौड़ा । वयण—वचन । सांभळ—सुनकर । कमध—राठौड़ । अफर-जबरदस्त, न मुड़ने वाला । धकपंख—गरुड़ । मोहर—सामने, मुकाबले । अगर—अग्र, आगे ।
३. अमर तैतीस—तैतीस देवी—देवता । खटतीस—छत्तीस—जातीय क्षत्रिय नरेश । पेखै—देखने का भाव । ऊबारे—रक्षा करके, बचावे । कमण—कौन । वेळां—समय । अफारी—भयावह, संकटपूर्ण । सतावी—शीघ्रता से । भार—बोझ, संकट । महलां—नारियों पर । वार भारी—संकटपूर्ण समय ।

अक गजराज ब्रजराज ऊबारतैं,
अतळ जस अबळ वळवळ अचूंभौ ।
वीर वर उतर धर रुघा रै वचायौ,
कबीलो सहत गजपात कूंभौ ॥४॥

इंद्रप्रसथ तखत सु नखत अड़पतां,
वखत धिन विहद हद विरद वरिणयौ ।
अमर तैंसीस खटतीस कुळ ऊपरै,
तिलक धर वीर वर उतर तरिणयौ ॥५॥

— कुंभकरण सांदू री कह्यौ

---

४. ऊबारतैं—रक्षा करते, बचाते । अतळ—अतुल, असीम । जस—यश । अबळ—निर्बल, नारी । वळवळ—बार बार, चारों ओर । अचूंभौ—विस्मय । रुघारै—रघुनाथसिंह मेड़तिया के पुत्र सबलसिंह ने । वचायौ—रक्षा की । कबीलो—परिवार । सहत—सहित । गजपात—गजपत्र, महाकवि, जिस कवि को पुरस्कार में हाथी दिया जाता हैं वह गजपात कहलाता है । कूंभौ—कुंभकरण सांदू ग्राम भदौरा का निवासी था ।

५. इंद्रप्रसथ—इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली । तखत—तख्त, सिंहासन । अड़पतां—विवाद उठ खड़ा होने पर, हठ पकड़ जाने पर । वखत—वक्त, समय । विहद—बेहद, असीम । हद—सीमा । विरद—विरुद । खटतीस कुळ—राजपूतों के छत्तीस वंशों वालों । ऊपरै—ऊपर, बढ़कर । तिलक धर—विष्णु, राजा । उतर—ऊँचे स्थान से नीचे आकर, जवाब ।

१०५. गीत कलियाणसिंघ मेड़तिया सोहिला रा धणी रौ

धजंग तेज उतवंग मतंग धज सरंग धावतां,
अलंग फररंग धुजंग धरंग आखी ।
दमंग संग खतंग फळ फणाणंग दारव दुदंग,
लहंग बेछंग विहंग पनंग लाखी ॥१॥

प्रलंब वळ जवल अस कमळ चळदळ प्रघळ,
तरळ झळ कमळ संग दळ तमासा ।
सुवध सळवळ मंडळ तरळ रंज कमळ सुजि,
अनळ अळियळ जुगळ चयळ आसा ॥२॥

झाळ पयनाळ पड़ताळ फाळ झंपट,
थरर मछराळ मुगताळ थाळां ।
कीया धकराळ रज ढाळ सूबां कमळ,
वरन सुविसाल अस तूझ वाळा ॥३॥

---

१०५. गीतसार– उपर्युक्त गीत राठौड़ क्षत्रियों की मेड़तिया प्रशाखा के ठाकुर कल्याणसिंह पर कथित है। कल्याणसिंह मारवाड़ के नागोर भूभाग के सोहिला ठिकाने का ठाकुर था। गीत में कवि ने गीतनायक की वीरता और उदारता का वर्णन किया है। उसकी उदारता की सर्वत्र प्रशंसा होती है और सभी समकालीन नरेश उसकी आस्तिकता के कायल हैं।

---

१. धजंग–घोड़ा, बलवान् । उतवंग–शीश । मतंग–मस्त, हाथी । धज–घोड़ा । धावतां–चलते, दौड़ते । अलंग–ऊंची, ऊपर । फररंग–फहराने का भाव । धुजंग–कम्पित । धरंग–पृथ्वीतल । आखी–समग्र । दमंग–अग्निकण । खतंग फळ–बाण की नोंक । फणाणंग–फूत्कार । दुदंग–दूदा का वंशज । बेछंग–प्रचंड, शक्तिशाली । विहंग–पक्षी । पनंग–सर्प, हाथी । लाखी–लाख के रंग का, लाखी जाति का ।

२. प्रलंब वळ–वानर के समान उछलने में शक्तिशाली । जुवळ–कदम । अस–अश्व । कमळ–मस्तक । दळचळ–पीपल का पत्र, अति चंचल । प्रघळ–बहुत । तरळ–त्वरित गति, तरल । सळवळ–सलमलाहट करता, तेजी से सरक कर चलता । मंडळ–कुण्डलाकृति । सुजि–वह । अनळ–पवन । अळियळ–भ्रमर । जुगल–युगल ।

३. पयनाळ–पैरों की नाल । पड़ताळ–प्रहार, आवाज । फाळ–छलांग । थरर–कंपित होने का भाव । मछराळ–जोशीला, मत्सरता वाला । मुगताळ–मोती । धकराळ–बवण्डर, आंधी । वदन–शरीर, मुख । अस–अश्व, घोड़ा ।

छाक दिल पाक अलबाग उछक छकां,
डाक बजि हाक अैराक डांणां ।
साख तेरह बडम लाख भाखां सुदन,
पतावत चाक मसताक पांणां ।।४।।

वदै राव रांण सुभियांण आसत वखत,
चक्रत दुनियांण परमांण चौजाँ ।
आंण रहमांण कुल-भांण जस अनोखा,
महत कलियांण कलियांण मौजां ।।५।।

—कवि कुम्भकरण सांदू रौ कह्यौ

---

४. छाक—मस्त, उन्मत्त । दिलपाक—पवित्र हृदय । उछक छकां—नशे में छके हुए, लड़खड़ाते हुए । डाक—युद्ध का वाद्य । बजि—बजने का भाव, ध्वनित । हाक—ध्वनि, चलाकर । अैराक—घोड़े, मद्य । डाँणां—मस्ती, जोश । बडम—बड़ा । भांखां—कहने का भाव । पतावत—प्रतापसिंह का पुत्र अथवा वंशधर । चाक—तैयार । मसताक—मस्त । पांणां—पेय, मदिरा, बल, भुजाएँ ।

५. वदै—कहते हैं । आसत—शक्ति, आस्तिकता । वखत—समय, भाग्य । चक्रत—चकित, विस्मित । दुनियांण—संसार । चौजां—उदारता, वदान्यता । आंण—शपथ, दुहाई । रहमांण—ईश्वर । कुळ भांण—कुलरवि, वंश में सूर्य तुल्य प्रतापी । जस—यश । मौजां—बख्शीस देने में, उदारता में ।

१०६. गीत ठाकर बिसनसिंघ चाणोद रौ

चाड़ ले जाय अयारां बधै सौहजारां छाती चाढ़,
तुंग कीधा जोधारां मझारां राजा सपतास ।
वाजतां नगारां देस चाउ सारधारां विचै, बिसन्नेस केई वारां मेळीया ब्रहास ।।१।।
रांण भेळै थकै दळां भांजीया पहल्ली राड़, पैलां राड़ दूसरी गांजीया घाटे पैल ।
नाथ दूजै काढ़ीया सादड़ी हूंत ताड़ नागा, खागां राड़ चौथी खळां बाढीया खीमेल ।२
चौतरफां मंडे आडो धणी मेदपाटां चाड़, नेजा गाड चौड़ै खत्रीवाटां बांध नेत ।
भारथां मौहरी थाटां सिवा रै झेलीयौ भार, खागां झाटां चौहरी खेलीयौ वीर खेत ।३
लाखीकां बिड़ंगां बावराड़ां भड़ां थाट लीधां, केई राड़ां फतै पावै सहाय किसन्न ।
गाढ़ै राव ऊभां गोडवाड़ झाड़ां कौण गंजै, बणै गोडवाड़ झाड़ां कीवाड़ बिसन्न ।।४

---

१०६. गीतसार— ऊपर लिखा हुआ गीत मारवाड़ के चाणोद ठिकाने के सरदार बिशनसिंह मेड़तिया के युद्ध-पराक्रम पर कथित है । विशनसिंह ने महाराणा मेवाड़ की ओर से घाटे तथा सादड़ी स्थानों में युद्ध लड़ कर विपक्षी नागाओं की सेना को परास्त कर खदेड़ बाहर किया था । गीत में मारवाड़ के गोढ़वाड़ भूभाग के रक्षक रूप में भी गीत नायक का वर्णन किया है ।

---

१. अयारां–अमित्रों को, शत्रुओं को । बधै–आगे बढ़ कर । छाती चाढ़–सामने से पीछे धकेलकर । तुंग–सेना, समूह । जोधरां–योद्धाओं । मझारां–मध्य । सपतास–सपताश्व, सूर्य का घोड़ा । चाड–सहायता । सारधारां विचै–शस्त्रों की बौछारों में । बिसन्नेस–बिशनसिंह । केईवारां–कितनी ही बार । मेळीया–मिलाये । ब्रहास–घोड़े ।

२. रांण भेळै–महाराणा के साथ में । थकै–रहते हुए । दळां–सैन्यसमूह । भांजीया–भंजित किये । पहल्ली राड़–पहली लड़ाई में । पैलां–विपक्षियों को, पहले ही । गांजीया–नष्ट किये । घाटे पैल–घाट स्थान से धकेल कर । नाथ दूजै–द्वितीय नाथूसिंह ने । काढ़ीया–बाहर निकाले । सादड़ी हूंत–सादड़ी स्थान से । ताड़–प्रताड़ित कर, दण्डित कर । नागा–दादू पंथ सम्प्रदाय के नागा शाखा जो जमात बना कर रहते थे । ये बड़े लड़ाकू और युद्ध प्रवीण होते थे । खागां–तलवारों की । खळां–शत्रुओं को । खीमेल–ग्राम का नाम ।

३. मंडे–रचकर, लड़कर । आडो–सामने रक्षक के रूप में । धणी–स्वामी । मेदपाटां–मेवाड़ । नेजा–ध्वज चिह्न, भाला । गाड–रोप कर । खत्रीवाटां–क्षात्रपथ । बांध नेत–वीरता के प्रतीक रूप में आभूषण विशेष । भारथां–युद्धों । मौहरी–मुखिया । थाटां–सैन्यसमूह । सिवारै–शिवसिंह के पुत्र ने । झेलीयौ–झेला, अपने ऊपर लिया । खागां झाटां–खड्गों के झटके । चौहरी–चौगुना अधिक, चौतरफ से । खेलीयौ–लड़ा ।

४. बिडंगा–घोड़ों । बावराड़ां–जबरदस्तों । भडां–योद्धाओं का । थाट लीधां–समूह लिए । सहाय–सहायक । किसन्न–इष्टदेव श्रीकृष्ण । गाढ़ै राव–रणधीर, रण में दृढ़ । ऊभां–खड़े । गोडवाड़ झाड़ां–गोढवाड़ का प्रान्त । कौण–कौन । गंजै–नाश करे । कीवाड़–किवाड़, रक्षक ।

१०७. गीत ठाकर प्रतापसिंघ गोपीनाथौत मेड़तियौ बोरूंदा रौ

झळ झळक फौज पाठांण सूरां विकट, खळक अनकारिबो लोक खड़ियौ।
नाथ रा छता भड़ खता विण निभै नर, पता पग मांडि ले भार पड़ियौ ॥१॥

सुछळ जसराज बछराज जंवळ सिवर, लाज काईरां भड़ां वाजि लाळां।
आज रौ बोझ आवीयौ थारै बखत, कवळ अहिराव नै उहि पांव काळा ॥२॥

कलाहरा आभरण मरण मोटौ करे, खेड़पति विचळतै साथ काथै।
वाहोया घाव मेछांण घाव विहंडीया, मांडीया पांव चर धरण माथै ॥३॥

नाथ गोकळ विसन कला जैमल निवड़, चढ़ि दूदां तिलक वंस जळ चाढ़ि।
सती करि मोहर जळ चाढ़ गढ़ मेड़तै, पतौ चढ़ीयौ सुरथांन असुर घण पाड़ि ॥४

---

१०७. गीतसार– उपर्युक्त गीत राठौड़ों की मेड़तिया शाखा के गोपीनाथ के पुत्र प्रतापसिंह पर रचा हुआ है। प्रतापसिंह ने मेड़ता स्थान पर मुसलमानों की सेना से रोमांचक युद्ध लड़ कर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में प्रतापसिंह की वीरता की श्लाघा की गई है।

---

१. झळझळक–चमकती दमकती। पाठांण–पठानों की। खळक–संसार। अनिकारिवो–वीर। खड़ियौ–चला। नाथ रा–गोपीनाथ के। छता–होते हुए। भड़–योद्धा। खताविण–विना धोखा, विना खतरा। निभैनर-निर्भय नर। पता–प्रतापसिंह। पग मांडि–पैर रोपे। भार–वजन, दवांव।

२. सुछळ–सुन्दर युद्ध, लिए। जंवळ–साथ, शामिल। काईराँ–कायरों। थारै–तेरे, तुम्हारे। कवळ–वाराह। अहिराव–शेषनाग। उहि–पीड़ा पहुँची। काळा–वीर।

३. कलाहरा–कल्याणसिंह का वंशज। आभारण–आभूषण। खेड़पति–राठौड़। विचळते–विचलित होते। काथै–शीघ्रता से। मेछांण–मुसलमान। मांडीया–रोपे, स्थिर किये। चर–सर्प (?)। माथै–सिर पर।

४. गोकळ–गोकुलदास। बिसन–विशनदास बोरूंदा के ठाकुरों का पूर्वज। निवड़–वीर, भयानक। चाढ़ि–सहायता। वंसजळ चाढ़ि–कुल को यश प्रदान कर। मोहर–सामने, आगे। सुरथांन–स्वर्गलोक। असुर–मुसलमान। घण–घने। पाड़ि–धराशायी कर।

१०८. गीत ठाकर भारथसिंघ सूरसिंघोत मेड़तियौ बोरूंदा रौ

कीया धाड़ा केतां ठाकुरां माल ले कोड़ रा, सूत सांमा सभै घरां सारा।
वाल्हा वरीस सूर रा बहादर, भड़तौ जेम अवर कुण करै भारा ॥१॥

काबिल रा नीपना वडा कहै तुरकी, खांति कर घणा नर धूप खेवै।
भींत रूपा तणी रोर अरि भांजणा, दूसरा विसन रा तूंहीज देवै ॥२॥

पाईगां वगस दोइ वार पातलहरा, सथर अचडां करै भवे सारू।
त्याग तरवार भुजां नर ताहरा, मेड़तै उजागर तपै मारू ॥३॥

—किसना दसूंदी वास बोरूंदै री

---

१०८. गीतसार— उपर्युक्त गीत मेड़तिया शाखा के ठाकुर शूरसिंह के पुत्र भारतसिंह पर रचित है। गीत में कवि ने भारतसिंह की दानवीरता का वर्णन करते हुए, कहा है कि अन्य कतिपय ठाकुर पदधारी लाखों रुपये के डाके डालते हैं और द्रव्य लूटकर सीधे अपने घर की राह लेते हैं, पर भारतसिंह लूट में प्राप्त घोड़े स्वर्ण और चांदी आदि माल याचकों में बांट देता है।

---

१. धाड़ा—डाकाजनी। केतां—कतिपय। कोड़ रा—करोड़ रुपयों का। सूत—विचार। सांमा—सामने, सीधे। सभै—सजते हैं। वाल्हा—प्रिय। वरीस—दान देने वाला। सूर रा—ठाकुर शूरसिंह के पुत्र। भड़—योद्धा। अवर—दूसरे। कुण—कौन। भारा—भारतसिंह।

२. काबिल—काबुल देश। नीपना—उत्पन्न हुए। तुरकी—घोड़े। खांति कर—ध्यान कर। धूप खेवै—धूप देते हैं। भींत—दिवार। रूपा तणी—चांदी की। रोर—दरिद्रता। अरि—वैरी। भांजणा—नाश करने वाले। विसन—राव विशनसिंह के पुत्र।

३. पाईगां—पायगाह, अश्वशाला। वार—समय। पातल हरा—प्रतापसिंह के वंशधर भारतसिंह। सथर—स्थिरता पूर्वक। अचड़ां—अनूठे कार्य, दूसरों से बढ़कर अच्छे कार्य। सारू—लिए, सहारे। तपै—राज्य वैभव का उपयोग करता है। मारू—मरुदेशीय।

१०९. गीत भारथसिंघ सूरसिंघोत मेड़तिया रौ

राहां जात हुवौ अचींतौ रोळौ, करि तागति निमधे इत काइ।
भारथसिंघ दौलो जे भाजे, तो ऊगै अरक पिछम दिसि आइ ॥१॥

उड़ीयौ लोह भारथ इम आखै, तझि नहीं वै मरण तिसि।
दाखीयैं वचन नीसर दौलो, तो दणीयर ऊगै और दिसि ॥२॥

सूर तणा बखतेस तणा सक, लड़ै खागि करणा खळ लूर।
मन भारथ दौलो दै विमहा, तो सही आथमै ऊगै सूर ॥३॥

ऊगै भांण भरोसा इसड़ा, जैमल जोधहरा जगधार।
पाड़ि पिसण आप रिण पड़ीया, सरगि गया दोनूं सरदार ॥४॥

—सुखा दमामी पांचलैवास रौ कह्यौ

---

१०९. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर भारतसिंह और दौलतसिंह मेड़तिया द्वय की युद्ध-मृत्यु से सम्बद्ध है। गीत में लिखा है कि अपनी गति से राह जाते लड़ाई होने का हल्ला सुन कर भारतसिंह और दौलतसिंह लड़ाई में जा शामिल हुए और शत्रुओं का संहार कर, वे दोनों भी मारे गए।

---

१. अचींतौ—अचित्य, बिना पूर्व जानकारी के। रोळौ—शोरगुल। निमधे—करे, प्रबंध। दौलो—दौलतसिंह। भाजे—भागे, पलायन करे। ऊगै—उदय हुए। अरक—अर्क, सूर्य। पिछम दिसि—पश्चिम दिशा।

२. उड़ीयौ लोह—अस्त्र शस्त्रों की सघन बौछारें हुई। आखै—कहने लगा: वै—वय, उम्र। तिसी—तैसी, जैसी। दाखीयै—कहने पर। नीसरै—युद्ध से बच कर निकले। दणीयर—दिनकर, सूर्य।

३. सूर—शूरसिंह। बखतेस तणा—बखतसिंह तनय दौलतसिंह। सक—मर्द, वीर। खागि—तलवार। खळ लूर—शत्रुओं को मारने वाला, वैरियों का नाश। विमहा—उलटा, विमुख। आथमै—अस्त हुवे।

४. भांण—सूर्य। इसड़ा—ऐसा। जैमल—राव जयमल्ल के वंशज। जोधहरा—राव जोधा के कुलोत्पन्न। जगधार—संसार के आश्रयदाता। पाड़ि—पछाड़ कर। पिसण—पिशुन, वैरी। सरगि—स्वर्ग।

११०. गीत राणा सगर राणावत चित्तौड़ रौ

मरण साह अकबर तणै चल चली मेदनी, वडे अवसांण तरवार वाही ।
कटक कण कण करे नगरह काढ़ियौ, सगर राखी पूजै पातसाही ।।१।।

मरण सुरतांण चै सरण हिंदू मंडळी, राखियौ रूप हिंदवाण चै रांण ।
सगर चा भुजां त्रिगथा तणी सायवी, ऊबरी निसतरी तैण अवसांण ।।२।।

वेल सालेमसाह थिया वेर जू, पाट थंभ कवण भड़ तूझ पाखै ।
तिमरहर आभरण तणा सवळा तखत, राणहर आभरण तूंहीज राखै ।।३।।

साखियौ भाण सुरताण ची साहिवी, कळह कीधो जिसो जगत कहियौ ।
रांण केवांण मुंह मांण तैं राखियौ, रांण चै हाथि वंधाण रहियौ ।।४।।

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

११०. गीतसार—प्रस्तुत गीत महाराणा प्रतापसिंह के अनुज शाही मनसबदार महाराणा सगर राणावत पर कथित है । गीत में बादशाह अकबर की मृत्यु पर राज्य प्राप्ति के लिए शाहजादों के युद्ध प्रयत्नों में सगर द्वारा शाहजादे सलीम (जहांगीर) के पक्ष में लड़ कर सलीम को सिंहासनारूढ़ करवाने का वर्णन किया है ।

---

१. चल चली-विचलित हुई, चलायमान हुई । मेदनी-मेदिनी, पृथ्वी । अवसांण-अवसर पर । वाही-चलाई, लड़ाई की । कटक-सेना । नगरह-नगर से । काढ़ियौ-बाहर निकाला । पूजै-शक्ति से, सामर्थ्य से । पातसाही-बादशाहत ।

२. सुरतांण चै-बादशाह के । हिंदू मंडळी-हिंदू राजा लोग, हिन्दुस्तान । त्रिगथा तणी-मुसलमान की, बादशाह की । सायवी-बादशाहत । ऊबरी-बच सकी, सुरक्षित रह सकी । निसतरी-उद्धार हुआ । तैण-उस । अवसांण-अवसर, युद्ध ।

३. वेल-सहायता, साथ । सालेमसाह-शाहजादा सलीम, बादशाह जहांगीर । थिया-हुए । पाट थंभ-सिंहासन की रक्षार्थ स्तंभ तुल्य । कवण-कौन । भड़-योद्धा । तूझ पाखै-तुम्हारे विना । तिमरहर-तैमूरलंग का वंशज । आभरण-आभूषण । तखत-तख्त, सिंहासन । राणहर-राणा का पौत्र या वंशज ।

४. साखियौ-साक्षी दी । भाण-सूर्य । कळह-युद्ध । जिसौ-जैसा । केवांण-तलवार । रांण चै-महाराणा सगर के । वंधाण-व्यवस्था, प्रबंध ।

१११. गीत राणा सगर चित्तौड़ रौ

पड़ै मार पूंतार सिर सार लेखा पखौ, सिंघ सीसोद सूर तस त्रणौ।
तळे नर वारीया दळे मुरधर तखणौ, रोहियौ सोहियौ सगर राणौ ॥१॥

पूठ हलकारतौ दीठ जोगणपुरां, उडै नतरीठ खाग वाढ़ अगरौ ।
उडाणै मंडाणै भंडाणा ऊपरै, सेर हमला दियै मेर सगरौ ॥२॥

पांण केवांण आराण सिर पछटीयै, सबळ अवसांण खुरसांण साखी।
आंणवां मात लै घांण ऊतार अरि, राण असपति तणी आंण राखी ॥३॥

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

१११. गीतसार—उपर्युक्त गीत महाराणा उदयसिंह के पुत्र और प्रतापसिंह के अनुज महाराणा सगर पर रचित है। गीत में बादशाही पक्ष की ओर से भयानक युद्ध में शत्रुओं का संहार कर बादशाह की मर्यादा को सुरक्षित रखने का वर्णन किया है। यह भी उल्लेख किया है कि महाराणा सगर के अनुज अगर के खड्गाघात से घायल हो जाने पर सगर ने शत्रुओं पर अति वेग से आक्रमण किया।

---

१. पूंतार—ललकार, प्रोत्साहित कर। सार—तलवार। लेखा—गिनती, हिसाब। पखौ—बिना। सीसोद—सीशोदिया। तस—जैसे, वैसे, हाथ। तळे—नीचे। वारीया—बचाया। दळे—दलन कर, सेना। मुरधर—मरुधरा, मारवाड़। तखणौ—तत्क्षण, तिमंजले। रोहियौ—रोका, बंधन में लिया। सोहियौ—सुहावना लगा।

२. पूठ—सेना की पृष्ठभागीय पंक्ति। हलकारतौ—ललकारता। दीठ—दृष्ट। जोगणपुरां—योगिनीपुर वाले, दिल्ली वाले, मुसलमान। नतरीठ—प्रहार, बौछार। खाग—तलवार। वाढ़—वार, कटकर। अगरौ—महाराणा सगर का भ्राता अगर।

३. पांण—बलपूर्वक, हाथ। केवांण—तलवार। आराण—युद्ध। पछटीयै—पछाट कर, प्रहार कर। अवसांण—अवसर, लड़ाई। खुरसांण—बादशाह, मुसलमान। साखी—साक्षी। आंणवां-आगन्तुकों, आक्रान्ताओं। घांण ऊतार—युद्ध में मारकर, विध्वंस कर। अरि—वैरी। असपति तणी—बादशाह की। आंण—प्रतिष्ठा, हुकूमत, दुहाई। राखी—रक्षा की, रखी।

११२. गीत राजा भीमसिंघ सीसोदिया टोडा रौ

असपति राउ तणौ गई ऊखेळै, घाग्रे कळि मांचती घणी ।
इळ मेवाड़ रांण घरि आई, तका कमाई भीम तणी ॥१॥

ऊधम कसि चढीयौ साहि आलम, लोहां जुध पड़ोयैं लखवार ।
रैणा राज अमर घरि रहीया, अमराउत असिवर उपगार ॥२॥

सांगाहरौ प्रिसण सम चडीया, पांडीसे जरदैत पछाड़ ।
पाखर भीम हुग्रौ पहाड़ां, तौ प्रांमीया धणी पहाड़ ॥३॥

आठ वरसि असुरां सौं आफळि छाडियै परिगह धरा छळि ।
अेकणि रांण तणौ अणीयाळै, राखी काळै रूक वळि ॥४॥

— कल्याणदास मेहड़ू रौ कह्यौ

---

११२. गीतसार- प्रस्तुत गीत टोडा राज्य के राजा भीमसिंह राणावत सिशोदिया की युद्ध-विजय का बोधक है । गीतनायक ने अपने पिता महाराणा भीमसिंह के शासनकाल में अनवरत आठ वर्ष तक मेवाड़ में शाही सेना पर आक्रमण कर तंग कर दिया था । राजा भीमसिंह के युद्ध प्रयत्नों के फलस्वरूप ही मेवाड़ में शाही सेना के पैर नहीं जम पाये थे । गीत में भीमसिंह के युद्ध प्रयत्नों की श्लाघा की गई है ।

---

१. आसपति, अश्वपति, बादशाह । ऊखेळै—युद्ध । घाग्रे—प्रहार । कळि—कलह । मांचती—होते । घणी—घनी । इळ—धरती । घरि आई—घर आई, अधिकार में हुई । तका—वह । कमाई—कमाने का भाव । भीम तणी—भीमसिंह की ।

२. ऊधम—युद्ध । कसि—कसकर, सजधज कर । साहिआलम—बादशाह । लोहां—आयुधों । रैणा—भूमि । अमर—महाराणा अमरसिंह के । अमराउत—राजा भीमसिंह । असिवर—तलवार ।

३. सांगाहरौ महाराणा संग्रामसिंह का पौत्र । प्रिसण—पिशुन, वैरी । पांडीसे—तलवार । जरदैत—कवचधारी । पाखर—प्रक्षर, रक्षक । प्रांमीया—प्राप्त हुए । धणी—स्वामी ।

४. वरसि—वर्ष । असुरां सौं—मुसलमानों से । आफळि—लड़ाई कर । परिगह—परिवार । छळि—युद्ध, लिए । अणीयाळै—भाले । काळै—योद्धा । रूकवळि—खड्गबल से ।

१३. गीत महारावत हरिसिंघ प्रतापगढ़ रौ

महण बांधि जिसौ गाज छोडे मयंद,
साज सूरजमलां तणौ सवतो ।
ढुळतां चमर आज देवी गढ़ां,
राज मद छिळै गजराज रवतो ॥१॥
सींघ राखण घरी कार दध,
अरकरी मेटणौ राह अमलां ।
धरी ऊपरि सिरि चमकतां,
हरी वहतौ करी करै हमलां ॥२॥
गाढ़ै गढ़ां तोड़ै झाळाहळो,
ऊजळी गरूरी तणै आयौ ।
डांणां खळी धरा हूं काढ़णौ,
जोर वर आज जसराज जायौ ॥३॥

— हरिदास खिड़िया रौ कह्यौ

---

११३. गीतसार— उपर्युक्त गीत देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत हरिसिंह सिशोदिया पर सर्जित है। गीतकार ने हरिसिंह को समुद्र की अपार जलराशि के समान मद बहाते मस्त गजराज के रूप में उपमित कर गीत की रचना की है। वह कहता है कि हरिसिंह गजराज की भांति उन्मत्त हो, शत्रुओं के दुर्गों और सेनाओं पर आक्रमण करता है।

---

१. महण—महार्णव, महासागर। पाज—पाल, सीमा, मर्यादा। गाज—गर्जना। छोडे—करता हुआ। मयंद—हाथी, सिंह। साज—सामान, ठाठ बाठ। सूरजमलां—गीत नायक के पूर्वज सूरजमल्ल की संतति वालों। सवतो—सवाया, शोभापाता। ढुळतां—झलते, करते। देवी गढ़ां—देवलि या दुर्ग। छिलै—छलकता, परिपूर्ण। रवतो—महारावत पदवी वाला हरिसिंह।

२. सींघ—सिंहराज, गीतनायक के पूर्वज का नाम। कार—सीमा, मर्यादा। दध—उदधि, सागर। चामरी—चंवर, घोड़ा। हरी—महारावत हरिसिंह। बहतौ—चलता। करी—हाथी।

काढ़ै—निकालता है। तोड़ै—ध्वस्त करता है। झाळाहळी—तेजस्वी, भयंकर। ऊजळी—उज्ज्वल। गरूरी—गर्व, अभिमान। कळी—शोभा. चमक। डांणां—मद, कदम। खळी—शत्रुता, पाप। काढ़णौ—निकालने वाला। जसराज जायौ—महारावत जसवंतसिंह का पुत्र महारावत हरिसिंह।

११४. गीत महारावत प्रतापसिंघ देवळिया रौ

प्रथी करै वाखांण राव राण रावत पता,
सुकर अवगाढ़ जमदाढ़ साहै ।
वीज री खीझ आलम सिरै वांचजै
वीजनूं खीज यौं तूंहीज वाहै ॥१॥

इसौ अवसांण सांवत सूरां आंगिवण,
साझियौ नहीं किण वार सुजड़ी ।
तड़ित री मार सैंसार खावै तरस,
तड़ित नूं चलावै तूंहीज तिजड़ी ॥२॥

---

११४. गीतसार— उपर्युक्त गीत देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत प्रतापसिंह सिशोदिया की कटारी के प्रहार से सम्बद्ध है। गीत में उल्लेख है कि प्रतापसिंह एक दिन सिंहासन पर बैठे हुए थे। वर्षा ऋतु थी। आकाश में गड़गड़ाहट करती बिजली प्रतापसिंह के पास टूट कर पृथ्वी पर गिरी। प्रतापसिंह ने उस क्षणजीवा पर त्वरित गति से कटार का आघात किया।

---

१. प्रथी–पृथ्वी, संसार। वाखांण–वर्णन। पता–प्रतापसिंह। सुकर–स्वहाथ, शुभ हस्त। अवगाढ़–दृढ़ता, बल पूर्वक। जमदाढ़–कटारी। साहै–पकड़, उठाकर, साधकर। वीज–विद्युत। खीझ–रुष्टता। आलम–संसार। सिरै–सरह, ऊपर। वांचजै–पढ़ी जाती है। तूंहीज–तुम ही। वाहै–चलाते हो, प्रहार करते हो।

२. इसौ–ऐसा। अवसांण–अवसर। सांवत–सामंत। सूरां–शूरवीरों। आंगिवण–दमन करने वाला, अग्रिम। साझियौ–मार की, मारा। वार–प्रहार, समय। सुजड़ी–कटारी। तड़ित–विद्युत। सैंसार–संसार। तरस–त्रास, भय। चलावै–चोट करे। तिजड़ी–कटार, तलवार।

ऊजळै दीह आलम किलम ईखतां,
निळै खत्रवाट रौ बाधीयौ नूर ।
ओछपै खरड़ खरड़ असमान सूं ऊवतरी,
सुकर थारै चढ़ी दूसरा सूर ॥३॥

सुरां जिम हरा रा नरां आदेसियौ,
ऊवरे च्यार जुग सुजस आंकौ ।
पता प्रतमाळ सूधीज पैलतां,
वीज चांकौ गई खाय वांकौ ॥४॥

---

३. ऊजळै दीह—धोले दिन, दिन दहाड़े । किलम—मुसलमान । ईखतां—देखते, अवलोकन करते । निळै—ललाट । खत्रवाट रौ—क्षात्रवृत्ति का, क्षत्रिय पथ को । बाधीयौ—बढ़ा । नूर—कांति । ओछपै—त्वरित, तनिक । खरड़—टकराकर, त्वरा से ध्वनि के साथ । ऊवतरी—उतरी, ऊपर से झपट कर नीचे आई । सुकर—शुभ कर । थारै—तेरे, तुम्हारे आपके । सूर—शूर, शूरसिंह ।

४. सुरां—देवताओं । जिम—ज्यों । हरारा—महारावत हरिसिंह के पुत्र प्रतापसिंह । आदेसियौ—नमन किया । ऊवरे—जीवित रहे, प्रचलित रहे । च्यार जुग—चारों युगों तक, (सत, त्रेता, द्वापर और कलि) । सुजस—सुयश । आंकौ—अंक, भवितव्य, यशवार्ता । पता—हे महारावत प्रतापसिंह । प्रतमाळ—कटारी । सूधीज—सीधी, सहित । पैलतां—दबाते, धकेलता, पीछे ठेलते । वीज—बिजली । चांकौ गई खाय—किनार काट गई, भयभीत होकर पार्श्व से निकल गई । वांकौ—तिरछी, टेढ़ी ।

११५. गीत महारावत उदैसिंघ प्रतापगढ़ रौ

चाढ़ै सुपातां गयंदां पीठ आप ही जलेवां चाले,
ऊभेला उभल्ले रीभां सुद्रबां अमाप ।
मचल्ले सत्राटां सूमां ऊपरां सौभाग माथै,
जाणै न को कुचालां नक्करां वाळा जाप ॥१॥

औरां वीर रसां तसां सत्राटां विरोळै अंगां,
जंगां गुडाकेस अंगां अभंगां जटैत ।
रूप रंगां अनुभावां विभावां सुभावां रंजै,
अभावां संचारी छजै उछाहां पटैत ॥२॥

---

११५. गीतसार– ऊपर लिखा हुआ गीत प्रतापगढ़ के महारावत उदयसिंह की उदारता और वदान्यता का सूचक है। कवि कहता है कि उदयसिंह सदैव सुपथ पर चलता है। कवियों को हाथियों का दान देता है। उनके आगे पैदल चल कर उन्हें सम्मान देता है। शत्रुओं और कृपणों पर रुष्ट होता है। वह याचना करने पर इन्कार करना तो कभी जानता ही नहीं है।

---

१. सुपातां–सुपात्रों, सुकवियों। गयंदां–गजराजों की। जलेवां–सवारी में आगे पैदल। ऊभेला–तरंगें, लहरें। ऊभल्ले–छलकता है, तरंगित होता है। रीभां–प्रसन्नता। अमाप-अपरिमित। सत्राटां–शत्रुओं। सूमां–कृपणों। जाणै–जानता है। नको–कोई नहीं। नक्करा–इन्कार वाला। जाप-बोलना, रटना।

२. औरां–अन्यों। रसां–पृथ्वी। तसां–उसी तरफ, उसी ओर। विरोळै–छिन्न भिन्न करता है, मथकर बिखेर देता है। गुडाकेस–अर्जुन। अभंगां–वीर। जटैत–योद्धा, सिंह। अभावां–अभावग्रस्तों। संचारी–संचारी भाव। छजै–शोभा देता है। पटैत–सिंह।

बेहु राहां वीर रंगां आखेटां सुद्रबां वाळा,
प्रत्तपाळां चाळां दला नंद वाळा पठेक ।
सूमड़ां कायरां झाळां आसुरां प्रजाळा सोहै,
विरद्दां संभाळा माळा गिराळा विमेक ॥३॥
ऊजाळा साख रा नांमी रुखाळा धरारा ऊदा,
औरां देवौ अकूपारां परारा आथांण ।
ईहगा अछारा त्योंही वैरियां वरारा ओपै,
सीसोदा सरारा दीपाहरा रा सैनांण ॥४॥
—महेसदास खिड़िया घोड़ावड़ री कह्यौ

---

३. वेहु राहां—हिंदू और मुसलमान दोनों धर्मानुयायियों । प्रतपाळां—प्रतिपालन । चाळां—क्रीड़ाएँ । पठेक—पाठक, पढ़नेवाला । सूमड़ां—कंजूसों । झाळां—क्रोध, ज्वाला । आसुरां—शत्रुओं, दैत्यों । सोहै—शोभा पाता है । संभाळा—शंभुवाला, गणेश । गिराळा—वाणी के । विमेक—विवेक ।

४. ऊदा—महारावल उदयसिंह । अकूपारां—समुद्र । परारा—उस ओर के, दूर के । आथांण—अस्ताचल, स्थान । ईहगा—कवियों । ओपै—शोभा पाता है । सरारा—श्रेष्ठता के, सिंह । सैनांण—चिह्न, निशान ।

११६. गीत राजा उमेदसिंघ सीसोदिया सायपुरा रौ

असंभ घोर अंधकार कळू राज छायौ असत,
जोर सत कियौ अवछन गवन जास ।
जुवौ जसवास जग हुवौ महाराज रौ,
किनां ग्रहराज रौ तेज परकास ॥१॥

---

११६. गीतसार— उपर्युक्त गीत शाहपुरा राज्य के शासक राजा उम्मेदसिंह प्रथम पर सर्जित है । गीत में कवि ने कहा है कि पृथ्वी लोक पर सर्वत्र कलियुग का राज्य हो गया । किसी में भी सत्यता, वीरतादि गुणों का अंश शेष नहीं रहा । सत्व भाग कर गुप्त स्थान में छिप बैठा । यदि कहीं कुछ तेज दिखाई देता है तो वह राजा उम्मेदसिंह में है अथवा सूर्य में ही ।

---

१. असंभ—असीमित, भयंकर । कळू राज—कलियुग का राज्य । छायौ—फैलगया, आच्छादित । असत—अधर्म, बुरा । सत—सत्य, सत्व । अवछन—सीमित, गुप्त । गवन—गमन । जास—जिससे, जिन । जुवौ—अलग, जुदा । जसवास—यश-सुगंधि, कीर्ति । किनां—किंवा, अथवा ; ग्रहराज रौ—सूर्य को । परकास—प्रकाश ।

कळि प्रचंड असाता ऊठ मेचक कुहर,
रैण भैचक संक हुवा राव रांणे।
विथरियौ तेण दिन जाप सूजा विया,
जग दुंडिद तणौ आताप जांणे ॥२॥

अघ अपजस तमोगुण आवरण हुवा यळ,
कळुवता ऊवारण जोस काथै ।
अभनिमा दळा थांरौ सुजस गियौ,
मारतंड जाण गिरराज माथै ॥३॥

सुत भारथा निमौ महाराज ऊमेदसी,
रचंतां आप जस प्रभाकर रूप ।
अघ अपंथ मेट निज पंथयण उजाळै,
भूमंडळ तणा हालै सकळ भूप ॥४॥

---

२. कळि–कलियुग। असाता–अपयश। मेचक–काला। कुहर–कोहरा, धुंधलापन। रैण–भुमिलोक, पृथ्वी। भैचक–भयचकित, भयभीत। विथरियौ–फैला। तेण दिन–उस दिन। सूजा विया–द्वितीय सुजानसिंह, राजा उम्मेदसिंह। दुंडिद–दिनेन्द्र, सूर्य। आताप–प्रकाश, तेजस्विता।

३. अघ–पाप। अपजस–कुयश। आवरण–आच्छादन, पर्दा। यळ–पृथ्वीलोक, पृथ्वी। कळुवता–कलियुग का प्रभाव। ऊवारण–उद्धार करने। काथै–शीघ्रता से कथा। अभनिमा दळा–अभिनव दौलतसिंह, राजा उम्मेदसिंह। थांरौ–तुम्हारा, आपका। मारतंड–सूर्य। माथै–ऊपर, सिर पर।

४. सुतभारथा–राजा भारतसिंह के पुत्र हे राजा उम्मेदसिंह। रचंतां–रचते, बनाते। जस प्रभाकर रूप–यशरूपी सूर्य। अपंथ–कुपथ। पंथयण–सुमार्ग, पथ। उजाळै–उज्ज्वल कर। हालै–चलते हैं, गमन करते हैं। सकळ–समस्त।

११७. गीत राजा उम्मेदसिंघ सीसोदिया सायपुरा रौ

गिरंद धूजै धोंसां महावीर सद गड़ड़िया,
किया हाथळ खड़ग रौस काथै ।
आवियौ मयंद गत भूप ऊमेदसी,
मद मसत गयंद सिरदार माथै ॥१॥

गढ़ पव्वै गयण अम्बाळ नद गरजीया,
रूक विकराळ भुज सरजीयां रीस ।
भाग रै नरसिंघ भन्त भटकियौ,
सूरहर पटाभर नाग रै सीस ॥२॥

वाट मरजाद बंध तोड़ अनमंद वहत,
महा अंध रहत आकास मूनी ।
गजब रौ जंभारौ देख जुध छांडियौ,
खंभा रौ बणहड़ौ वयंड खूनी ॥३॥

---

११७. गीतसार—उपर्युक्त गीत मेवाड़ के शाहपुरा राज्य के राजा उम्मेदसिंह राणावत की युद्धवीरता पर कथित है। गीत में वर्णन है कि उम्मेदसिंह ने मेवाड़ के बनेड़ा टिकाने पर आक्रमण कर वहां के शासक राजा सरदारसिंह को परास्त किया था। गीतकार ने राजा सरदारसिंह को मदोन्मत्त गजराज और उम्मेदसिंह को सिंह वर्णित करते हुए रूपक बांधा है।

---

१. गिरंद—पर्वतराज। धूजै—कांप उठै। सद—शब्द। गड़ड़िया—गड़-गड़ की ध्वनि हुई। हाथळ खड़ग—तलवार रूपी पञ्जा। रोस—क्रोध। काथै—तेज आवाज में। मयंदगत—सिंह की गति से, सिंह की भांति। मद मसत—मदमस्त। गयंद—गजेन्द्र, गजराज। सिरदार—राजा सरदारसिंह बनेड़ा। माथै—पर।

२. पव्वै—पर्वत। गयण—गगन, आकाश। अम्बाळ—नगाड़े। नद—नाद, नर्दन। गरजीया—गर्जना की। रूक—तलवार। रीस—क्रोध। भन्त—भांति। सूरहर—शूरसिंह के वंशधर सरदारसिंह। पटाभर—मद बहते। नाग रै—हाथी के।

३. वाट—पथ, मार्ग की। मरजाद—मर्यादा। वंध तोड—वंधन भंग कर, नियमों का उल्लंघन कर। अनमंद—स्वेच्छाचारी, शत्रु। वहत—चलता है। जंभा रौ—जम्हाई। छांडियौ—छोड़ा, त्यागा। खंभा रौ—हाथी को बांधने का स्थान। वणहड़ौ—बनेड़ा नामक स्थान। वयंड—हाथी। खूनी, अपराधी, दोषी।

डंभ मद छर हरी दुरग मेघाडंमर,
निपट अंग उतंग सोभा नवेड़ी ।
सुभ्र मुकता चामर पाघ रंगी वळ सिरी,
बीर घंट क्रीत कुळ लाज वेड़ी ॥४॥

हथणी निसा ताड़णो तरायळ,
भाड़णौ सीस तळडांण भरतौ ।
डरे भाजै गयौ सोक सुण डांण रौ,
करी सुरतांण रौ चीस करतौ ॥५॥

धिनौ भारतेस रा बाघजू धूधड़ै,
दसौं दिस पड़ै वघवाव दूभौ ।
अनड़ थह जीत उमंग ब्रहमंड अड़,
अजे घासांहड़ै खेत ऊभौ ॥६॥

— हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

४. डंभ—संतान, पुत्र । मद—गौरव, मद । छर—कलंक । हरी—अपने इष्टदेव विष्णु की पूजा प्रतिमा । दुरग—दुर्ग, किला । मेघाडंमर—छत्र, रावटी । उतंग—श्रेष्ठ, घोड़ा । नवेड़ी—त्याग कर, समाप्त कर । सुभ्र—सफेद । चामर—चंवर । पाघ—पगड़ी । सिरी—शिरोभूपण, सिरपेंच से भिन्न सिर का आभूपण । क्रीत—कीर्ति । कुळ लाज वेड़ी—कुळ की लज्जारूपी बेड़ी, वंश-गौरव की मर्यादा ।

५. तरायळ—तेजी से, मस्त हाथी । तळडांण—मद गिराता । भरतौ—बहते हुए । करी—हाथी । सुरताण रौ—सुरताणसिंह का पुत्र सरदारसिंह । चीस—चिंघाड़ ।

६. धिनौ—धन्य । भारतेस रा—राजा भारतसिंह के पुत्र राजाउम्मेदसिंह । बाघजू—सिंह, व्याघ्र । धूधड़ै—निडर अटल । वघवाव—व्याघ्र वायु, सिंह के शरीर की गंध-वायु । दूभौ—दुर्भर, भयोत्पादक अनड़—अजेय, निर्बन्ध वीर । थह—सिंह की गुफा । जीत—विजय कर । अजै—अभी तक, अब तक । घासांहड़ै—समूह, सेना के साथ । खेत—युद्ध-क्षेत्र में । ऊभौ—खड़ा है ।

११८. गीत महारावळ बिजैसिंघ डूंगरपुर रौ

अंडां गिरंदां हेरियौ भाळां सरारौ सोने री अंगां,
रंगां हेम ढाळी जेहो खीजियो रोसाळ।
चक्खां लाल रंगां क्रोध हाथियां भंजाक छायौ,
जंगां केड़ै लाग लायो आखेटां जोसाळ ॥१॥
केही भैंसां खायौ चोड़ै बाकरां चरायौ केही,
सभायौ भाखरां घेरां बचायौ सरीर।
सरारो भूपती छोळां न भायौ कायरां छाती,
काथो विजैसींघ सांमौ धिकायौ कंठीर ॥२॥
हरा उदैसींघ छाती चढ़ाई नागणी हाथां,
तोके भूपां पती झोके चलाई तन्दूर।
लंकाळा ढाहणौ सोभा वडेरां सवाई लेणी,
हिन्दवां भाण री बातां सभाई हजूर ॥३॥

---

११८. गीतसार— प्रस्तुत गीत डूंगरपुर के महारावल विजयसिंह की आखेट-क्रीड़ा के वर्णन का है। कवि कहता है कि आरक्त नेत्रों वाले, अनेक भैंसों के आहारक और पर्वतगिरि-मालाओं में निशंक रहने वाले खूंखार सिंह को विजयसिंह ने मार कर आखेट - कौशल की प्रसिद्धि प्राप्त की।

---

१. अंडां—विकट। गिरंदां—गिरिन्द्रों, पर्वतों। हेरियौ—खोजा। भाळां—खोज लगा कर। सोनेरी—सुनहरी। हेम ढाळी—स्वर्णरंगाकृति। जेहो—जैसा। रोसाळ—रोषीला। चक्खां—नेत्रों। भंजाक—भंजन करने वाला। केड़ै लाग—पीछे पड़ कर। जोसाळ—जोशीला।

२. केही—कई। चरायौ—खिलाया हुआ। भाखरां—पर्वतों। घेरां—घेरा, आवृत्ति। छोळां—आनन्द की तरंगें। न भायौ—नहीं सहन होता। कायौ—जल्दी में। सांमौ—सामने। धिकायौ—चला। कंठीर—सिंह।

३. हरा—पौत्र। नागणी—बंदूक। तोके—निशाना साधकर। भूपां पती—राजराजेन्द्र। झोके—झोककर। तन्दूर—तप्तकारी, ताप देने वाली। लंकाळां—सिंहों को। ढाहणौ—गिराने वाला। वडेरां—पूर्वजों से। हिन्दवां भाण—हिन्दुओं का सूर्य। बातां—यश वार्ताएँ।

गुड़ायौ नौहथां वापो विराजो राम री गादी,
रुड़ायौ जीत रा वांवी जिहानां राजिन्द ।
छावा खुमाणेस वाळा उडावौ द्रवां छोळां,
वायकां जड़ावौ पातां लभाड़ौ वाजिन्दा ॥४॥

थाहरां जगाड़ौ सूता भल्लके ओदियां थोका-
दाहरा वैरियां धोका पाड़ै सातों दीप ।
झोका प्रथीनाथ तोनै जाहरां दूनाळ झाड़े,
पछाड़े नाहरां मौजां समाये महीप ॥५॥
—प्यारजी खिड़िया संतु री कह्यौ

---

४. गुड़ायौ—पछाड़ा । नौहथां—नव हाथ लंबा सिंह । वापो—पिता तुल्य, स्वामी । विराजो—शोभा देने वाला, बैठने वाला । राम री—रामसिंह की । रुड़ायौ—नादित करवाया हुआ । वांवी—नगाड़े । जिहानां—संसार । राजिन्द—राजेन्द्र । छावा—पुत्र । छोळां—बौछार । वायकां—वचनों, काव्य वाणी से । पातां—पात्रों, कवियों । लभाड़ौ—सज्जित करो । वाजिन्द—घोड़े ।

५. थाहरां—कंदराओं । सूता—सोये हुए । ओदियां—शिकार चौकी । थोका—समूह । झोका—वाहवाही । तोनै—तुम्हें, आपने । दूनाळ—दो नालों वाली बंदूक । झाड़े—प्रहार करे । पछाड़े—मारे । मौजां—आनन्द उल्लास में दान दे । समापे—समर्पित करे ।

११९. गीत रावत नारायणदास सीसोदिया बेगू रो

जुध वासिठि जीय अलावै जाड़ां, अइयौ पायक वट असहास।
खळां खाय खाय हुआ खोखळा, दांत तुहाळा नरियणदास ॥१॥
सीसोदीया तुहाळो सूरित, भारत पाथ कारणाभूत।
दोय त्रण बीस कळ सत्र उसतां, डसणां डिगडिगिया जमदूत ॥२॥
जुध दूणां इकतीस जपंतां, हुई तणां भिरड़तां हाड।
रावत यूं हाली रढ़रामण, दूठ दूझाळ तुहाळी दाड ॥३॥
वाखो खळां दांतां अचळावत, वाप तुहाळौ नमौ खळां।
खाधो ब्रित न होअै खुमाणा, खांड खांड करे खळां ॥४॥

—ईसर खिड़िया रौ कह्यौ

---

११९. गीतसार— उपर्युक्त गीत मेवाड़ के बेगू संस्थान के अधिपति रावत नारायणदास-शक्तावत शिसोदिया पर सर्जित है। गीत में कवि ने गीतनायक पर वृद्धावस्था प्राप्ति के कारण तथा मुख में दांत न रहने के कारण शुत्रुओं को मारने में घटित कर वर्णन किया है। वह कहता है कि बहुत अधिक शत्रुओं को खाने (मारने के कारण तुम्हारे दांत और दंष्ट्राएं हिलने लगी हैं।

---

१. जुध—युद्ध। वासिठि—वासठ, संख्या सूचक। जीय—विजय पाकर। अलावै—हिलाता डुलाता है। जाड़ां—दाढ़ें। आइयौ—हे, अरे, सम्बोधन सूचक। पायक वट—सैनिक वृत्ति, वीरता का पथ। खळां—शत्रुओं को। खाय खाये—खाते खाते, मारते मारते। खोखळा—पोला, खोखला। तुहाळा—तेरे।

२. सूरित—आकृति, शक्ल। भारथ—युद्ध में। पाथ—पार्थ, अर्जुन, पथ, मार्ग। कारणाभूत—हेतु, निमित्त। दोय त्रण बीस—वासठ। कळ—युद्ध। सत्र—शत्रु। डसतां—मारते ध्वंसन करते। डसणां—दाढ़, दांत। डिगडिगिया—डगमगाने लगे।

३. दूणा इकतीस—वासठ। जपंतां—कहते, वर्णन करते। भिरड़तां—भिड़ाते, चवाते। हाड—हड्डियां। हाली—चली। रढ़ रामण—रावण जैसा हठीला। दूठ—वीर। दूझाळ—जबरदस्त।

४. वाखो—मुंह। दांतां—दांतों। अचळावत—अचलदास के पुत्र। खाधो—खाया हुआ। खुमाणा—रावल खुमान वंशीय नारायणदास। खांड खांड—खण्ड खण्ड।

१२०. गीत दलपत्ति सकताउत सीसोदिया रौ

खीजियँ सुरतांण राण खळखटतै, धन तैं मनसां गहा धणी ।
दूजां जेम न मूकी दलपति, तैं वाहर मेवाड़ तणी ॥१॥
आप अड़प चढ़ीयँ साहि आलम, अमर अड़प राखतै असंभ ।
तूं पीड़तां देस छळि पूगौ, खांडै राउ तणा गजखंभ ॥२॥
तैं सामि-ध्रम लाज सांफळतै, केलपुरा गजभार कंठीर ।
अंका जेम न सुख आदरियौ, विखै विखौ आदरियौ वीर ॥३॥
अइयौ अगड़ दूसरा अचळा, तैं तूं आतम कसि तरसि ।
मिळीयौ लोहि न मिळीयौ मेछां, मेळण वित जागीर मिसि ॥४॥

— कलियाणदास मेहड़ू रौ कह्यौ

---

१२०. गीतसार— उपर्युक्त गीत शिसोदियों की शक्तावत शाखा के वीर दलपतसिंह पर रचित है। गीत में मेवाड़ पर रुष्ट होकर बादशाह के आक्रमण करने पर दलपतसिंह द्वारा मेवाड़ के रक्षार्थ युद्ध कर का वर्णन कियानें गया हैं। दलपतसिंह नें शाही प्रलोभनों की उपेक्षा कर मेवाड़ की रक्षा हेतु युद्ध में प्राण त्याग दिया था।

---

१. खीजियँ—नाराज होने पर। खळखटतैं—युद्ध लड़ते। मनसा—इच्छा, मंशा। गहा—धारण की, पकड़ी। धणी—स्वामी। दूजां—दूसरों। मूकी—छोड़ी, त्यागी। वाहर—शत्रुओं को पीछा कर मारना। तणी—की।

२. अड़प—साहस। अमर—महाराणा अमरसिंह। अड़प—हठ। असंभ—अपार, असंभव। पीड़तां—पीड़ित करते, युद्ध करते। छळि—युद्ध। पूगौ—काम आया, पहुंचा। खांडेराउ—महान्‌वीर। गजखंभ—बलवान।

३. सामिध्रम—स्वामिधर्म। लाज—लज्जा। सांफळतैं—लड़ते। केलपुरा—शिसोदिया। गजभार—गज समूह। कंठीर—सिंह। आदरियौ—स्वीकार किया। विखै—विपत्ति में। विखौ—विपत्ति सहना।

४. अइयौ—हे (सम्बोधन)। अगड़—अग्रणी, दर्शीला। अचला—अचलदास। कसि—कटिबद्ध होकर, बांधकर। तरसि—ढाल, इच्छा। लोहि—लोहा, शस्त्रों में, लोहू में। मेछां—मुसलमानों। वित—वित्त, धन। मिसि—ब्याज से, बहाने से।

१२१. गीत कलियाणदास परतापोत सीसोदिया रौ

वडे परबि कलियांण खूमांण वेढ़ीमणौ,
पड़े खगि ऊपड़े राखि प्रांणी ।
अछर समहर थकी वळी करि औरता,
अवळ रथीये चढ़ि नीठ आंणी ॥१॥

पताउत सावळे हुले चढ़ि पौढ़ियौ,
वळे ऊपाड़ियौ लोह वाहां ।
वाढ़ती चौसरां रंभ घर दिसि वळी,
महल आंणी घरे चीह माहां ॥२॥

---

१२१. गीतसार– उपर्युक्त गीत कल्याणदास शिसोदिया पर रचित है। कल्याणदास युद्ध में घावों से पूरित होकर गिर पड़ा था। उसे मृत जान कर एक ओर से तो अप्सराएँ रणभूमि में आईं और दूसरी ओर से उसकी प्रियतमा चितारोहण के लिए चली। उस समय कल्याणदास का श्वास पुनः लौट आया। फलतः अप्सराओं को निराशा हाथ लगी तथा उसकी पत्नि को हर्षोल्लास हुआ।

---

१. परबि–पर्व। खूमांण–रावल खुमाण का वंशज होने के कारण गीत नायक को खुमाण कहा गया है। वेढ़ीमणौ–युद्धवीर, योद्धा। खगि–तलवार। ऊपड़े–घायल होकर जीवित रहे। प्रांणी–प्राण, जीव। अछर–अप्सरा। समहर–युद्ध। थकी–होती, से, लिए। वळी–लौट कर गई। औरता–पश्चात्ताप। अवळ–अबला, पत्नि। रथीये–अर्थी, चिता। नीठ–कठिनता से। आंणी–आई।

२. पताउत–प्रतापसिंह का पुत्र। सावळे–भाले। हुले–प्रहार विशेष। वळे–फिर। ऊपाड़ियौ–उठाया हुआ, उठा हुआ। लोह वाहां–शस्त्राघातों, शस्त्र प्रहारकों। वाढ़ती–काटती, तोड़ती। चौसरां–पुष्पहार। रंभ–अप्सरा। महल–धर्मपत्नि। चीह–करुण रुदन।

वडौ गजग्राहि ऊग्राहि मरि ऊवरे,
सांगहर सूर करतूति साखी ।
सुर त्रिया गई ऊचाट मनि साहीयै,
राइकुंवरि खोलड़ी चढ़ी राखी ॥३॥

पखै लिखिया कलै मरण नह प्रांमीयौ,
आवीयौ हंस फिरी दूरि आधी ।
बरण ऊभी तिया पड़े विसमोहणा,
वरी पहली तिया प्रीति वाधी ॥४॥

— कलियांणदास महड़ू रौ कह्यौ

---

३. गजग्राहि—युद्ध, गजग्राह । ऊग्राहि—माला, मुक्त हो । ऊवरे—जीवित रहा । सांगहर—महाराणा संग्रामसिंह का वंशज । सूर—सूर्य । साखी—साक्षी । सुर त्रिया—अप्सरा । ऊचाट मनि—उदास मन से । साहीयै—लिए हुए । राइकुंवरि—राजकुमारी । खोलड़ी—शरीर, पुराना मकान ।

४. पखै—विना । कलै—कल्याणसिंह । प्रांमीयौ—प्राप्त किया । हंस—जीव, प्राण । फिरि—फिरकर, घूमकर । बरण—वरण कर । ऊभी—खड़ी । तिया—त्रिया, नारी । विसमोहणा—पश्चात्ताप, चिंता । वरी—व्याही । वाधी—बढ़ी ।

१२२. गीत मिरजा राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर रा रौ

जगत वात आघात कूरम अजर जारणा, धारणा कारणा भूत खगि धींग।
मांनि चाळौ कियौ तांणि मेवाड़ हूं, जांणि टाळौ दियौ तेणि जैसींग ॥१॥
महाराजा महासिंघ रा महामल, कळू कहतळ कथन न्याय कहियौ।
तवरके काढ़ियौ वांक तरवारियां, राणधरि अबरके आंक रहियौ ॥२॥
कवण मेटे सकै मांनि कीधौ कहर, महर जैसिंघ री सकै कुंण मेट।
मानसी खाग नै दाग मेवाड़सो, हेट परतापसो राजसी हेट ॥३॥
दूसरा मान दईवांन दुजड़ां हथां, कथा दस सहसि समथ कहावै।
आपरी आपरी वात आंबेरिवा, मार उपगार बेऊं मनावै ॥४॥

---

१२२. गीतसार—उक्त गीत आमेर के कछवाहा नरेश मिर्जा राजा जयसिंह प्रथम पर वर्णित है। गीत में गीतनायक के पूर्वज मिर्जा राजा मानसिंह द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण करने और मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण न कर सहायक बनने का वर्णन है। इस प्रकार आमेर राजघराने के क्रोध और कृपा दोनों ही की सराहना की गई है।

---

१. आघात—भयंकर। कूरम—कछवाहों की। अजर जारणा—बलवानों को पराजित करने वाले। धारणा—मन का विचार। कारणाभूत—कार्य सिद्ध करने वाले। खगि धींग—महान् वीर। मांनि—राजा मानसिंह ने, मानते हुए। चाळौ-छेड़, युद्ध। तांणि—बात को खींचकर। जांणि—जान बूझ कर। टाळौ—किनारा, बचाव। तेणि—उस, इसलिए। जैसींग—राजा जयसिंह ने।

२. महामल—महान् योद्धा। कळू—कलियुग। कहतळ—कथनोक्ति। न्याय कहियौ—न्यायोचित ही। तवरके—उस समय। काढ़ियौ—निकाल दिया। वांक—टेढ़ापन, वीरता, कुलगौरव आदि का गर्व। तरवारियां—तलवारों से। राण धरि-महाराणा मेवाड़ की भूमि। अबरके—इसबार। आंक—अक्षर, अखण्डित।

३. मेटे सकै—मिटा सकता है। कहर—कोप, विपत्ति, युद्ध। महर—कृपा। कुंण—कौन मेट—विटा सकता है, नष्ट कर सकता है। मानसी—मानसिंह। खाग—तलवार। हेट—नीचे, छोटा। परतापसी—महाराणा प्रतापसिंह। राजसी—महाराना राजसिंह।

४. दईवांन—दयावान, शक्तिशाली। दुजड़ां—तलवारें। दस सहसि—दस सहस्र ग्रामों के स्वामी मेवाड़ वाले। समथ—समर्थ। आंबेरवा—आमेर नरेश। मार—मारना। उपगार—उपकार। वेऊं—दोनों।

१२३. गीत महाराजा सवाई जैसिंघ आमेर रा रौ

झंडां फरक्के त्रिखंडां चींध आडां खंडां उडै झींक,
साकुरां उडंडां भड़ां प्रचंडां त्रिसींघ ।
वडां वडां रायतन्ना खंडां खंडां सुण वात,
जवन्ना सूं जाडां थंडां मेळिया जैसींघ ॥१॥

काळां गंजां काळी ढाल ढळके कपाळां काळां,
रुंडमाळा काळां काळां नाग वाळा रीध ।
काळकीट काळरूपी काळ चाळ बंधै किल्ले,
कछवाहे दीहधोळै काळी निसा कीध ॥२॥

धनंखां टंकारां वाजै नगारां चीं पड़ै ध्रीह,
मंडे जु भाराथ पाथ करवेस माथ ।
विचित्रां दिखाड़ै हाथ विसंन्न रौ वीरवाह,
नाथ दिल्ली परां उरां आंवेर रौ नाथ ॥३॥

---

१२३. गीतसार— ऊपरलिखित गीत ढूंढ़ाड़ के महाराजा सवाई जयसिंह पर रचित है। सवाई जयसिंह ने जोधपुर नरेश अजितसिंह से मिल कर सांभर के स्थानाध्यक्ष मुगल सेनानायक सैयदों से झगड़ा कर विजय प्राप्त की थी। उस युद्ध में सांभर और नारनोल के सैनिक अधिकारी मारे गये थे। सांभर के युद्ध का गीत में वर्णन हुआ है।

---

१. फरक्के–लहराकर। त्रिखंडां–तीनों खण्डों में। चींध–पताकाएं। आडा खंडां–तिरछे खड्गों के। झींक–शस्त्रप्रहार। साकुरां–घोड़ों। उडंडा–अश्वों। भड़ां–योद्धाओं के। त्रिसींघ–बलवान, शक्तिशाली। रायतन्ना–राजवंशी। जाड़ां थंडां–जबरदस्त सैन्यसमूह। मेळिया–मिलाये।

२. काळा–श्यामल। ढळके–लुढ़कने की क्रिया का भाव। कपाळां काळां–हाथियों के श्यामल मस्तकों पर। रुंडमाळा–मुण्डमाला। नागवाळा–हाथियों के। रीध–प्रसन्न होकर (?)। काळकीट–यमराज। काळ चाळ–मृत्यु के अञ्चल। दीह धोलै–धौड़े दिन, दिन में सबके देखते। काळी निसा–मृत्यु रात्रि, अंधेरी रात्रि।

३. धनंखां–धनुषों की। टंकारां–प्रत्यंचा को खींचने से उत्पन्न ध्वनि। वाजे–ध्वनि करके। ची–की। ध्रीह–चोट। भाराथ–युद्ध। पाथ–पार्थ, अर्जुन। करवेस–कौरवों के, कौरवपति दुर्योधन के। माथ–मस्तक। विचित्रां–मुसलमानों को। विसन्न रौ–विष्णुसिंह का पुत्र जयसिंह। परां–उस ओर। उरां–इस ओर। आंवेर–जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी, आमेर राज्य।

हड़ां हड़ां हसै रीख झड़ां पड़ा ग्रीध हुवै,
भड़ां भड़ी छूटै नाळ गोळा तोड़वाह ।
रुद्र चुण्या गिड़ा जिके दड़ा ज्यूंही पड़्या देखै,
ढूंढाहड़ा खड़ा भड़ा कड़ाजूड़ ढाह ॥४॥

पातिसाही पजाई वजाई तरवारी-पाणै,
धपाई छिकाई ग्रीध्र मारताई धींग ।
खपाई असाई फौज खिणाई भराई खाई,
जैत पाई भाई भाई सबाई जैसींग ॥५॥

कुरुखेत भाराथ जु राम रामायणै लंका,
हुई जिका सांभरे सैयदां तीजी हेल ।
मंही खांडो समंदां पखाळै आगै राजा मान,
ऊजाळै प्रवाड़े जीतौ जैसिंघ अठेल ॥६॥

---

४. हड़ां हड़ां–अट्टहास । रीख–ऋषि, नारद । झड़ां पड़ां–पंखों की ध्वनि । ग्रीध–गृद्ध पक्षी । भड़ां भड़ी–भड़ाभड़, निरन्तर । नाळ–तोपें । तोड़वाह–तोड़ दार बन्दूकें, टुकड़े टुकड़े करने वाले प्रहार । चुण्या–चुने । गिड़ा–मस्तक । दड़ा–बड़ी गेंद । कड़ा जूड़–कटिबद्ध, युद्धार्थ सन्नद्ध । ढाह–ढहाने वाले, हाथी ।

५. पजाई–काट मार कर अधिकार में ली । वजाई–चलाकर । पाणे–बल से, हाथ से । धपाई–तृप्त की । छिकाई–उन्मत्त की, भर पेट खिलाकर तृप्त की । ग्रीध–गृद्धादि मांसभक्षी । धींग–जबरदस्त, योद्धा । खपाई–समाप्त की । खिणाई–खुदवाकर । भराई–आपूरित की । खाई–खानि, परिखा । जैत पाई–विजय प्राप्त की ।

६. भाराथ–महाभारथ, युद्ध । सांभरे–सांभर नामक स्थान । हेल–युद्ध । मंही–भीतर, पृथ्वी । खांडो–खड्ग । पखाळै–प्रक्षालित कर । आगै–पहिले, पूर्व समय में । राजा मान–मिर्जा राजा मानसिंह । ऊजाळै–उज्जवल, दिन में चौड़े धाड़े । प्रवाड़े–युद्ध, कीर्तिगाथा । जीतौ–विजय की । अठेल–अडिग, वीर, जोरावर ।

१२४. गीत महाराजा सवाई प्रतापसिंघ कछवाहा रौ

जांणै विछूटा डांखिया सीह् ओधार लांकळां जोड़ा,
जोरावार खूटा फील पांखिया जिताप ।
रोस जूटा लोयणां असां धरे जवां रूकां,
पावरे चौगांन जूटा माधजी प्रताप ॥१॥

भुचक्के हमल्लां लोक भांण री आकास भेड़ें,
ओक गिरीवाण रौ उचक्के हल्लां आंण ।
कोळ ऊड्ढ़ां भारी सेस धू चक्के पाण रौ कोम,
राण रौ हूचक्के महेराण रौ आरांण ।.२॥

वोह् ज्वाळ माळ तोपां ततारौ विलागौ वोम,
जागी ईसनेत धोम रतारौ जांवेर ।
हैरांकां धापड़े भू कितारौ छोडि भागा जठै,
ऐराकां चापड़े वागा सतारौ आंवेर ॥३॥

---

१२४. गीतसार— उपर्युक्त गीत जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह का है । सवाई प्रतापसिंह और महाराजा माधवराव सिंधिया ग्वालियर के मध्य तुंगा नामक स्थान पर भयानक युद्ध हुआ था । गीत में उसी युद्ध की भयानकता का कवि वदन मिश्रण ने वर्णन किया है। दोनों सेनानायक नरेशों को बुभुक्षित क्रुद्ध सिंह की भांति आक्रमण करते हुए चित्रित किया है ।

---

१. जांणै—मानो । विछूटा—खुले, बंधन से छूटे । डांखिया—भूखे, क्रुद्ध । सांकळां—लोहे की जंजीरें । खूटा—लड़ मरने को उद्यत हुए । फील-हाथी, नाग । पांखिया—पंख आए हुए । रोस—रोष । जूटा—भिड़े । लोयणां—नेत्रों । असां—ऐसे । जवां—जीभ, शुण्डदण्ड । रूकां—तलवारें, वृक्ष । पावरे—सीधे, खुले । चौगांन—मैदान ।

२. भुचक्के—धराकम्पन, भूचक्रित । भांण री—सूर्य को । भेड़े—स्पर्श करे । ओक—घर । गिरीवाण-देवताओं । उचक्के—उचक उठे । कोल डड्ढां—वाराह की दाढ़ें । सेस धू—शेषनाग के फन या मस्तक । चक्के—चक्रित, डावांडोल । पाण—बल । कोम—कश्यप । राण रौ-राणा जी सिंधिया का पुत्र । आरांण—युद्ध ।

३. वोह—बहुत, प्रहार । ज्वाळमाळ—ज्वालमाला । विलागौ—जा लगा । वोम—आकाश । ईसनेत—रुद्र का तृतीय नेत्र । रतारौ—रक्तिम । जांवेर—उस समय । हैरांकां—पराजित, घोड़े । ऐराकां—घोड़े । चापड़े—युद्ध । वागा—लड़ने लगे । सतारौ—पूना सतारा वाले, मरहठे ।

आधोफरां हल्लां हूर अच्छरां विमाणां उडे,
दकालां जवाणां खैंग होफरां हलांण ।
बाण सौंक उडाणां कबाणां तीर भाला बहै,
डहै थोक भोकहूं केवाणां पाणां डांण ।।४।।
गजब्बां सधूमरां सणंकै चोळ बोळ गोळा,
छणंके घूमरा हाड ठणंके छड़ाळ ।
जांगियां रणंकें नाद भणंके लेजम्मा गुणां,
केजम्मा भणंके बाढ़ खणंके कड़ाळ ।।५।।
नीसरै ओझड़ां हूलां खंजरां ऊनागी धरां,
दूसारां पंजरां भड़ां पागी बळां दाय ।
रूक गज्जां बागी तेठरी तरिन्दां माथै,
लागी जांणै जेठरी गिरंदां माथै लाय ।।६।।
वूठै ओण केक घूमै तड़फ्फे तायलां वीर,
क्रोधायलां ऊठै केक लूंमै गजां काज ।
कंठ झूमै बारंगां छायलां मोह भार किता,
सुमार थायलां घूमै धायलां समाज ।।७।।

---

४. आधोफरां—अधबीच में । हूर—मुसलमानों का वरण करने वाली अप्सराएं । विमाणां—विमानों में । जवाणां—युवाजनों । खैंग—घोड़े । होफरां—ध्वनि विशेष । हलांण—हल्ला, चलते समय । बाण सौंक—तीरों के चलने की ध्वनि । कबाणां—कमानों से । वहै—चलते । डहै—प्रफुल्लित, गिरते हैं । थोक—समूह । केवाणां—तलवारें । पाणां—बल, हाथों । डांण—दाव घात, मद ।

५. गजब्बां—गजब । सणंकै—सनन सनन की आवाजें करते । चोळ बोळ—लाल रंगे हुए, आग में तपने से लाल हुए । छणंके—छनन छनन की ध्वनि । घूमरा—समूहवद्ध । हाड—अस्थियां । ठणंके—ठन ठन की ध्वनि । छड़ाळ—भाले । जांगियां—नक्कारों, नगारचियों । रणंके नाद—रणण नाद । लेजम्मा—लेजमें । गुणां—डोरियां । केजम्मा—तलवारों के । वाढ़—पैनी धाराएं । कड़ाळ—कवच ।

६. ओझड़ां—आंतें । हूलां—प्रहार जो घुसाया जाता है । ऊनागी—नग्न । दूसारां—भालों । पंजरां—अस्थिपंजर । भड़ां—वीरों । पागी—डूबी हुई, प्रविष्ट । बळां—बलपूर्वक । रूक—तलवार । गजां—हाथियों । तरिन्दां—वृक्षों, नावों । जेठ री—जेठ मास की । गिरंदां पर्वतों । लाय—आग ।

७. वूठै—बरसता है । केक—कतिपय । तायलां—उतावले, क्रोधी । क्रोधायलां—कोपान्वित । लूंमै—लटकते हैं । झूमै—झूमते हैं, मस्त हुए घूमते हैं । बारंगां—अप्सराओं के । छायलां—शोकीन, रसिक । थायलां—थाह लेने वालों ।

फूल धारां बिहारां कैमरां कैंपारावारां फूटै,
बरां रभ लूटै नरां जूटै लथांबूथ ।
तूटै घाय तेग हूं बिरूथ वक्रतुण्डां तिकै,
जांणै वाय वेग हूं विछूटै अभ्र जूथ ॥८॥

वीर हक्कां काळा नाद वाजि डंका साद वांबी,
अचाळा गौरंभा तिकै गांजै थाळां वार ।
ऊथाळा गनीमां भालां ओहड़ां भचक्कां वार,
सोहड़ां रचक्का माळा ढूंढाहड़ा सार ॥९॥

चले वोम माग रा हैवागरा जहूरां चहै,
वहै सूरा खागरा घू लागरा वरंग ।
सूंडा डंड हेटा पड़ै नागरा मुण्ड में श्रोण,
आग रा कुण्ड में जांणै ज्याग रा उरंग ॥१०॥

---

८. फूल धारा–तलवारों की धाराएँ । विहारां–विदीर्ण । कैंमरां–धनुषों, बाणों । पारावारां–इधर से उधर । फूटै–पार निकले । बरां रंभ–अप्सराओं के वर । लूटै–रणभूमि में लुढ़कते हैं । जूटै–भिड़ते हैं । लथांबूथ–गुत्थम गुत्थ । घाय–घाव, घात । बिरूथ–सैनिक, सेना । वक्र तुण्डा–गजशुण्डदण्ड । वाय वेग हूँ–पवन वेग से । अभ्र जूथ–मेघ समूह ।

९. वीर हक्कां–वीरनाद । काळा नाद–भैरवों की ध्वनि । वाजि–ध्वनित हो । साद–शब्द । वांबी–वाद्य, नगाड़े । अचाळा–भयंकर । गौरंभा–आकाश में । तिकै–वे । गांजै–गरजते हैं । थाळा–भूमिस्थल । ऊथाळा–उथल पुथल । गनीमां–वैरियों । ओहड़ां–विकराल । भचक्कां–शस्त्राघात । वार–प्रहार, समय । सोहड़ां–योद्धाओं । रचक्कां–टक्करें । सार–लोहा, तलवार ।

१०. वोम माग रा–आकाशमार्गीय । हैवागरा–अश्व जो लगामों के सहारे चलते हैं । जहूरां–जौहर, चमत्कार, प्रकाश । वहै–बहते । खाग रा–तलवार के । घू लाग रा–मस्तक के लगते । वरंग–टुकड़े । हेटा–नीचे, धरती पर । नाग रा–हाथी के । मुण्ड–शीश से । आग रा कुण्ड–अग्निकुण्ड । ज्याग रा–सर्पयज्ञ, यज्ञ । उरंग–सर्प ।

रीझ वारां जैकारां मुनीस जंत्र बांचरेटी,
तेजबारां भाण सांचरेटी, बाघ तेम ।
वीर राचे चौतीस अठारां जंगा धार बटी,
जटी ग्यारा हारा काज नांचै नटी जेम ॥११॥

दूठ मंत्र जुगादी हेलियां पळासीए दौळं,
जैसाहरे ऊजळियां कवादी जैराक ।
ताठौडां कुरम्मा धणी जोर हू भेळिया तरैं,
राठौड़ां अछूती अणी भेळिया अैराक ॥१२॥

महा घोर बाजियौ भाराथ लोह जांम उभै,
जोर साभाजियौ छोह साभियौ जटेल ।
प्रथीनाथ जीत चौड़ै गाजियौ केहरी पत्तौ,
पराजियौ मत्तौ फील भाजियौ पटेल ॥१३॥

---

११. जैकारां—जय जयकार । मुनीस—मुनिराज नारद । जंत्र—वाद्य यंत्र, वीणा । बांचरेटी—पाठ करने वाले, गाने वाले । तेजबारां—तेज धारियां । भाण—सूर्य । सांचरेटी—संचरण, सत्य, सचमुच । तेम—तैसे, इस प्रकार । राचै—रंजित । चौतीस-अठारा—बावन । जंगा धार बटी—युद्धमार्गी । जटी—रुद्र । हारा—कण्ठ हार । नटी—शिव ।

१२. दूठ मंत्र—असोम मंत्र । जुगादी—आदिकालीन । हेलिया—लहरी, बुलाये हुए । पळासीए—मांस भक्षी । दौळं—चारों तरफ । जैसाहरे—सवाई जयसिंह वाला, महाराजा सवाई प्रतापसिंह । कवादी—कवायद में प्रवीण सैनिक । जैराक—विजयाकांक्षी । ताठौड़ां—उस जगह, लुटेरों । कुरम्मा धणी—कछवाहों के पति ने । तरैं—तव । अछूती—बिना लड़ी । अणी—सेना, सैन्यपंक्ति । अैराक—घोड़े ।

१३. बाजियौ—लड़ा गया, मचा । भाराथ—युद्ध । लोह—लोहा, शस्त्र । जांम उभै—दो याम । छोह—उत्साह, जोश । जटेल—जटाधारी, । शिव केहरी—सिंह । पत्तौ—महाराजा सवाई प्रतापसिंह । पराजियौ—पराजित हुआ । मत्तो—उन्मत्त । फील—हाथी । भाजियौ—भाग गया । पटेल—महादाजी सिन्धिया ।

१२५. गीत महाराव सेखा कछवाहा अमरसर रा रौ

सबळ मिळे घड़थाट भड़ बागड़ी, कमळ पर फबै खग घाव केहो।
धरा सहो जाणियौ रूप इम छटाधर, जटाधर तणौ सिर मयंक जेहो ॥१॥

डांण लागौ उरसि रोद घड़ डोहतां, लोक हिक सामुंहै कमळ लागो।
तदि नजरि अवियौ अेमि मोकळ तणौ, जांण ससि कमळ धर ईस जागा ॥२॥

भांजतां किलम रंग चढ़ै अंग भूभळां, ओपियौ भ्रकटि हिक घाव नरिइंद।
दळां सिणगार अड़तौ जठै दीसियौ, चढ़ीओ चाचरे जांण सिव चंद ॥३॥

वागड़ी भांजतां उभे पखां वीरवर, सरस रजवाट पौरसि संपेखौ।
समवड़ां भड़ां आयौ नजरि जंग समै, सिव तणौ रूप महाराव सेखौ ॥४॥

---

१२५. गीतसार— उपर्युक्त गीत में शेखावत-वंश के प्रवर्तक महाराव शेखाजी द्वारा हिसार के शासक अलफखां वागड़ी को युद्ध में पराजित करने का वर्णन है। कवि का कथन है कि नवाब अलफखां पर आक्रमण करते समय संसार ने शेखा को सिंह के सदृश पराक्रमी और शिव के शीश पर विराजित चन्द्र के समान उज्जवल रूप में देखा।

---

१. घड़–घटा, सेना। थाट–समूह। भड़–योद्धा। बागड़ी–हिसार का नवाब अलफ खां वागड़ी। कमळ–शीश। फबै–शोभा पाता है। खग–खड्ग। केहो–कैसा। सहो–समस्त। इम–इस प्रकार। छटाधर–सिंह। जटाधर–सिस। मयंक–चंद्र। जेहो–जैसा।

२. डांण–मद, कदम। उरसि–आकाश। रोद–मुसलमान। डोहतां–मंथन करते, ध्वस्त करते। हिक–एक। सामुंहै–सम्मुख। तदि–तव। मोकळ तणौ–राव मोकल तनय राव शेखा। जांण–मानो। ससि–चंद्र। कमळ–मुख, भाल। ईस–शिव। जागो–समाधि से जगा।

३. भांजतां–नाश करते। किलम–मुसलमान। ओपियौ–शोभित हुआ। भ्रकटि–ललाट, भ्रूहें। नरिइंद–नरेन्द्र, राजा। दळांसिणगार–सेनाधीश। अड़तौ–मुकावला करते, लड़ते। जठै–जहां। दीसियौ–दिखाई दिया। चाचरे–मस्तक, भाल। सिव– शिव।

४. उभे–उभय, दोनों। पखां–पक्षों। रजवाट क्षत्रियत्व। पौरसि–पौरुप। संपेखौ–देखो। समवड़ां–सम्बल, समान वय। समै–समय। रूप–स्वरूप। सेखौ–शेखा।

१२६. गीत महाराव सेखा कछवाहा अमरसर रौ

सुमरिये सारदा दास आसा सरव पूरणी धन्न जन्न धान पूरी ।
उकति सेखा तणी काव्य समपौ अंबा, कर क्रपा हमैं गिरराज कंवरी ॥१॥

नखतरां इस्या सूं अवर आयौ न नर, जगत रे मांय नै नार जायौ ।
दीन दोनां तणौ द्वेस मेटण दिलां, प्रीत री रीत सूं पार पायौ ॥२॥

राम रहमाण रा ध्यान में रहत रत, देवरां जमै अर रमै दरगा ।
मुगळ पाठाण अर सेख सेयद मरद, करी जो भूल कबूल करगा ॥३॥

कूरम ने मीर सह नम नम सरधा करै, चंवर पंच परि ने करत चालै ।
तुरक हिंदू तणां फरक मिटगा तुरत, हरख कछवाह रै हुकम हालै ॥४॥

---

१२६. गीतसार–उपर्युक्त गीत महाराव शेखा कछवाहा अमरसर के शासक की धर्म-समन्वयता व धार्मिक उदारता का परिचायक है। गीत में लिखा है कि गीत-नायक के सम्मुख मुगल, पठान, शेख और सैयद जातियों के मुसलमानों ने हिन्दू धर्म के प्रति असहिष्णुता की भावना त्याग कर अपना दोष स्वीकार किया और पुराण तथा कुरान के प्रति हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मावलम्बियों ने परस्पर आस्था व्यक्त की ।

---

१. सुमरिये–स्मरण कीजिए। सारद–सरस्वती। पूरणी–पूर्ण करने वाली। धन्न जन्न-द्रव्य और जन। उकति–काव्य उक्ति। समपौ–प्रदान करो। अंबा–अंबिका, देवी।

२. नखतरां–नक्षत्रों। इस्या–ऐसे। अवर–अन्य। मांय–में। नार–नारी, स्त्री। जायौ–जन्मा। दीन–धर्म। द्वेस–द्वेष। मेटण–मिटाने।

३. रहमाण–रहीम। रत–लवलीन। देवरां–देवघर। जमै- रात्रि जागरण। अर–और। रमै-रमण करना। दरगा–दरगाह, दरबार। कबूल–स्वीकार।

४. कूरम कछवाहे। मीर–अमीर, यवन। सरधा–सिजदा, नमस्कार। चंवर–चमर। पंचपीर–रामदेवजी, पाबूजी, हरभूजी, गोगादेजी, मेहाजी ये पांच हिन्दू पीर कहलाते हैं। फरक–फर्क, भेद। तुरत–तुरन्त। हरक–हर्ष, आनंद। हालै–चलते हैं।

नुकम तासीर लुकमानसा तिमिर रा, समर कज कमर कस सजि सारां।
पुराण कुराण पाठ सागै पढ़ै, विप्र अर मौलवी अेक वारां ॥५॥

कूंट च्यारां कटक रटक लेवा खड़ा, धड़ा धड़ तोप वेखौफ धारी।
तेग रै तीर अठ पीर रा त्रंमागळ, हैंवरां हींस घण गरभहारी ॥६॥

ला यल्ला भणंता अल्ला रा लाड़ला, कळा रण कोस रा जोस कायां।
होसला करै सौ कोस रा हालणा, चहूं दिसां फिरै हिक छत्र छायां ॥७॥

भिड़ै कुंण भाव कर राव रा भड़ां सूं, क्रोध कर बापड़ा करै कांई।
कढ़ी तेगां तुरक हिंदवाण वाखाण रा, सेख रा भेख सूं डरै सांई ॥८॥

लोथ पर लोथ वे गोत रा लूटादै, छूटादै पलक में खलक छक्का।
सिकारी सज्योड़ा तीर नीसांण रा, मंज्योड़ा मदीना मीर मक्का ॥९॥

---

५. तुकम तासीर–बीज का प्रभाव। लुकमानसा–हकीम लुकमान। तिमिररा–तैमूरलिंग का। समर–युद्ध। कज–कार्य, लिए। कस–बांध कर। पुराण कुराण–धर्म ग्रन्थ पुराण और कुरान शरीफ। सागै–साथ साथ। विप्र–ब्राह्मण। अेक वारां–एक समय में।

६. कूंट च्यारां–चारों दिशाओं में। कटक–सेना। रटक–टक्कर। लेवा–लेने के लिए। वेखौफ–निडरता से। अठ पीर–आठ प्रहर। त्रंमागळ–नगाड़े। हैंवरां–घोड़ों की। हींस–हिनहिनाहट। गरभहारी–गर्व हर्त्ता।

७. भणंतां–पढ़ते। लाड़ला–प्यारे। कळा–कला। जोस–जोश। होसला–साहस, उत्साह। हालणा–चलने का। फिरै–घूमते फिरते हैं। हिक–एक।

८. भिड़ै–सामना करे। कुंण–कौन। भाव कर–इच्छा कर। भड़ां सूं–वीरों से। बापड़ा–बेचारे। कांई–क्या। कढ़ी–निकली। तेगां–तलवारें। वाखाण रा–वर्णन की। सेख–शेख बुर्हान, महाराव शेखा। सांई–स्वामी।

९. लोथ–लाश। वे–विना। गोतरा–गोत्र के। पलक–क्षण। खलक–संसार। सज्योड़ा सज्जित। तीर–बाण। मंज्योड़ा–मंजे हुए, तीर्थ स्नान किये हुए।

खड़ा खड़ खाग में आग खिरवो करै, कड़ा कड़ कावली फिरै केड़े ।
धड़ा धड़ धरण में सीस विखरे धके, छिड़्योड़ा सेर ने कवरण छेड़े ॥१०॥

चलै छकि धार मद रुधिर सूं रणचंडी, अलीढा बक्करै अल्लाह अकव्वर ।
मंडै रण हिंदू तो पूतळी मंडै, मरद खांनां तणां मंडै, मकव्वर ॥११॥

सूर सेखा तणा जिणां रै सामने, घड़ां बिण सीस बगसीस धरती ।
तेग तन्दूर बेगां तप्योड़ी तठै, फौज अठ पौर में लियां फिरती ॥१२॥

रमै रण खांन मस्तान रमजान में, अठी उपवास ऐकासण अेक ।
बार तींवार अठ वार बीरा वण्यां, भड़ां सेखा तणां भेख में भेक ॥१३॥

धकै चढ़ि मूरता अली दिल्ली धक्यो, जिका उदण्ड भुज दण्ड जोड़ै ।
मक्र संक्रान्ति में राव रण क्रांति में, चलावे तीर पंच पीर चोड़ै ॥१४॥

---

१०. खड़ाखड़–खड्ग प्रहार की ध्वनि विशेष । खाग–तलवार । आग–अग्नि । खिरवो–टूटना, गिरना । कड़ा कड़–कड़ कड़ की ध्वनि विशेष । केड़े–पीछे पीछे । विखरे–विकीर्ण, अस्त-व्यस्त गिरना । धके–धक्का, से, आगे । छिड़्योड़ा–छेड़छाड़ किया हुआ । कवरण–कौन । छेड़े–छेड़छाड़ करे ।

११. छकि–छके हुए, मस्त हुए । मद–मद्य । वक्करे–कुपित होकर बोलते हैं । पूतळी–प्रतिमा, स्मारक । मकव्वर–मकबरा ।

१२. घड़ां विण–विना धडाके । वगसीस–वख्शीश, दान-पुरस्कार । तेग–तलवार । तन्दूर–तनूर, भट्टी विशेष । तप्योड़ी–तपी हुई । तठै–वहाँ । अठपौर–अष्ट प्रहर । फिरती–विचरण करती ।

१३. रमै–रमते, क्रीड़ा करते हैं । मस्तान–मस्ती । रमजान–मोहर्रम । अठी–इधर । ऐकासण–पुण्य निमित्त दिन में एक समय भोजन करने का व्रत । तींवार–त्योंहार, पर्व । अठवार–आठ ही वार, सदा । भड़ां–भटों, वीरों । भेख–भेषभूषा । भेख–भेष, सन्त और फकीर ओलियों का वेश ।

१४. धकै–सामने । मूरताअली–नवाव मुर्तिजाअली । धक्यो–गया, चला । जिका–जो । तीर–वाण ।

सेख बुरहान कुरान रौ सायबो, चलावै हुकम जप पीर चल्ला ।
रेख पर मेख निज भेख राखै सदा, यलल्ला यलल्ला रटै अल्ला ।।१५।।

दीन रौ दास अरदास पर दयालू, अठै अमरवास सूं पास आवै ।
खास पिरजा रजा खुसी पै खिलावण, चौगुणी चीज दै जकी चावै ।।१६।।

वाहरे वाह नर नाह ल्यूं वारणा, राव उण सिखरगढ़ सेख राजो ।
लेख रूडा तणा देखवा लालजी, अेक वर अवनी पर अवर आजो ।।१७।।

—खड़दान आपावत काळी पहाड़ी चारणवास रा रौ कह्यौ

---

१५. सायबो–साहब, ईश्वर । चल्ला–रीति । रेख–भाग्य रेखा । यलल्ला यलल्ला–अल्लाह अल्लाह । रटै–उच्चारण करते हैं ।

१६. अरदास–प्रार्थना, निवेदन । पिरजा–प्रजा । रजा–मर्जी, इच्छा । जकी–जो । चावै–चाह करे ।

१७. वारणा–बलैया । सिखरगढ़–शिखरगढ़ नामक किला । रूड़ा-सुन्दर । अवनी–भूमि । अवर–और, पुनः । आजो–आना ।

१२७. गीत राव रायमल सेखावत अमरसर रा रौ

अंतर सझि वसि करण आडौ, दो मझि कछवाहो दुझल।
आसंगणी मुगल नह आवै, राठौड़ां ही रायमल ॥१॥

देसां गढ़ां ठाकरां दूजां, रण सझियौ इण सझियौ रूक।
खुरसांणियै अनै खेड़ चै, ढूंढ़ाहड़ै न सकिया ढूक ॥२॥

प्रथमी वडौ सयळ जग पुणवै, दुजड़ां कर साहियां दूझाळ।
बाबरवत गांगावत बळवंत, सेखावत सालै उरसाल ॥३॥

मीर हुमायूं अनै मालदे, नमै न रायामाल नादैत।
सींहां बेहु विचै सेखावत, बालाहरो वडौ विड़दैत ॥४॥

---

१२७. गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के अमरसर राज्य के शासक राव रायमल शेखावत के पराक्रम और प्रताप पर सर्जित है। गीत में लिखा है कि वह न तो दिल्ली के बादशाह हुमायूँ का भय मानता है और न राठौड़ नरेश मालदेव जोधपुर से ही आतंकित होता है। वह दोनों सीमावर्त्तियों को शल्य तुल्य चुभता रहता है।

---

१. अन्तर—मध्य में। सझि—सजकर। वसि—वश में। आडौ—रोक, ओट। दोमझि—युद्ध में। दुझल—योद्धा। आसंगणी—अधिकार में लेना, वश में आना।

२. दूजां—दूसरों। सझियौ—सज्जित। रूक—तलवार। खुरसांणियै—मुसलमान, खुरासानदेशीय, बादशाह। अनै—और, पुनः। खेड़ चै—मारवाड़ के खेड़ स्थान पर राठौड़ों की राजधानी रहने के कारण राव मालदेव के लिए "खेड़ चै" शब्द का कवि ने प्रयोग किया है। ढूंढ़ाहड़ै—कछवाहों का ढूंढाड़ में राज्य रहने के कारण राव रायमल के लिए प्रयुक्त शब्द। सकिया ढूक—पहुंच सके, वश में कर सके।

३. प्रथमी—पृथ्वी में, संसार में। सयळ—समस्त। पुणवै—कहता है। दुजड़ा—तलवारें। कर—हाथ में। सहियां—सम्भाले हुए, पकड़े हुए। दूझाळ—महान वीर। बाबरवत—बादशाह बाबर तनय हुमायूँ। गांगावत—राव गांगा का पुत्र राव मालदेव। सालै—चुभता है। उरसाल—हृदय-शल्य बना।

४. नादैत—देवप्रकृति, नगाड़ों का नाद कराने वाला, बड़ा राजा। बेहु—दोनों के। बालाहरो—राव बाला का पौत्र। विड़दैत—विरुदधारी।

१२८. गीत राव सूरजमल सेखावत अमरसर रा रौ

गो इक दोय उमर में गांजे, माणस कांई करै मरौड़ ।
संघारिया भला राव सूजै, गढ़ गिरधर हूंता सह गौड़ ॥१॥
कूरम वैर वळै कोई कीजौ, ठाकर बेगौ जाव थियौ ।
वंसपती ठाहर निज वसुधा, गौड़-वंस निरवंस कियौ ॥२॥
केहर सिर जम-रूप कोपियौ, दळ भेळा लीधां जमदूत ।
कठै विजयगढ़ कठै कवीलौ, रिमवै कठै कठै रजपूत ॥३॥
वाळै वैर लड़े वैराई, जिसड़ां सूं भरियौ जगत्र ।
सुणियौ अगै नहीं सांभळस्यां, सूरजमाल सारिखौ सत्र ॥४॥
वाप न कोइ वैर बेटा चै, सांचां आरंभ अेम सजै ।
दुनिया सीस ठाकरां डैरू, वडां वडी चौ न्याव वजै ॥५॥

---

१२८. गीतसार—उपर्युक्त गीत में राव सूरजमल शेखावत अमरसर के अधिपति द्वारा विजयगढ़ के शासक केशरीसिंह गौड़ पर आक्रमण कर विजय प्राप्त करने का वर्णन है। गीत में उलेल्ख है कि सूरजमल्ल ने अपने पुत्र के वैर-शोधन के लिए केशरीसिंह पर आक्रमण किया और गोड़ों को मार कर गौड़-वंश को ही समाप्त कर दिया ।

---

१. गो—गया । उमर—उम्र । गांजे—नाश करने के लिए । माणस—मानव । कांई—कन्या । मरौड़—गर्व, ऐंठ । संघारिया—संहार किया । राव सूजै—राव सूरजमल्ल ने । गढ़ गिरधर हूंता—किला, गिरधरगढ़ से । सह—समग्र ।

२. कूरम—कूर्म, कछवाह से । वळै—पुनः, फिर । कीजौ—कीजिये । बेगौ—तत्परता से, शीघ्रता से । जाव—उत्तर । थियौ—हुआ । वंसपति—राजा, कुल का स्वामी । ठाहर—स्थान, निवास स्थान । निरवंस—वंशविहीन ।

३. केहर सिर—केशरीसिंह गौड़ पर । जमरूप—यमराज तुल्य, काल स्वरूप । कोपियौ—कुपित हुआ । दळ—सेना । भेळा—शामिल । लीधां—लिए हुए । कठै—कहाँ । कवीलो—परिवार । रिमवै—शत्रुगण ।

४. वाळै—शोधन कर, प्रतिकार कर । वैराई—शत्रुता रखने वाले । जिसड़ां सूं—जैसे से । भरियौ—परिपूर्ण । जगत्र—जगत, संसार । अगै—पहिले । सांभळस्यां—सुनेंगे । सारिखौ—सदृश । सत्र—शत्रु ।

५. चै—के । सांचाँ—सत्य । आरंभ—युद्ध । अेम—इस प्रकार । सजै—सज्जित । सीस—शीश, पर । डैरू—डमरू वाद्य । वडां वड़ी चौ—वड़े वड़ो का । न्याव—न्याय, उचित ही । वजै—बजता है ।

१२९. गीत राजा गिरधरदास सेखावत खंडेला रौ

दळ भांजे जोय रायमल दादो, वह रायसल पिता बड़ चीत।
गींता सारीखौ तूं गिरधर, गिरधर जैण कहीजे गीत ॥१॥

दाखण अचड़ प्रवाड़ा दोहां, गिणतां त्यां नह आवै ग्यान।
तू सरदार रायसल सरखौ, तू रायमल तिसौ राजांन ॥२॥

प्रसध वधी देसे परदेसे, धू धजवड़े ऊडाड़े धूप।
सेखावत अणियां सूजावत, रासावत चाढ़े त्यां रूप ॥३॥

तू तरवार अचार तेहवौ, सिर ताहरै वंधीजे सूत।
बाला वीजळ करै अंजस वे, सेखा देखे बडो सपूत ॥४॥

---

१२९. गीतसार— उपर्युक्त गीत खण्डेला राज्य के शासक राजा गिरधरदास शेखावत पर सर्जित है। गीत में कवि ने गिरधरदास को उसके महान् पूर्वज राव बाला रायमल, सूरजमल्ल और राजा रायसल के समरूप वीर और उदार वर्णित किया है। कवि ने कहा है कि तुम्हारी वीरता और दान को देख कर सपूती के लिए तुम्हारे स्वर्गस्थ पूर्वज भी सराहना करते हैं।

---

१. दळ–समूह। भांजे–संहार करते। जोय–देख। वडचीत–उदारमना। गीता–भगवद्गीता, वीर गीत। सारीखौ–समान। जेण–जिस, जहाँ।

२. दाखण–कहना। अचड़–उत्तम कार्य, कीर्ति। प्रवाड़ा–वीरता और उदारता की प्रशस्तियाँ। दोहां–दिन। त्यां–उन। ग्यान–ज्ञान, गिनती। सरखौ–सदृश। तिसौ–तैसा, वैसा, जैसा। राजान–राजा।

३. प्रसध–प्रसिद्धि, ख्याति। वधी–वृद्धि, बढ़ी। धू–ध्रुव, सिर, क्रोध। धजवड़े–तलवार धारी योद्धा, मान। ऊडाड़े–भगाता, उड़ाता। धूप–तलवार। अणियां–शस्त्र नोक। सैन्य–सेना पंक्ति। सूजावत–राव सूरजमल्ल का पुत्र रायमल। रासावत–रायसल का पुत्र राजा गिरधरदास।

४. अचार–व्यवहार। तेहवो–तैसा, वैसा। ताहरै–तेरे, तुम्हारे। वंधीजे–बँधता है। सूत–सूत्र, पगड़ी। बाला–राव बाला। वीजळ–राव वीजलदेव। अंजस–गर्व, खुशी। वे–दोनों। सेखा–महाराव शेखा। सपूत–सुपुत्र।

१३०. गीत राव रायचन्द सेखावत मनोहरपुर रौ

चींटी चालि यों रायचंद न चालै, दळ ओहद रा दीठां ।
अळगी भौम सबळ तळियारै, पिड़ि भय भूप पयीठा ॥१॥

खिलच तणा भाइप सह खिसिया, अमरसरो दे ओटां ।
चिगि रहिया चहुवांण अणी चढ़ि, चंद मिळै रण चोटां ॥२॥

वागां खागां ऊनागां वीजळ, अणभंग कनळ अघायौ ।
अजरायळ चौउथां अैराकी, भालां भेळ भिळायौ ॥३॥

अधक पठाण विहंडिया आचां, रिम अहदाद सराहे ।
सतरि खांन च्यारि साहिजादा, दळिया चंद दुबाहे ॥४॥

---

१३०. गीतसार— उपर्युक्त गीत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक राव रायचंद शेखावत की युद्धवीरता पर रचित है। गीतनायक ने शाही सेना का नेतृत्व करते हुए विद्रोही शाहजादों का संहार कर यश अर्जित किया था। युद्ध की भयंकरता से डर कर खिलची और चौहान युद्ध से किनारा कर गये। उस समय रायचंद ने युद्ध में चौथी वार पठानों पर आक्रमण कर उनका नाश किया।

---

१. चालि—चाल, गति। चालै चलता है। दळ—सेना, समूह। दीठाँ—देखने पर। अळगी—अलग दूर। तळियारै—कोतवाली, सैनिक चौकी। पिड़ि—युद्ध। पयीठा—दुबक गये।

२. खिलच—खिलची, मुसलमानों की एक जाति। भाइप—भाई-वन्धु। सह—सब। खिसिया—पीछे हट गए। अमरसरो—अमरसर नरेश गीतनायक रायचंद। ओटां—आड, मार्ग रोकते हुए घेर कर। चिगि रहिया—किनारा किये रहे, छिप गये। अणी चढ़ि—सेनाग्रभाग से भिड़ कर। चंद—राव रायचंद। मिळै—मुकाबले में चढ़ कर। चोटां—प्रहारों।

३. वागां प्रहार होने पर। खागां—तलवारें। ऊनागां—नग्न। बीजळ—खड्ग कटारियाँ। अणभंग—वीर अखंड। कनळ—युद्ध। अघायौ—तृप्त। अजरायल—योद्धा जबरदस्त वीर। अैराकी—घोड़ा। भेळ—मेल, मिलन। भिळायौ—मिलाया।

४. विहंडिया—नष्ट किये। आचां—भुजबल से। रिम—वैरी। अहदाद—शाबास। सराहे—प्रशंसा की। दळिया—संहार किया। दुबाहे—दुर्घर्ष वीर।

१३१. गीत राव तिलोकचंद सेखावत मनोहरपुर रौ

संहसहो राण दीवाण मौजां सम्रथ, भोज विक्रम जहो वाथ भरतै ।
चरण बाधारिया राव तिरलोकचंद, करां लाखां तणां दान करतै ॥१॥

पाख तो चंद तण भवे पूजै न पहौ, दिली मंडळ तणौ दान देतां ।
अतुळ वळ लाख द्रव हाथ अपुड़ावै, कीया टोडर पगे भूप केतां ॥२॥

हिंदवां छात वड गात सिर हिंदवां, लियण,सोभाग चा माग लाधा ।
राय वधि चौंप मौजां विये रायचंद, वदौवदि अड़सगर पगे वांधा ॥३॥

दियंतै दान सौ संहस दूथाळवां, खांडतै रोर दुक्ख मूळ खणियौ ।
वांकड़ा राव जस मुकट माथै वणौ, वीदगर जगत सह चरण वणियौ ॥४॥

—भूधरदास पाल्हावत रौ कह्यौ

---

१३१. गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के मनोहरपुर शाहपुरा के स्वतंत्र शासक राव-तिलोकचंद शेखावत की दानवीरता के वर्णन का है । राव तिलोकचंद ने एक दिन में कवियों को चार ग्राम एक एक लाख द्रव्य दान में दिया था । गीत में कवि भूधरदास ने एक लाख रुपये दान में प्राप्त करने का वर्णन करते हुए गीत नायक को राजा-भोज और महाप्रतापी विक्रमादित्य के तुल्य कहा है ।

---

१. संहसहो—सहस्रों । सम्रथ—समर्थ । जेहो—जैसा । वाथ—भुजा । वाधारिया—वढ़ाये । करां—हाथों से । लाखां तणां—लक्षाधिक रुपयों का ।

२. पाख—पक्ष, पार्श्व । चंद तण—राव रायचंद तनय । भवे—भव में, जन्म में, संसार में । पूजै—पहुंचे । पहौ—प्रभु, राजा । दिली—दिल्ली । अतुळवल—अतुलित वल । अपुड़ावै—व्यय करता है, दान देता है । टोडर पगे—पैरों का भूषण विशेष । केतां—कतिपय ।

३. हिंदवां छात—हिन्दुओं के स्वामी, हिन्दु नरेश । वडगात—वड़ाशरीर । चा—का । माग—मार्ग । लाधा—लब्ध हुए, मिला । वधि—वढ़ कर । चौंप—कीर्ति । मौजां—दांन । विये—द्वितीय । वदौवदि—हठपूर्वक, वलात् । अड़सगर—विरोध करने वाले । पगे-वांधा-सेवक वनाये ।

४. दूथाळवां—चारणों को । खांडतै—खण्डित करते । रोर—दरिद्रता । खणियौ—खोदने का भाव । वांकड़ा—वांका । वीदगर—विदग्ध ।

१३२. गीत राव बिशनसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

बहै मदति जो ख्वाजापीर बींटळी बिराजों वाळा,
सोहै बाज खाजों वाळा सुदत्तीसयार।
वोही पीर मोले, जान मक्के देस राजों वाळा,
तुझै सीस ताजों वाळा रुखाळा तैयार ॥१॥

पैगम्बरी नेक बखत प्रथी पीर पालों वाळा,
चिराकों ऊजाळों वाळा विरुदां चूखैर ।
झळक्के ऊजळी अणी नीलीकेत-भाला वाळा,
ताळा जोतिवाला वाळा रखेगा तू खैर ॥२॥

घूम घोडो पीर सत्थौ हत्थो केम घोंटू झाला,
ऊजळ अंगोटे वाळा विलाला उधत्त।
रखेगा हलाला हक्क ताजा माल रोटों वाळा,
माथै बिन चोटों वाळा तिहाळी मदत्त ॥३॥

सदा बिसन तेरी फते रखेगा जो पीर सा'व
दोखों दफै सफै खोकौं रखेगा दुरान।
बाल बच्चों सदा पक्खै रहेगा जो पीर बाबा,
भिड़ज्जां तबेलां खैर रखेगा भुरान ॥४॥

---

१३२. गीतसार–उपर्युक्त गीत मनोहरपुर शाहपुरा के स्वामी राव बिशनसिंह शेखावत पर कथित है। गीत में गीतनायक की सहायता के लिए पीर शेख बुर्हानजी की मनौती और स्तुति की गई।

---

१. बींटली–अजमेर के किले का नाम। सुदत्तीसयार–दातारों का मित्र। वोही–वही। मक्के देस-मुसलमानों का तीर्थस्थान मक्का जो अरब देश में है। ताजों वाला–ताज वाला।

२. नेक बखत–भले भाग्य वाला। पालों वाळा–पालन करने वाला। चिराकों–चिराक। ऊजाळो–रोशनी। झळक्के–चमकती। ऊजळी–उज्ज्वल। अणी–नोक। नीलीकेत–नीले रंग का ध्वज और निशान वाला। ताळा–भाग्य, स्थान का का नाम। खैर–आनन्द।

३. सत्थो–साथ। हत्थो–हाथ, हत्था। घोंटू–गदा आयुध। झाला–धारण कर्त्ता। अंगोटे–शरीर की आकृति वाला। विलाला–उदार। उधत्त–तत्पर। हलाला–हलाल का खाने वाला। हक्क–स्वत्व। बिन चोटों–मुसलमानों, शिखाविहीन।

४. दफै–नाश। दुरान–दुर्रानी। पक्खै–पक्ष में। भिड़ज्जां–घोड़ों। भुरान–शेख-बुर्हान पीर।

१३३. गीत राव हणवन्तसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

सावळ धारियां विड़द खत्रवाट रा नरेसुर, सुजस रा धरा मझि सकौ सारे ।
नाथहर रीझ कर बीदगां निवाजै, महपत्यां जोड़ रौ माण मारे ॥१॥

उजाळे पाट दादा तणौ अनंमी, चौज दिल रखै खग दान चाळौ ।
सुपातां पाळ ध्रमचाल जीतौ सबळ, इळा थंभ तपै विसनेस वाळौ ॥२॥

नोबतां नाद अरि सांक हुय नकीवां, फरकि नीसांण गज सरस फौजां ।
दहण अरियाण सकौ धाक मानै दुनी, महण री वेळ जिम करै मौजां ॥३॥

जांणवै अधिक दत्त तेज दूजौ जगो, गढ़ांपत सीस वहौ करै गाजां ।
कूरमां छात सेखावतां सिरोमणी, राव सिरताज वणि रहै राजां ॥४॥

---

१३३. गीतसार–यह गीत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक राव हनवंतसिंह शेखावत की वीरता और उदारता से सम्बन्धित है। गीतमें वर्णन है कि क्षात्रधर्म की मर्यादा का निर्वहन करने वाले राव हनवंतसिंह की युद्ध सज्जा से अरिगण सतत चिंतित रहते हैं। वह सुकवियों को द्रव्य प्रदान कर अपने समसामयिक कृपणों को लज्जित करता रहता है।

---

१. सावळ–भाला। धारियां–धारण किये हुए। खत्रवाट–क्षत्रिय पथ। सुजस–सुयश। मझि–मध्य। सकौ–सब कोई। नाथहर–श्रीनाथसिंह का पौत्र। रीझ कर–दान देकर। वीदगां–पंडितों को। निवाजै–प्रसन्न करता है। महपत्यां–राजाओं। जौड़–बराबरी। माण–मान।

२. पाट–सिंहासन। अनंमी–अनम्र। चौज–उमंग, मौज। चाळो–चाल, मनोविनोद। सुपातां–सुपात्रों, सुकवियों। पाळ–पालक। ध्रम चाल–धर्मानुकूल आचरण करने वाला। जीत–विजयी हुआ। इळा–पृथ्वी। थंभ–स्थम्भ।

३. नाद–ध्वनि। अरि–वैरी। सांक–शंकित। नकीवां–चौबदारों। फरकि–लहराते। नीसांण–झण्डे। दहण–दाह। अरियाण–वैरीगण। दुनी–संसार। महण–समुद्र। वेळ–तरंग।

४. दत्त–दान। दूजौ–द्वितीय। जगौ–राव जगतसिंह। गढ़ांपत–गढ़पतियों, राजाओं। वहौ–बहुत। गाजां–गर्जन। कूरमां छात–कछवाहों का स्वामी। वणि रहै–बना हुआ रहता है।

१३४. गीत ठाकर सादूळसिंघ सेखावत झुंझणू रौ

भाला भळक्कै पलूर अणी पळक्कै नीसांण भमै,
झुकै सेस सीस भौम भार धुकै झळ ।
लेखवा निहंग जंग तमासै पतंग लागा,
लारधारां बागा जानी सारखां सादूळ ॥१॥

तोपां गोळां धमंकां अलोपां सूरां वधै तेज,
नीहसै जूझाऊ दंगी सिंधां पै नत्रीठ ।
रीठ धारां चौधारां दुधारां फूलधारां रचे,
आथड़ै किलम्मा हूंत कुरम्मा आकारीठ ॥२॥

कुंभाथळां डोलै गजां धराळी आछटै करां,
पार सैन बीच व्है धकेलै आर पार ।
तीन जाम त्रणां तेम ताड़ तना सार तूटै,
जूटै जंगां जव्वनां हुजंगां रोजां धार ॥३॥

---

१३४. गीतसार—उपर्युक्त गीत झुंझनू के अधिपति ठाकुर शार्दूलसिंह शेखावत द्वारा नवाब जानीसारखां को रणभूमि में परास्त करने का परिचायक है। गीत में तोपों, तलवारों और बन्दूकों से तीन प्रहर तक विकट युद्ध लड़ने का वर्णन है।

---

१. भळक्कै—चमकते हैं। अणी—नोक, आगे का पैना भाग। पळक्कै—चमकता है। भमै—फहराते हैं। सेस सीस—शेष नाग का सिर। भार—वजन। धुकै—झुकती है, प्रज्वलित होती है। झूळ—सेना के, समूह से। लेखवा—देखने। निहंग—आकाश। पतंग—सूर्य। सारधारां—खड्ग धारा। बागा—लड़ने लगे। सादूळ—शार्दूलसिंह।

२. धमंकां—धम धम की ध्वनि। अलोपां—प्रकट। वधै—बढ़ कर। नीहसै—भयानक नाद। दंगी—युद्धकारी, नगाड़े। सिंधां—हाथियों पर। नत्रीठ—अधीरता का द्योतक। रीठधारां—तलवारों के आघात। चौधारां-दुधारां—चार धारा तथा दो धारा शस्त्र। फूल धारां—प्रचण्ड प्रहार। आथड़ै—लड़ते हैं। किलम्मा—यवनों से। कुरम्मा—कछवाओं। आकारीठ—बलवान, प्रहार।

३. धाराळी—तलवार। आछटै—प्रहार करे। आर पार—इधर से उधर। त्रणां—तृण, तिनके। ताड़ तना—ताड़ वृक्ष का तना। सार—तलवार। रोजां धार—रोजा रखने वाले।

१३५. गीत ठाकुर सादूळसिंघ सेखावत भुंभणूं रौ

खळ भांजण समर अंकारौ खारौ, हाथ्यां दे खागां हमल ।
साहजादा सादा सेखावत, इळ सारी थांरौ अमल ॥१॥

त्रिजड़ां भड़ां मरोड़ै तोड़ै, नग रोपै रोड़ै नीसांण ।
अवळी मांण जगावत आगै, इळ खुरसांण न लोपै आंण ॥२॥

पमंगां भड़ां खगां दळ पछटण, दिली धड़क चहु चक्क डरै ।
जोड़ै पांण तूझ आगालग, भोग रैण तुरकांण भरै ॥३॥

बळ तप नमौ भोजहर बीजा, महा प्रसण रण बहै मदा ।
राजा जिण सादा रजपूतां, सबळा ऊजड़ बाट सदा ॥४॥

---

१३५. गीतसार—ऊपर लिखा गीत ठाकुर शार्दूलसिंह शेखावत भुंभनूं के स्वामी पर कहा हुआ है । गीत में गीतनायक को विकट वीर, निर्भीक योद्धा और सदैव युद्धार्थ सज्जित रहने वाला तथा मुसलमान बादशाहों तक को नियमों में बद्ध रखने वाला वर्णित किया है । शत्रुओं पर शार्दूलसिंह का आतंक-वर्णन कवि का प्रयोजन प्रकट होता है ।

---

१. खळ—वैरी । भांजण—भंजन करना, नाश करना । समर—युद्ध । अंकारौ—तेजस्वी । खारौ—क्रोधीला । हाथ्यां—हाथियों के । खागां—तलवारों । हमल—हमला, चोट, । सादा—गीत नायक शार्दूलसिंह । इळ—धरती । सारी—समस्त । थांरौ—तेरा, तुम्हारा । अमल—अधिकार ।

२. त्रिजड़ां—तलवारों से । भड़ां—भटों को । नग—पैर । रोपै—दृढ़ता से जमाता है । रोड़ै—ध्वनित करता है । नीसांण—नगाड़े । अवळीमांण—युद्ध - सज्जा से सज्जित । जगावत—जगरामसिंह का पुत्र शार्दूलसिंह । आगै—सामने । खुरसांण—बादशाह । लोपै—उल्लंघन करे । आंण आज्ञा ।

३. पमंगां—घोड़ों । दळ—सेना । पछटण—मारने वाला, चोटें देने वाला । दिली—दिल्ली, मुगल सत्ता । चहु चक्क—चारों दिशाओं । पांण—पाणि, हाथ । आगालग—लगातार, पहिले ही । भोग—भूमि कर । रैण—भूमि । भरै— (कर) देते है ।

४. भोजहर—भोजराज का पौत्र । बीजा—द्वितीय । प्रसण—प्रसंन्न, शत्रु । बहै—चलते हैं । मदा—मदमस्त, शिथिल हुए, मंद हुए । सबळा—सबल । ऊजड़ बाट—विना पथ, विरान मार्ग ।

१३६. गीत ठाकर सादूळसिंघ सेखावत झुंझणू रौ

वडा जोध दीवाण दरबार विच वावड़्या ढूक सादो कहै धींग ढ़ाहूं ।
वडो औनाड़ नीजाम रौ वोलियौ, वीर लाखां विचै तरवार बाहूं ॥१॥

धकण वोलां तणै धूंधरै धूधड़ां, धकारै परगनां लूट धायौ ।
राव देखै खड़ां खांन कठै रह्यौ, याद करतां थकां वो मान आयौ ॥२॥

भरोसो राखता जेम आयौ भलां, वंस वोलां तणी चाड़ वादा ।
कलै सादूळ नै मानै कह्यौ, सरायौ मान सावास सादा ॥३॥

विडंग ऊपाड़ फौजां विच भेळिया, ठेठ जोरै ठाठ ठाडै ।
मानुल्लाखांन कौल चूकै मती, खांन अव आव जुध झंड खांडै ॥४॥

---

१३६. गीतसार–उपरिलिखित गीत झुंझन के शासक शार्दूलसिंह शेखावत और नवाब अमानुल्लाखाँ के युद्ध से सम्बद्ध है। गीत में गीतनायक द्वारा प्रतिनायक को प्रहार करने के लिए ललकारने और प्रतिनायक का शार्दूलसिंह के प्रहार की सराहना करने का वर्णन किया है।

---

१. दीवाण–सभा भवन। वावड़्या–वापस घूमे। ढूक–पहुँच कर। सादो–शार्दूलसिंह। धींग–जबरदस्त, वीर। ढांहूं–मार गिराऊँ। औनाड़–निर्बंध, अनम्र। नीजाम रौ–निजामखां का पुत्र। वाहूँ–प्रहार करूँ, चलाऊँ।

२. धकण–क्रोध, साहस। तणै–के। धूंधरै–अटल, दृढ़ निश्चय। धूधड़ां–निडरतापूर्वक। धकारै–आगे बढ़कर। धायौ–संतुष्ट हुआ, तृप्त हुआ। कठै–कहाँ थकां–होते हुए। वो–वह। मान–अमानुल्लाखाँ।

३. जेम–जिस प्रकार, जैसा। भलां–अच्छा। वोलां तणी–वचन की। चाड–सहायता। वादा–वचन दे, प्रण करना। कलै–कल्ला। मानै–अमानुल्लाखाँ। सरायौ–सराहना की। सादा–शार्दूलसिंह।

४. विड़ंग–घोड़े। ऊपाड़–आक्रमण के लिए दौड़ाकर। भेळिया–मिलाया। ठेठ–प्रारंभ, सीमा। जोरै–जोरावरसिंह, बलवान। ठाठ–ठाठवाट, सजधज। ठाडै–जवरदस्त, जोरदार। कौल–वचन। झंड–झुण्ड, ध्वज। खांडे–खड्ग, खंडित।

बोल लागौ जदि बाघ ज्यूं बावड़्यौ भड़ां पग छूटगा भरम भागौ।
मार री हींक बाजियौ माझियां, बांकड़ सांकड़ लोह वागौ ॥५॥

मार री हुंकार चींचार ताती मची, भार गाढ़ा पड़्या कमळ भारी।
दळां के बीच कर हकाल दोनूवां, घोड़ झोक्या घणौं बाढ़ धारी ॥६॥

जिरह सूं ऊकढ़्यौ जोध जगराम रौ, खिर्‌यौ खड्ग वाय कर क्यामखांनी।
हमीरा राव ज्यूं वैण सांचा हुआ, कीरती छाई दसों देस कांनी ॥७॥

नेत वांध्यौ बिहूं फौज रा नायकां, किया भड़ देगया मींच कांनो।
मीर रजपूत सादूळ रा मारिया, मरै रजपूत ज्यूं मुवौ मानो ॥८॥

---

१. बोल लागौ—वचन चुभा, वात लगी। जदि—जव। वाघ—व्याघ्र। वावड़्यौ—पीछे लौटा। भडां—वीरों के। पग छूटगा—पैर उखड़ गए। भरम—भ्रम। भागौ—मिट गया। वाजियौ—लड़ा। माझियां—मुखियाओं से। वांकड़ां—विकटों। सांकड़ां—समीप का, परस्पर गुत्थमगुत्थ होकर। लोह वागौ—लोहा बजा, शस्त्र चले।

२. मार—चोट। चींचार—चिल्लाहट। ताती—तेज, जवरदस्त। मची—छिड़ी, हुई। गाढ़ा—दृढ़, अत्यधिक। कमळ—सिर पर। दळां—सेनाओं। हकाल—गरजना। दोनूवां—दोनों। झोक्या—धकेले। घणौं—घना। वाढ़—प्रहार।

७. जिरह—कवच। ऊकढ़्यौ—निकला। जोध—पुत्र, योद्धा। खिर्‌यौ—गिर कर पड़ा। वाय कर—चला कर। हमीरा राव ज्यूं—राव हमीर चौहान की भांति। वैण—वचन, प्रतिज्ञा। कीरती—कीर्ति। छाई—फैली। कानी—तरफ, ओर।

८. नेत—वीरता सूचक चिह्न, आभूपण। वांध्यौ—बाँधा। विहूं—दोनों। किता—कितने ही। मींच—मृत्यु। कांनौ—किनारा काट गए, अलग हट गए। मुवौ—मरा। मानो—नवाव अमानुल्ला खाँ।

१३७. गीत ठाकर नौलसिंघ सेखावत नवलगढ़ रौ

कड़ाजूड़ कसै सिहल कड़ां, जोड़ रावतां थाट जाडा ।
ताहरी धाक सुण नवल सादूल तण, हो गया चळाचळ विचल हाडा ॥१॥

ऊथपै तुर अणी भालां ऊलटै, बधै ऊतावळ रीठ बागौ ।
भार विकराळ नवलेस हाळी भुजां, भिड़ हाडो बळी खेत भागौ ॥२॥

पर कामणी मोहै सादूळ रा पाटपत खळ घणां भांज रणखेत खूंदी ।
धींग थांसूं धकौ खाय पाछी धिकी, वीरधर घूंघटो काढ़ बूंदी ॥३॥

नबाबां साल ऊथाळ बांकां नरां, सदा ही राज रै भड़ रहै साजा ।
बिजाई भोज ऊजाळा बंस रा, रहै थां भुजां निसचिंत राजा ॥४॥

---

१३७. गीतसार– उपर्युक्त गीत नवलगढ़ के ठाकुर नवलसिंह शार्दूलसिंहोत शेखावत पर सर्जित है । ठाकुर नवलसिंह ने जयपुर राज्य की ओर से बूंदी राज्य के हाडा क्षत्रियों से युद्ध लड़ा था। हाडा वीर नवलसिंह के आक्रमण से विचलित होकर रणस्थल से पलायन कर गया था । गीतकार ने गीतनायक के आंतक,वीरता और वंश-कीर्ति-वर्द्धन का वर्णन किया है ।

---

१. कड़ाजूड़–कवच, कमर । कसै–बांध । सिलहकड़ा–जिरह बख्तर । जोड़–एकत्रित, बराबरी के । रावतां–रावत पद धारी योद्धा । थाट–समूह । जाडा–घना, प्रबल । ताहरी–तुम्हारी । धाक-आतंक, रौब । तण–तनय, का । चलाचल-चल विचल । विचल-विचलीत ।

२. ऊथपै–उलटना । तुरां–घोड़े । अणी–नोक । बधै–बढ़कर । ऊतावळ–त्वरितता से । रीठ प्रहार । बागौ–चलाने लगा । हाळी–की, वाली । भिड़–भिड़ कर । खेत-रणक्षेत्र से ।

३. पर–दूसरे की । पाटपत–राजसिंहासन का स्वामी । खळ–शत्रु । घणां–बहुत भांज–मार कर । खूंदी–मंथन कर दिया । धींग–वीर । थांसूं–आप से । धकौ खाय–आक्रमण की टक्कर । धिकी–मुड़ी, लौटी । काढ़–निकाल कर ।

४. साल–शल्य । ऊथाळ–उन्मूलन, नाश । राज रै–आपके । साजा–सज्जित । वजाई–दूसरा । ऊजाळा–उज्ज्वल । थां–आपकी ।

१३८. गीत ठाकर लिछमणसिंघ सेखावत रौ

अड़ाजीत आंटां कई भड़ां लीधा अभंग, पूर खग झटां अरि थटां पीसे ।
इळा बंध अवर दावौ नकौ व्रद इसौ, लछा सूं भला रायसाल दीसै ॥१॥

साज रा कोट मन मोट आचां लियां रहै भड़ ओट जस डंकां रोड़ै ।
कवि भड़ा तौर तौ रहै सिरहर कितां, तौ खगां तौर अरि थंडां तोड़ै ॥२॥

सुजस लेवाळ देवाळ घण सहल वळ, बस उजवाळ खट तीस वरगां ।
पाळ खटवांण नाहर तणौ विरद पत, करण तिम व्रवण धन अड़ करगां ॥३॥

नरां सिणगार नवलेसहर नरेसुर, जोड़ अंस राव वियौ कुंण जोपै ।
राखणां अबीढ़ां वास थट रावतां, आज सादावतां मौड़ ओपै ॥४॥

---

१३८. गीतसार– उपर्युक्त गीत शेखावाटी के महणसर ठिकाने के ठाकुर लक्ष्मणसिंह शेखावत पर कथित है । गीत में गीतनायक को दानी और कीर्त्ति-लोभी अंकित किया है । कवि कहता है कि लक्ष्मणसिंह कवियों, षड्वर्णों और योद्धाओं को उदारता-पूर्वक पुरस्कृत करता है और इस प्रकार अपने पूर्वज राजा रायसलोतों और शार्दूलसिंहोतों का यश-वर्द्धन करता है ।

---

१. अड़ाजीत–युद्ध विजय । आंटां–वांके । अभंग–वीर, सिंह । पूर–चलाकर । खगझटां–खड्ग प्रहार । अरिथटां–शत्रुसमूह । पीसै–कुचल कर । इळावंध–देशपति, राजा । अवर–अन्य, और । नकौ–कोई नहीं, कुछ भी नहीं । व्रद–विरुद । इसौ–ऐसा । लछा–लक्ष्मणसिंह । भला–अच्छा । रायसाल–रायसल के वंशज ।

२. लाज रा कोट–लज्जा के दुर्ग । मन मोट–उदारचित्त, विशाल हृदय । आचां–हाथों । जस डंका–यश के दण्डक, कीर्ति के वाद्य । रोड़ै–वजाते हैं । तौर–गर्व । तौ–तुम्हारा, आप का । सिरहर–श्रेष्ठों, शिखर पर । कितां–कतिपय । अरि थंडां–अरिसमूह । तोड़ै–तोड़ता है, मिटाता है ।

३. लेवाळ–लेनेवाला । देवाळ–देने वाला । घण–घना, वहुत । सहल–सहज, सैर । वळ–शक्ति, भोजन । खटतीस–छत्तीस । वरगां–वर्गों, जातियों । पाल–पोषक । खटवांण–छै वर्ण, पड्भाषाविज्ञ, विद्वान् । नाहर तणौ–नाहरसिंह का पुत्र । विरदपत–विरुदधारी । करण–दानवीर राजा करण । तिम–तैसे, वैसे । व्रवण–दान-देना । अड़ै करगां–तिरछे हाथों से, अञ्जलिवद्ध हाथों ।

४. नवलेसहर–नवलसिंह का पौत्र । जोड़–वरावरी । वियौ–अन्य । कुंण–कौन । जोपै–जुटे, आवे । अवीढ़ां–विकट । वास–निवास । थट–समूह । सादावतां–शार्दूलसिंह के वंशधरों में । मौड़–मुकुट । ओपै–शोभा पाता हैं ।

१३९. गीत सुखरूपसिंघ उम्मेदसिंघ जैमल सेखावत झाड़ली रौ

उरड़ि उठी गोपाळ बुधसेरिण उरड़े अठी, बेढ़ रा जूझाऊ त्रंबक बाया।
हाक बागी भड़ां सरां होय हकाला, उनागी तेग बिहु बळां आया ॥१॥

सौंक गोळां सरां भिड़ि साफळां, झाड़ली तणां बधि राड़ झेली।
पाधरै खेत गोपाळ रै पौतरां, खाग झट रावतां भली खेली ॥२॥

उड़े फींफर खुपर बिहर चाचर हुवे, लड़तां दूठ असमाण लागा।
होय हरबळ भड़ां भाइयां हूंत बधि, बिहसि हसि गोरधन तणां वागा ॥३॥

---

१३९. गीतसार– उपरिलिखित गीत शेखावाटी के झाड़ली स्थान के ठाकुर सुखरूपसिंह, उम्मेदसिंह और जयमल्ल गोपालजी के वंशजों द्वारा शत्रुपक्षीय गोपाल और बुद्धिसेन से युद्ध लड़ने का सूचक है। गीतनायकों ने शत्रु के सामने बढ़ कर, गोलियों, तीरों और तलवारों से भयानक युद्ध लड़ा। गोवर्द्धन के तीनों पुत्रों ने रणक्षेत्र में नग्न-तलवारों का खेल खेला और यश-संचय किया।

---

१. उरड़ि–आगे बढ़ कर, जोश में उमड़ कर। उठी–उठकर, उधर। उरड़े–जोश में आकर बढ़े। अठी-इधर। बेढ़रा–युद्ध के। जूझांऊ–जूझने वाले, रण प्रोत्साहक। त्रंबक–नगाड़े। वाया–बजे। हाक बागी–हाके हुए, ललकारें हुई। सरां–शरों, समस्त। हकाला–दीर्घ आवाजें। उनागी–नंगी। तेग–तलवारें। बिहु बळां–दोनों ओर।

२. सौंक–आवाजें। सरां–बाणों की। साफळां–युद्ध। वधि–आगे बढ़ कर। राड़–लड़ाई। झेली–स्वीकार की, ली। पाधरै खेत–सीधे युद्धक्षेत्र में। पौतरा–पौत्रों ने। खाग झट–खड्गाघात।

३. खुपर–कुहनियां। विहर–विदीर्ण होकर। चाचर–मस्तक। दूठ–जबरदस्त वीर। असमाण–आकाश के। हरवळ–हरावल, सेना की अग्रिम पंक्ति में। भड़ां–सुभटों। हूंत–से। वधि–आगे बढ़ कर। विहसि–प्रसन्नता कर। गोरधन तणां–गोवर्द्धनसिंह के पुत्र। वागा–लड़े।

वाघळा सींह सुंदरेसहर बहादर, करां धमचक कियौ खळक साखी ।
जिसौ हो भरोसौ झाड़ली जांणतां, खगां बधि झाड़ली टेक राखी ॥४॥

कंवर सुखरूप ऊमेद जैमल कंवर, रसासिर धूड़सी जुडां रसिया ।
सिंहहर पड़े इन्द्रभाण लड़ सींह ज्यूं, बाहे खग सूर सुरलोक बसिया ॥५॥

अडिग रहिया अनड़ जीत जुध अड़िसल, बाह खत्रवाट सारा बखांणी ।
नरां भाराथ कियौ बाजतां नगारां, पाल रा चोहोडां भळो पांणी ॥६॥

खेल समझौ मती धरम खत्रियां तणौ, जिकौ व्है वीर खग राड़ खेले ।
वैरियां थाट द्रहबाट कर वहौवळ, झाट खागां तणी अंग झोले ॥७॥

---

४. वाघळासिंह–भूखे सिंह । सुंदरेसहर–सुन्दरसिंह के पौत्र । धमचक–घमासान युद्ध । खळक–संसार । साखी–साक्षी । जिसौ हो–जैसा था । जांणतां–जानते. समझते । टेक–प्रतिज्ञा , हठ । राखी–रक्खी ।

५. रसासिर–पृथ्वी पर । धूड़सी–होली के दूसरे दिन रंग, अबीर आदि डाल कर खेले जाने वाले खेल के समान । जुधां–युद्ध के । रसिया–रसिक । वाहे–चलाकर । खग–तलवार । वसिया–निवास किया ।

६. अनड़–निर्वन्ध, अनम्र । जीत–विजय कर । अड़िसल–अरिशल्य । वाह–प्रहार, मार्ग । खत्रवाट–क्षत्रियत्व ' सारा–सबने । भाराथ–युद्ध । बाजतां–बजते, ध्वनि करते । पालरां–गोपालदास के वंशधरों ने । चोहोड़ा–चढ़ाकर । भलो–अच्छा–भला । पांणी–कांति, आब ।

७. खत्रियां तणी–क्षत्रियों का । जिकौ–वह, जो कोई भी । खग राड़–तलवारों की लड़ाई । थाट–समूह । द्रहबाट–नाश कर । वहौवळ–बलपूर्वक । झाट–चोट । झेले–सहन करे, अपने ऊपर ले ।

१४०. गीत जवाहरसिंघ सेखावत पाटोदा रौ

रचे आहवां सूरता दिखाई जिका सिरै, मरद हद वीरता रखी जुध मांझ।
अर्‌यां सिर बाणासां योंही जो काटिया, रगत जिम लाल रंग अंधेरी सांझ ॥१॥

देखने कंपकंपी भीरुवां दिलां मांह, ऊपजी मनां हमगीर आछी।
करम गज मुकट मिण तोड़िया कितांही, दौड़ता मारिया उमंद काछी ॥२॥

जमेगौ अडग व्है धरि यों झागड़ू, भागड़ू बण्यो नह चोर भेळो।
खत्रियां तणी सह खांप मांहे खरौ, चमन व्है दीसियो कुरम चेलो ॥३॥

सेखड़ो जवाहर छेड़ मत सहसफण, तेड़ मत झाळ यमदूत गाडा।
करै इम अरज फिरंगाण री कामणी, लूट मत छावणी भमर लाडा ॥४॥

—करणीदान दधवाड़िया खेमपुर रौ कह्यौ

---

१४०. **गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के पाटोदा ठिकाने के ठाकुर जवाहरसिंह शेखावत पर रचित है। जवाहरसिंह ने ईस्ट इण्डिया सरकार की सत्ता को चुनौती देते हुए आगरा के किले में बंदी कैदियों को बंधन-मुक्त किया था। तदनन्तर नसीराबाद की सैनिक छावनी को लूटकर ब्रिटिश-सत्ता का प्रभाव समाप्त कर दिया था।**

---

१. आहवां—युद्ध। सिरै—सिरह, श्रेष्ठ। जुध—युद्ध। मांझ—में। अर्‌यां—वैरियों का। बाणासां—तलवारों से रगत—रक्त। सांझ—संध्या।

२. भीरुवां—कायरों। ऊपजी—उत्पन्न हुई। हमगीर—हसायक, सहायता। आछा—अच्छी। तोड़िया—तोड़ दिये। कितांही—कितने ही। उमंद—उत्तम। काछी—घोड़े।

३. झागड़ू—लड़ने वाला, युद्ध प्रेमी। भागड़ू—रण से भागने वाला। भेळो—शामिल। खत्रियां तणी—क्षत्रियों की। सह—समस्त। खांप—वंश, गोत्र। खरौ—विशुद्ध, तेजस्वी। चमन—फुलवारी, उद्यान। कुरम—कूर्म, कछवाहा। चेलो—वंशज, शिष्य।

४. सेखड़ो—शेखावत, राव शेखा कछवाहा का वंशज। सहसफण—शेषनाग। तेड़मत—निमंत्रण मत दे। झाळ—क्रुद्ध, ज्वाला। फिरंगाण री—अंग्रेज की। कामणी—स्त्री। छावणी—सैनिक छावनी। भमर लाडा—रणरसिक, रण दूल्हा।

१४१. गीत राव कलियाणसिंघ नरूका माचेड़ी रौ

कांमा पांव धारे ऊधारे कामां, भकते उधारण नाम भलौ ।
अरि मारण तारण व्रज आयौ, किसन तणौ अवतार कलौ ।।१।।
कुळ पैंतीस सखा ले कूरम, सुर नरपालां सकति ।
वहौ जूझार फता रौ वणियौ, गिरधर नंद कंवार गति ।।२।।
फौजां गजां गिरवरां फिरि फिरि, ऊपाड़ै मेवास अरि ।
ठांम ठांम मांडे ठुकराई, पहला जादवनाथ परि ।।३।।
वेदनाद झालरि धुनि वाजै, घड़ियाला नौबति घण धाव ।
आजुणौं वणियौ आमेरौ, राजा वड़ा तणौ परि राव ।।४।।

---

१४१. गीतसार - उपर्युक्त गीत अलवर नरेश के पूर्वज राव कल्याणसिंह नरूका कछवाहा पर सर्जित है । राव कल्याणसिंह ने कुमार कीर्तिसिंह आमेर की ओर से कांमा खोहरी भूभाग की विजय का नेतृत्व किया था । गीत में लिखा है कि जिस प्रकार व्रज प्रदेश की रक्षार्थ यादव - पति श्रीकृष्ण आया था उसी प्रकार कछवाहा कल्याण सिंह कांमा प्रदेश की रक्षार्थ आया ।

---

१. कांमां–मेवात का स्थान जो अब भरतपुर जिले में है । ऊधारे–उद्धार किया । भकते–भक्तों को । भलौ–अच्छा, भला । अरि–वैरी । व्रज–व्रज प्रदेश । किसन तणौ–श्री कृष्ण का । कलौ–राव कल्याण ।

२. कुळ–वंश । सखा–साथी, सहयोगी । कूरम–कूर्म, कछवाहा । सुर–देवता । नरपाळां–राजाओं । सकति–शक्ति । वहौ जूझार–महान्‌योद्धा । फता रौ–फतहसिंह का पुत्र ।

३. गिरवरां–पर्वतों । फिरि फिरि–घूम घूम कर । ऊपाड़ै–जड़मूल से नाश करे । मेवास–लुटेरों के स्थान जो गिरिभागों में होते थे । अरि–शत्रु । ठांम ठांम–जगह जगह । मांडे–स्थापित करे । ठुकराई–राजत्व स्वामिपन । जादव नाथ–श्रीकृष्ण की । परि–तरह, भांति ।

४. झालरि–झालर वाद्ययन्त्र । धुनि–ध्वनि । वाजै–ध्वनि करते हैं । घड़ियालां–घंटावली । घण–घने । धाव–आवाज । आजुणौं–आज के दिन । राजा वडा तणौ–वड़े राजा की । परि–भांति । राव–राव कल्याणसिंह ।

१४२. गीत महाराव प्रतापसिंघ नरूका अलवर रौ

अलंग धाव करि चाव गैणाग सूं उठंतौ।
सूर साभाव आतम सरौवे।
राडा मझ ताव पड़ता तखां रावियौ,
आवियौ जेम बनराव आवै, ॥१॥

असहतां मंजण फौज़ां लियां अपणी,
नरां नर भेज मनां धरि नेम।
आपरा स्याम कज रळी धरि उरड़ियौ,
जोध मोहबत तणौ सींघळी जेम ॥२॥

बीर बिरदाळ बाहाळ बेढ़ीमणौ,
असहतां काळ ओपै सवीजौ।
अेम रिछपाळ कूरम कठठि आवियौ,
जेम लंकाळ नरपाल पवीजौ ॥३॥

करे अत भाव माधव नरन्द्र इम कह्यौ
भाईयां असां ही भीड़ भाजै।
पता जिम ताव पड़तां तखां,
पहुचवै जकै भल भलाई राव वाजै ॥४॥

—सुन्दरदास सांदू रौ कह्यौ

---

१४२. गीतसार— उपर्युक्त गीत अलवर रियासत के संस्थापक महाराव प्रतापसिंह नरूका की वीरता पर रचित है। प्रतापसिंह ने महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथम जयपुर के समय भरतपुर के राजा जवाहरमल जाट से जयपुर के पक्ष में युद्ध लड़ा था। गीत में जयपुर की सहायता करने के लिए माधवसिंह द्वारा प्रतापसिंह की सराहना करने का उल्लेख है। यह युद्ध तंवरावाटी के मावंडा मंडोली स्थान पर लड़ा गया था।

---

१. अलंग—दूरसे। धाव—धावा, दौड़। चव—उमंग। गैणाग—आकाश। साभाव—स्वभाव। राड़ा—युद्ध। तखां—हुए। रावियौ—राव पदवी वाला, प्रतापसिंह। बनराव—सिंह। आवै आता है।

२. असहतां—दुश्मनों। आपणी—अपनी। मनां—मन में। धरि—धारण कर। नेम—नियम, प्रण। स्याम—स्वामी। रळी—खुशी। उरड़ियौ—जोश में भर कर आया। जोध—योद्धा, पुत्र। तणौ—को। सिंघळी—सिंह।

३. विरदाळ—विरुद धारी। बाहाळ—भुजबली। वेढ़ीमणो—महान् वीर। काळ—यमराज। ओपै—शोभा पाता। कठठि—ध्वनि विशेष करता हुआ। लंकाळ—सिंह। नरपाल—राव नरूजी। बीजौ—दूसरा।

४. अत भाव—आदर भाव। असां ही—ऐसी ही। भीड़—संकट। भाजै—समाप्त हुए, मिटे। पता—प्रतापसिंह। वाजै—कहलावें।

१४३. गीत राव राजा संगरामसिंघ नरूका उनियारा रौ

समहरि भाराथ हाथ गह सुजड़, घाव नवाबा घाटि घाटि घड़ि ।
सिंधुर धजां सहेतां सांगण, लायौ आलम तणा लड़ि ॥१॥

सैंदां भांजि फताउत समहरि, झरहर पटां दियंतो झाड़ि ।
खोंद तणा लायो वळि खागां, वयंड झंडां सहतां वेछाड़ि ॥२॥

राजां विन्है देखतां रूकां, किलमां रा तावूत कीया ।
मैंगळ पटा झरहरा माता, लाल फरहरा सहत लीया ॥३॥

---

१४३. गीतसार—यह गीत जयपुर राज्य के उनियारा संस्थान के स्वतंत्र शासक रावराजा संग्रामसिंह नरूका पर रचित है। राव राजा संग्रामसिंह ने आमेर नरेश सवाई जयसिंह और जोधपुर नरेश अजितसिंह के पक्ष में सांभर स्थान पर शाही सेना से युद्ध लड़कर विजय प्राप्त की थी। गीतनायक ने दोनों नरेशों की पराजय को विजय में परिवर्तित कर दिया था। बादशाह के हाथी और शाही ध्वज रावराजा संग्रामसिंह छीन कर ले गया था।

---

१. समहरि—युद्ध। भाराथ-युद्ध। गह—ग्रहणकर। सुजड़—खड्ग। घाटि—शरीर। घड़ि—देकर, बनाकर। सिंधुर—हाथी। धजां—ध्वजाएँ। सहेतां—सहित। सांगण—रावराजा संग्रामसिंह। आलम तणा—शहंशाह के।

२. सैंदां—सैयदों का। भांजि—संहार कर। फताउत—रावराजा फतहसिंह का पुत्र संग्रामसिंह। झरहर पटां—मद बहते गज मस्तकों। झाड़ि—गिराते, बौछार करते। खोंद—मुसलमान। वळि—बलपूर्वक, फिर। वयंड—हाथी। वेछाड़ि—विकट वीर।

३. विन्है—दोनों। रूकां—तलवारें। किलमां—कलमा पढ़ने वालों, मुसलमानों के। तावूत—अर्थियां। मैंगळ—हाथी। झरहरा—मद बहाते। माता—मस्त, हृष्टपुष्ट। लाल फरहरा—लाल रंग के फहराते शाही ध्वज को। सहत—सहित।

अेक अखियात किया सिघ अभिनवा, गाहे पाड़ि पठाण गरा।
रवदां तणा वाना बंध रहचै, खोसि ले आयौ गयंद खरा ॥४॥

किलमां भांजि आणिया कूरम, हींसलमल चढ़ि करौ हवा।
हाथी नवा साहि धर रहसी, नेजा व्हैसी किया नवां ॥५॥

---

४. अखियात—अक्षयवार्ता, प्रसिद्धि की कहानियां। सिघ अभिनवा—अभिनवसिंह, राव राजा संग्रामसिंह के पूर्वज। गाहे—कुचलकर। रवदां तणा—यवनों के। वाना बंध—वीरता के प्रतीक स्वरूप आभूषण, चिह्न विशेष धारी योद्धा। रहचै—संहार किये। खोसि—छीन कर। गयंद—गजेन्द्र, हाथी। खरा—सत्य, प्रत्यक्ष।

५. भांजि—मार कर। कूरम—कछवाहा संग्रामसिंह। हींसलमल—महान् योद्धा, युद्धवीर। रहसी—रहेंगे। नेजा—राजसी चिह्न विशेष, निशान। व्हैसी—होंगे। नवां—नवीन।

१४४. गीत राव राजा सरदारसिंघ नरूका उनियारा रौ

करे चूक धर ऊपर असुर चढ़ियौ कड़ैं,
बीजळां झाट पड़ लोह बागौ ।
धरा री लाजिरै काजि सांमां धरे,
लणंता जोति तैण आभि लागौ ॥१॥

अरावां धूम पड़ि विहु वळ ऊछळै,
सांफळौ मांचीयौ नरां मारां ।
विकट थट नरूहर झटक दीनी वोहौत,
धुकायौ तूं तुरक नवी भोटि धारां ।२॥

धनौ सिरदार कूकत नवी धड़,
इळा सिर सुजस लियौ आछौ ।
रटक देखे वजर कवार रा करी जिसूं,
पट सरम आघेरि गयौ पाछौ ॥३॥

---

१४४. गीतसार– ऊपर लिखा गीत जयपुर के ऊनियारा संस्थान के रावराजा सरदारसिंह नरूका प्रथम पर कथित है। राव राजा सरदारसिंह ने मुसलमानों की सेना के अचानक आक्रमण करने पर भयानक युद्ध लड़ा और विजय प्राप्त कर संसार में अक्षय गौरव अर्जित किया। नबी के अनुयायी हार कर कठिनता से अपने घरों को जा पाये ।

---

१. चूक–धोखा। असुर–मुसलमान। कड़ैं–पीछे। बीजळां–तलवारों के। झाट–प्रहार। लोह–शस्त्र। बागै–वजे, चले। कजि–लिए, कार्य। सांमां–सामने, मुकाबले। लणंता–लड़ते (?)। आभि लागौ–आकाश के जा लगा।

२. अरावां–तोपों की। धूम–धूम्र, अग्नि। विहुंवळ–दोनों तरफ। सांफळो–युद्ध। मांचियौ–मचा, हुआ। सारां–तलवारों, समस्त। विकट थट–भयानक सेना। नरू हर–राव नरू का वंशज, रावराजा संग्रामसिह। झटक–प्रचण्ड आक्रमण, वार। धुकायौ–दग्ध किया। नवी–मुसलमान। भोटि–कुंठित। धारां–शस्त्रधाराओं।

३. धड़–शरीर। इळा सिर–पृथ्वी पर। सुजस–शुयश। आछौ–अच्छा, श्रेष्ठ। रटक–टक्कर। वजर–वज्र। पट सरम–सिंहासन की मर्यादा अथवा लज्जा। आघेरि–दूर, आगे। पाछौ–वापस, पीछे।

१४५. गीत राव राजा संगरामसिंघ नरूका उनियां रौ

कमधां जोवतांछात छातपति कुरमां मोहण केहर तणौ वैर मांगै।
सैद घड़ ऊपरां फतारै सिंघळी, सांमां बौरियां भिड़ज सांगै ।१।।

जौधपुरि चाढ़ि चाढ़ि आमेरि जळ, जैत हथ चंवरवंध उग्राणव वंधव चौजां।
तूरीबा वान रहणा तौरीया, फतारै वौरीया बंधि बीचि फौजां ।।२।।

पेखतां मुरधरा सपो ढूंढ़ाड़ पोहो, असा असा आंटां लियण आप ऊजां।
तिजड़हथ मैंगळां खलां कीधा तडळ, दळां अस औरीया जैत दूजां ।।३।।

काढ़ीया आंटा बडा भाईयां कूरमां, भावसी दळ वाढ़ि खग रंगे भाला।
सक भड़ां तौ जिसा हुवै संग्रामसी, विहु राजां तणां हुवै बोळि बाला ।।४।।

---

१४५. गीतसार–उपर्युक्त गीत जयपुर राज्य के उनियारा संस्थान के अधिपति रावराजा संग्रामसिंह की युद्ध-विजय का प्रतिपादक है। जोधपुर नरेश अजितसिंह और जयपुर नरेश सवाई जयसिंह की सांभर स्थान में सैयदों से लड़ते हुए युद्ध में हुई पराजय को रावराजा सरदारसिंह ने सैयदों पर आक्रमण कर विजय में परिवर्तित कर दिया था।

---

१. कमधां–राठौड़ों के। जौवतां–देखते। छात–छत्र, राजा। छातपति–राजा। कूरमां–कछवाहों के। मोहण–मोहनसिंह। केहर–केशरीसिंह। तणौ–को। सैद घड़–सैयदों की सेना। फतारै–रावराजा फतहसिंह के। सिंघळी–सिंह, पुत्र, श्रेष्ठ। सामां–सम्मुख। वौरिया–झोंके, तेजी से हांके। भिड़ज–घोड़े। सांगै–रावराजा संग्रामसिंह ने।

२. चाढ़ि–सहायता। जळ–आभ, कांति। जैतहथ–युद्ध विजयी। उग्राणव–बचाने के लिए। चौजां–कपटता, उमंग। तौरीया–हांके। वधि–आगे बढ़कर। वीचि–मध्य में।

३. पेखतां–देखते। सपो–राजा, योद्धा। ढूंढाड़–आमेर राज्य के। असा असा–ऐसे ऐसे। आंटां–प्रतिशोध। ऊजां–हिम्मत, शक्ति। तिजड़ हथ–तलवार धारण कर। मैंगळां–हाथियों के। तंडळ–टुकड़े। दळां–सेना। अस–अश्व, ऐसे। जैत–जैत्रसिंह। दूजां–द्वितीय, दूसरी बार।

४. काढीया–निकाले। आंटा–वैर का वदला। वाढ़ि–काटकर। खग–तलवार। सक भड़ा–बहादुर योद्धा। वोलिवाला–वाहवाही, यश चर्चाएं।

१४६. गीत राव राजा संगरामसिंघ नरूका उनियारा रौ

धमस वाजि त्रंनागळां धरणि हेकण धुक
चुणि असुर मारीया वीजाई चंद ।
पाधर धाई सैदां तणां विरद पत,
है साथ वाना लियां वियै हरियंद ॥१॥

फौज पतिसाह भांजि कीधी फतै,
फताउत अेहवा विड़द फावै ।
कूरमां जोधपुर कमध सारा कहै,
ऊवरै कटक संगराम आवै ॥२॥

धणी पाधर तणौ धींग धुकतां धड़,
वाजतां लोहड़ां रखी वाजी ।
ऊजळां थळां सांभरि विचि ओरीया,
रीझि राजा हुवा दोय राजी ॥३॥

साकुरां पाखरां सोहड़ां सजिया सरस,
जीति उभौ खड़ो दूसिरौ जैत ।
घूरतां नगारां भलां घरि आवियौ,
नरां सिरी नरूहर नृप नखतैत ॥

---

१४६. गीतसार—उपर्युक्त गीत उनियारा के रावराजा संग्रामसिंह नरूका पर सर्जित है। संग्रामसिंह ने सांभर स्थान पर जयपुर और जोधपुर की सेनाओं के पराजित हो जाने पर शाही सेना पर आक्रमण कर उसे करारी पराजय दी थी। वह युद्ध सांभर में नियुक्त सैयदों के साथ लड़ा गया था। गीत में गीतनायक की वीरता की सराहना की गई है।

---

१. धमस—ध्वनि विशेष। वाजि—होकर। त्रंवागळां—नगाड़ों की। धुक—कंपन, प्रज्वलित होकर। वीजाई चंद—दूसरा ही चंद्र, रावराजा संग्रामसिंह। पाधर—सीधा। धाइ—गमन कर। सैदां—तणा सैयदों का। वियै—दूसरे। हरियंद—हरिसिंह।
२. भांजि—नाशकर। फताउत—फतहसिंह का पुत्र, संग्रामसिंह। अेहवा—ऐसा। विड़द—विरुद। फावै—शोभित होता है। कूरमां—कछवाहे। कमध—राठौड़। सारा—समस्त। ऊवरै—सुरक्षित रह सके। कटक—सेना।
३. धणी—स्वामी। पाधर तणौ—नरूखंड का। धींग—बलवान योद्धा। धुकतां—जलते, मरते। लोहड़ां—शस्त्रों के। थळां—स्थलों। ओरीया—धकेले, आगे बढ़ाये। रीझि—प्रसन्न होकर।
४. साकुरां—घोड़ों। पाखरां—घोड़ों के कवच। सोहड़ां—योद्धाओं। ऊभौ—खड़ा। जैत—जैत्रसिंह। घूरतां—बजते। नखतैत—नक्षत्रधारी, सौभाग्यशाली।

१४७. गीत ठाकर केसरीसिंघ जूझारसिंघोत रौ

बियो गजराज पैलीयां आंकुस, झरहरती तळ-जोड़ झड़ी ।
कूरम छड़ी ताहरी केहर, पटहथ सिरि अदभूत पड़ी ॥१॥

मद वहतौ गजबाग न मानै, पैलीयां पोगर पाथै ।
मानहर चौगान मारीयौ, मैंगळ सांमै माथै ॥२॥

ओरीयो मयंद रोकीयौ आमद, ठेलीयौ गयंद अपूठी ठाळ ।
सुत जूझार तणारै सोटक, कुंजर रौ फूटीयौ कपाळ ॥३॥

भूले छक अवसाण भलीयौ, देखो मति रै किसन दुवौ ।
.... ॥४॥

पडियौ उलट पलट रंग खेले पटझर सूं, फरि फरि अफरि फिर ।
भाजि खड़ौ जैसिंघ रौ भाई, रामति गज सूं बड़ी, करी ॥५॥

---

१४७. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर केशरीसिंह झूझारसिंह के पुत्र पर रचित है। गीत-नायक ने मदोन्मत्त गजराज को लट्ठ के प्रबल आघात से विचलित कर मदहीन बना दिया। उस उन्मत्त हाथी के बिगड़ने से जयसिंह का भाई भाग खड़ा हुआ, पर केशरीसिंह कछवाहा उससे भिड़ पड़ा। हाथी से लड़ने का इस गीत में वीरत्व प्रदर्शन का रोचक वर्णन है।

---

१. बियो—दूसरा। पैलीयां—धकेला हुआ। आंकुस-अंकुश, भाला। झरहरती—मद वहते। झड़ी—बौछार। छड़ी—लाठी। ताहरी—तेरी, तुम्हारी। पटहथ-गजराज, हाथी।

२. गजबाग—अंकुर। पोगर—हाथी की सूंड। पाथै—रास्ता, मस्तक। मानहर—राजा मानसिंह का वंशधर केशरीसिंह। चौगान-मैदान। मैंगळ-मदमस्त हाथी। सांमै—सामने। माथै—सिर, ललाट।

३. ओरियो—झोका, धकेला। मयंद—हाथी। आमद—मद आया। ठेलीयौ-धकेला। गयंद—हाथी। अपूठी—पीठ की ओर, पीछे सोटक—लकड़ी, लाठी। फूटियौ—विदीर्ण हुआ। कपाळ—सिर।

४. छक—मस्ती। अवसाण—हावदाव, अवसर। दुवौ—दूसरा।

५. पटझर सूं—हाथी से। फरि फरि—फिर घूमकर। रामत-क्रीड़ा।

१४८. गीत ठाकर भैरूंसिंघ री तलवार रौ

ताळी खूटतां कपाळी खीज किनां बीज भाळी तेम,
हाळी वीर चक्रकळा काळी सूळ हाथ ।
चौड़ै झूझ वाजतां अताळी रिमां सीस चाली,
भैरूंसिंघ वाळो रूक कराळी भाराथ ॥१॥

जटी हूं अखंडी गूड छूट तूट वज्र जिमि,
वासदेव चक्र कै त्रसूळ चण्डी वेग ।
पड़ै सीस वरूथां सक्राळ झाळा क्रोध पूर,
तौ वाळी सौभाग तणा निराधार तेग ॥२॥

---

१४८. गीतसार—ऊपर लिखित गीत भैरूंसिंह सौभाग्यसिंहोत योद्धा की तलवार की प्रशंसा का है । गीत में तलवार के, प्रहारों की प्रचण्डता शंकर के समाधि भंग हो जाने पर क्रुद्ध होकर तीसरा नेत्र खोलने, आकाश की बिजली के गिरने अथवा कालिका के त्रिशूलाघात की प्रचण्डता के समतुल्य वर्णित किया है । भैरूंसिंह ने कछवाहों की राजावत (मानाणी) शाखा वालों से युद्ध किया था ।

---

१. ताळी—समाधि । खूटतां—खुलते । कपाळी—शिव । खीज—नाराजी । किनां—अथवा । बीज—बिजली । भाळी—देखने । हाली—चली । काळी—कालिकादेवी । सूळ—त्रिशूल । झूझ—युद्ध । वाजतां—वजते, ध्वनित होते । अताळी—वेग पूर्वक । रिमां—शत्रुओं के । रूक—तलवार । कराळी—भयानक । भाराथ—युद्ध

२. जटी—शिव । हूं—से । अखंडी गूड—अखंड निद्रा, अखंड समाधि । छूट—खुल कर । तूट—खण्डित होकर । वज्र—वज्र, बिजली । वासदेव—श्रीकृष्ण, भगवान् विष्णु । चण्डी—चण्डिका देवी । वरूथां—सेनाओं के । सक्राळ—इन्द्र । झाळा—ज्वालामय पूर—पूर्ण । तौ वाळी—तेरी, तुम्हारी । सौभाग तणा—सौभाग्यसिंह के पुत्र भैरूंसिंह । निराधार—निरन्तर, बिना आधार । तेग—तलवार ।

वाम दीठ वीजळा अदीठ सूळ भास बहै,
आहंसी बाणास त्रास देखि गहै ओट ।
जमी बाक बाधि भूरा खहै नकौ तौसूं जौधा,
चौडै चाक बांधि सहै निराधार चोट ।।३।।

भसम्मी हूं टूक टूक छूट केक फूट भचि,
सांवळेस दूजौ जटी जटी ढूक साहि ।
खळां कूक पाड़िवा अचूक जगि वूठ खेत,
मानाणी अनेक कूक अक रूक मांहि ।।४।।

---

३. वाम दीठ—वामदेव का नेत्र, शिव का तृतीय नेत्र जो समाधि टूटने पर खुलना माना जाता है। वीजळा—विद्यूत। अदीठ—अदृष्ट चक्र। सूल—त्रिशूळ। भास—आभास। बहा—चला। आहंसी—साहसी, अंशधारी। बाणास—तलवार। त्रास—उर। गहै—पकड़ले हैं, ले लेते है। जमी—भूमि लोक में। बाक वाधि—विवाद बोल कर, विवाद ठान कर। भूरा—सिंह, वीर। खहै—टक्कर ले। नकौ—कोई नहीं। तौसूं—तेरे से, तुम्हारे। जोधा—योद्धा, वीर। चौड़ै—खुले मैदान में। चाक बांधि—निशाना लगा कर। सहै—सहन करे।

४. केक—कई। भीच—योद्धा। सांवळेस—श्यामसिंह के वंश वाला। दूजौ—दूसरा। जटी—शिव। जटी—जिधर भी। ढूक—पहुँच जाता है। खळां—शत्रुओं में। कूक—रुदन, कोलाहल। वूठ—बरसा कर। खेत—रणक्षेत्र। मानाणी—मानावत, मानसिंहोत। रूक—तलवार।

१४६. गीत कछवाहां सीसोदियां रे जुद्धरो

अड़ धरती काजि खड़े विहु फौजां वड ग्रांट, त्रंमागळा गड़गड़ वीर राग तार ।
हड़हड़ सदासिव जोगण्या खुसाल हुई, सीसोदां कूरमां झड़ै घोळै दीह सार ॥१॥

अरावां अवाज गाज धूजी धरा आसमान, धुंधकार सेलार मार वारोपार धाह ।
वोळ घावां भवकार श्रोणधार चहुंवळां, आहाडां आमेरां खागां हुचक्के अथाह ॥२॥

चाड़ धणी विहु अणी लड़े घणी खत्रीचाळां, आडा खंडां उडै झीक आवटे असाधि
....वाढा धाइ ढूंढ़ाड़ां ची मेवाड़ा सु वाधि ॥३॥

.... किरम्मरा वाणां गोळां रीठे पाड़, मुड्या नको येकोयेक दोन्यां कांनी मंत ।
तेगां वाळी कपाळी में असी वाजी अंक ताळी, लागी सिधां वाळी खूट गई अन्त ॥४॥

---

१४६. गीतसार—गीत में कथित युद्ध जयपुर के शासक कछवाहों और उदयपुर के बीच लड़े गये युद्ध का सूचक है। सम्भवतः माधवसिंह प्रथम के पक्ष में मेवाड़ की सेना ने महा राजा सवाई ईश्वरीसिंह से जो युद्ध लड़ा था, उसी का इस गीत मे वर्णन है। अन्त में विना जय-पराजय के निर्णय के दोनों पक्षों में संधि हो गई।

---

१. अड़— विरोध कर, भयंकर। खड़े चलकर आये। विहु—दोनों। वड़ ग्रांट—प्रवल-विरोध,विरोध वढ़ कर। अड़तड़—अट्टहास। जोगण्या—रणचण्डिकाएँ। झड़ै—प्रहार करने लगे. वौछार की। घोळै दीह—दिन दोपहर। सार—शस्त्र, लोह धारा।

२. अरावां—तोपखाना। गाज—गर्जना कर। धूजी—कंपित हुई। धुंधकार—कोहरा, अन्धकार। वारोपाट—इधर से उस पार। धाह—ध्वनि, जाकर, हल्ला। वोल घावां—तर-वतर, रक्तपूरित घाव। भवकार—प्रवाह ध्वनि। श्रोणधार—रक्तधारा। चहुं-वळां—चारों तरफ। आहाड़ां—आहड़ स्थान वालों, सिशोदियों। आमेरां—आमेर वालों, कछवाहों। खागां—तलवारों से। हुचक्के—लड़े। अथाह—अपार।

३. चाड़—मदद। धणी—स्वामी। विहु अणी—दोनों सेनाएँ। घणी—अधिक। खत्री-चाळां—क्षत्रियत्व का कौतूहल, क्षत्रिय परम्परा से। आंडा खंडां—तिरछे प्रहारों से। झीक—चोट, वौछार। आवटे—नाश करने वाले, युद्ध। असाधि—असाध्य, भयंकर। वाढ़ां—मारकाट, वाढ़ कर। ची—की।

४. किरम्मरां—तलवारें। रीठे—युद्ध प्रहार। मुड़या—पीछे हटे। न को—कोई नहीं। दोन्या कांनी—दोनों तरफ से। तेगां वाळी—तलवारों की। कपाळी—सिर में। असी—ऐसी। वाजी—चली। ताळी—समाधि। सिन्धा वाळी—सिद्धराज की, योगिराज शिव की। खूट गई—खुल गई।

१५०. गीत महाराव सुरताण देवड़ा सिरोही रौ

छोडाय न सकिया केवा छत्रपत, चहर अलागै राव चहुवाण ।
सीरोहियौ गळै सिरदारां, सिर वांधिये गयौ सुरताण ॥१॥

दिन जीते गौ जगत देखतां, रिण गौ जीति सिंधवो राग ।
दाग जगत दन खाय देवड़ो, देवड़ो गयौ अलागै दाग ॥२॥

रायमल समौ सुजस राय अरवद, पै छत्रपत नह लगै पलै ।
लागवां तणा न दीधा ळहणां, गौ गहणां न वंधिया गळै ॥३॥

अनन्त द्वार अकेलो आनीयौ, राजा संग लीधां राव रांण ।
आवू गिरन्द ऊग आंथमियौ, भाण तणौ झळहळतौ भाण ॥४॥

---

१५०. गीतसार— उपरांकित गीत सिरोही राज्य के शासक राव सुरतान देवड़ा पर रचित है। यह गीत सुरतान की मृत्यु पर लिखा हुआ है। गीतकार ने इस में गीतनायक की वीरता, स्वातंत्र्य-प्रेम और साहस का उल्लेख किया है। महाराव सुरतान ने बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की थी और उस समय की परम्परानुसार अपने घोड़ों के दाग (शाही जिह्न) नहीं लगवाया था। गीत में उसे अर्बुद गिरि का सूर्य अंकित किया है।

---

१. केवा–बदला। छत्रपत–छत्रपति राजा। चहर–कलंक, दाग। अलागै–नहीं लगा, अलग रहा। सीरोहियौ–सिरोही वाला।

२. गौ–या। जीति–विजय प्राप्त कर। सिंधवो राग–सिंधु राग, युद्धकाल में योद्धाओं का साहसवर्द्धन करने के लिए गाया जाने वाला राग। दाग–शाही चिह्न। खाग–तलवार। देवड़ो–चौहानों की देवड़ा शाखा वाला। दाग–कलंक।

३. समौ–समान। सुजस–सुयश। राय अरवद–अर्बुद नरेश, राव सुरतान। पै–चरणों। पलै–दूसरों के। लागुवां–वैरियों, विरोधियों। लहणां–ऋण, मांग। गौ गहणां–गायों को पहनाने वाले, यवनों। बाँधिया गळै–गले नहीं लगाये, अधीनता स्वीकार नहीं की।

४. आनीयौ–आया। आवू गिरंद–गिरिराज अर्बुद। ऊग–उदय होकर। आंथमियौ–अस्त हुआ। भाण तणौ–भाण का पुत्र सुरतान। झळहळतौ–चमकता हुआ। भाण–सूर्य भानु।

१५१. गीत राव सत्रसाल हाडा बूंदी री

चलि आया अेमि जेमि चलि आयौ, आगालगी आगळि असुरांण।
सुरजन भोज रतन राव सत्रसल, चील्हा नह चूकौ चहूं वांण ॥१॥

खड़िया तेम आदू तिम खड़ियौ, हीन्दू ध्रम रवदां पति हीक।
परियां वडां तणा पाटोधर, माग न वीसरियौ मछरीक ॥२॥

सु पतिसाहां साथि समोभ्रम, चालै रीत पुरांणी चाव।
घर आपरा तणौ बिरद घण, राह न भूलौ हाडां राव ॥३॥

— मनोहर राव री कह्यौ

---

१५१. गीतसार— उपरि लिखित गीत बूंदी के राव शत्रुशाल की वीरता पर कथित है। गीत में वर्णन किया है कि राव शत्रुशाल अपने पूर्वजों राव सुर्जन, राव भोज और राव रतन जिस तरह उत्साह पूर्वक युद्ध के लिए आते थे उसी प्रकार वह भी रणभूमि में आया। इस प्रकार उसने अपनी कुल-परम्परा का भलीभांति निर्वाह किया।

---

१. अेमि—ऐसा, इस प्रकार। जेमि—जैसे, जिस तरह। आगालगि—लगातार। आगळि—आगे, अगाड़ी। असुरांण—बादशाह; यवन। चील्हा—परम्परा, कुलरीति। नह-चूकौ—नहीं भूला, चूका नहीं।

२. खड़िया—चलकर आते थे। तेम—तैसे, इस प्रकार। आदू—आदिकालीन, पूर्वज। खड़ियौ—चला। रवदां—मुसलमानों के। परियां—पीढ़ियां, वंशजों। पाटोधर—पट्ट अधिकारी, राजा। माग—मार्ग। वीसरियौ—भूला। मछरीक—चौहान, हाडा-शत्रुशाल।

३. पतिसाहां—बादशाहों के। समोभ्रम—समान भ्रांति देने वाला। पुरांणी—प्राचीन। चाव—चाह, कामना। बिरद—विरुद। घण—घना, अधिक। हाडां राव—हाडों का स्वामी शत्रुशाल।

१५२. गीत राव मुकन्दसिंघ हाडा कोटा रौ

राव सुरजन भोज दूद रतनसींग राम, मधकर पिता आपण मकरंद ।
औसर इसौ नीसरे जसवंत, मोसर किम तूं लै मुकंद ॥१॥

मोटां तणा विरद तुझि मोटा, मोटो पतगरीयौ मरण ।
नीसरियौ तदिन नवकोटों, रहियौ कोटो धणी रण ॥२॥

लाडौ सदा फौज रौ लाडौ, जाडौ दळि दळ जूवौ जूओौ ।
आगणि दिलौ हालतौ आडौ, हाडौ आडौ घणां हूऔ ॥३॥

—रुघनाथ राव रौ कह्यौ

---

१५२. गीतसार— उपरि लिखित गीत कोटा राज्य के शासक राव मुकुन्दसिंह हाडा पर सर्जित है। राव मुकन्दसिंह बादशाह शाहजहां के शाहजादों में (उज्जैन में) जो युद्ध हुआ था उस में शाही पक्ष की ओर से जूझ कर काम आया था। जोधपुर नरेश-जसवंतसिंह उक्त युद्ध से निकल कर जोधपुर आ गया था।

---

१. दूद—राव दूदा, दूर्जनशाल । मधकर—राव माधवसिंह, वह कोटा राज्य का प्रथम हाडा शासक था। आपण—अर्पित करने, अपने। मकरंद—पुष्प पराग, कीर्ति। औसर—अवसर। इसौ—ऐसे। नीसरे—निकला। जसवंत—जोधपूर का महाराजा जसवंतसिंह राठौड़। मौसर—अवसर। मुकंद—राव मुकुन्दसिंह।

२. मोटां तणा—बड़ों का, पूर्वजों का। विरद—विरुद। मोटा—बड़ा। पतगरीयौ—विश्वासी, स्वीकार किया। मरण—मृत्यु। नीसरियौ—निकला। तदिन—उस दिन। नवकोटीं—नवदुर्गाधिपति की प्रसिद्धि वाला जसवंतसिंह। कोटो धणी—कोटा का स्वामी मुकुन्दसिंह।

३. लाडौ—दूल्हा। फौज रौ लाडौ—सेनापति। जाडौ—बड़ा, घना, विशाल। दळि—संहार कर। दळ—सेना, समूह। जुवौ जूऔ—अलग अलग। आगणि—आगे। हालतौ—चलता था। आडौ टेढ़ा, विरुद्ध, रक्षक बना। आडौ—रक्षक। घणां—बहुतेरों का।

१५३. गीत महाराज मोहणसिंघ हाडा पलायथा रौ

पतिसाहां छळां आगळि पतिसाही, खाग वाहै औरंग खहण।
मोहण कहै आज मौ मीळियौ, मन मान्यो जीवण मरण ॥१॥
साहां चाड आगळी साहां, लोहां जोधां हूंत लडंत।
हाडां राव कहै पायौ हव, अंत सरीखौ आयौ अंत ॥२॥
पति चै अरथ मुहर घड़ पति ची, पति मोटी मोटी प्रभति।
मधकर तणौ कहै मौ मीळियौ, मरण वडौ जीवण मुगति ॥३॥
आगळ फौज फौज रौ आडौ, हाडौ तुरकि तुरकि हिंदवांण।
सिंधू वाजि वाजियौ समहर, चोड़ै बाजि मूऔ चहूवांण ॥४॥

—रुघनाथ राव रौ कह्यौ

---

१५३. गीतसार—उपरिलिखित गीत कोटा के पलायथा ठिकाने के स्वामी मोहनसिंह हाडा पर रचित है। मोहनसिंह ने अपने अन्य चारों भाइयों के सहित उज्जैन में शाहजादों के उत्तराधिकार के युद्ध में शाहजहां की ओर से भाग लिया था। शाहजादा मुराद और औरंगजेब के विरुद्ध वह लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था। मोहनसिंह राव माधोसिंह कोटा का द्वितीय पुत्र था। वर्णित युद्ध में पांच में से चार हाडा बंधु काम आये थे।

---

१. पतिसाहां—बादशाहों के। छळां—युद्धों। आगळि—आगे, आगे बढ़ने वाले बादशाह के। खाग—तलवार। वाहै—चलता है। औरंग—शाहजादा औरंगजेब। खहण—युद्ध। मौ—मुझे। मीळियौ—प्राप्त हुआ। मन मान्यो—वांछित, मन चाहा।

२. चाड—सहायता। आगळी—अगाड़ी। लोहां—अस्त्रों शस्त्रों से। जोधां हूंत—योद्धाओं। हाडां राव—हाडा क्षत्रियों का स्वामी। हव—अब। अंत—मृत्यु। सरीखौ—सदृश।

३. पति चै—स्वामी के, बादशाह के लिए कथित। अरथ—वास्ते। मुहर—आगे। घड़—सेना। ची—की। पति मोटी—बड़ी प्रीति, बड़ी प्रतिष्ठा। प्रभति—प्रभुता। मधकर तणौ—राव माधवसिंह का पुत्र मोहनसिंह। मुगति—मुक्ति, मोक्ष।

४. आडौ—रक्षक, सेनानायक। तुरकि—तुर्क, मुसलमान। हिंदवांण—हिन्दुत्व। सिंधू—सिंधु राग के नगाड़े। वाजि—ध्वनित होकर। वाजियौ—लड़ा। समहर—युद्ध। मूऔ—मरा।

१५४. गीत पांच माधांणी हाडा कोटा रौ

लख फौजां हूंत मधावत लड़िया, खळभळि बीयां जेम नह खड़िया।
झूझ मुकंद मोहण कन्ह झड़िया, आड वढ़े केहर ऊपड़िया ॥१॥

धणी गुजर दखिण पति धाया, चंचळ खेड़ेचै चमकाया।
वेदां चहुवै च्यारि वचाया, आवध पूर पांचमा आया ॥२॥

ताती घड़ि वरि वरि तुरकांणी, पीढ़ां गढ़ां गढ़ावै पांणी।
पड़ि ऊपड़िवौ आव प्रमांणी, मुड़िया नहीं पांच माधांणी ॥३॥

— रुघनाथ राव रौ कह्यौ

---

१५४. गीतसार— उपर्युक्त गीत कोटा के महाराव मुकुन्दसिंह माधवसिंह के पुत्र और मुकुन्दसिंह के चारों भाई मोहनसिंह, कन्हीराम, जूझारसिंह और किशोरसिंह पर रचित है। मुकुन्दसिंह वगैरह पांचों भाई बादशाह शाहजहां की ओर से विद्रोही शाहजादे-मुराद और औरंगजेब के विरुद्ध मालवा में भेजी गई सेना के साथ भेजे गए थे। दोनों पक्षों में उज्जैन के पास घमासान युद्ध हुआ जिसमें किशोरसिंह के अलावा चारों भाई मारे गये। गीत में पांचों हाडा वीरों की वीरता की सराहना का वर्णन है।

---

१. लख—एक लाख संख्यक। हूंत—से। मधावत—राव माधवसिंह के पुत्र। खळभळि—विचलित होकर। बीयां—दूसरों के। जेम—जैसे। खड़िया—भागे। झूझ—जूझारसिंह। कन्ह—कन्हीराम। झड़िया—धराशायी हुए। आड—तिरछे, ओट। वढ़े—कट कर, बढ़ कर। केहर—किशोरसिंह। ऊपड़िया—घायल होकर बच रहा।

२. धणी—मालिक। गुजर—गुजरात, शहजादा औरंगजेब। दखिण पति—शाहजादा-मुरादबक्स। धाया—आक्रमण करने आये। चंचळ—घोड़े, चपल। खेड़ेचै—महाराजा-जसवंतसिंह जोधपुर ने। चमकाया—चौंकाया, रण से भाग कर चला गया। चहुवै—चारों में। वचाया—पढ़ गए। आवध—आयुध। पांचमा—पांचवां किशोरसिंह।

३. ताती घड़ि—विपत्तिकाल। पीढ़ां—पीढ़ियों। चढ़ावै पांणी—गौरवान्वित करे। पड़ि—गिर कर, युद्ध में। ऊपड़ियौ—उठना, वचना। आव—आयु। मुड़िया—लौट कर, पीछे मुड़ कर। माधांणी—राव माधवसिंह हाडा कोटा के पांचों पुत्र।

१५५. गीत कंवर संगरामसिंघ हाडा रौ

कळह धकै धर वेध हाडां अनै कूरमां, छोहि जाडां थंडां लोहि छांगो।
जांणि असि चढ़ै वनराव हलिया जहीं, सत्रां दिसि मलफियौ कंवर सांगो ॥१॥

झाट वाणास पंजां नळां झाड़तौ, असि गजां गळण खड़े ऊखो।
उड पड़्यौ कंवर कूरमां ऊपरै, भिड़ज असवार गज मार भूखो ॥२॥

विसनतण तणी अणी घणी फौजां व्रिरोळे, ढंढोळे भड़ां ढूंढ़ाहड़ा ढाल।
डांखीयौ सींह लियण पळडळां, फता सिरि झपटियौ वियौ फतमाल ॥३॥

भांजि फतमाल आहर करै डळां भर, अरिहरां जूथ डोहे अढांगो।
सत्रां करि तंडळ महरांण रौ सिंघळी, सूर मंडळि गयौ भेदि सांगो ॥४॥

---

१५५. गीतसार— ऊपर लिखित गीत कुंवर संग्रामसिंह हाडा वीर पर सर्जित है। संग्रामसिंह ने आमेर के कछवाहों के साथ हुए हाडों के युद्ध में वीरता-प्रदर्शित कर वीरगति प्राप्त की थी। कवि ने गीतनायक को सिंह के रूप में चित्रित कर गीत का विधान किया है। सिंह के पंजों की चोट के तुल्य तो तलवारों के प्रहार करता है और शत्रु-रूपी गजों को भोज्य बनाते हुए झपटता है।

---

१. कळह–युद्ध। धकै–मुकाबले, सीधे, धकापेल। धर वेध–राज्य के लिये लड़ा गया युद्ध। अनै–और, अन्य। छोहि–जोशीली, क्रोधातुर। जाडां थंडां–घनि सेना, समर्थ सैन्यदल। लोहि–लोहा, शस्त्र, लोहू। छांगो–काटा हुआ, संहारक। असि–अश्व, घोड़ा। वनराव–सिंह। हलिया–चला, झपटा। सत्रां दिसी–वैरियों की ओर। मलफियौ–झपटा, छलांग भर कर चला। सांगो–संग्रामसिंह।

२. झाट–वार, प्रहार। वाणास–तलवार। पंजां नळां–पंजा और पैर की नलियां। झाड़तौ–पटकता, मारता। गळण–निगलने, मारने। खड़े–चले, प्रस्थान करे। ऊखो–वनराज, सिंह। भिड़ज–घोड़ा। गज मार–हाथियों को मारने वाला, सिंह।

३. विसनतण–महाराजा विशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह कछवाहा आमेर। अणी–सेना। घणी–घनी। व्रिरोळे–कुचल कर, मार काट कर। ढंढोळे–ढूंढ़कर संहार करे। ढाल–रक्षक, सैनिक। डांखीयौ–क्रुद्ध, भूखा। पळडळां–मांस पिण्ड। फतासिरि–फतहसिंह कछवाहा पर। वियौ–दूसरा।

४. भांजि–संहार कर। फतमाल–फतहसिंह का। आहार–भोजन। डळां–पिण्ड। अरिहरां–शत्रुओं के। जूथ–यूथ, सेना। डोहे–रौंद कर। अढांगो–भयंकर, विचित्र। तंडळ–टुकड़े। सिंघळी–सिंह। भेदि–भेदन करके।

१५६. गीत महारावराजा उम्मेदसिंघ हाडा बूंदी रौ

मांझी फौजां रावराजा रा उठाया वीड़ा दिली माथै,
वेवै सेर अधाया वधरारा छाया वीर ।
सारा मिळे माधजी केदार सा अकारा सूधी,
आया साहां ऊपरै सतारा रा अमीर ॥१॥

विरूथां अभंगां जंगां हरौळां करौळां वधै,
वीर अंगा वरंगौळां जंगौळां वणाय ।
पैदलां पमंगां रथां मातंगां सामंदां पूर,
ऊपटी पय गंगा ज्यूं लड़ंगां मिळे आय ॥२॥

मेघ दूण घटा घोर नीसांण गणूण मत्ती,
चंचळा पै छत्ती मारां हूण चक्कांचूर ।
लूण रा सचोजा भडां वींटिया आधंती लागां,
पैंज लंका पती हूं त्रगूण फौजां पूर ॥३॥

---

१५६. गीतसार—उपर्युक्त गीत महाराजा उम्मेदसिंह हाडा बूंदी की युद्ध-विजय का बोधक है। उम्मेदसिंह ने ग्वालियर वालों के पूर्वज महादाजी पटेल से बूंदी के रणक्षेत्र में घमासान युद्ध लड़ा था। गीत में कवि ने गीतनायक का रणकौशल, पौरुष वीरता और युद्ध में प्रदर्शित महान् शौर्य का वर्णन किया है। योद्धाओं के रुण्डों द्वारा भयानक युद्ध कर वीरगति प्राप्त करने का अनूठा चित्रोपम वर्णन है।

---

१. मांझी—मुखिया। वेवै—दोनों ओर के। अधाया—अतृप्त। बरारा—वीरता में। छाया—छके हुए। सारा—समस्त। अकारा—भयंकर, तेजस्वी। सूधी—सहित, सीधे। साहां—बादशाह। अमीर—उमराव।

२. वरूथां—सेनाएँ। अभंगां—निडर, निश्चयी। जंगां—युद्धों। हरौळां—सेना की अग्रिम पंक्ति। करोळां—सेना की करावल पंक्ति। वधै—बढ़ते हैं। वरंगौळां—सेना के पार्श्व भाग की पंक्ति। जंगौळां—जंघा भाग की पंक्ति, पृष्ठ रक्षक। पमंगां—घोड़ों। मातंगां—हाथियों। सामंदां पूर—मत्तता से परिपूर्ण, समुद्र को ढ़क देने वाले। ऊपटी—वही। पय—जल। लडंगां—समूह, पंक्तियाँ। मिळे—मिली।

३. मेघ दूण—एक सौ बारह, अपार। नीसांण—वाद्ययंत्र। गणण—भयानक ध्वनि। मत्ती—जबरदस्त, विशाल। चंचाळ—विद्युत। छत्ती—पृथ्वी। मारां—चोटें। हूण—होने के लिए। चक्कांचूर—चूर्ण चूर्ण। लूणरा—स्वामी के नमक के। सचोजा—सच्चे, सोत्साही। भड़ां—वीरों। वींटिया—घेरे में लिए। आधंती—आकाश के मध्य तक। पैंज—मर्यादा। लंकापती हूं—रावण से। त्रगूण—त्रिगुणी। पूर—पूर्ण। उँडेलकर।

जोधां पै मचक्कै सेस लचक्कै लेजम्मा जोम,
भुक्कै कोम पीठ हूं भैचक्कै फुणां भाट।
थक्कै फाळां कुरंगां विहंगां वाळा पंथ रुक्कै,
थाळा जम्मी थरक्कै तुरंगां वाळा थाट ।।४।।

भगै वळोवळां सोर ग्रातसां वीजळां भाळां,
नळां जामी दसां तेत सेक वगी नेम ।
कंत नासां मेछां मासां ग्रंत ज्यूं न रही कळा,
जीव जंत यळा थई चळा पत्रां जेम ।५।।

हाक वाज बाघ सल्ली हैजंमा हसम्मा हल्ली,
चल्ली सांका वंध वात ढिल्ली लैण चाव ।
दहूं राहां वदल्ली ग्रदल्ली साहां भोज दूजै,
रूक वाहां भल्ली हेक भल्ली हाडै राव ।।६।।

---

४. मचक्कै—मचकता है, कांपता है। सेस—शेषनाग, पाताल लोक तक। लचक्कै—लचक खाती है। लेजम्मा—कमानें, लेजमें। जोम—जोश, बल। कोम पीट—कच्छप की पीठ। भैचक्कै—भय से चकित। फुणा भाट—नाग के फनों की चोटे। फाळां—छलांगें भरना। कुरंगां—हरिणों। विहंगां—पक्षिओं। रुक्कै—रोक, अवरुद्ध हुए। थला—स्थाळ। थरक्कै—धड़कती है। तुरंगा—घोड़ों के। थाट—समूह, ठाठ बाट।

५. भगै—प्रज्वलित होता है। वळोवळां—पुनः पुनः, बलपूर्वक। सोर—बारूद। ग्रातसां—ग्रग्नि। वीजळां-भळां—तलवारों का ग्रातप। नाळां—तोपों के। जामी—पलीते दसां—दिशा। सेक—ताप। वगी—चली। मेछां—मुसलमानों। मासां—मांस। ग्रंत—मृत्यु। जीवजंत—जीवजंतु। यळा—पृथ्वी। थई—हुई। चळापत्रां, पीपलवृक्ष के पत्तों।

६. हाक—ऊंची ग्रावाज। वाज—होकर, ध्वनि होकर। हैजम्मा—ग्रश्व सेना। हसम्मा—सेना। हल्ली—चली। साका वंध—युद्ध की, साके की। ढिल्ली—दिल्ली। लैण—लेने की, ग्रधिकार करने की। चाव—चाह, इच्छा। दहू राहां- हिन्दू ग्रौर मुस्लिम दोनों धर्मों के ग्रनुयायियों। ग्रदल्ली—न्यायी। भोज दूजै—द्वितीय राव भोज। रूक वहां—तलवार के प्रहारों। भल्ली—ग्रच्छी। हेक—एक। भल्ली—दायित्व ग्रहण किया, ग्रपने ऊपर ली, धारण की।

किला दिल्ली आडा चौड़ै अताळा अढ़ेल कीधा,
नराताळा वाळा बंध वीरचाळा नेम।
आग झाळां दंताळां दळां क्रोधाळा जनंक वाळा,
जाता काळा नाग री मुराळा दव्बी जेम ॥७॥

फौजां गजां वाळौ प्रथी प्रळै हेत संध फूटौ,
किनां रूठौ सक्रजीत जनेव ऊकंध।
नेत खूटौ त्रनेत रौ नेतबंधां छूटौ नेत,
बूंदी खेत जूटौ श्री ऊमेद नेतबंध ॥८॥

भौम धू निहाव गीळां कोम पीठ जोम भागी,
निसादीह झाळ बोम बिलागी नगेम।
विखम्मी कराळ तोपां निराताळ धोम बागी,
जागी मीनकेत होम प्रळैकाळ जेम ॥९॥

जोध सूधी नाथ रौ फबातौ उठी द्रोण जोड़ै,
अठी तातौ पाराथ रौ रूप चाहवांण।
मांझी महाघोर भाराथ रौ जोर मातौ,
मेक सत्रां दीहां हूवौ रातौ भासमांण ॥१०॥

---

७. आडा–सामने, ओट स्वरूप। अताळा–उतावला। अढ़ेल–अडिग। नराताळा–भयंकर, जबरदस्त। वीरचाळा–वीर कौतुक। जाता–जाते हुए। काळानाग–कालीयनाग। मुराळा–पूंछ। दव्बी–दबना, नीचे आना। जेम–ज्यों, जैसे।

८. प्रळै हेत–प्रलय के लिए। संध–फूटौ–समुद्र फटगया हो। किनां–अथवा रूठौ–रुष्ट हुआ। सक्रजीत–मेघनाद। जनेब–तलवार। ऊकंध–प्रहार हेतु कंधे तक उठाए हुए। नेत–नेत्र। खूटौ–खुला। त्रनेत रौ–शिवका। नेतबंधां–मर्यादा बाँधने वालों। नेत–मर्यादा। जूटौ–भिड़ा। नेतबंध–मर्यादारक्षक, राजा।

९. भौम धू–भूमि पर, भूमि और ध्रुव। निहाव–आकाश, ध्वनि, प्रहार। कोम पीठ–कछुए की पीठ। जोम–जोश, गर्व। निसा दीह–रात्रि और दिन। झाळ–ज्वाला बोम–आकाश। बिलागी–जा लगी। नगेम–निष्पाप। विखम्मी–विषम, आपत्ति-कारक। कराळ–भयावह। निराताळ–निरन्तर, भयानक। धोम बागी–आग बरसाने लगी। जागी–जगी। मीनकेत–मीनकेतु, कामदेव को। होम–भस्म करने। प्रळैकाळ–प्रलयकाल।

१०. जोधा–योद्धा, पुत्र। सूधीनाथ रौ–बुद्धिमान स्वामी का। फबातौ–शोभा पाता। द्रोण–द्रोणाचार्य। पाराथ रौ–पार्थ का, अर्जुन का। मांझी–मुखिया। भाराथा रौ–युद्ध का। जोर मातौ–बलाढ्य। मेक–तीन। सत्रां–शत्रुओं। दीहां–दिन में। रातौ–रक्तिम, लाल। भासमांण–सूर्य।

लाखां दलां गनीमां त्रभागां भालां झोक लागा,
आभ हूं विलागा जंगी हौद रा अमीर।
लोहंगी लंगरां पै गजां थू छंगी पंगी लाडा,
वागा नंगी खागां हाडा चोळ रंगी वीर ॥११॥

ओश्रेणी अटक्कां ओण भूतटक्कां लैण पंगी,
कोधां जंगी खटक्कां कटक्कां प्रळै काल।
वेछाड़ां वटक्कां वीर घटक्कां रटक्कां वगी,
झगी रूकां झटक्कां कराल रूकां झाल ॥१२॥

बीरां वीर महारथ्थी चोड़ै वागा लूथवथ्थी,
इखै वींद रंभा सथ्थी रथ्थी तथ्थी आराण।
हथ्थी झड़ै केवाणां जुड़ै हथ्थो हथ्थी,
मोह माण नथ्थी रथ्थी खड़ै आसमाण ॥१३॥

---

११. गनीमां—शत्रुओं। त्रभागां—तीन धारा वाले शस्त्र, तीन भाग तक। भालां—सेलों के। झोक—प्रहार। आभ हूं—आकाश से। विलागा—जा लगे। लोहंगी—लोहे के। लंगरां—जंजीरों। गजां थू—हाथियों के झुण्ड। पंगीलाडा—कीर्ति के दूल्हे। वागा—लड़ने लगे। नंगी—नग्न। चोळरंगी—लाल रंग।

१२. ओश्रेणी—सरिता। अटक्कां—रोक, अटकनदी। ओण—लोहू की। भूतटक्कां—भूमि तटों को। पंगी—कीर्ति। खटक्कां—प्रहार, कसक। कटक्कां—सेनाएं। वेछाड़ां—अपार, अनर्गल। वटक्कां—टुकड़े, दांतों से काटने की ध्वनि। घटक्कां—शरीरों के। रटक्कां—टक्करें। वगी—हुई। रूकां—तलवारें। झटक्कां—वार, प्रहार। झाळ—ज्वाला।

१३. महारथ्थी—महारथी। चोड़ै वागा—मैदान में लड़ने लगे। लूथ वथ्थी—गुत्थम गुत्थ होकर। इखै—देखने लगे। वींद—वर, पति। रंभा—अप्सरा। सथ्थी—साथी। रथ्थी—रथी। तथ्थी—तेज, सच्चा। आराण—युद्ध। हथ्थी—हाथी, हाथ से। झड़ै—गिरते हैं। केवाणां—तलवारों से। जुवाणां—नौजवानों। हथ्थो हथ्थी—हाथों हाथ, परस्पर गुत्थमगुत्था होकर। नथ्थी—नहीं। खड़ै—चलते हैं, स्थिर खड़े हैं।

नफेरी आणांकां भेरी भयाणांकां बाज नाद,
जोसाणांकां छायौ छोह आराणांकां जूप ।
वौहौ केवाणांकां भूर छायौ बेधाणांकां बाण,
वीराणांकां राह चक्र खाणांकां बरूप ॥१४॥

चाळा मक्र पै करणां चळोळ जळा बोळ चली,
धौळ राह चक्र खळां जज्रसी निघात ।
धोम केवाणांजे भड़ै वक्रतुंडां वाळा धड़ां,
पब्बां धू जांणजे सक्रवाळा जज्रपात ॥१५॥

धारी नेत लक्खां लड़ै मच्चै जूझ सच्चै धड़े,
मारतंड जांणै केत हाका करै मुण्ड ।
उठै सेलां भचाकां बिरच्चै नच्चौ रुंड ऊभा,
झाट रूकां रच्चौ जेहा राहां वाळा झुण्ड ॥१६॥

---

१४. नफेरी—वाद्य विशेष । आणांकां—आनक, नगाड़े । भेरी—तुरही बाजा । भयाणांकां—भयकारी । वाजनद—ध्वनि कर । जोसांणकां—जोशीले । छोह—क्रोध । आराणांकां—युद्धों के । जूप—योद्धा, जुटने । वौहौ—बहुत, प्रहारों । केवाणांकां—तलवारों के । भूर—भूरि । वेछाणांकां—वेधने वालों के । बीराणांकां—वीरों के । राह चक्र—राहु पर चलाए गए चक्र । खांणांकां—मारने के, खणण की ध्वनि । वरूप—विद्रूप ।

१५. चाळा—छेड़छाड़, विग्रह । चळोळ—रक्त सदृश । जळाबोळ—भयंकर, जलप्लावित । धौळ—सिर । राह—राहु । खळां—वैरियों । जज्रसी—वज्रतुल्य । निघात—चोट, वार । धोम—आग । केवाणां जे—तलवारों से । वक्रतुंडां—हाथियों के । धड़ां—शरीरों । पब्बां धू—गिरिशिखरों पर । जांणजे—मानो । सक्रवाळा—इन्द्र के । जज्रपात—वज्रप्रहार ।

१६. धारी नेत—वीराभूषण धारी, माला धारी । जूझ—युद्ध । धड़े—शरीरों, पक्ष । मारतंड—सूर्य । केत—केतु, धट । सेलां—भालों के । भचाकां—प्रहारों की ध्वनि, मच्च मच्च आवाज । रुंड—धड़ । ऊभा—खड़े खड़े । झाट—चोटें । रच्चै—करते हैं । जेहा—जैसा । राहां वाळा—राहु वाले ।

रंगां अनूपरा ओढ़ीयां नारंगां रंगां,
वारंगां रूप रा पुंज झक्कै वार वार।
धाड़ा धाड़ा दुवाहां भूप रा राजा चाढ़ धक्का,
मूछां भ्रूहां ऊपरां धुवक्कै मार मार ॥१७॥
सदा सेलां घावां पांवां केही भभक्के अमाया श्रोण,
धुक्कै धारां पांवां केही न रुक्कै सधीर।
थक्कै आंवां केही लूथां परां लूथ ऊथड़क्कै,
बक्कै आंमोसांमां केही हक्कै हक्कै वीर ॥१८॥
झड़ै धू अनारंगां ढ़ारंगां सोभा लहै झंडा,
फील हौदां छंगां छींछ ऊछंगां फूंहार।
वहै श्रोण कारंगां वसेस वींद वारंगां रा,
वाग नारंगां रा ज्यूं वेखै वारंगां वहार ॥१९॥
तोफा जंग दावै मुनी ले आवै अलोफां तानां,
वीर होका ताळी दे नचावै देव बाल।
ढावै रत्रां सेल त्राप चावै महाकाळी ढूकी,
माली जेम वणावै कमाळी मुण्डमाळ ॥२०॥

---

१७. ओढ़ीयां—ओढ़े हुए। नारंगां रंगां—केशरियां रंग, रुधिर रंग। वारंगा—अप्सराओं के। धाड़ां धाड़ां—वाह वाह। दुवाहां—वीरों को। चाढ़—चढ़ाकर सामने से आगे कर। भ्रूहां—भ्रकुटि। धुवक्कै—जोश में स्फुरण करे, मुँह से ध्वनि करे। मार मार—मारो मारो।

१८. सेलां—त्रल्लमों। केही—कई। भभक्कै—भक्भक् कर बहता है। अमाया—अपार, असमाहित। श्रोण—रक्त। धुक्कै—नीचे की ओर लुढ़कते है, काँपते हैं। धारां—शस्त्रधाराओं। न रुक्कै—ठहर नहीं पाते हैं। थक्कै—थक जाते हैं। लूथां—लाशों। परां—ऊपर से, दूर। ऊथड़क्कै—उलटे गिरते हैं, उथाल कर गिरते हैं। बक्कै—बकते हैं। आंमोसांमां—आमने सामने।

१९. झड़ै—गिरते है। धू—मस्तक। अनारंगां—लोहू। ढारंगा—कट कर गिरे हुए। फील—हाथी। छंगां—कटे हुए। छींछ—छींछड़े। ऊछंगा—ऊपर से कटे हुए, ऊपर उछलते हुए। फूंहार—फव्वारे। श्रोण कारंगां—रक्त की, लाल रंग की। वारंगां रा—अप्सराओं के। नारंगां—नारंगियों के। वेखै—दीख पड़ते हैं। वारंगां—अप्सराओं के।

२०. तोफां— उपहार। मुनी—नारद मुनि। अलोफां—अलुप्त, प्रकट। देव वाल—देव कन्याएँ। ढ़ावै—ढ़ाहते हैं। रत्रां—लोहू। त्राप—ताप, चोट। ढूकी—लगी, पहुँची। कमाळी—शिव।

गजां दांत ऊखेळिया दिली साहां छळां जाग,
अजाराहां ऊजेलिया ऊमेदै दईवांण।
घूमरै वैरियां साले हेलिया प्रहाटाँ घाटां,
मेलिया प्रहाटां घाटां फाटा आसमांण ॥२१॥

होंफां रंगां मारहठां चंगांरा डोहिया हौद,
वणै बीर अंगांरा छोहिया बार वार।
तौफा रंगां बारंगां मोहिया तान तरंगां रा,
रागां बागां जंगांरा सोहिया रीझवार ॥२२॥

खड़ां घावा पूरां नाद दंताळा तमाळा खावै,
भूरा काळा कमाळा असोस बेद भेद।
तेज तेजपुंज वाळा रढ़ाळा तेवड़ै तूंही,
इसा वीरचाळा बुधावाळा श्री ऊमेद ॥२३॥

धरा रत्रां धपाई तै सचाई घेंतलां घड़ां,
मोद ग्रीझ रातलां रचाई गूद मंस।
वीसहथी थाई माय अबै आखै राजबंस,
आई हूं सहाई थारै प्रथीनाथ अंस ॥२४॥

---

२१. ऊखेळियां—उखाड़े हुए। छळां—युद्धों, लिए। अजाराहां—न हजम होने वाले, आर्य पथ वालों को। ऊजेळियां—उज्ज्वल किए। ऊमेदै—महाराव उम्मेदसिंह ने। घूमरै—चक्राकार, समूह वद्ध। प्रहाटां—तलवारें, घोड़े। फाटा—विदीर्ण हुआ।

२२. होंफांरंगां—गर्जनाएं। चंगारा—मजवूतों के। डोहिया -मथ डाले। हौद—हौदे। अंगारां—अंगोंके, अग्नि कणों के। छोहिया—उत्साही, क्रोधी। रागां बागां—शौकीन रसिक। सोहिया—शोभित हुए।

२३. पूरां—पूर्ण, भरे हुए। नाद—नर्दन। दंताळा—हाथी। तमाळा खावै—चक्कर खाते हैं। भूटा—भूरे केशों वाला भैरव। काळा—काला भैरव। कमाळा—शिव। रढ़ाळा—लड़ाकू, योद्धा तेवड़ै—प्रारंभ करते हैं। बुधवाळा—बुधसिंह वाले पुत्र। श्री ऊमेद—श्री उम्मेदसिंह।

२४. रत्रां—रुधिर से। धपाई—तृप्त की। सचाई—इच्छा पूर्वक। घड़ां—सेना। ग्रीझ—गृद्ध। रातला—लालरंग के मांसभक्षी पक्षी। मंस—मांस। वीसहथी—दुर्गादेवी। थाई—हुई। माय—माता। अबै—अब। आखै—कहती है। हूं—मैं। थारै—तुम्हारे।

खपाया दख्खणी जाया निपाया वीराण खेत,
कटक्कां जिरांण घडा धपाया केवाण ।
दुंदंभी वजाया देवां सिद्धां काव्य करा जाया,
अधाया पुसत्या झंडा छाया माधवाण ॥२५॥

वुधानंद विजै पुंज आणियौ आथाण बूंदी,
मो आणियौ राजा राणां सुरत्ताणां माण ।
बंकां हेक दुहू राहां त्रहू लोकां वाखाणियौ,
चक्कां चहू जांणियौ अगंजी चाहूवांण ॥२६॥

कविराजा दानजी मेहड़ू रौ कह्यौ

---

२५. खपाया–समाप्त किये । दख्खणी–मरहठे । कटक्कां–सेना । जिरांण–जीर्ण । घड़ा–सेना । धपाया–तृप्त किये । काव्य करां जाया– कवियों ने । अधाया–भूखे । पुसत्या–पीढ़ियां । माधवाण–महादाजी सिंधिया ।

२६. अणियौ–आया । आथाण–स्थान, संध्यासमय । बंक्कां–बांकुरे । चक्कां चहूं–चारों दिशाओं में । अगंजी–अजेय, अविजित ।

१५७. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा (बूंदी) रौ

गत ओळां जेम गाजिया गौळा, रिमां ससत्र साजिया करार ।
फौजां अरिन्द हबौळां फिरिया, बळवंत रै दौळां वाकार ।।१।।

त्राहक नाद रेड़ियौ तुपकां, दाहक खळां छड़ियौ दाय ।
पांणिप कटक तेड़ियौ पैलां, बहादर सुत बेढ़ियौ बलाय ।।२।।

घण पैलां पेखै घासांहर, जग जाहर आयौ जोसैल ।
हाडो छाडि हवेली थाहर, नाहर जिम कढ़ियौ निडरैल ।।३।।

---

१५७. गीतसार—ऊपर लिखित गीत बूंदी के गोठड़ा ठिकाने के महाराज बलवंतसिंह हाडा पर रचित है। गीत में गीतनायक द्वारा विपक्षियों पर मैदान में आकर शस्त्र प्रहार करने तथा मांसाहारियों शत्रुओं के मांस से तृप्त कर मृत्यु का वरण करने का वर्णन है। बलवंतसिंह ने अंग्रेजी सेना से युद्ध किया था।

---

१. गत ओळा—उपल वर्षा की भांति तेज गति से। गाजिया—गर्जन करते हुए, बरसते हुए। रिमां—बैरियों। ससत्र—शस्त्रों से। साजिया—मारे, सजे। अरिन्द—वेरी। हबौळां—सघन, भीड़भाड़, लहरें। दौळां—चौतरफ। बाकार—ललकार कर।

२. त्रहक नाद—नगाड़ों के बजने से उत्पन्न ध्वनि। रेड़ियौ—बजाया। दाहक—जलाने वाला। खळां—शत्रुओं। पांणिप—बल से। कटक—सेना को। तेड़ियौ—पीछे धकेला। पैलां—विपक्षियों। बेढ़ियौ—योद्धा, युद्धकारी। बलाय—बला।

३. पैलां—विपक्षियों। पेखै—देखै। घासांहर-सेना। जोसैल—जोशीला। थाहर--रक्षा-स्थान, मांद। जिम—ज्यों, जैसे। कढ़ियौ—निकला। निडरैल—निर्भीक।

सुजड़ां खणाक घमाघम सैलां, अवनी भणाक धमाधम आव ।
नूपर रंभ छमाछम नाचत, भूर त्रंबक डमाडम भाव ॥४॥

लाखां विकट काळ रा लागै, प्रेत वीर नागै अप्रमाण ।
भारथ देख भयंकर भागै, अनरधहर आगै अरियाण ॥५॥

चावौ अगंज वंस जळ चाढ़ै, जोरावर वजाड़ै जैत ।
गूदां हूंत धपाड़ै ग्रीधां, पडियौ पाड़े खळां पटैत ॥६॥

पळचारां अगणित पळ पीधौ, नांव अमर रीधौ यळ नेर ।
सिर लीधौ जिण रौ सुकरां, सिव कीधौ माळ रै सुमेर ॥७॥

---

४. सुजड़ां–कटारी । खणाक–खण-खण की ध्वनि कर । सैलां–भालों । भणाक--आवाज । रंभ--रम्भा, अप्सरा । भूर--भूरी, वहुत अधिक । त्रंवक--नगाड़े । डमा डम--डम डम ध्वनि ।

५. काळ रा--मृत्यु का । नागै--नग्न, शिव के गण, नागा । भारथ--युद्ध । अनरधहर--राव अनिरुद्धसिंह के वंशज । अरियांण–वैरी, युद्ध मैदान ।

६. चावौ--प्रसिद्ध, महत्वाकांक्षी । अगंज--वीर अविजित । वंस जळ चाढ़ै--वंश को गौरवान्वित कर । जैत--विजय । गूंदांहूंत--मज्जा से । धपाड़ै--तृप्त करके । खळां--शत्रुओं । पटैत-- पट्टाधिकारी, सिंह ।

७. पळचारां--मांस भक्षियों । पळ--मांस, रक्त । रीधौ--प्रसन्न हुआ । यळ--भूमि । नेर--नगर । लीधौ--लिया । माळ रै--माला के । सुमेर--सुमेरु ।

१५८. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा रौ

दिन मांडै कपट फराकी दोयण, भड़ घोड़ां पाकी मग भाळ ।
कुण गंजै बळवंत कजाकी, डाकी सज ऊभौ गाढ़ाळ ॥१॥
भाळै निजर सिकारी भूपत, रुख ओखळ टाळै दोय राह ।
पोहौ थाहर समळौ पूंतारै, वैराहर अचळौ वाराह ॥२॥
दमंग ज्वाळ लोयण छेकळ दळां मग टेकळ ओयण असमेद ।
जुध मांडै चौड़ै थह जेखळ, अेकळ गिड़ दूसरौ ऊमेद ॥३॥
मींडै करग सड़क बीतै मन, वीरत कुण जीते खग बाह ।
आवै नहीं दळां आसंग अे, मावै नहीं खळां उर मांह ॥४॥

---

१५८. गीतसार— उपर्युक्त गीत बूंदी राज्य के गोठड़ा स्थान के महाराज पदवी वाले वीर बलवंतसिंह हाडा पर रचित है। महाराज बलवंतसिंह ने अंग्रेजों के पक्षधर महाराव-विशनसिंह बूंदी नरेश से लोहा लेकर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में गीतनायक की रणवीरता और साहस का वर्णन है।

---

१ मांडै—करते हैं, रचते हैं। फराकी—चालाक, फुर्तिला। दोयण—वैरी। भड़—भट, योद्धा। पाकी—खोज निकालने वाले, मार्गण करने वाले। मग—मार्ग। भाळ—टोह लगाकर, खोज-बीन कर। गंजै—नाश करे। कजाकी—वीर। डाकी—जबरदस्त योद्धा। सज ऊभौ—युद्धार्थ सज कर खड़ा हुआ। गाढ़ाळ—दृढ़ वीर, गम्भीर।

२. भाळै—देखता है, टोह में रहता है। रुख—भांति, तरह। ओखळ—प्रहार, दावघात। टाळै—बचाता है, दूर कर देता है। दोय राह—हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के। पोहौ—राजा, योद्धा। थाहर—स्थान, सिंह की मांद। पूंतारै—प्रोत्साहित करता है। वैराहर-वैरीशालोत (?) वैरियों को। अचळौ—अविचल। वाराह—सुअर, वीर।

३. दमंग ज्वाळ—अग्नि स्फुलिंग। लोयण—लोचन, नेत्र। छेकळ—छेद कर पार निकल जाने वाला, इधर से उधर निकल जाने वाला। दळ—दल, सेना के। मग—मार्ग। टेकळ टेकधारी, अपने प्रण का निर्वाह करने वाला। ओयण—चरण, पैर। असमेद—अश्वमेध यज्ञ। जुध मांडै—युद्ध लड़ता है। चौड़ै—चौगान में। थह—स्थान, कंदरा। जेखळ—सुअर, वराह। अेकळ गिड़—एकाकी रहने वाला, वराहराज।

४. मींडै—दबाता है, मींचता है। करग—हाथ, तलवार। सड़क—सीधा। कुण—कौन। जीते—विजय करे। खग वाह—खड्ग प्रहार योद्धा। दळां—सेना के। आसंग—वश में, साहस में। मावै नहीं—समाहित नहीं होता। खळां—वैरियों के। उर मांह—हृदय में।

१५६. गीत महाराव बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

झलंवां साज दसतान पंखां झपट, अरुण चख लपट भारथ अघायौ ।
अचाणक नाग कछवाह कुळ ऊपरां, उड़ै धकपंख वळवंत आयौ ॥१॥

चंच आछट खड़ग फाट जूसण चरड़, सीस तूसण वरड़ माणेस तूपी ।
बिहंड खंड करण पूगौ दरड़ बासियां, राव चहुवांण जुध गरुड़ रूपी ॥२॥

घाट नख मयंक बाण वजर घाव रौ, धाव रौ लळक पांण जजर धूप ।
तखा कुळ हतण पूगौ अजर ताव रौ, राव रौ बंधव खगराव रौ रूप ॥३॥

धड धड़च ठहर धाराळ खग धपाड़ै, खीझ वंवी सहर तड़छ खावै ।
उतारी लहर दूजा रतन आज तूं, अरि पनंग फेर नह जहर आवै ॥४॥

---

१५६. गीतसार-यह गीत बूंदी राज्य के गोठड़ा स्थान के महाराज बलवंतसिंह की युद्धवीरता से सम्बन्धित है। बलवंतसिंह ने जयपुर राज्य के उनियारा शासक पर आक्रमण कर पराजित किया था। कवि ने गीत में गीतनायक को गरुड़ और विपक्षी उनियारा के रावराजा को तक्षक नाग अंकित कर रूपक का विधान किया है।

---

१. झलंवां–झिलम, सिर के रक्षा कवच से संलग्न गर्दन का जालीदार रक्षा–उपकरण। दसतान–दस्तानें, हाथों का रक्षा कवच। पंखां–पंखों की। झपट–हमला, टक्करें। अरुण चख–क्रोध से लाल नेत्र। भारथ–युद्ध। अघायौ–पूर्ण तृप्त। अचाणक–अचानक। नाग कछवाहा–सर्प-रूपी कछवाह पर। उड़ै–उड़ कर। धखपंख–गरुड़। वळवंत–बलवंतसिंह।

२. चंच–चोंच। आछट–प्रहार कर। खड़ग–तलवार। फाट–विदीर्ण होकर। जूसण–कवच। चरड़–फटने से उत्पन्न ध्वनि। तूसण–सिर का कवच, ढाल। वरड़–टूटने से होने वाली आवाज। तूपी–घृत, मज्जा (?)। विहंड खंड–संहार करने, खण्ड खण्ड करने। दरड़ वासियां–सर्पों पर। जुध–युद्ध।

३. घाट–आकृति। नख–नाखून। मयंक बाण–चन्द्र बाण। वजर–वज्र। घाव रौ–घाव का। धाव रौ–गति का। पांण–बल। जजर–यमराज का। धूप–तलवार। तखा कुळ–सर्प वंश का। हतण–नाश करने। पूगौ–पहुँचा। अजर ताव रौ–असह्य आतंक। खगराव रौ–पक्षीराज को, गरुड़ को। रूप–स्वरूप।

४. धड़–घट, शरीर। धड़च–टुकड़े कर, नष्ट कर। धाराळ–तीक्ष्ण धार वाले। खड़ग–खड्ग से। धपाड़ै–तृप्त कर। खीझ–नाराज होकर। वंवी सहर–वंवी-रूपी शहर। तड़छ खावै–तड़फड़ाता है। लहर–विष की तरंग। दूजा–द्वितीय। अरि पनंग–वैरी रूपी तक्षक नाग। फेर नह–फिर नहीं, पुनः नहीं। जहर–विष।

१६०. गीत महाराज बलवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

समहर बळवंत बाहतां असमर, छूटा फिरंग दळां रत छौळ ।
रातौ देख अचभ्रम रतनागर, चांमळ कीधौ रंग चौळ ॥१॥
रुकां भड़ राडां अंगरेजां, दळ पंडव जूटा कुर द्रोण ।
संभ्रम थयौ पूछवै सागर, सरिता केम थयौ जळ श्रोण ॥२॥
हिन्दू गुरंड खगां हूचकिया, बहिया बाहण सूझ विचाळ ।
दिल सुध देव धुनि इम दाखै, रतनागर बहिया रतखाळ ॥३॥
असमर झाट बहादर वाळै, थट हैवर नह गरट थया ।
वसै पछै कैलास विचाळै, काळै जळ रंग चौळ किया ॥४॥

---

१६०. गीतसार— उपर्युक्त गीत गोठड़ा के महाराज बलवंतसिंह हाडा और अंग्रेज सरकार के बीच लड़े गए युद्ध का परिचायक है। गीत में कवि ने युद्ध की भयानकता प्रकट करते हुए समुद्र और चम्बल नदी के सम्वाद का वर्णन किया है। चम्बल के जल में रक्त प्रवाह के कारण रक्तिमता देख कर समुद्र ने चम्बल से लालिमा का कारण पूछा, तब चंबल ने बलवंतसिंह और ब्रिटिश सत्ता के आपसी युद्ध का उल्लेख कर समुद्र की विस्मयता का निवारण किया है।

---

१. समहर–युद्ध। बाहतां–चलाते, चोट करते। असमर–तलवार। फिरंग–अंग्रेज, यूरोपियन। रत छौळ–खून की बौछार अथवा तरंगें। रातौ–रक्तिम, लालिमा युक्त अचं भ्रम–आश्चर्यान्वित। रतनागर–समुद्र। चांमळ–राजस्थान में कोटा की प्रसिद्ध नदी चम्बल। रंग चौळ–लाल रंग।

२. रूकां–तलवारों। भड़–भट्ट। दळ–समूह। पंडव–पाण्डव। जूटा–भिड़े। कुर द्रोण–कौरव और द्रोणाचार्य, कुरुक्षेत्र में द्रोणाचार्य। संभ्रम–आश्चर्य। थयौ–हुआ। पूछवै–पूछता है। सरिता–नदी, चम्बल। केम–कैसे। जळ श्रोण–लाल जल, रक्तमय जल।

३. गुरंड–अंग्रेज। खगां–तलवारों से। हूचकिया–युद्ध किया। बहिया–बहा। प्रवाहित। बाहण–वाहन। बिचाळ–बीचमें होकर, भीतर से। दिल सुध–पवित्र-मन से। देव धुनि–चम्बल नदी, गंगा नदी। दाखै–कहता है। बहिया–बहे। रतखाळ–लोहू के नाले।

४. झाट–प्रहार। बहादर वाळै–महाराज बहादुरसिंह का पुत्र बलवंतसिंह। थट हैवर–अश्व सेना। गरट–समूह, ढेर। थया–हुए। वसै–निवास किया। पछै–तदनन्तर। काळै–वीर। चौळ–लाल।

१६१. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

जड़ळग समसेर चालतौ जीहां, भाणव नजर भाळतौ भलाय।
चाळाँ किया न खावै चांकौ, बळवंत ताखो नाग बलाय ॥१॥

नृप सत्रसालहरौ वडनांमी, वतरी पुर ऊधरौ वसै।
वप चाळियां तजे नह बाकी, डाकी पनंग सताव डसै ॥२॥

जहर डकार पड़ै नह जूनौ, धूनौ मन अहंकार धखै।
रिझायौ आवै सुण रूपक, भुजंग खिजायौ जलद भखै ॥३॥

विनती मंत्र जतन विसवासौ, दन हांसौ नह तजौ दुभाव।
पलटै नको अलानी पूरा, नृप सूरा ठेंठरा सुभाव ॥४॥

---

१६१. गीतसार–यह गीत महाराज बलवंतसिंह हाडा गोठड़ा के अधिपति के युद्ध-कौशल के वर्णन का है। गीत में कवि ने तक्षक नाग का रूपक बनाकर बलवंतसिंह के अदम्य साहस और पराक्रम का उल्लेख किया है। और यह भी प्रकट किया है कि बलवंतसिंह प्रसन्न करने से तो वश में आसकता है अन्यथा नहीं।

---

१. जड़ळग–कटार। समसेर–तलवार। जीहां–जिह्वा जीभ। भाळतौ–देखता हुआ। चाळां–छेड़छाड़, लड़ाई। चांकौ–किनारा काटने का भाव। ताखो–तक्षक नाग। नाग–सर्प। वलाय–वला, संकट।

२. सत्रसालहरौ–राव शत्रुशाल का वंशधर, बलवंतसिंह। वडनांमी–बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त। वतरी–उतर कर। ऊधरौ–ऊपर की ओर, स्वर्ग में। वसै–निवास करे। वप–वपु, शरीर। डाकी–योद्धा। पनंग–सर्प। सताव–तुरन्त। डसै–दंशन करे।

३. डकार–भोजन के बाद तृप्ति सूचक कंठ से निस्सृत वायु। पाचन सूचक वायु। जूनौ–पुराना, जीर्ण। धूनौ–मन के अनुसार चलने वाला, धुन वाला, श्रेष्ठ। धखै–क्रुद्ध, वृद्धि। रिझायौ–प्रसन्न किया हुआ, मोहित किया हुआ। रूपक–यशकाव्य। भुजंग–सर्प। खिजायौ–रुष्ट किया हुआ। जलद–जल्दी। भखै–काट खाता है।

४. विनती मंत्र–विनय रूपी मंत्र से। जतन–यत्न पूर्वक। विसवासौ–विश्वास में लो। हांसौ–हँसी। तजौ–त्याग दो। दुभाव–दुर्भावना, द्वैत भाव। न को–कोई नहीं। पूरा–परिपूर्ण। ठेंठरा–प्रारंभ का ही, सदैव का ही। सुभाव–स्वभाव, प्रकृति।

१६२. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

तई लूमतां कटक दिन भीड़ सादल तणौ, जगन दत बार बळवंत जाडौ।
अणी री वखत ऊपर करण आवियौ, आवियौ तणी री वखत आडौ ॥१॥

मामले अथग जान सीस भर मांडतां, गौड़ दान छांडतां दत करग नेम।
खाग री वखत अवसाण सधियौ खतम, त्याग री वखत भीड़ थयौ तेम ॥२॥

कटक दिखणाद अवघाट थटतां कळह, सुकवि अणघाट लखि वींद सटतां।
सार कटतां तूंहिज ओट रहियौ सरम, बळ कीयौ तोहि आचार बंटतां ॥३॥

वहादर सुतन अणसंक खळ विभाड़ण, लंक गढ़ हुवा हाजर लुटावै।
पुहमी रजवाट पारख जगत पतीजा, असावर भतीजा अंजस आवै ॥४॥

---

१६२. गीतसार—उपर्युक्त गीत में महाराज वलवंतसिंह हाडा की युद्ध और दानवीरता का वर्णन है। वलवंतसिंह ने शिवपुर वड़ौदा के राजा के विवाह में याचकों को दान देकर प्रसन्न किया और शिवपुर पर मरहटों का आक्रमण होने पर वहां के गौड़ राजा की ओर से मरहटों से युद्ध लड़ा। प्रसिद्धि है कि गौड़ राजा के हाडा क्षत्रियों में विवाह करने पर वलवंतसिंह ने कन्यादान में उसी का शासित राज्य शिवपुर देने की वात कही थी।

---

१. तई—आततायी, शत्रु, तव। लूमतां—चारों ओर से घेरे में लेते समय। कटक—सेना। भीड़—सहायता। सादल तणौ—शार्दूलसिंह तनय अथवा शार्दूलसिंह के। जगन—यज्ञ, विवाह। दत—दान। वार—समय। जाडौ—घना, वहुत। अणी—सेना। ऊपरं करण—सहायता करने के लिए। तणी री वखत—विवाह के समय पर। आडौ—रक्षक वनकर, सामने।
२. अथग—अपार। मांडतां—चित्रित करते, मंडित करते। गौढ़—गौड़ जाति के राजा। छांडतां—छोड़ते, देते। दत—दान। करग—हाथ। खाग री—तलवार की। अवसाण—अवसर। खतम—पूर्ण। भीड़—सहायक। थयौ—हुआ। तेम—तैसे।
३. कटक दिखणाद—दक्षिण वालों की सेना, मरहठों की सेना। अवघाट—भयंकर। थटतां—सज्जित होते, एकत्र होते। कळह—युद्ध। लखि—जानकर, देखकर। वींद—वर। सार—लोहा, शस्त्र। कटतां—प्रहार होते, युद्ध होते। ओट—रक्षक, आड। आचार—दान। वंटतां—देते समय, वितरण होते।
४. अणसंक—निशंक। खळ—वैरी। बिभाड़ण—नष्ट करने। पुहमी—पृथ्वी। रजवाट—क्षात्रवृत्ति, क्षत्रियत्व। पारख—जानकारी, परीक्षा में। पतीजा—विश्वास हुआ, पूर्ण सिद्ध हुआ। असा—ऐसा। अंजस—गर्व, खुशी।

१६३. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

किसूं बणावौ तोल दूसण धरौ कागदां, कहै बळवंत भड़ रोस काथैं ।
व्रत अडर न छोड़ू जितै खग वाहरौ, माहरौ जितै घड़ सीस मांथैं ।।१।।

चढ़ौ अंगरेज माधव कडौ चापड़ै, आपड़ै जेज खग चोट अतरै ।
मज रण छेड़ि कासूं हवा मांणणौ, जांणणौ इती घड़ सास जतरै ।।२।।

ओट किम फिरंग छोगाळ छळ तेवड़ौ, भिड़ौ तजि कोट चढ़ि तुरंग भाळौ ।
जुगण खग अमल नह पंथ छोड़ूं जितै, इतै सावत कमळ मूंफ वाळौ ।।३।।

बहादर सुतन आयां कटक बाजियौ, जोड़ विण कियौ चित खटक जाडै ।
घड़छघड़ अरिंदां भड़ियौ नयण धीटतां, हीटतां वयण जिम करी हाड़ै ।४।

---

१६३. गीतसार—ऊपर कथित गीत में कवि ने गीतनायक के मुख से अपने विरोधी अंग्रेज सत्ता के पदाधिकारियों को चेतावनी भरे शब्दों में कहलवाया गया कि हे अंग्रेज अधिकारियों ! छल कपट का मार्ग ग्रहण क्यों कर रहे हो, सीधे रण में सामना करो। जब तक शरीर में प्राण है तब तक अपनी प्रतिज्ञा का पालन करता रहूंगा ।

---

१. किसूं—किसलिए, क्या । बणावौ—बनाते हो । दूसण—दोष, कसूर । भड़—योद्धा । रोस—रोष, नाराज । काथैं—शीघ्रता से । अडर—निडर । जितै—जितने । खग—तलवार । वाहरौं—प्रहार को । माहरौ—मेरा । घड़—घट । माथैं—पर ।

२. माधव—संभवतः माधवसिंह झाला जो अंग्रेजों का पक्षपाती था । कडौ—निकलो । चापड़ै—युद्ध के लिए । आपड़ै—पकड़ै, अपने । जेज—विलम्ब । खग चोट—तलवार का आघात । अतरै—इतने । छेड़ि—प्रारंभ कर, छेड़छाड़ कर । मांणणौ—भोगना । इती—इतनी । सास—श्वास, प्राणवायु । जितरै—जितने ।

३. ओट—आड में रहकर, छिपकर । फिरंग—यूरोपवाले, अंग्रेज । छोगाळ-सिर पर धारण किये जाने वाले साफे या टोप पर लगाया जाने वाला तुर्रा, सैनिक । छळ—युद्ध, कपट । तेवड़ौ-विचारते हो, शुरू कीजिए । भिड़ौ—सामना करो । कोट—दुर्ग । तुरंग-घोड़ा । भाळौ—देखो, फिर रणकौशल देखो । जुड़ण--जुटने, टक्कर लेने । अमल—अधिकार । नह—नहीं । जितै—जितने । इतै—इतने । सावत—अखंडित । कमल—सिर ।

४. बहादर सुतन—महाराज बहादुरसिंह तनय, गीतनायक बलवंतसिंह । कटक—सेना । बाजियौ—लड़ने लगा । विण—विना । चित—चित्तमन, पछाड़ देकर सीधा चित कर दिया । खटक जाडै—प्रहारों की झड़ी, गहरी अनबन । घड़छ--काटकर, टुकड़े-टुकड़े कर घड़—शरीर । अरिन्दां—वैरियौ, । झड़ियो—गिरा, कट कर पड़ा वयण—वचन। जिम—जैसी, ज्यों । करी—की ।

१६४. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रो

भोळा अंगरेज अली कांई भाखै, इम आखै बलवंत अभंग ।
उतबंग लार लगाया आवध, आवध री लारां उतमंग ॥१॥

बहादर सुतन एम मुख बोलै, ब ल तौलै कांसूं चखबोह ।
लोहां कमळ तणी लज लागी, लीजै कमळ लूटियां लोह ॥२॥

झळ धारा गौरां सिर झाड़ूं, वैरी दळ पाड़ूं भर बाथ ।
सिर चै साथ ससत्र सम्हाया, सिर मौ हूवौ ससत्रां साथ ॥३॥

कहतौ वचन जिसा हठ कीधा, पिसणां रत पीधा अणपार ।
सिर तूटां लीधा पर साथां, हाथां नह दीधा हथियार ॥४॥

---

१६४ गीतसार— ऊपर वर्णित गीत महाराज बलवंतसिंह हाडा गोठड़ा का है । अंग्रेजों ने बलवंतसिंह को चारों ओर से घेर कर आत्मसमर्पण करने के लिए कहलवाया तब उस वीर ने वापस उन्हें उत्तर देते हुए कहा कि हे अंग्रजों ! शस्त्र त्यागकर आत्मसमर्पण करने की यह अनुचित बात क्या कहते हो, वीर कभी शस्त्र त्यागता है ? शस्त्र तो मेरे सिर के साथ जुड़े हुए हैं । जिस दिन सिर धड़ से कट कर गिरेगा उसी दिन शस्त्र हाथ से छूटेंगे ।

---

१. भोळा—भोले, सरलचित्त । अळी—व्यर्थ । कांई—क्या । भाखै—कहते हो । इम—इस प्रकार, यों । आखै—कहता है । अभंग—दुर्धर्षवीर । उतबंग—शीश, उत्तमांग । लार—पीछे, साथ । आवध—आयुध, हथियार । लारां—पीछे, साथ ।

२. एम—इस प्रकार, ऐसे । बळ तोलै—अपनी शक्ति को तोलकर । कांसूं—कसे, किससे । चखबोह—किनारा काटना, चूकना । लोहां—शस्त्रों । कमळ तणी—मस्तक की । लज लागी—लज्जा लगी हुई है । लूटियां—छीन कर, लेने पर । लोह—शस्त्र ।

३. झळ धारा—जलती अग्नि जैसी तलवार की धारा । गौरां—अंग्रेजों । सिर—शीश, पर । झाड़ूं—गिराने का भाव, प्रहार करना । पाडूं—रणभूमि में मार कर पटकने का भाव । भर बाथ—भुजाओं में लपेट कर, पछाड़ देकर । चै—के । ससत्र—हथियार । सम्हाया—सम्भाले हुए हैं, लिये अथवा ग्रहण किये हुए हैं । मौ—मेरा । ससत्रां—शस्त्रों के ।

४. कहतौ—कहता था । जिसा—जैसा । कीधा—किया । पिसणां—पिशुनों, बैरियों । रत—रक्त, लहू । पीधा—पिया, पान किया । अणपार—अपार । तूटां—टूटने पर, कटने पर । पर साथां—पराये साथियों ने, शत्रुओं ने । हाथां—अपने हाथों से । नह दीधा—नहीं दिया ।

१६५. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

अपछर सिव सकति ग्रीध इम आखै, आया जुध नूंतिया अठै ।
कद अब खळां छोड़सी केड़ौ, कह हाडा पौढ़सी कठै ॥१॥

परी ईस जोगण खग प्रभणै, सात पहर वीता जुध साल ।
झड़सी कठै कमळ खग झामां, पड़सी किम ठामां पूंचाळ ॥२॥

रंभा भव काळी दुज रूठै, हाडा बळवंत रतनहरा ।
अब कर किता तोड़सी आवध, धड़ केथी लौटसी धरा ॥३॥

सिर वर रुधिर दिये पळ सूरां, वधि पिंड पूरां पितर विधान ।
धड़ भूरा भाड़ियौ खग धारां, सजि चारां पूरा सनमान ॥४॥

---

१६५. गीतसार–ऊपर कथित गीत महाराज बलवंतसिंह हाडा गोठड़ा की युद्धवीरता का है । गीत में अप्सरा, शिव, शक्ति और मांसभक्षी गृद्ध बलवंतसिंह से यह पूछते अंकित किये हैं कि हे वीर ! अब शत्रुओं का पीछा कब छोडोगे, और किस जगह धराशयन करोगे ? अन्त में बलवंतसिंह द्वारा उपयुक्त सभी याचकों को वांछित वस्तुएं प्रदान कर युद्ध में प्राण त्यागने का वर्णन किया है ।

---

१. अपछर–अप्सरा । सिव–शिव । सकति–शक्ति, रणचण्डी । ग्रीध–गृद्ध पक्षी । इम–ऐसे । आखै–कहते हैं । नूंतिया–निमंत्रण से बुलाए हुए । अठै–यहां । कद–कब । खळां–वैरियों का । केड़ौ–पीछा । पौढ़सी–सोवेगा । कठै–कहां ।

२. परी–अप्सरा । ईस–ईश, शिव । जोगण–योगिनी, शक्ति । खग–पक्षी, गृद्ध । प्रभणै–कहते हैं । पहर–प्रहर । वीता–व्यतीत हुए । जुध–युद्ध । झड़सी–गिरेगा । कठै–किस स्थान पर, कहां । कमळ–सिर । खग–तलवार । पड़सी–पड़ेगा । किम–किस, कैसे कौनसी । ठामां–स्थानों । पूंचाळ–बाहुबली ।

३. रंभा–अप्सरा । भव–शिव । काळी–कालिका देवी । दुज–द्विज, पक्षी, गृद्ध । रूठै–रुष्ट हुए । रतनहरा–महाराव रतनसिंह के वंशधर । कर–हाथ । किता–कितने । तोड़सी–तोड़ेगा । आवध–शस्त्र । धड़–धट, शरीर । केथी–कहां पर, किस स्थान पर । लौटसी धरा–पृथ्वी पर गिरेगा ।

४. सिर–शीश, शिव को मुण्ड माला के लिए दिया । वर–अप्सरा को पति दिया । रुधिर–दुर्गा को रक्तपान करने को लहू दिया । पळ सूरां–गृद्धों को भोजन के लिए वीरों का मांस दिया । वधि–बढ़ कर, मर कर । पिंड–शरीर । पूरां–पूर्ण । पितर विधान–पितृ गणों को पिण्डदान कर तर्पण का विधान पूर्ण किया ।

१६६. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

करी साज रथ बाज मुर हेक विग्रह कवच, राम त्रिगुण खट दूण ससत्र आंटी।
जग चढ़ौ मरण रजपूत कुळवंत जतू, पढ़ौ बळवंत कनैं वीर-पाटी ।।१।।

सूर पण तेज बुध अचळ धीरज सरी, चातरी विभव दत भाव चाळौ।
तई दळ दहण अवसाण साधो ततौ, अराधौ बहादरसिंघ वाळौ ।।२।।

सोक मन मोह सपने नकूं सधारै, अधारै छोह वीरत अरांनौ।
गाढ़ चाहौस तू घणौ जाहर गहौ, बुधाहर तणौ उपदेस बांनौ ।।३।।

मोखि साधना रत भोग परमाण री, धरम अवसाण री दुति बधेवा।
तन सिखंड प्राण री अवर मेधा तजौ, सजौ चहुवांण री अखंड सेवा ।।४।।

---

१६६. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि ने हाडा वीर महाराज बलवंतसिंह के युद्ध आदर्श का वर्णन करते हुए योद्धाओं को कहा है - यदि संसार में युद्धवीर कहलाना चाहते हो तो बलवंतसिंह युद्ध का जो पाठ लिख गया है उसका अनुसरण करो और शरीर का मोह त्याग कर युद्ध करो।

---

१. करी—हाथी। बाज—घोड़े। मुर—तीन। हेक—एक। विग्रह—युद्ध। त्रिगुण, खट, दूण - छत्तीस अर्थात् छत्तीस प्रकार के शस्त्र। ससत्र—अस्त्र-शस्त्र। आंटी—शत्रुता, शक्ति। जतू—जितने, जो। कनैं—पास से। वीर पाटी—वीरता की पट्टी, वीरता का पाठ।
२. सूरपण—शूरता। बुध—बुद्धि। अचळ—अटल। विभव—वैभव। दत भाव—दान देने का भाव। चाळौ—शौक, कुतूहल। तई—आततायी, वैरी। दळ—समूह, सेना। दहण—भस्म करने। अवसाण—अवसर, युद्ध। ततौ—तत्पश्चात्, उतना। अराधौ—आराधना करो।
३. सोक—शोक, दुःख। नकुं—नहीं, कोई नहीं। सधारै—धारण करे। अधारै—आधार बनावें। छोह—जोश, उत्साह। वीरत—वीरत्व। अरांनौ—बहादुरी (?)। गाढ़—दृढ़ता। घणौ—घना, अधिक। गहौ—ग्रहण करो। बुधाहर—महाराव बुधसिंह के वंशज बलवंतसिंह। तणौ—को। बांनौ—गुण, मर्यादा पालन का गुण।
४. मोखि—मोक्ष त्याग। अवसाण—अवसर। दुति—द्युति, कांति। बधेवा—बढ़ाने को। अवर—अन्य। मेधा—बुद्धि, विचार। तजौ—त्यागो। सजौ—तैयारी करो, सीखो।

१६७. गीत महाराज बळवन्तसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

दगौ धारणौ नहीं छौ फेर चौफेर फिरंगी दौळां,
सत्ता वीजा हारणौ नहीं छौ सवद्दे स।
भाराथ जूटतां काज सारणौ सही छौ भूप,
वूंदी नाथ मारणौ नहीं छौ वळूतेस ॥१॥

उभै राहां भोक वागां वैंडाक भोकतौ आडो,
सामराथां रोकतौ सत्राटां जाडो साथ।
तणा वहाद्रेस माडां जोखम्मो न होतो तो तो,
वळां आडी ढाल हाडो होतो वळानाथ ॥२॥

जंगां में अढ़ंगो छौ छट्टा में पाराथ जेहो,
माथै राव लीधो रौळरट्टां में म थोग।
छत्री वळूतेस खळां थट्टां में हकालणौ छौ,
जको सहज सट्टा में न भांजणो छौ जोग ॥३॥

---

१६७. गीतसार– उपर्युक्त गीत हड़ौती के गोठड़ा ठिकाने के स्वामी महाराज बलवंतसिंह हाडा पर रचित है। गीत में कवि ने बलवंतसिंह को छल पूर्वक मरवाने के लिए बूंदी नरेश को उपालंभ दिया है। बलवंतसिंह अद्वितीय वीर और परम स्वाभिमानी सरदार था। कवि ने उसकी वीरता की अनेक विध सराहना की है।

---

१. फेर चौफेर–चारो ओर से घेरे में लेकर। फिरंगी–अंग्रेज। दौळां–चारों तरफ। सत्ता वीजा–दूसरा शत्रुशाल। सवद्दे स–वचनदेकर निर्वाह नहीं करना। भाराथ–युद्ध। जूटतां–लड़ते। सारणौ–पूर्ण करने वाला, सफल करने वाला। मारणौ–मारना। वळूतेस–बलवंतसिंह को।

२. उभै राहां–हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मो वाले। वागां–लगामें। वैंडाक–घोड़े। भोकतौ–चलाता। आडो–सामने। सामराथां–युद्धों में। सत्राटां–शत्रुओं के। जाडो साथ–प्रबल सेना, घनी सेना। तणा–का, तनय। माडां-बलपूर्वक। जोखम्मो–जोखिम, मृत्यु। वळां–आडावळा, पहाड़ का नाम, बूंदी राज्य। आडी–ओट स्वरूप। वळानाथ–बूंदी नरेश।

३. अढंगो–विकट। छट्टा–प्रभाव, छवि। पाराथ जेहो–अर्जुन जैसा। माथै–सिर, ऊपर। रौळ रट्टा–युद्ध विग्रह में। थोग–थाह लेने वाला, सहारा। छत्री–क्षत्रिय। खळां थट्टां में–शत्रु सेना में, युद्ध के समय शत्रु सेना पर। हकालणो छो–धकेलना था, उत्साहित कर भेजना था। जको–वह, जो। सहज सट्टा में–व्यर्थ ही, निष्प्रयोजन ही। भांजणो–मारना। जोग–योग्य।

पढ़ायां बीयां रै काय मारियौ गोठड़ा पती,
ऊदासी धारियौ सारै हींदू आसुरांण।
रागां सिंधू पांनां लागां पछतासी राबराजा,
चन्द्रहासां बागां याद आसी चाहूवांण ॥४॥

---

४. पढ़ाया–सिखाने से। बीयां रै–दूसरों के। काय–क्या, किसलिए। ऊदासी–उदासीनता। सारे–समस्त। आसुरांण–मुसलमान। रागां सिंधू–युद्ध का राग; पांनां–नगाड़ों के डंके। पछतासी–पश्चात्ताप करेगा। चन्द्रहासां–तलवार। बागां–बजने पर। आसी–आयेगा।

१६८. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

माडा सुणारे अंगरेज मनावै, गाढ़ा तैं कीधा गरट ।
आचां लोह गहै मति आडा, हाडा अब तो छोड़ हट ॥१॥

तैं घण दुरंग काढ़िया ताळा, मतवाळा करि घांण मथांण ।
बार वार फेरै विसटाळा, चाळा मति मांडे चहुवांण ॥२॥

पतसाही फुरमाण म पैले, झैले मति वाहतौ झग ।
माथौ किम धूणै महाराजा, आजा साहब तणै अग ॥३॥

---

१६८. गीतसार– उपर्युक्त गीत महाराज वलवंतसिंह हाडा गोठड़ा की रण-वीरता से सम्बंधित है। गीतनायक ने अंग्रेजों और महाराव बूंदी की सेना से घमासान लड़ाई कर वीरगति प्राप्त की थी। वलवंतसिंह ने अपनी थोड़ी-सी सेना से अंग्रेज समर्थित बूंदी की सेना को आन्दोलित कर दिया था।

---

१. माडा–जबरन। गरट–घेरा, समूह। आचां–हाथों में। लोह–हथियार आडा–बांकुरा, सामने। हाडा–महाराज वलवंतसिंह हाडा। छोड–त्याग दे। हट–हठ, दुराग्रह।

२. घण–बहुत-से। दुरंग–किले। काढ़िया–निकाले। ताळा–दस्यु, वैरी। घांण-मथांण–भयानक युद्ध। विसटाळा–संधि करवाने वाले, दूत। चाळा–युद्ध। मांडै–करे, रोपे।

३. म पैले–मत लोपे। झैले–धारण करे। वाहतौ–चलाता, चलता। झग–झगड़ा। धूणै–धुनता है, मना करता है। आजा–आजाओ। तणै–के। अग–आगै, सम्मुख।

इम बोलै मूछां आंवळतौ, वळवंत चख भळतौ मजबूत ।
खेटा पखै जणी धन खायौ, राणी नंह जायौ रजपूत ।।४।।

सुणतां इम तविया घासांहर, कोटा लग छविया कटक ।
ऊभा पगां न देसी ईजत, रवताळौ लेसी रटक ।।५।।

वाजी तासा घूमै घण वाहर, मांडे आहर मार मुख ।
थळ पाटण तीरथ विच थाहर, रुपियौ नाहर तणी रुख ।।६।।

हूकळ कळळ वळौवळ हाका, तोपां भळ मंगळ रणताल ।
कुण गंजै वळवंत कजाकी, डाकी सज ऊभौ डाढ़ाळ ।।७।।

धर छाती पर सैन धकावै, ताई घण खावै तड़फ ।
साम्हौ कुण आवै सांफळवा, हाडो जमवाळी हड़फ ।।८।।

पहर सात गोळां जुध पड़ियौ, रावण रढ़ रढ़ियौ जमरांण ।
आवण काम खाग ऊकढ़ियौ, चीता जिम कढ़ियौ चहुवांण ।।९।।

---

४. आंवळतौ–मरोड़ता । वळवंत–वलवान्, वलवंतसिंह । चख–नेत्र । भळतौ–जलते, क्रोध में धधकता । खेटा–लड़ाई । पखै–विना । जणी–जिसने । नह जायो–उत्पन्न नहीं किया ।

५. घासांहर–सेना । कोटा लग–कोटा स्थान तक । छवियां–शोभित हुए, फैल गए । कटक–सेना । ऊभां पगां–विना मरे अथवा घायल हुए । न देसी–नहीं देगा । रवताळो–रावत पदधारी, वड़े सरदार । रटक–टक्कर ।

६. वाजी–वज कर । तासा–तासा नामक वाजे (वाद्य यंत्र) । वाहर–चारोंओर, रक्षक । मांडे–करे । आहर–लड़ाई । थळ–स्थल, स्थान । पाटण तीरथ–केशवराय पाटन नामक तीर्थस्थान । थाहर–सिंह की गुफा, दुर्ग । नाहर–सिंह । रुख–भांति ।

७. हूकळ कळळ–सेना के अश्वों की कोलाहल ध्वनि । वळौवळ–वरावर, निरंतर । भळ–ज्वाला । मंगल–अग्नि । रणताळ–रण-स्थल । गंजै–नाश करे । कजाकी–वीर । डाक–महान् वीर । सभ–सज कर । ऊभौ–सामने खड़ा । डाढ़ाल–वाराह, सूअर, शूर ।

८. छाती–वक्ष स्थल । पर सैन–वैरियों की सेना । ताई–तव भी, तोभी । सांफळवा–युद्ध करने । जमवाळी–यमराज की । हड़फ–टक्कर, मुकावला, हड़पने का भाव ।

९. रढ़–हठ । रढ़ियौ–लड़ा, हठीला । आवण काम–युद्ध में मरने के लिए । ऊकढ़ियौ–वाहर निकला । जिम–ज्यों । कढ़ियौ–भरता हुआ वाहर निकला ।

सुत धूंकळ दळ भ्रात सहेतो, सेर बंधव ग्रहिया भुज भार ।
सहर हाट रचियौ चहु सूरां, ब्राट बाट खागां बौपार ॥१०॥

भभकै घाव ऊछटै भेजा, तूटै धज नेजा तड़क ।
वैराहर पाड़ै दल बारां, धारा तीरथ तणी धक ॥११॥

पलटै जटी धकावै पैलां, गैला खग वाहै गजर ।
दळ चौकस चहुवै बळ दावै, ग्रावै ग्रावै कहै ग्रर ॥१२॥

हलचल नरां हैमरां हड़बड़, भड़पड़ पंखण तोप भग ।
बहादर सुतन हाक जुध बागा, लड़ियौ खागां पहर लग ॥१३॥

चामळ नीर श्रोण रंग चाढ़ै, पड़ियौ दल पाड़ै पचरंग ।
खल रूठौ वूठौ भड़ खागां, बल छूटौ तूटा उतवंग ॥१४॥

— चण्डीदान मीसण री कह्यौ

---

१०. सुत धूंकल–पुत्र धौकलसिंह । दल–दलपतसिंह । सहेतो-सहित । सेर–शेरसिंह । बाट बाट–मार्ग मार्ग पर । खागां–तलवारों का ।

११. भभकै–भभक कर । ऊछटै–ऊछल कर । भेजा–मज्जा । तूटै–टूटते हैं । धज–ध्वजा । नेजा–निशान, भाले । तड़क–तड़ तड़ की ध्वनि करके, टूटने की क्रिया का भाव । वैराहर–वैरीशाल का वंशज वलवंतसिंह । पाड़ै–गिराता है । दल–सेना । वारां–पीछा करने वाली । धारातीर्थ–युद्ध भूमि । धक–इच्छा, उमंग, जोश ।

१२. जठी–जिधर ही । धकावै–पीछे धकेले । पैलां–विपक्षियों को, वैरियों को । गैला–उन्मत्त, पीछे । खग–तलवार । वाहै–चलाता है । गजर–निरंतर प्रहार । चौकस–सावधान । चहुवै बळ–चारों तरफ । ग्रावै ग्रावै–ग्राता है ग्राता है । ग्रर–वैरी ।

१३. हैमरां–घोड़ों । हड़वड़–हड़वड़ाहट, भयजनित ग्रस्तव्यस्तता । भड़पड़–भटापट, भपट, ध्वनि । पंखण–गृद्धों के पंखों की । भग–ज्वाला । वागर–लड़ने लगा । पहर लग–एक प्रहर तक ।

१४. चामळ–चम्बल नदी । श्रोण रंग–लहू का रंग । पचरंग–पंचरंगा ध्वज । रूठौ–रुष्ट हुग्रा । वूठौ–वरसा । भड़–भड़ी, बौछार । खागां–तलवारों की । उतवंग–शीश, मस्तक ।

१६९. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

अंगरेज कहै मत भरै उलाळा, तोड़ण गढ़ ताळा तरजूत ।
अब तो मान बहादर वाळा, रे ओगण गाळा रजपूत ॥१॥

समै देख कर आच सलामी, पाड़ै मत खामीस पड़ ।
दे आचाबंध आजा ग्रह दांवण, रावण वाळी छोड़ रढ़ ॥२॥

इम बोलै तोलै खग आचां, अणबोलै चहुंवाण अनै ।
अंगरेजां धड़ सीस उतारूं, मारू जद आळगै मनै ॥३॥

कहतां झटक बाज नद काळा, त्रंबक अचाळा कटक तणा ।
अेकण बळवंतसींग ऊपरां, घासांहर लूंबिया घणा ॥४॥

---

१८९. गीतसार– प्रस्तुत गीत महाराज बलवंतसिंह हाडा गोठड़ा की वीरता और युद्ध का परिचायक है। गीत में अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण कर देने के आग्रह करने पर भी गीतनायक के द्वारा भयानक युद्ध लड़ कर काम आने का वर्णन है। बलवंतसिंह ने अपने शरीर में प्राण रहते अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया था।

---

१. उलाळा–छलांगे। तरजूत–उपाय (?)। ओगण गाळा–अवगुणकारी, विरोधी।

२. समै–समय। आच–हाथ। खामीस–क्षमा का पाठ, कमी। आचाबंध–दोनों हाथ बांध कर। ग्रह दांवण–हाथों को वस्त्र से बांधने को दांवण कहते हैं। रढ़–हठ।

३. इम--इस प्रकार। तोलै खग--तलवार को बल पूर्वक धारण कर अथवा प्रहार के लिए ऊपर उठा कर। अणबोलै–चुपचाप। उतारूं–काट कर अलग करूं। आळगै–मन लगे।

४. झटक–तत्काल, प्रहार। नद--नर्दन, नाद। त्रंबक--नगाड़े। अचाळा–अपार। कटक--सेना। तणा--का। अेकण--अकेले। घासांहर--सैन्य दल। लूंबिया--चारों ओर से प्रहार करने लगे। घणा--बहुतेरे।

पड़ तोपां इक साथ पलीता, धूंवांधोर गोळा धमरूळ ।
बावर हाव कहर भड़ वूठौ, सात पहर जूटौ सादूळ ॥५॥

भड़ हाडा सौ हुण वडभागी, डाहुण अनड़ विलागी डाक ।
लोहां झाल कहर घस लागी, अेक पहर वागी अेराक ॥६॥

फांचर कमळ उडै धड़ फूटै, गोळा झड़ तूटै गजव ।
कीधा समर ऊमेद कळोधर, पैंड पैंड असमेद प्रव ॥७॥

रमियौ जितै खळां सिर रूठौ, हैजम धड़छि विछूटौ हंस ।
पड़ियां धरा न खूटौ पांणिप, सिर तूटौ छूटौ साहंस ॥८॥

— चण्डीदान मीसण रौ कह्यौ

---

५. पलीता--वत्तियां । धमरूळ--वरसा, वौछार । कहर--प्रालेय, विपत्ति । वूठौ--वरसा । जूटौ--भिड़ा, लड़ा । सादूळ--सिंह वीर ।

६. अनड--अनम्र, अचल । विलागी--लगी । डाक--आवाज, बोली । वागी--चली. वजी । अेराक--तलवार ।

७. फांचर--लम्बे टुकड़े । कमळ--सिर के । झड़--झड़ी । समर--युद्ध । कळोधर--कला को धारण करने वाले । प्रव--पर्व ।

८. रूठौ--नाराज हुआ । हैजम--अश्व सेना । धड़छि--संहार कर । विछूटौ--छूटा, निकला । हंस--प्राण । खूटौ--समाप्त हुआ । पांणिप--बल । साहंस--साहस ।

१७०. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

सघण थाट फौजां विखम कोह रचियौ समर, छोह भालां डंमर गैण छायौ।
करौ गाढ़ा जतन वेग साहब कहै, ऊकढ़ी तेग बळवंत आयौ ॥१॥

सोर झळ विलागा बाण गोळा सणंक, बाढ़ खागां झणक लाय वूठौ।
पुणै अंगरेज दे दे कदम पागड़ै, तिसा खग सागड़ै गजब तूठौ ॥२॥

घोर तोपां जळळ वाज तासा धरर, जमीं थरहर विखम कोह जाडो।
उबारण वणै जिम घणी राखौ अटक, हणै उपड़ांखियौ कटक हाडो ॥३॥

सभां दळ झाड़ अवनाड़ पड़ियौ समर, वोल जैजै अमर लोक वाणी।
चाढ़ियौ वहादर सुतन धारां चढ़ै, पहाड़ां बळा रै सीस पाणी ॥४॥

---

१७०. गीतसार—उपरि लिखित गीत महाराज बलवंतसिंह हाडा गोठड़ा स्थान के स्वामी की वीरगति का बोधक है। गीत में गीतनायक के आक्रमण करने पर अंग्रेजों की सेना में भय उत्पन्न होने तथा अपनी सुरक्षा सुदृढ़ कर मुकाबला करने का वर्णन है। गीतनायक अंग्रेज सेना का संहार करता हुआ रणखेत रहा था।

---

१. सघण- घना। थाट--समूह। विखम--विषम। कोह--क्रोध। समर--युद्ध। छोह--उत्साह। डंमर--घटाटोप से। गैण--आकाश। छायौ--ढक गया। गाढ़ा--दृढ़। जतन--यत्न उपाय। ऊकढ़ी- नग्न, म्यान से निकाली हुई। तेग--तलवार। वलवंत--महाराजा वलवंतसिंह।

२. सोर--बारूद की। झळ—ज्वाला। विलागा--छूकर, लगे हुए। सणंक--तीरों और गोलों की ध्वनि। बाढ़--तिक्ष्ण धाराएं। खागां--तलवारों की। झणक--झण-झण ध्वनि करती। लाय--प्रचण्ड अग्नि। वूठौ—वरसा। पुणै कहते हैं। पागड़े--घोड़ों की रकाबों में। नागड़े--विद्रोही वीर। तूठौ--वरसाने लगा, तुष्ठ हुआ।

३. जळळ—भयंकर, आग बरसाती। तासा—तासा नामक वाद्य। थरहर—धूज कर, कम्पन कर। विखम—विषम, भयावना। कोह—धूलि, कौलाहल। जाडो—घना। उबारण—बचाव। घणी—अधिक। अटक—रुकावट, रोक। हणै—मारता है, अब। उपड़ांखियौ—जोशीला, क्रोधीला। कटक—सेना।

४. सभां--समस्त। दळ—समूह, सेना। झाड़—संहार कर, रणभूमि में गिरा कर। अवनाड़—अविनीप्त वीर, अडिग वीर। पड़ियौ—धराशायी हुआ। समर—युद्धभूमि। अमर—देवता। धारां चढ़ै—शस्त्रों की पैनी धाराओं से कट कर। पहाड़ां बळा रै—आडा बला पर्वतमालाओं के, बूंदी राज्य के। पाणी—कांति, आव।

१७१. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

बडा बोलतौ बोल उंदमाद करतौ विढ़ण, तोलतौ खाग भुज विढ़ण ताया।
जुध बोलतौ खळां न देस्यूं पूठ कहतौ जिके, ऊठ चहुवाण मिजमान आया ॥१॥

बाज तासा धमक हींस घोड़ां विसम, चमक तोपां अमक झाळ चोवै।
भाखतौ लड़ूं खग झाट मन भावणां, जव्वर दळ पांवणां वाट जोवै ॥२॥

जाग चामळ गिरध कीध घाटा जपत, लाग आंटां सपत गीध लूमा।
काढ़तौ वचन मुख चाव जुध कारणौ, आव भड़ वारणौ कटक ऊभा ॥३॥

सुण वचन चखां तज नींद हसळाकतौ, अनड़ खैंग हाकतौ जुध वधायौ।
चाव भुजचळां श्रोयण अजब चाखतौ, आखतौ खळां सिर अजब आयौ ॥४॥

---

१७१. गीतसार—प्रस्तुत गीत बून्दी राज्य के गोठड़ा ठिकाने के वीर महाराज बळवंतसिंह हाडा पर सर्जित है। कवि ने गीत में बळवंतसिंह को स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए समय समय पर कहे गए वीर-वचनों का स्मरण करवाते हुए उसके पौरुष और साहस की सराहना की है। गीतनायक द्वारा शत्रु-सेना को समाप्त कर खेत रहने का भी वर्णन गीत में हुआ है।

---

१. उदमाद--उमंग, मस्ती। विढ़ण--लड़ने की। तोलतौ--प्रहार के लिए उठाता। खाग--कृपाण। खळां--वैरियों को। न देस्यूं--नहीं देऊंगा। पूठ--पीठ। जिके--वे, उस। मिजमान--पाहुने, अतिथि।

२. हींस--घोड़ों की हिनहिन ध्वनि। विसम--विषम, भयकारी। झाळ--ज्वाला। भाखतौ--कहता था। खग झाट--तलवारों के प्रहारों। मन भावणां--मन को अच्छे लगने वाले। जव्वर--प्रबल। पांवणां--मेहमान। वाट जोवै--प्रतीक्षा करते हैं, राह देख रहे हैं।

३. चामळ--चम्बल नदी। गिरध--चारों तरफ, गृद्ध। घाटा--पर्वतीय मार्ग, अभाव। आंटां--विरोध, घेरा। गीध--गृद्ध। लूमा--चारों ओर से आ जमे। काढ़तौ--कहता, निकालता। चाव--चाह पर्वक। भड़--वीर। वारणौ--बाहर, द्वार पर। कटक--सेना। ऊभा--खड़ी है।

४. चखां--नेत्रों को। असळाकतौ--निद्रा में मसलता हुआ। अनड़--निर्बन्ध, अटल। खैंग--घोड़ा। हांकतौ--चलाता, आगे बढ़ाता। भुज चलां--हाथों को चलाकर, प्रहार करता। श्रोयण--रुधिर। चाखतौ--स्वाद लेता हुआ, चखता हुआ। आखतौ--अधीरता से। खलां सिर--वैरियों पर।

घरण पतंग बौह डोली वहै घायलां, पतंग झड़ छायलां कोह पूरौ ।
ताव खग झड़ां तौड़ै कमल तायलां, भड़ां अजरायलां बाघ भूरौ ॥५॥

जगायो सींह बलवंत जिम जागियौ, बागियौ दीह अंगरेज बारां ।
खीझ करि खलां आधो कटक खागियौ, धड़ जितै लागियौ खाग धारां ॥६॥

अभायौ वहादर सुतन साहब उरां, अरिधरा जमायौ सोक अछरीक ।
तरण भव समायौ खड़ग साहस तिकै, मरण लग निभायौ भलो मछरीक ॥७॥

—चण्डीदान मीसरण रौ कह्यौ

---

५. पतंग—लालरंग, लहू। बौह—बहुत, वहता। डोली—घायलों को ले जाने का वाहन। पतंग—चिनगारी। छायलां—बहादुरों, घावों से छकित। कोह—क्रोध, कोलाहल। ताव—तृप्त, क्रुद्ध। खग झड़ां—तलवार की प्रहार चोटें। कमळ—शीश। तायलां—शत्रुओं, उतावलों। अजरायलां—स्थायी, बलवान। बाघ भूरौ—बब्बर सिंह।

६. बारां—समय। खीझ—नाराज होकर। जितै—जितने लागियौ—लग गया।

७. अभायौ—अच्छा न लगने वाला, वैरी। साहब—अंग्रेज अफसर। उरां—हृदय में। अछरीक—बहुत अधिक। मछरीक—चहुवान वीर बलवंतसिंह ने।

१७२. गीत महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

फरहर नीसाण राड़ मड फौजां, गरहर भमक अरावां गाज ।
अत कर ताकीद आवीया, सिरहर बळवंत तणौ सकाज ॥१॥

वाणासां हूंतां भड़ वाढ़ा, रच जुध जाडा खेल रमै ।
आतुर हुवा फिरै सिव आडा, हाडा सीस वरीस हमै ॥२॥

पछटै त्रजड़ किया जे पुरजा, अरिजां धर लोटै कट अंग ।
आखौ दें गिरजापत उचरै, मत करजा खेरा उतबंग ॥३॥

कीध समर कर झाल रूकड़ा, बडा वूकड़ा अछर वरै ।
ईस मूखड़ा हूंत अरासिव, कमळ टूकड़ा काय करै ॥४॥

---

१७२. गीतसार—उपरिलिखित गीत गोठड़ा के महाराज बलवंतसिंह और ब्रिटिश सत्ता के बीच हुए युद्ध का परिचायक है। कवि ने गीतनायक द्वारा भयंकर शस्त्र-संघात कर वैरियों का सहार करने का गीत में वर्णन किया है। युद्ध की भयानकता की अभिव्यक्ति मुण्ड माला प्रेमी रुद्र के मुख से यह कहलवा कर की है कि– हे बलवंत ! वैरियों के सिरों के खण्ड क्यों कर रहा है, कुछ शीश तो अक्षत छोड़ ताकि रुण्डमाला बनायी जा सके।

---

१. नीसाण–ध्वज पताकाएं। राड़–लड़ाई। मंड–होकर, रचकर। गरहर–गहरी। भमक–ध्वनि। अरावां–तोपखाने की। गाज–गर्जना। अत–अत्यधिक। सिरहर–सिर पर, शिखर पर।

२. वाणासां–तलवारें। हूंतां–से। वाढ़ा–काट कर। जाडा–घना। रमै–खेलता है। आडा–सामने, बगल भाग से सामने आकर। वरीस–बख्शीस, प्रदान कर। हमै–अब।

३. पछटै–चोटें दे कर। त्रजड़–तलवार, कटार। पुरजा–टुकड़े। अरिजां–वैरी। आखौ–अक्षत, अखण्ड। गिरजापत–शिव। उचरै–कहता है। खेरा–टुकड़े। उतबंग–सिर, उत्तमांग।

४. समर–लड़ाई। झाल–पकड़ कर। रुकड़ा–तलवार। वूकड़ा–वृक्, मांस पिण्ड। अछर–अप्सराएं। वरै–वरण करती है। ईस–महादेव। हूंत–मे। कमळ–सिर।

खड़गां बहै श्रोण चळ खाळां, चाळा माळ महेस चखां ।
आयौ अकुट बहादर वाळा, रुण्डमाळा सुमेर रखां ॥५॥

मेदहरौ अड़ियौ आरण मझि, गाह रिमां लड़ियौ अण घाट ।
खात भर्‌यौ मांगे रुद्र खड़ियौ, झड़ियौ धू तिल तिल खग झाट ॥६॥

भंजियौ पेखि फिकर कर भारी, चित भूतेस विचारी चोज ।
सोध सोध किरचा चुग सारी, माथा री धारी कर मोज ॥७॥

राव—हमीरसिंघ रौ कह्यौ

---

५. खड़गां—तलवारों से । बहै—बहता है । श्रोण—लहू । चळ—लाल, चलता है । खाळाँ—छोटी नदी, नाले । चाळा—कौतुक । माळ—माला । चखां—नेत्रों । आपौ—अर्पित करो । अकुट—शीश । सुमेर—सुमेरु ।

६. मेदहरौ—महाराव उम्मेदसिंह का पौत्र । आरण—युद्ध । गाह—रौंदकर । रिमां—वैरियों । झड़ियौ—कट कर गिरा । धू—मस्तक । झाट—प्रबल प्रहार ।

७. भंजियौ—टुकड़े हुआ । पेखि—देखकर । भूतेस—भूतनाथ ने, शिव ने । चोज—उमंग, हंसी । सोध सोध—खोज बीन कर । किरचा—छोटे छोटे टुकड़े । चुग—चुनकर । मोज—मौज, आनन्द ।

१७३. गीत कंवर धौकळसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

पंथ वहतां अेक कवीसर पूछै, पूरब धर समचार पढ़ ।
अंगरेजां संभरीसां अडतां, राखी किणी रजपूत रढ़ ।।१।।
रवि रथ रोक त्रंवागळ रुड़तां, जुड़तां खींची भार जठी ।
जाडो भार पड़ंता जेखळ, हाडै पग रोपिया हठी ।।२।।
नाचै सिव सनकादि निराळा, वीर हकाला बळौवळां ।
धमचक दौर काढ़ियौ धूंकळ, दळपत रहियौ बीच दळां ।।३।।
आया थोक उरवसी वाळां, चाळां करती करती रही चुप ।
वारंगनां नांखै वरमाळां, वहादर वाळा तणै वप ।।४।।

---

१७३. गीतसार—उपरांकित गीत हाडौती के गोठड़ा ठिकाने के कुंवर धौकलसिंह हाडा की युद्धवीरता के वर्णन का है। धौंकलसिंह ने अंग्रेज सत्ता से केशवराय पाटन स्थान पर युद्ध किया था। कवि ने केशवराय पाटन की ओर से आने वाले किसी पथिक से युद्ध के समाचार सुनकर गीत में उसका वर्णन किया है। गीतनायक रणभूमि में भयानक युद्ध लड़कर इन्द्रलोक गया। अप्सराओं ने उसका पति के रूप में वरण कर हर्ष मनाया।

---

१. पंथ वहंता—मार्ग जाते। पूछै—पूछता है। पूरब धर—पूर्व दिशा की ओर के। पढ़—पढ़ो, कहो, सुनाओ। संभरीसां—सांभर के स्वामियों, चौहानों, सांभर पर चौहानों का शासन रहने के कारण तथा हाडा चौहानों की एक कुल की शाखा होने की वजह से गीतनायक को सांभर का स्वामी सम्वोधन किया गया है। अड़तां—भिड़ते, युद्ध लड़ते। राखी—रक्खी। किण—किसने। रजपूत—क्षात्रवृत्ति। रढ़—हठ।

२. रवि—सूर्य। त्रंवागळ—तांवे की पेंदी के नगाड़े, तांवे की पेंदी के नगाड़े वड़े ठिकानों में होते थे। रुड़तां—वजते समय। जूड़तां—लड़ाई करते, शस्त्रों के वार करते। जाडो भार—युद्ध का भारी दवाव। पडंतां—पड़ते समय। जेखळ—शूर, सूअर, यदि शत्रु। पग रोपियौ—दृढ़ता से जम कर लड़ने लगा।

३. वीर—वावन वीर, योद्धा। हकाला—हांके, उच्चस्वर में शत्रुओं को ललकारते। बळौवळां—वार वार, वरावर वलपूर्वक। धमचक—युद्ध, शोरगुल। दौर—वलपूर्वक, चक्कर में। काढ़ियौ—निकाल, वाहर किया। धूंकळ—धौकलसिंह। दळपत—कुंवर दलपतसिंह हाडा। वीच दळां—सेना के वीच में।

४. थोक—समूह, मण्डली। उरवसी वाळां—उर्वशी अप्सरा के। चाळां—छेड़छाड़, उपद्रव। वारंगनां—अप्सराएं। नांखै—डालती है। तणै—के। वप—वपु, शरीर।

१७४. गीत सेरसिंघ हाडा गोठड़ा रौ

गजर लागतां सोर हलकार छविया गरट, वागतां राग ललकार वाटां ।
मोह चित अटक सेरै नकूं मिळाया, झिलाया कटक भुज खाग झाटां ।।१।।
बहादर सुतन दुसहां कमळ वाढ़तौ, जळ पहां चाढ़तौ उतन जाडो ।
दळ घडा टेकलौ जठै केहर दूवौ, अेकलौ हुवौ जुध भड़ां आडो ।।२।।
म्रत भंमर जीव कायर जिता मोखिया, समर गत सोखिया प्राण सूका ।
दुसह अण कोकिया हाड उडता दमंग, रोकिया थाट दळ झाट रूकां ।।३।।
रखण आपाण झड़ियौ नयण रौसरां, पांण खळ जौसरां भखण पूगौ ।
चढ़ै मुख सरी अपछर वरण चौसरां, उगंती मौसरां मरण ऊगौ ।।४।।

---

१७४. गीतसार– ऊपर लिखा गीत गोठड़ा महाराज बलवंतसिंह के अनुज शेरसिंह पर कथित है। शेरसिंह ने अपने अग्रज महाराज बलवंतसिंह के साथ सम्मिलित होकर ब्रिटिश सेना का सामना किया था। अन्त में सेना से लड़ता हुआ वीर-गति को प्राप्त हुआ था। गीत में अप्सराओं द्वारा वरा जाने का वर्णन है।

---

१. गजर–प्रातःकालीन घंटे की ध्वनि, नगाड़े का दान। सोर–शोरगुल। छविया–शोभित हुए, घेरे में लिये। गरट–समूह, घेरा। वागतां–बाजे आदि की ध्वनि करते। अटक–रुकावट। सेरै–शेरसिंह ने। नकूं–नहीं। कटक–सेना। खाग झाटां–तलवार के प्रचण्ड प्रहार।

२. वहादर सुतन–महाराज बहादुरसिंह गोठड़ा के पुत्र शेरसिंह। दुसहां–वैरियों के। कमळ–मस्तक। वाढ़तौ–काटता हुआ।
जळ–आब, कांति। पहां–पीढ़ियों के, पूर्वजों के। चाढ़तौ–चढाता हुआ। उतन–वतन। दळ घड़ा–सैन्य समूह। टेकलौ–प्रणवीर, टेक रखने वाला, अपनी आन-मान पर प्राण विसर्जन करने वाला। जठै–जहाँ। केहर–केशरीसिंह। दूवौ–दूसरा। अेकलौ–एकाकी। भड़ां–योद्धाओं के। आडो–सामने, मुकाबले के लिए सम्मुख।

३. म्रत–मरण। भंमर–भ्रमर, रसिक, कायर। मोखिया–छोड़े। समर–युद्ध। सोकिया–शोक मात्र रखने वाले। प्राण सूखा–भय से प्राण सूख गए। दुसह–कठिनता से सहन होने वाला, भयंकर, वैरी। अण कोकिया–विना बुलाये। दमंग–अग्नि। थाट–सैन्यसमूह। झाट रूकां–तलवारों के प्रहारों से।

४. आपाण–बल, कीर्तिकथा। झड़ियौ–शस्त्रों से कटकर भूमि पर गिरा। रौसरां–क्रोध से भरे हुए। पांण–शक्ति। जौसरां–जोश के। भखण–भक्षण करने, मारने। अपछर–अप्सरा। चौसरां–चार लड़ी वाले हार। उगंती मौसरां सूर्य की किरणें निकलते मूंह पर मूंछे निकलते। ऊगौ–उदयहुआ, सार्थक हुआ।

१७५. गीत दलपतसिंघ हाडा रौ

दूजौ सत्रसाल अचाळौ ध्रोमझि, जस ताळौ भळळाट जग ।
भिड़तां समर दलौ किम भाजै, पड़िया लंगर लाज पग ।।१।।

लाखां दिखण दिली दळ लागा, भागा भड़ बीजा भरम ।
तद हाडो टेढ़ी किम ताकै, सांकळ पग बेढ़ी सरम ।।२।।

गोळा घमक असण औळागत, गज दौळा फिरिया अगम ।
छंटतै जुध चाळा किम छाडै, कुळवट रा ताळा कदम ।।३।।

निळजा भड़ बीजा नीसरिया, वहादर सुतन लजा भर वाथ ।
चढ़ धारां दळपत चांटीले, आंटीले कीधी अखियात ।।४।।

---

१७५. गीतसार— उपरांकित गीत गोठड़ा के महाराजा बलवंतसिंह के लघु भ्राता दलपतसिंह हाडा पर कहा हुआ है । दलपतसिंह ने अपने भाई महाराज बलवंतसिंह, बंधु-शेरसिंह और भतीजा कुंवर धौकलसिंह सहित अंग्रेजों से लड़ कर प्राण विसर्जन किया था । गीत में लिखा है कि कतिपय कायर रण त्याग कर भाग गए, पर दलपतसिंह वीरता से लड़ता हुआ युद्ध में खेत रहा । इस प्रकार वीरता की कुल-परम्परा का निर्वाह कर वह वीर संसार में यशस्वी हुआ ।

---

१. दूजौ—दूसरा । अचाळौ—अचल, रण में दृढ़ रहने वाला । ध्रोमझि—युद्ध । जस ताळौ—यशस्वी ललाट । भळळाट—चमकता हुआ, दीप्त । समर—युद्ध । दलौ—दलपतसिंह । भाजै—भागे । लंगर लाज—लज्जा की वेड़ी ।

२. दिखण—दक्षिण के, मरहठे । दिली दळ—दिल्ली की ब्रिटिश सेना । भड़—योद्धा । बीजा—दूसरे, अन्य । भरम—भ्रमित होकर । तद—तव । टेढ़ी—वच कर लड़ाई से निकलने की । सांखळ—शृंखला । पग वेड़ी—पाद-भूषण, पैरों पर धारण करने का लंगर । सरम-शर्म-लज्जा ।

३. असण—वज्र, बाण । औळागत—ओलों की गति से । दौळा—चारों ओर । फिरिया—घेरा डाला । अगम—अगम्य, अपार । चाळा—युद्ध करना । कुळवट—कुळपरम्पर का । ताळा—ताले, बंधन ।

४. निळजा—बेशर्म । नीसरिया—निकल भागे । लजा—लज्जा । भर वाथ—भुजाओं में पकड़ कर । चढ़ धारां—शस्त्रों की पैनी धाराओं पर चढ़ कर । चांटीले—फुर्तीला । आंटीले—ऐंठ रखने वाले, बात पर स्थिर रहने वाला । अखियात—प्रसिद्ध ।

१७६. गीत दळपतसिंघ हाडा रौ

सूरजमल भोज रतन पतसाही, बुधै अजावत खान वखाण ।
भोगळियाळ दलौ किम भूलै, अगलूणां डोलै अवसाण ।।१।।

सुत नारेण राण सांफळतां, भोज बुधै अवसाण भरण ।
पाणां किम पलटै प्रतमाळी, चहुवाणां पलटै चलण ।।२।।

तिम आखेट तखत सुरताणां, खून वखत संधियौ खत्रवाट ।
हथ विजड़ी वदलै किम हाडो, कुळ हाडा वदलै कुळवाट ।।३।।

वहादरउतन अई पौरस वळ, सुजड़ी हंस उडंतै अवसाण ।
परियां जिम सीली बढ़ पैलै, चीला किम भूलै चहुवांण ।।४।।

---

१७६. गीतसार— उपर्युक्त गीत हाडा वीर दलपतसिंह गोठड़ा बूंदी राज्य के सामन्त पर रचित है। गीत में कवि ने गीतनायक को पराक्रमी पूर्वज बूंदी नरेशों राव सूरजमल्ल राव रतन राव बुधसिंह, राजकुमार अजितसिंह और यशस्वी पिता वहादुरसिंह की कुल-परम्परा का पालक चित्रित किया गया है। वीर दलपतसिंह अंग्रेजों की सेना से लड़ कर तीर्थ-स्थान केशवराय पाटन में मारा गया था।

---

१. पतसाही—बादशाही। बुधै—राव बुधसिंह। अजावत—अजितसिंह का पुत्र। भोगळियाळ—कटारी का प्रहार-कौशल। अगलूणां—आगे के, पूर्वजों के। अवसाण—अवसर, युद्ध।

२. सुत नारेण—राव नारायणदास का पुत्र राव सूरजमल्ल। सूरजमल्ल ने मेवाड़ के राना-रतनसिंह संग्रामसिंहोत को मार कर वीरगति प्राप्त की थी। राण—राना रतनसिंह चित्तौड़। सांफलतां—लड़ाई करते। भोज बुधै—राव भोज और राव बुधसिंह। पाणां—हाथों से। प्रतमाळी—कटारी। चलण—कुलरीति, वंशानुगत प्रचलित परम्परा।

३. सुरताणां—सुल्तानों, बादशाहों। खून बखत—दोष के समय। खत्रवाट—क्षात्रधर्म, क्षात्रपथ। हथ—हाथ में। विजड़ी—कटारी। बदलै—पलटे। कुल—वंश। कुळवाट—कुलमार्ग, कुल की रीति।

४. वहादरउतन—वहादुरसिंह के पुत्र। अई—धन्य। पौरस बळ—पौरूष और शक्ति। सुजड़ी—कटारी। हंस—प्राण। उडंतै—निकलते। अवसाण—अवसर। परियां—पीढ़ियों। सीली—सफल की, सिद्ध की। चीला—रिवाज, रीतिमार्ग। किम—कैसे।

१७७. गीत दळपतसिंघ हाडारौ

प्रसण दळां अप्रमाण खीची समर पालटै, हटे कायर विकट हाक हौतां।
जोध छड़ियाळ वळ राव हाडो जुटै, जठै थकियौ अरक समर जोतां ॥१॥

बहादर सुतन झोका तनैं वीरवर, झड़े नग अडग समराथ जूटौ।
केवियां तणा द्रहवाट मेळै कटक, रूकड़ां झाट समरीक रूठौ ॥२॥

अनड़ वडकां तणा विरद उजवाळियौ, भाळियौ सूर रथ रोक भाराथ।
पाड़िया घणा सत्रहां तणा पाथरा, पाण खग जुटियौ जाण पाराथ ॥३॥

सताहर जोस अप्रमाण अंग उछंडे, मंडे फिरंगाण जुध समर मेळौ।
मरद चहुवांण धारा मही मिळैगौ, भिळैगौ दलौ सुरलोक भेळौ ॥४॥

---

१७७. गीतसार—उपर्युक्त गीत महाराज बलवंतसिंह गोठड़ा के अनुज दलपतसिंह हाडा पर रचित है। दलपतसिंह के साथी खीची योद्धा जब मौत के भय से लड़ाई का मैदान छोड़ कर चलते बने तब दलपतसिंह ने शत्रुओं का सामना किया और अनेक विपक्षी सैनिकों को धराशायी कर स्वयं रणभूमि में खेत रहा। गीत में कवि ने गीतनायक को अर्जुन के समान पराक्रम से शत्रुओं का सामना करने का वर्णन किया है।

---

१. प्रसण दळां–शत्रुसमूह। खीची–चौहानों की चौवीस शाखाओं में एक खीची शाखा कहलाती है। समर–लड़ाई। पालटै–युद्धभूमि से पीछै लौट गए, पलट गये। हटे–पीछे हट गये। हांक–हाका, आवाज। छड़ियाळ–भाला। जुटै–लड़ता है। जठै–जहां पर। थकियौ–थक कर। अरक–अर्क, सूर्य। जोतां–देखते।

२. झोका–धन्य धन्य। झड़े–कट कर गिरने पर। नग–पैर, हाथी। अडग–अडिग, अविचलित। समराथ–युद्ध। जूटौ–भिड़ गया। केवियां तणा–वैरियों का। द्रहवाट–नाश। मेळै–मिला कर। कटक–सेना। रूकड़ां–तलवारों के। झाट–प्रबल प्रहार। समरीक–चौहान वीर। रूठौ–कुपित हुआ।

३. अनड़–किसी का भी बंधन स्वीकार न करने वाला। वडकांतणा–पूर्वजों के। उजवाळियौ–उज्ज्वल किये। भाळियौ–देखा। सूर–सूर्य। भाराथ–युद्ध। पाड़िया–धराशायी किया। घणा- घने। सत्रहां–शत्रुओं। पाथरा–बिछौने, सुला दिये। पाण खग–तलवार की शक्ति, खड्ग और हाथ के बल से। जूटिया–भिड़ा। पाराथ–पार्थ, अर्जुन।

४. सताहर–राव शत्रुशाल बूंदी नरेश का वंशज। उछंडे–छोड़े, कट कर उछल जाने पर। मंडे–लड़ा। फिरंगाण–अंग्रेजों से। जुध–युद्ध। धारा–शस्त्र धारा। मिळैगौ–मिल गया। भिळैगौ–मिल कर। भेळौ–शामिल।

१७८. गीत दळपतसिंघ हाडा रौ

लूंबे दळ दिखण दिली दळ लारां, न खटे साथ अवर नाकारां ।
बहादर सुतन खळां जुध वारां, धन दळपत चढ़ियौ खग धारां ।।१।।

रढ़ अंगरेज दिखण दळ रढ़ियौ, काचां अपर पांणप ऊकढ़ियौ ।
पाणां जस खत्रवट बट पढ़ियौ, बहादर सुत धारां मुख बढ़ियौ ।।२।।

वैरी कटक विखम बज बाजा, लटिया भड़ बीजा तज लाजा ।
सत्रसलहर खत्रवाट समाजा, रूकां मुख चढ़ियौ महाराजा ।।३।।

घण धावां रज रज तन छायौ, धजवड़ रण छड़ियाळ धपायौ ।
भाळौ रढ़ हूवौ मन भायौ, वळावंध सुरलोक वधायौ ।।४।।

---

१७८. गीतसार—ऊपर वर्णित गीत हाडा क्षत्रिय योद्धा दलपतसिंह के युद्ध-पराक्रम से सम्बन्धित है। गीत में उल्लेख है कि अंग्रेजों और उनकी समर्थक दक्षिणियों (मरहठों) की सेना से सामना होने पर कतिपय कायर हृदय सैनिक रण-स्थल का त्याग कर गये, पर वीरवर दलपतसिंह शत्रुओं से लड़ता रहा और अन्त में अपने शत्रुओं को भारी हानि पहुंचा कर वह वीरगति को प्राप्त हुआ।

---

१. लूंबे—चारों ओर से घेर कर पीछे पड़ गए। दळ—समूह, सेना। दिखण—दक्षिण-वालों की, मरहठों की। दिली दळ—दिल्ली की अंग्रेज सेना। लारां—पीछे। न खटे—नहीं निभा सके। अवर—अपर, अन्य। खळां—शत्रुओं। जुध वारां—युद्ध के समय। चढ़ियौ—चढ़ा, सामने आकर लड़ा। खग धारां—तलवारों की धारा।

२. रढ़—युद्ध, हठ। रढ़ियौ—रचा, लड़ना प्रारम्भ किया। काचां—कायरों। अपर—दूसरे। पांणप—बल, प्रतिष्ठा। ऊकढ़ियौ—निकल गया। पाणां—बल, हाथों से। खत्रवट—क्षात्रवृत्ति, क्षत्रियत्व। बट—मार्ग, बल। धारांमुख—शस्त्रों की पैनी धारों के मुंह। बढ़ियौ—आगे बढ़ा, कट मरा।

३. कटक—सेना। विखम—विषम। बज—ध्वनित हो। लटिया—नामर्द, कायर। बीजा—दूसरे। लाजा—लज्जा को त्यागने वाले, बेशर्म। सत्रसलहर—राव शत्रुशाल का वंशज दलपतसिंह। रूकां—तलवारें।

४. घण—घने। रज रज—मिट्टी के कण जितने छोटे छोटे टुकड़े। तन—शरीर। धजवड़—तलवार। छड़ियाळ—भालों से। धपायौ—तृप्त हुआ, तृप्त किये। रढ़—युद्ध, हठ। मन भायौ—मन चाहा, जैसी मन में इच्छा की वैसा ही। वळावंध—आडा बला पहाड़ के कारण हाडों को वळावंध के स्वामी आदि कहते हैं। बूंदी आडा वळा की गिरिमाला पर अवस्थित है। वधायौ—स्वागत किया गया।

१७६. गीत दळपतसिंघ हाडा रौ

अनड नरूकां कटक वळवंतपुर आवतां, कहर तेरह चतुर वीर किळकावतां ।
गाढ़ रा सबद सिंधू ललक गावतां, रोप नग अडग समर रचे रावतां ॥१॥

झले तासा विकट झाळ तोपां झली, सबळ नेजा फरक लाज फौजां सली ।
हलो कर गोठड़ा तणै ऊपर हली, असाढ़ू नदी जांणै तटां ऊझळी ॥२॥

दूठ आराण रौ भार झेलै दलौ, जवर रोपे अडग भड़ां लीधां जलौ ।
भ्रात वळवंत रौ काज कीधौ भलौ, हजारां पाड़ खळ मार दीधौ हलौ ॥३॥

डांखिया सताहर भडां भेळौ डंमर, सुतन वहाद्रेस अखियात जीता समर ।
भुजवळी राव रै बंधव अणियां भंमर, गढ़ पति बिसन भलौ धारै गुमर ॥४॥

---

१७६. गीतसार— उक्त गीत वीरवर दलपतसिंह हाडा गोठड़ा पर कथित है । गीत में गोठड़ा पर जयपुर के उनियारा ठिकाने के रावराजा नरुकों की सेना के आक्रमण करने पर दलपतसिंह द्वारा उसका सामना कर नरुकों को पराजित करने का वर्णन किया है । गोठड़ा और उनियारा वालों के कई बार छोटे-बड़े संघर्ष होते रहे हैं ।

---

१. अनड़—वीर, राजा । नरूकां—कछवाहों की नरुका शाखा वालों । कटक—सेना । वळवंतपुर—गोठड़ा स्थान, वलवंतपुरा । कहर—विपत्ति । किलकावतां—किलकारियां लेते । गाढ़ रा—दृढ़ता के । सवद—शब्द, बोल । सिंधू—सिंधुराग, युद्ध की रागिनी । नग—पैर । अडग—अटल ।

२. तासा—वाद्य विशेष । झाळ—ज्वाला । झली—धधकी, फैली । नेजा—निशान, ध्वज । हली—चली । असाढ़ नदी—आषाढ़ मास की नदी, पूर्ण वेग से बहने वाली नदी । तटां—किनारों, पुलिनों । ऊझळी—ऊपर । होकर वहने लगी ।

३. दूठ—वीर । आराण री—युद्ध को । भार झेलै—दायित्व लिये हुए । जवर—जबरदस्त, दृढ़ । रोपे—स्थिर किये । भड़ां—योद्धाओं । जलौ—उदार और वीर (?) समूह (?) । भलौ—उत्तम । पाड़—धराशायी कर । हलौ—आक्रमण ।

४. डांखिया—डांखीले, जोशीले । सताहर—राव शत्रुशाल की संतान वाले । भेळौ—शामिल । डंमर—वैभव । अखियात—प्रसिद्ध । जीता—विजय किया । अणियां भंमर—रण दूल्हा, रण रसिक । बिसन—महाराव रावराजा विष्णुसिंह हाडा बूंदी नरेश । दलपतसिंह विष्णुसिंह का चचेरा भाई था । गुमर—गर्व, गौरव ।

१८०. गीत सेरसिंघ हाडा रौ

ओपियौ गिर जांण डोढौ, छात-पत रण-छैल ।
धावियौ गह धींग धजवड़, दोखियां पड़ दैल ॥१॥

लड़त भड़ सिर आभ लागण, समर बागै सार ।
पड़त झड़पड़ गीध पंखण, पळचरां अणपार ॥२॥

केवियां द्रहवाट कीधा, थापले भड़ थाट ।
काट अरियां किया कण कण, जूझतै खग झाट ॥३॥

सेसतो खळ दळां खूनी, रिमां देतौ रेस ।
सुतन वहादर सूर सबळौ, दीपियौ दस देस ॥४॥

वळाबंध दीवाण विढतां, घते अरियां घाण ।
भाण जिण साबास भाखै, ऊकढै आराण ॥५॥

---

१८०. गीतसार- उपर्युक्त गीत कुंवर शेरसिंह हाडा गोठड़ा की युद्ध-मृत्यु का बोधक हैं। शेरसिंह ने अपने पिता बलवंतसिंह, और चाचा दलपतसिंह आदि सहित ब्रिटिश सेना का सामना कर वीरता प्रदर्शित की थी। गीत में कहा गया है कि शेरसिंह ने अपने साथी योद्धाओं को प्रोत्साहित कर शत्रुओं की सेना को छिन्न-भिन्न किया और घमासान युद्ध कर स्वर्गस्थ हो गया।

---

१. ओपियौ–शोभित हुआ। गिर–गिरि, पर्वत। छातपत–छत्रपति, राजा। रण छैल–रण रसिक। रणवीर। धावियौ–आक्रमण करने के लिए दौड़ा। गह धींग–जबरदस्त वीर, गर्वीला और बलवान, पकड़ कर प्रहार करने हेतु। धजवड़–तलवार। दोखियां–वैरियों। दैल–दहलका तहलका।

२. आभ–आकाश। बागौ–बजाने लगा। सार–शस्त्र। झड़पड़–पंख ध्वनि। गीध–गृद्ध पक्षी। पंखण–पंखों की, पक्षियों की। पळचरां–मांसाहारी। अणपार–अपार।

३. केवियां–वैरियों। द्रहवाट–नाश। थापले–उत्साहित कर। भड़ थाट–सैन्य समूह, योद्धा गण। अरियां–शत्रुओं को। जूझतै–युद्ध करते। खग झाट–खड्गाघात।

४. खेसतो–पीछे धकेलता, मारता। खळां दळां–वैरी समूह। रिमां–शत्रुओं। रेस–प्रहार, संहार।

५. वलावंध–आडाबला। दीवाण–राजा। विढतां–लड़ते। घते–डालकर। घांण–घाव, संहार। ऊकढै–आक्रमण करे, बाहर निकले। आराण–रण भूमि।

हेळियां हद हाथ हाडे, मैंगळां घड़ माथ ।
पाथ ज्यूं रण वाट पड़ियौ, भावहर भाराथ ॥६॥

गाहि गैवर है अजाणित, ढाहि अरियां ढ़ेर ।
सेर वाळै सीस रौ सिव, माळ रचियौ मेर ॥७॥

वीर अछरां सूर वरियौ, गहै मोटो गाढ़ ।
बिवाणां रै वीच वैठौ, चांद नामो चाढ़ ॥८॥

---

६. हेळिया–साथियों। मैंगळां–हाथियों। घड़ माथ–गज मस्तकों। पाथ–अर्जुन। भाराथ–युद्ध।

७. गाहि–कुचलकर। गैवर–हाथी। ढाहि–धराशायी कर। माळ–माला का। समेर–सुमेरु।

८. अछरां–अप्सराएँ। वरियौ–वरण किया। गहै–धारक करके। गाढ़–दृढता। चांद नामो– यश, कीर्ति।

१८१. गीत ठाकर सोंनिग भाणावत सोनगरा सादड़ा रौ

जुग च्यार न जावै नाम जरू जस, कान्हड़दे जालौर कर ।
भाणवौ रतन जड़ाणौ भारथ, सोन्नन कुंभळमेर सिर ॥१॥

ऊगरीयौ जुग च्यार अखावत, तो जिम कान्ह कणँगिर तोट ।
नाम रतन जड़ीयौ नाडूला, कनक कमळ वीजाजळ कोट ॥२॥

प्रसिध रही केता जुग पालट, जालंधर सांवत रा जेम ।
अखा तणौ ओपीयौ अनोपम, हाथी सहर सोल्हमौ हेम ॥३॥

रहीयौ भलौ दूसरा रावळ, मार असुर जुग च्यार मूऔ ।
कुंभळगिर राचसी कुळोधर, हीरौ कनक जड़ाव हूऔ ॥४॥

---

१८१. गीतसार– प्रस्तुत गीत ठाकुर भाना के पुत्र ठाकुर सोंनिग चौहान पर कथित है । सोंनिग ने मेवाड़ के कुंभलगढ़ दुर्ग पर वैरियों को मारकर वीरगति प्राप्त की थी । उसके पूर्वज राव कान्हड़दे ने जालोर दुर्ग में जिस वीरता से युद्ध लड़ा था उसी प्रकार सोंनिग ने युद्ध लड़कर कुंभलमेर में वीरगति प्राप्त की थी । वह महाराणा प्रतापसिंह का सामंत था ।

---

१. जरू–दृढ़, अटल । जस–यश । भाणवौ–भाना का पुत्र । जड़ाणो–जटितता का भाव, जड़ाने वाला । भारथ–युद्ध में । सोन्नन–सोंनिग ।

२. ऊगरीयौ–बचरहा, यश अमर हुआ । अखावत–अक्षयराज का वंशज । तो–तेरे, तुम्हारे । जिम–जैसे । कान्ह–राव कान्हड़ देव । कणँगिर–स्वर्णगिरि, जालोर । तोट–टूटकर, मरकर । नाडूला–नाडोल नामक स्थान वाला, नाडोल पर चौहानों का शासन रहने के कारण सोनगिरा शाखा वाले चौहानों का सम्बोधन नाडुला प्रचलित है । कनक–स्वर्ण । कमळ–सिर । वीजाजळ–तलवार, विद्युत ज्वाला (?) ।

३. केता–कितने । पालट–पलटने पर, बीतने पर । जालंधर–जालोर । सांवत रा–सांमतसिंह के पुत्र कान्हड़देव । जेम–जैसे । अखा तणौ–अक्षयराज का पुत्र या वंशज । ओपीयौ–शोभित हुआ । हाथी सहर–कुंभलमेर । हेम–स्वर्ण, सोंनिग ।

४. असुर–मुसलमान, शत्रु । मूऔ–मरा । कुंभळगिर–कुंभलमेर पर । कुळोधर–कुल का धारक, कुल का उद्धारक । हीरौ–हीरा, रत्न । जड़ाव–जटित आभूषण, जड़ने का भाव ।

१८२. गीत मोहकमसिंघ चहुवाण रौ

जकड़ सोह कड़ा जंजीरां तोप आतस जगे, सूरां झड़कोह कड़ावीण साथै ।
मेल असबोह कड़ा जूड़ झाटक मुगल, मोहकड़ा कंवारी घड़ां माथै ।।१।।

झूल रंभ कालरा झांझर झणण, विखम ग्रध गालरा जेण वेळा ।
बंधव अभमाल रा बखत सूं उण वखत, भेल अस लालरा बिलंद भेळा ।।२।।

तांम रोसाण मुख भाण वारह तिसौ, तेग कढ़ पांण ऊडांण तोरै ।
पटाझर डांण असुरांण घड़ पछटतां, अ्रेम चहुवांण केकाण ओरै ।।३।।

---

१८२. गीतसार—उपर्युक्त गीत नागौर के शासक राजाधिराज बखतसिंह राठौड़ के सामन्त मोहकमसिंह चहुवान पर रचित है। मोहकमसिंह ने मुगलवाहिनी सेना पर आक्रमण कर शौर्य प्रदर्शित किया था। गीत में सर बिलंदखां की सेना पर अपने अश्व को बढ़ाकर घमासान युद्ध करने का वर्णन है।

---

१. जकड़—कसकर, बांधकर। आतस—अग्नि। कड़ावीण—कुरावीन, एक प्रकार की चौड़े मुंहवाली तोप। असबोह—अश्व। कड़ाजूड़—युद्धार्थ सज्जित, कवचादि से सज्जित। झाटक—योद्धा, प्रहार। मोहकड़ा—गीतनायक मोहकमसिंह। कंवारी घड़ां—विना लड़ी हुई सेना।

२. झूल रंभ—अप्सराओं का समूह। झांझर—नूपुर। झणण—ध्वनि विशेष। विखम—विषम, विपत्तिकालीन। ग्रध—गृद्ध पक्षी। गालरा—ग्रास। जेण—वेळां—जिस समय। अभमाल रा— महाराजा अभयसिंह के। बखत—राजाधिराज बखतसिंह। उण वखत—उस समय। भेळ—मिलाकर, शामिल कर। अस—घोड़ा। लाल रा—लालसिंह के। बिलंद—सर बिलंदखांन अहमदाबाद का विद्रोही शासक। भेळा—शामिल।

३. ताम—तब। रोसाण—रोषान्वित। भाण—सूर्य। तिसौ—जैसा। तेग कढ़—तलवार म्यान बाहर कर। पांण—बल, हाथ। ऊडांण—अश्व, त्वरा से दौड़ाकर। पटाझर—हाथी। डांण—मद। असुरांण—मुसलमानों की। घड़—सेना। पछटतां—संहार करते। अ्रेम—इस प्रकार। केकाण—घोड़ा। ओरै—युद्ध में झोंके।

है झपट गरट थट उछट भड़ हाथलां उभै तट निपट जुध लपट ऊकां ।
जूटे कटक भ्रकट लियै झट झटत धूजट, रमै कुलवट विकट पछट रूकां ॥४॥

जोधपुर छतरधर मोहर असमर जजर, बध करै नागपुर छतरधर बाह ।
उजागर संभर कंवर समसेर अतर, नागपुर छतरधर महर नरनाह ॥५॥

—कविराजा करणीदान कविया रौ कह्यौ

---

४. है झपट—घोड़े की टक्कर। गरट—सेना, घेरा । थट—समूह, राशि । उछट—कूदकर, उछल कर। भड़—योद्धा । उभै तट—दोनों किनारे। ऊकां—वानरों । कटक—सेना। भ्रकट—सिर । झटत—कटकर। धूजट—शिव । रमै—खेलता है। रूकां—तलवारें।

५. छतरधर—राजा । असमर—तलवार । जजर वज्र, यमराज । वध—बढ़कर । बाह—प्रहार । संभर—चहुवान । समसेर—तलवार । महर—कृपा । नरनाह—राजा ।

१८३. गीत ठाकर संभुदानसिंघ चौहान संखवास रौ

जंगां हाकळै विड़ंगां जोध मातंगां रै जूथ जाडे,
　　　　दुरंगां विखेरै थोभै निहंगां सदीह ।
खगांपती जेम सिंभू पंनगास ग्रासै खळां,
　　　　ऊनगां वाणासां भांजे अभंगा अवीह ॥१॥

अनेकां चखावै साव कहावै विरद अेहा,
　　　　बीजळां वजावै घाव घुमावै वाराण ।
राव पंखां दावै नाग राजान सुजाव रिमां,
　　　　अेरसा भाव पैलां अभावै आराण ॥२॥

जैतरा घुरातां जांगी समाथ अनम्मी जोध,
　　　　सातां दीप सुणै वात कहात सधीर ।
रघुनाथ वाहणौ सूत....हणु रिपां,
　　　　वेढ़ां अरी सतां दहै अजाहरो वीर ॥३॥

---

१८३. गीतसार– उपर्युक्त गीत संखवास के ठाकुर शंभुदानसिंह चौहान पर रचित है । गीत में कवि ने गीतनायक को गरुड़ और शम्भु को सर्प उपमित करते हुए कहा है कि शम्भुदानसिंह युद्ध में अपने घोड़ों को उत्साहित कर गज-यूथों पर आक्रमण करता है । वह सबल वीर शत्रु - दुर्गों को ध्वस्त कर देता है । नग्न तलवारों के आघातों से निर्भीकता पूर्वक वह शत्रुओं को मारता है ।

---

१. हाकळै–उत्साहित कर आगे बढ़ाता है । विडंगां–अश्वों को । मातंगां रै–गजराजों के । जूथ–यूथ, समूह । जाडे–घने । दुरंग–दुर्गों को । विखेरै–खण्डित करता है, विखेरता है । थोभै–सहारा देता, रोक रखता है । निहंगा–आकाश । खगांपती–गरुड़ । पंनगास–सर्प । ग्रासै–ग्रासता है, मारता है । खळां–शत्रुओं । ऊनगां–नग्न । वाणासां–तलवारें । अवीह–निडर ।

२. साव–स्वाद । बीजळां–तलवारें । वजावै–प्रहार करते हैं । वाराण–हाथी । राव पंखां–गरुड़ । राजान–राजसिंह का । सुजाव–पुत्र । रिमां–वैरियों । अेरसा–ऐसा । पैलां–विपक्षी । अभावै–अनभाते हैं, अप्रिय लगने वाले । आराण–युद्ध ।

३. जैतरा–विजय के । घुरातां–ध्वनित । जांगी–नगाड़े, युद्ध विजय का नाद करवाता । समाथ–समर्थ । अनम्मी–निर्बन्ध, स्वतंत्र वृत्ति । रघुनाथ वाहणो–गरुड़ । रिपां–रिपुओं । वेढ़ां–युद्धों । अजाहरो–अजितसिंह का पौत्र ।

भाराथां जीपणां निमौ अघट्टां केवाण भुजां,
थट्टां दुनीयांण भुजां सुकाथांण ।
विहंगेस आगां अरी नागजू न जाणै वचै,
अरी चाहुवाण अगां न जावै आथांण ॥४॥

—अभैराम बारहठ रौ कह्यौ

---

४. भाराथां—युद्धों में। जीपणां—विजय करने वाला। अघट्टां—अपार, करामाती। केवाण—तलवार। थट्टां—ठाठ, समूह, सेना। सुकाथांण—सुकथा, यशप्रद कथा। विहंगेस—गरुड़ के। आगां—आगे से सामने से। नागजू—सर्पराज। अरी—वैरी। आथांण—अपने स्थान।

१८४. गीत रावळ भींवसिंध भाटी जैसलमेर रौ

अंग अणभंग आथ असट आवाहन, राकस चेड़ा असुर रहीम ।
परविण लाधी तैंहीज पैसजै, भवसा विवर निंवाहर भीम ॥१॥

चीत साझना सामंत चेला, हीये निरत कत दीपग हाथ ।
डोही तैं अवड़ा दूसासण, निसहर विवर जिहीं रुघनाथ ॥२॥

हरराजोत सेवतौ हाळै, सकत चकर चै विकट संसार ।
अवळे नाक पाधरौ आंणै, देवी चाचर दैत दवार ॥३॥

साधक आधक जगत साखियौ, काळ ठाळ विच किलम करीठ ।
कौ राजवी तूझ विण रावळ, पैस नीसरै जोगिणी पीठ ।४॥

---

१८४. गीतसार—उपर्युक्त गीत जैसलमेर के महारावल भीमसिंह भाटी पर रचा हुआ है । भीमसिंह दिल्ली में मुगल बादशाह की कोप दृष्टि से बच कर दिल्ली से सकुशल निकल आया था । कवि कहता कि रावल भीमसिंह के अलावा ऐसा कौन समर्थ है जो यवनों रूपी प्रेतों की पकड़ से सहज बच निकलने में सफल हो सका हो ।

---

१. अणभंग—अभंग, अखंड । साथ—अर्थ, द्रव्य । असट—अष्ट, इष्ट । आवाहन—आह्वान, मंत्र द्वारा देवता को बुलाना । राकस चेड़ा—भूतप्रेत । असुर—दैत्य, मुसलमान । पैसजै—प्रविष्ट होकर । विवर—बिल, छिद्र । निंवाहर—नींमा का वंशज, बाहर नहीं ।

२. साझना-साधना । साँमत चेला—योद्धा रूपी शिष्य । हीये—हृदय । डोही—मथकर रोंदकर । अवड़ा—विकट । दूसासण—बुरा शासन, यवन ।

३. सेवतौ-सेवा करता, साधना करता । हालै—चलता है । सकत—शक्ति, देवी । चकर—चक्र, कुण्डली । अवले—उलटे । नाक—छिद्र (?) । पाधरौ—सीधा । आंणै—लाता है, आता है । चाचर दैत—नृत्य करती अथवा मस्तक और दैत्य । दवार—द्वार ।

४. साखियौ—साक्षी दी । किलम—मुसलमान । करीठ—यमराज । विण—विना । पैस—प्रवेश कर । नीसरै—निकले । जोगिणी पीठ—दिल्ली से ।

१८५. गीत राजा सिवराम गौड़ सरवाड़ रौ

अड़े आय सिवरांम धंधेड़िया ऊपरै, बड़ बड़े सिधवौ राग बागौ।
बीठळो मेलि अवरी घड़ा खग बहौ, भेळि गौ चांकतो कोट भागौ ॥१॥

बला रौ लंगर पुर ळियण आयौ बहसि, जोध भाखर हरौ मुहरि जूटौ।
सुंदरा तणौ बिछोड़ घड़ सात्रवां, तोडि गौ आड तौ कोड़ि तूटौ ॥२॥

वडा मन मोट सिव छळां भाखर बिया, काम सिरदार सैंलोट कीधौ।
ओट रहियौ नहीं जोट पूगौ असी, लड़े गौ चोट तौ कोट लीधौ ॥३॥

---

१८५. गीतसार—उपर्युक्त गीत राजा शिवराम गौड़ सरवाड़ के शासक पर कथित है। राजा शिवराम सुन्दरदास गौड़ का पुत्र और धंदेरा का शासक था। गीत में वर्णन है कि शिवराम ने धंदेड़िया पर सिंधू राग का नर्दन कर आक्रमण किया और दुर्ग पर अधिकार कर लिया। वह किले की ओट लेकर नहीं लड़ा, अपितु खुले में लड़कर दुर्ग पर विजय प्राप्त की।

---

१. अड़े—अड़ा, भिड़ा। धंधेड़िया ऊपरै—धंदेरा स्थान पर, धंदेरा निजाम हैदराबाद की पश्चिम सीमा पर सीना नदी के किनारे बसा हुआ है। शिवराम ने धंदेरा के राजा इन्द्रमणि को पराजित कर धंदेरा दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। बड़ बड़े—बज कर, होकर। सिधवौ राग—सिंधू राग। बागौ—बजा, लड़ा। बीठलो—राजा, विट्ठलदास गौड़। अवरी—विना लड़ी। घड़ा—सेना। खग बहौ—महान् वीर। भेळि गौ—परास्त कर गया, मिला कर गया। चांकतो—निशान लगाता। कोट भागौ—दुर्ग विजय हुआ, दुर्ग भग्न हुआ।

२. बला रौ—बलिराम का पुत्र शिवराम। लंगर पुर—धंदेरा (?)। लियण—लेने के लिए, विजय करते। बहसि—जोश पूर्वक। जोध—योद्धा। भाखरहरौ—भाखरदास का वंशज। मुहरि—अगाड़ी, आगे। जूटौ—भिड़ा। सुंदरा तणौ—सुन्दरदास का पुत्र शिवराम। बिछोड़—अलग, जुदा छोड़कर। घड़—सेना। सात्रवां-शत्रुओं। आड—ओट, रक्षापंक्ति, किला। तुटौ-अधिकार में आया, टूटा।

३. मन मोट—विशाल हृदय। छळां—युद्ध, लिए। विया—द्वितीय। सैंलोट—साफ, सपाट, ध्वंसित। जोट—जोड़ी। पूगौ—पहुँचा। असी—ऐसी। कोट—किला। लीधौ—लिया।

१८६. गीत भीम विक्रमोत गौड़ रौ

भागा दळ सबळ आगरो भागौ, साहिजादो भागौ तजि सीम।
जैसिंघ रौ भागौ साहिजादो, भागौ नहीं विकम रौ भींम ॥१॥

खड़िया सैन सैनपति खड़िया, गढ़ कोटां खड़िया गुमर।
इखि मरण खड़िया आमेरा, अजमेरे जड़िया अमर ॥२॥

गयौ साहदारा गढ़ गमियौ, मानहरा गया गढ़ मांहि।
गिरवरहरौ न गयौ गिरवर, गिरवर हुइ रहियौ गजगाहि ॥३॥

---

१८६. गीतसार – उपर्युक्त गीत गौड़ क्षत्रिय योद्धा भीमसिंह विक्रमसिंहोत पर रचित है। भीमसिंह ने धोलपुर के युद्ध में शाही पक्ष में रह कर वीरता दिखाई थी। गीत में वर्णन है कि शाह की प्रबल सेना और शाहजादा दाराशिकोह रण-भूमि से भाग गए। मिर्जा राजा जयसिंह का पुत्र कीर्तिसिंह भी भाग गया, पर विक्रमसिंह का पुत्र भीमसिंह न भागा और लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

---

१. दळ–सैन्यदल। सबळ–बलवान्। आगरो भागौ–आगरा छोड़कर शाहजादा भी भाग गया, आगरा पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। सीम–सीमा, मर्यादा। जैसिंघ रौ–मिर्जा राजा जयसिंह आमेर का। साहिजादो–द्वितीय राजकुमार कीर्तिसिंह। विकम रौ–विक्रमसिंह का। भींम–गीतनायक भीमसिंह।

२. खड़िया–भाग गए। सैनपति–सेनापति। गुमर–गर्व, घमण्ड। इखि–देख कर। आमेरा–आमेर के राजवंश वाले। अजमेरे–अजमेर के स्वामी गौड़, अजमेर पर पहले गौड़ों का शासन रहने के कारण गौड़ अजमेरे कहलाते हैं। जड़िया–दृढ़ता से रोपे।

३. साहदारा–शाहजादा दाराशिकोह। गमियौ–खोया, अधिकार से गया। मानहरा–राजा मानसिंह आमेर के वंश वाले, कछवाहे। गिरवरहरौ–गिरवरसिंह गौड़ की संतान वाला। गिरवर–पहाड़ों की शरण में, गिरि जैसा अडिग। गिरवर–पर्वत, अटल। गजगाहि–गजग्राह, युद्ध।

१८७. गीत सैंसमल गौड़ मानावत रौ

भणै अेम संसार वापार रजवट भलौ, भुजे खत्रवट चौ भार भिळियौ।
अेक सांमां बाहुड़ि गवड़ अेकलौ, मलौ दूजौ कलौ लोह मिळियौ ॥१॥

पुणै अेम वरियांम अजमेर पोह, करण धूतमल नांम कटकां।
रटक हूंता समौ अटकि रहियौ, झेलतौ बाहतौ गयौ झटकां ॥२॥

गौड़ घड़ कुंवारी परणि सुरपुर गयौ, सकौ जानी गया घणां साथै।
बाहरू उरांरा परांरा बाजीया, मान रा करारा तणै माथै ॥४॥

---

१८७. गीतसार—उपर्युक्त गीत गौड़ योद्धा सहसमल पर कहा हुआ है। गीत में कहा है कि संसार में क्षत्रियत्व का व्यवसाय सबसे अच्छा व्यवसाय है जिसमें क्षत्रियत्व का भार भुजाओं पर धारण करना पड़ता है। वीर सहसमल ऐसा ही भार ग्रहण कर अनेक युद्धों में शत्रुओं की भयंकर सेनाओं को धराशायी कर सुरलोक जा बसा।

---

१. भणै—कहता है। अेम—ऐसे। वापार—व्यवसाय, कार्य। रजवट—क्षत्रियत्व का। भलौ—अच्छा। भुजे—भुजाओं पर। खत्रवट—क्षत्रियपन। चौ—को। सांमां—सामने। बाहुड़ि—मुड़कर, लौट कर। गवड़—गीतनायक सहसमल गौड़। अेकलौ—एकाकी। मलौ—मल्ल। कलौ—कल्याणसिंह। लोह मिळियौ—शस्त्रों से भिड़ गए।

२. पुणै—कहता है। वरियांम—श्रेष्ठवीर। पोह—राजा, योद्धा। धूतमल—महान् योद्धा। कटकां—सेनाओं में। रटक—टक्कर, आघात। हूंतां—होते समय। समौ—समय, बराबर। अटकि—रुका हुआ। झेलतौ—सहन करता, सिर पर लेता। बाहतौ—देता, चलता। झटकां—चोटें।

३. घड़ कुंवारी—बिना लड़ी सेना। परणि—विवाह कर। सकौ—सब कोई। जानी—बरयात्री, बराती। घणां—बहुत से बाहरू—रक्षक, पीछा करने वाले। उरांरा—इधर वाले। परांरा—उधर वाले। बाजीया—लड़े। मानरा—मानसिंह गौड़ वाले सहसमल। तणै—पुत्र, के। माथै—सिर पर।

१८८. गीत वीरभद्र गौड़ रौ

पिता थटै गिरमेर वलिराम भाई प्रगट, सनस अजमेरि धू अमर साको।
भतीजो मरे आलमकिलम भांजतां, कहौजी नीसरे केम काको ॥१॥

धमळपुर विहारी मुकंद विढ़िया धमळ, विकम पिड़ि ऊपड़े जस बचावे।
मुहरि पड़ि अजण ऊजैणि छेतरि मरे, ऊवरे वीरभद्र केमि आवे ॥२॥

सुभो दिखणाद अनपाल पूरव समथ, पेखि भीमाळ सव जग पतीजौ।
लाख दळ हूंत गोपाल दूजौ लड़े, वाहुड़े केमि जगपाल बीजौ ॥३॥

साह रा छळां पतिसाह सूं समर, छात तुरकेय मूआ घणां छातां।
वात अजमाल री रही आलम बिचै, वीरभद्र तणी तिम रही वातां ॥४॥

---

१८८. गीतसार—उपर्युक्त गीत गौड़ वीर वीरभद्र पर रचित है। गीतकार का कथन है कि जिस का पिता और भाई थट्टा स्थान के युद्ध में मारे गए, भतीजा अर्जुन उज्जैन में मारा गया, विहारीदास और मुकुन्ददास धवलपुर में खेत रहे और अनिरुद्धसिंह पूर्व के युद्ध में काम आया, तब फिर काका वीरभद्र युद्ध से जीवित बचकर कैसे लौट सकता है।

---

१. थटै—थट्टा स्थान। गिरमेर—गिरवरसिंह, सुमेरसिंह (?)। सनस—वीर। अजमेरि धू—अजमेर पर। साको—युद्ध। आलमकिलम—वादशाह। भांजतां—संहार करते। नीसरे—निकले। केम—किस प्रकार, कैसे।

२. धमळपुर—धौलपुर। विढ़िया—कट मरे। धमळ—शूरवीर, योद्धा। विकम—विक्रमदेव। पिड़ि—युद्ध में। ऊपड़े—घायल होकर जीवित रहे। जस—यश। मुहरि—मुंह आगे। अजण—अर्जुन। ऊजैणि—उज्जैन के युद्ध। छेतरि—क्षेत्र में। ऊवरे—बचे, जीवित रहे।

३. सुभो—शुभराम। दिखणाद—दक्षिण के शाही युद्ध में। अनपाल—अनिरुद्धसिंह। पूरव—पूर्व प्रान्त के युद्ध में। समथ—समर्थ। पेखि—देखकर। भीमाळ—भीमसिंह। पतीजौ—विश्वास किया। हूंत—से। गोपाल दूजौ—द्वितीय गोपालदास। वाहुड़े—पीछे लौटे। जगपाल बीजौ—दूसरा जगराम, वीरभद्र।

४. छळां—युद्धों में। समर—युद्ध। छात—छत्र, राजा। तुरकेय—मुसलमान। मूआ—मरे। छातां—राजा। अजमाल री—अर्जुन गौड़ की। आलम—संसार। तिम—त्योंही, उसी प्रकार।

१८९. गीत पोहकरदास गौड़ रौ

आवै घरि जाय नकौ पति आंटै, कांटे निरवहियां केवांण।
हंसत मुखी पोहकरियौ हसतौ, दीठौ रिण धसतौ दुनियांण ॥१॥

सिवराजा आगळि भीखम सुत, गौड़ भुजागळ आगळ गाढ़।
बदन सदा रहतौ बिळकुळतौ, विळकुळत कीधौ खग बाढ़ ॥२॥

रोस विना औरंगदळ रहचे, दोस रहत गोपाळ दूवौ।
हांसां रौ हांसौ जग न हूवौ, हांसै खासौ मरण हूवौ ॥३॥

---

१८९. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर पोखरदास गौड़ की वीरता पर सर्जित है। गीत में कहा गया है कि युद्ध-भूमि से (कायर) लोग भाग कर घर आते हैं, किन्तु घर से मरने के लिए युद्ध में कोई भी जाना पसंद नहीं करता है। पर, पोखरदास राजा शिवराम गौड़ के सामने बढ़कर रणभूमि में पहुंचा और हंसता हुआ काम आया। वह शाहजादा औरंगजेब की सेना का संहार करता हुआ मारा गया।

---

१. आवै घरि–अपने घर आते हैं। जाय नकौ–घर से कोई भी रण में नहीं जाता है। पति आंटै–स्वामी के लिए या बदले में। कांटे– कांटे का युद्ध होने पर, बराबरी के मुकबले में। निरवहियां–वहने करने के लिए, निभाने केवांण–तलवार हंसतमुखी-प्रसन्न मुख वाला। पोहकरियौ–वीर पोखरदास गौड़। हंसतौ–हंसते हुए। दीठौ–देखा। धसतौ–प्रवेश करते। दुनियांण–संसार के लोगों ने।

२. सिवराजा–राजाशिवराम गौड़, सरवांड़ का स्वामी। आगळि–अगाड़ी, सामने। भीखम सुत–भीष्म का पुत्र पोखरदास। भुजागळ–तलवार। आगळ–आगे। गाढ़–दृढ़ता। बदन–मुख। बिळकुळतौ–प्रसन्न, रोषारक्त। खग बाढ़–तलवारों के वार।

३. रोस विना–विना क्रोध, स्वाभाविकता से। औरंगदळ–शाहजादे औरंगजेब की सेना। रहचे–रण में नाश कर। दोस–कलंक। रहत–रहित। गोपाळ दूवौ–द्वितीय राजा गोपालदास गौड़, पोखरदास। हांसां रौ–हँसमुख वाले की। हांसौ–हँसी, अपकीर्ति। खासौ–काफी, पर्याप्त।

१९०. गीत बिजैसिंघ गौड़ रौ

विभ्रम एक तूझ विढ़तां बीजा, प्राक्रम कुंभ कै हणू पथ।
बहै हाथ रथ जगचख न वहै, रहै हाथ तो बहै रथ ॥१॥

पाल तणा भोळे रहिया पिड़ि, रिण जूटंतां देव रथ।
चालै भुज चंचळ नह चालै, थिया देव वाहण थकिथ ॥२॥

भाला खाग गौड़ गाडा भर, दवंगळ अरावां दवंग।
झड़ियै सेसि ससिखै जुड़ियौ, पड़ियै रवि खड़ियौ पवंग ॥३॥

---

१९०. गीतसार उपरिलिखित गीत गौड़ शाखा के क्षत्रिय योद्धा विजयसिंह पर कहा हुआ है। कवि गीतनायक की वीरता का वर्णन करते हुए कहता है - हे विजयसिंह! तुझे युद्ध करते देख यह भ्रम हो उठा है कि तुम पराक्रमी कुंभकर्ण हो अथवा हनुमान हो किंवा अर्जुन हो? जब तुम्हारे हाथ के प्रहार होते हैं तो सूर्य विस्मित होकर युद्ध देखने के लिए एक स्थान पर स्थिर हो जाता है और तुम्हारे कुशल प्रहार बन्द होते हैं तो रवि का रथ चल पड़ता है।

---

१. विभ्रम—भ्रम, शंका। विढतां—लड़ते हुए। बीजा—विजयसिंह। प्राक्रम—पराक्रम। कुंभ—कुंभकर्ण। हणु—हनुमान। पथ—पार्थ, अर्जुन। वहै—चलते हैं। जगचख—सूर्य। रहै—रहते हैं, स्थिर हो जाते हैं।

२. पाल तणा—राजा गोपालदास का पुत्र। भोळे—भोलेपन से, भ्रान्तिवश। पिड़ि—युद्ध। जूटंतां—भिड़ते, जुड़ते। देवरथ—सूर्य भगवान् का रथ। चालै—चलते हैं। चंचळ—घोड़े। थिया—हुए। वाहण—वाहन, सवारी। थकिथ—थकित' थक गए।

३. खाग—तलवार। गाडा भर—अत्यधिक। दवंगळ—दंगल, युद्ध। अरावां—तोपखाने। दवंग—अग्नि कण, गोले। झड़ियै—कटकर गिरने। पड़ियै—धरा पर गिरते ही। रवि—सूर्य। खड़ियौ पवंग—अश्व को आगे चलाया, सप्ताश्व गतिशील हुआ।

१६१. गीत प्रयागदास गौड़ रौ

घड़ भूंवी बिन्है आवधे घाये, हेको बाहै घणां हथ।
पड़ता लै त्युं त्युं अस पातल, राळै ज्युं ज्युं रंभ रथ ॥१॥
राजा राव मंडे राहाचक, गौड़ करे विसमौ गैतूळ।
गहण तुरी सेले गोमंद रौ, पैले हूरां बहण पलूळ ॥२॥
कांकळ सवळ कूरम कीधौ, खारां सारां सूर खहै।
हद झोके कैंकांण मालहर, वारंगण विमांण वहै ॥३॥
पुरचा पुरचा हूअ पिरागो, कोळाहळ कीति हुअ चत्रकूंठि।
तुंग तुंग करे भेळा अंग तेवड़ि, वीर अपछर हाले वैकूंठि ॥४॥

---

१६१. गीतसार—ऊपर लिखित गीत प्रयागदास गोविन्दासोत गौड़ पर सर्जित है। कवि ने गीत में कहा है कि दोनों ओर के योद्धा शस्त्र उठाकर परस्पर आघात करने के लिए वेगपूर्वक आगे बढ़े। वीर प्रतापसिंह ज्यों ज्यों अपनी सवारी के घोड़े बदलता है त्यों त्यों अप्सराएँ अपने विमानों से उसके लिए नये घोड़े उतार देती है। अन्त में चारों ओर अपनी वीरत्व-कीर्ति का प्रसारण कर प्रयागदास वीर गति को प्राप्त हुआ और अप्सराएँ उसके शरीर के छोटे छोटे खण्ड एकत्रित कर स्वर्ग ले गईं।

---

१. घड़–सेना। भूंवी–भिड़ी, लड़ने लगी। बिन्है–दोनों। आवधे–हथियार। घाये–घायल–हुए। बाहै–चोट देते हैं। घणां–बहुत, अधिक। हथ–हाथ। अस–अश्व, घोड़े। पातल–सिंह। राळै–गिराती हैं। रंभ–अप्सराएँ।

२. राहाचक–भयानक युद्ध। विसमौ–विषम, विस्मयकारी। गैतूळ–झंझावात, जैसा झकझोरना। तुरी–घोड़े। गोमंद रौ–गोविंदसिंह का पुत्र, प्रयागदास। पैले–पीछे धकेले, उपेक्षा कर। हूरां–अप्सराएँ। पलूळ–विमान, घोड़े।

३. कांकळ–युद्ध। कूरम–कछवाहे। खारां–क्रोधीले, कटुता भरे। सारां–अस्त्र शस्त्र। सूर–वीर। खहै–युद्ध करे, भिड़े। हद–बेहद। झोके–धकेले। कैंकांण–घोड़े मालहर–माला का पौत्र। वारंगण–अप्सरा। विमांण–विमान। वहै–चलते हैं।

४. पुरचा पुरचा–पुर्जा पुर्जा, टुकड़े टुकड़े। पिरागो–प्रयागदास। कोळाहळ–शोरगुल। चत्रकूंठि–चारों दिशाओं में, चित्तौड़ में (?)। तुंग तुंग–टुकड़े टुकड़े। भेळा–एकत्रित। तेवड़ि–बनाया, विचार किया। अपछर–अप्सराएँ। हाले–चले, गये। वैकूंठि–वैकुण्ठ, स्वर्ग।

१६२. गीत मुकंददास बिहारीदास विठळदास गिरधरदास गौड़ रौ

धमळपुर कांम हूवौ दिन धवळे, हैवै दळ पाठांण हिचे ।
विढ़िया तिण दिन मुकंद बिहारी, बीठळ गिरधरदास बचे ॥१॥

सार पड़े अंग भार सूं सरां, जार पठांण गौड़ जुड़िया ।
पाल तणा बेहूं रण पड़िया, पाल तणा बे ऊपड़िया ॥२॥

जुड़ि बीठळ गिरराज जीविया, कळहणि मुकंद वळे म्रत कीध ।
लोक सुरां भायां बेऊं लाधौ, लोकाचार भायां बिह लीध ॥३॥

---

१९२. गीतसार—उपर्युक्त गीत मुकुन्ददास, बिहारीदास, विट्ठलदास और गिरधरदास गौड़ चारों भाइयों पर सर्जित है । गीत में धवलपुर के युद्ध में मुकुन्ददास तथा बिहारीदास के मारे जाने और विट्ठलदास व गिरधरदास के घायल होकर बच जाने का वर्णन है । यह घटना-प्रसंग बादशाह शाहजहां के समय का है ।

---

१. धमळपुर-धौलपुर । दिन धवळे—धोलेदिन । हैवै दळ—बादशाही सेना । पाठांण—पठान, खांनजहां (?) । हिचे—लड़े, युद्ध हुआ । विढ़िया—लड़ते हुए मारे गए । बचे—जीवित रहे ।

२. सार—लोहा, अस्त्र-शस्त्र । सरां—तीरों । जार—हजम कर, जाकर । जुड़िया—लड़े । पाल तणा—राजा गोपालदास गौड़ के पुत्र । बेहूं—दोनों । बे—दो । ऊपड़िया—घायल होकर बच रहे ।

३. जुड़ि—भिड़कर, लड़कर । बीठळ—राजा विट्ठलदास गौड़ । गिरराज—गिरधरदास । कळहणि—युद्ध । वळे—फिर । म्रत—मृत्यु । लोक सुरां—देवताओं का लोक । भायां—भाइयों । बेऊं—दोनों को । लाधौ—मिला, लब्ध हुआ । लोकाचार—मरणोपरान्त मृत आत्मा के प्रति किया जाने वाला कर्म, लोक व्यवहार । बिह—दोनों । लीध—लिया ।

१९३. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

सातळ सांचरी'र वेढ़री सुनाड़ौ, कटके दिखण कहांणी ।
लड़तौ सुभौ आकासे लागौ, बागौ कहै बलांणो ॥१॥

जाब जलेबदार दीठा जदि, दळ दीठा जुध दोई ।
अंग रातंबर मरण उजाळा, काळा जिसौ न कोई ॥२॥

मरण गौड़ रा मौड़ मानिया, अचड़ां किसूं अंदेसा ।
परदेसे देसे पहुंचाया, साजण कवी संदेसा ॥३॥

---

१९३. गीतसार–उपर्युक्त गीत गौड़ क्षत्रिय योद्धा शुभराम पर कथित है। शुभराम ने दक्षिण प्रान्त में शत्रुओं से लोहा लेकर वीरगति प्राप्त की थी। कवि ने दक्षिण से आने वाले सातल से पूछा है कि दक्षिण में नियुक्त सेना के समाचार कहो। इस पर वह उत्तर में कहता है कि शुभराम लड़ता हुआ आकाश को स्पर्श करने लगा। यही नहीं मरण वेला में उसने सन्देश प्रेषित कर कवि के प्रति अपना प्रेम भी प्रकट किया था।

---

१. वेढ़री–युद्ध की। सुनाड़ौ–सुनाओ। कटके–सेना की। दिखण–दक्षिण की। कहांणी–कहानी, वार्ता। सुभौ–शुभराम। आकासे लागौ–आकाश से जा लगा। बलांणी–बलिरामोत।

२. जाब–उत्तर। जलेबदार–राजा अथवा बड़े सामंत की सवारी के आगे चलने वाला सैनिक विशेष। दीठा–दीखा। जदि–जब। दळ–सेना। जुध–युद्ध। दोई–दोनों। रातंबर–रक्तिम, लाल वस्त्र। उजाळा–उज्ज्वल, निष्कलंक। काळा–वीर। जिसौ–जैसा।

३. मौड़–मुकुट। अचड़ां–श्रेष्ठ कार्यों में। अंदेसा–संदेह, आशंका। परदेसे–विदेश से। देसे–देश में, स्वदेश में। संदेसा–सन्देश, समाचार।

१६४. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

करे पांण सुरतांण हूं रांण सहिब करे, सुभो गौ रांणि माडां सवांहीं ।
मरण मेवाड़ि आयौ वळे नह मिळे, मरेवा गयौ दखिणाध मांहीं ।।१।।

सिंघ री चाड बलिराम रौ सिंघाळौ, हेकलो जाइ पूगौ हजारां ।
नेत दस सहस बांधे तिको निवाहण, सेतबंध सालीयौ सेत सारां ।।२।।

बियौ गोपाल रणताळ लागौ बिढ़ण, झड़े किरमाळ ऊझाळ झाळे ।
दूसरी ठाळ टाळौ न व्हैं दूसरां, काळ रौ झालीयौ चाल काळे ।।३।।

ढाहि सिरदार फौजांण ढाळण ढिगां, गौड़ रण ढांण खत्रमांण ग्रहियौ ।
बाजि किरमांण जमरांण सूं बदौबदि, राण रौ भीच दिखणाण रहियौ ।।४।।

---

१९४. गीतसार—ऊपर कथित गीत गौड़ शाखा के बलिराम के पुत्र शुभराम गौड़ पर है। शुभराम महाराणा राजसिंह मेवाड़ के पक्ष में औरंगजेब के विरुद्ध लड़ने के लिए मेवाड़ के आक्रमणों में शामिल हुआ था। फिर वह मेवाड़ की सेना में रहकर दक्षिण प्रान्त में लड़कर मारा गया था।

---

१. पांण—बल। सुरतांण—बादशाह। हूं—से। साहिब—स्वामी। गौ—गया। माडां—बलात्। सवांहीं—सब के, सबके उपरान्त होकर। वळे—बलपूर्वक, फिर, लौटकर। मांही—में।

२. सिंघ री—राजसिंह की। चाड—सहायता। सिंघाळौ—सिंह, श्रेष्ठवीर, पुत्र। हेकलो—एकाकी। पूगौ—पहुंचा, मारने में सफल हुआ। नेत—वीरता का प्रतीक आभूषण। दस सहस—मेवाड़ के महाराना। तिको—जो, वह। निवाहण—निभाने के लिए। सेतबंध—श्वेत पगड़ी बांधने वाले, बादशाह औरंगजेब को। सालियौ—चुभ गया। सेत सारां—उज्ज्वल शस्त्रों वाला।

३. बियौ—दूसरा। गोपाल—राजा गोपालदास गौड़, शुभराम। रणताळ—रण स्थली में, युद्ध, समय। बिढ़ण—लड़ने। झड़े—अजस्त्र प्रहार, झड़ी। किरमाळ—तलवार। ऊझाळ—समूह, झुण्ड। झाळे—रोके हुए, ऊपर उठाए हुए। ठाळ—बार। टाळौ—बचाव, किनारा। काळ—मृत्यु। झालीयौ—पकड़े हुए। काळे—वीर।

४. ढाहि—धराशायी कर। ढाळण—गिराने, पटकने। ढिगां—समीप। रण ढांण—युद्ध युद्धाग्रही। खत्रमांण—क्षात्रमर्यादा। बाजि—लड़कर। किरमांण—मुसलमान, तलवार। जमरांण—यमराज। बदौबदि—हठ ठान कर। भीच—योद्धा। दिखणाण—दक्षिण प्रान्त में।

१६५. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

अजमेरि साह रांणो उदियापुर, धुर लग सुभा अेह खत्र धौड़ ।
दहबारी तणै दरवाजे डेरा, गूडर तूंझ बिराजे गौड़ ॥१॥

हैजम हूमल पैरीया हैवै, कहर बलावत नांम किया ।
आप परै राखण अजमेरे, डेरा डूंगर उरै दिया ॥२॥

सुरतांणां राणा सां भेड़, खेमहरा खत्रवाट खरी ।
निहट्टि कपाट पहाड़ां नीला, काळा पाहड़ अचड़ करी ॥३॥

---

१९५. गीतसार—उपर्युक्त गीत शुभराम बलिरामोत गौड़ पर कथित है । गीतनायक ने महाराणा राजसिंह की ओर से दहबारी स्थान के युद्ध में शाही सेना का सामना किया था । अन्त में वह महाराणा की तरफ से नियत दक्षिण प्रान्त की सैन्य पंक्ति में रहकर दक्षिण के किसी युद्ध में काम आया ।

---

१. धुर लग—प्रारंभ से ही । सुभा—शुभराम । अेह—यह । खत्र धौड़—वीरत्व, बहादुरी । दहबारी तणै—उदयपुर में प्रवेश किनारे का एक द्वार तथा इसी नाम का एक ग्राम । डेरा—शिविर, कैम्प । गूडर—खेमा, शिविर । बिराजे—रहकर, ठहरे ।

२. हैजम—अश्व सेना, सेना । हमल—हमला । पैरीया—पार निकला, प्रेरित किया । हैवै—युद्ध । कहर—विपत्ति वेला में । नांम किया—प्रसिद्धि प्राप्त की । परै—दूर, अलग । डूंगर—पहाड़ । उरै—इस ओर, इधर की तरफ ।

३. सुरतांण—बादशाह औरंगजेब । खेमहरा—खेमकर्ण का वंशज, गीतनायक शुभराम खत्रवाट—क्षत्रियत्व, वीरता । खरी—सच्ची, पक्की । निहटि—आक्रमण कर, टक्कर लेकर । कपाट—द्वार के कपाट । नीला—नीले, हरेभरे सघन । काळा पाहड़—राजस्थान के अलवर भूभाग में स्थित एक पहाड़ जो उत्तर से आनेवाले आक्रान्ताओं को रोकने के लिए प्रसिद्ध रहा है, महान्वीर । अचड़—श्रेष्ठ कार्य, वीरता एवं प्रसिद्धि का कार्य ।

१६६. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

जगि माया दीध दीध काया जिम, क्यावर भूलो नहीं कहीं ।
तैं सुभराम आपरै तांई, नांम राम राखिया नहीं ॥१॥

बडदातार जूझार वलाउत, दाखण सरबस दीधौ देत ।
सांमा लोक सरीर सहेतां, रामां परलोकरा रहेत ॥२॥

धणियां जीव धार अणियां धड़ि, अधड़ कवि अभिराम ऊचार ।
सिध अवसाण ढाल जंत सीधां, दीधा पालहरा दातार ॥३॥

नाम प्रताप इसौ नारायण, अजमेरा जाइ न अहळ ।
मुखि कहतां गहवरियौ मुखि, मुखि फळियौ लाधौ मुगति फळ ॥४॥

---

१६६. गीतसार—उपर्युक्त गीत शुभराम वलिरामोत पर रचित है। कवि ने गीत में वर्णन किया है कि शुभराम ने अपने कर्त्तव्य का विस्मरण नहीं किया । संसार में जीवित अवस्था में याचकों को द्रव्य दिया और अन्त में द्रव्य की ही भांति युद्ध में अपने शरीर को न्यौछावर कर दिया ।

---

१. दीध—प्रदान की । काया—शरीर । जिम—ज्यों, जैसे । क्यावर—कर्त्तव्य । तांई—लिए ।
२. वडदातार—महादानी । वलाउत—वलिराम का पुत्र । सरवस—सर्वस्व । दीधौ—दिया । देत—दान । सांमा—संचय, सम्मुख । सहेतां—सहित । रामां—शुभराम । रहेत—निवासी ।
३. धणियाँ—स्वामियों । अणियां—सेना की अग्रिम पंक्ति, शस्त्रों की नोकें । धड़ि—घट, शरीर । अधड़—धड़ रहित, मुख से । अभिराम—सुन्दर, श्रेष्ठ, शुभराम । ऊचार—उच्चारण कर । सिध अवसाण—तात्कालिक अवसर, युद्धकला—प्रवीण । जंत—बंधन । सिधां—सहित । पालहरा—गोपालदास का पौत्र ।
४. इसौ—ऐसा । अजमेरा—अजमेर पर गौड़ों का शासन रहने के कारण कवि ने शुभराम को 'अजमेरा' सम्बोधन से वर्णित किया है । अहळ—व्यर्थ । गहवरियौ—गर्व से भरा हुआ । फळियौ—सफल हुआ । लाधौ—मिला । मुगति फळ—मोक्ष, मुक्तिफल ।

१९७. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

घट घाट पळास झूबिया घाग्रे, ठीक न का भूला जुध ठांम।
कवि सूं अंत समै कहराया, राम राम आया सुभराम ॥१॥

चाचर मांहि सुवार न चूकौ, घाव बत्तीस सुमार घणा।
मरण लग पोंहचाया मौनूं, तैं मुजरा बलराम तणा ॥२॥

पळ खंड खंड विहंड हुआ पिड़ि, जीह जुहार बिहार जजि।
.... कहिया भोमै कलियाण कजि ॥३॥

पौढ़ियौ गौड़ दखिण खळ पाथरि, अवसाँणै जागियौ अड़ोल।
तोल मरण हींदवे न तुरके, मुखि बोलियौ सतोल न मोल ॥४॥

— कल्याणदास राव रौ कह्यौ

गीतसार—उपर्युक्त गीत गौड़ वीर शुभराम बलिराम के पुत्र पर सर्जित है। शुभराम ने दक्षिण के युद्ध में घावों से आपूरित हो, मरते समय अपने पास के भौमा के सन्देश कवि कल्याणदास को अभिवादन कहलवा कर प्राण त्याग किया। कवि ने शुभराम द्वारा उसे अन्त समय में स्मरण करने के लिए आभार व्यक्त किया है।

---

१. घट—शरीर। पळास—मांस भक्षी, मांस काटने वाले। झूबिया—प्रहार करने लगे। घाग्रे—घाव, चोट। ठांम—स्थान। अन्त समै—अन्तिम समय में, मृत्युकाल में। कहराया—कहलाये।

२. चाचर—युद्ध, रण-क्रिड़ा। सुवार—शुभ अवसर, उस समय, शस्त्र प्रहारों में। चूकौ—भूला, खोया। सुमार—गहरे आघात, गणना। घणा—बहुत। पोंहचाया—प्रेषित-किये, पहुँचाए। मौनूं—मुझे। तैं—तुमने। मुजरा—अभिवादन। तणा—का, तनय।

३. पळ—मांस। विहंड—बिखर गए, टुकड़े टुकड़े। पिड़ि—युद्ध। जही—जिह्वा। जुहार—अभिवादन। जजि—यजमान, यज्ञ। भोमै—भोमा, व्यक्ति का नाम। कलियाण—गीतलेखक कल्याणदास। कजि—लिए, प्रति।

४. दखिण—दक्षिण। खळ—वैरी, खलिहान। पाथरि—बिछौना, कटे हुए अनाज के पौधों का ढेर। अवसांणै—अवसर पर, अवसान काल में। जागियौ—जगा। सतोल—वजनी, गुरुत्व लिए हुए। मोल—मूल्य।

१९८. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

अे वातां नोख सुभा अजमेरा, पौह घरांणौ कीधौ पार।
मेल्हि गयौ कवि झोले माथौ, घड़ दखिणाध विरोळे धार ॥१॥

गौड़ भड़ अपहड़ां गाहटतां, खाग झड़ां ओझड़ां खिरै।
दान सिरै कीधौ वडदाता, सूर सांमतां मरण सिरै ॥२॥

वरस वत्तीस बत्तीस लोह वपि, विढ़तां खळ खावा दिया न तीस।
दीधौ सीस हेकलो जगदे, सुभै जुहार सहेतो सीस ॥३॥

विढ़ण कियौ दस गुणौ बळाउति, दूणौ निरवाहियो दूओ।
जीवण मरण दुवै विध जुड़तां, हिन्दवां तुरकां देव हूओ ॥४॥

—कल्याणदास राव रौ कह्यौ

---

२९८. गीतसार—उपर्युक्त गीत गौड़वंशीय वीर शुभराम पर सर्जित है। गीत में कवि ने शुभराम की बत्तीस वर्ष की आयु में बत्तीस घाव लगने पर रणभूमि में काम आने का वर्णन किया है। कवि ने कहा है कि दानवीर जगदेव पंवार ने तो अकेले सिर का ही दान दिया था, पर शुभराम ने तो शीशदान के साथ साथ अभिवादन भी भेजा।

---

१. अे—यह। नोख—अनुपम, बढ़ चढ़ कर। सुभा—शुभराम। अजमेरा—अजमेर के स्वामी, गौड़ों का जातीय सम्बोधन। पौह—राजा, योद्धा। घरांणौ—कुल, कुटुम्ब। मेल्हि गयौ—भेज गया, रख गया। घड़—घट, सेना। दिखणाध—दक्षिण प्रांत की। विरोळे—मंथन कर। धार—शस्त्र धारा।

२. भड़ां—योद्धाओं। अपहड़ा—जबरदस्तों, वीरों। गाहटतां—कुचलते, दमन करते। खाग-झड़ां—खड्गाघातों, तलवारों से गिराते। ओझड़ां—भयंकर चोटें। खिरै—गिरने का भाव, क्षरित। सिरै—सर्वोपरि, श्रेष्ठ। वडदाता—महादानी।

३. लोह—शस्त्र। वपि—शरीर। विढ़तां—युद्ध करते। दीधौ—दिया। हेकलो—अकेला, एक मात्र। सुभै—शुभराम। सहेतो—सहित।

४. विढ़ण—युद्ध, युद्ध मृत्यु। गुणौ—गुणित। बलाउति- वलिराम का पुत्र। दूणौ—द्विगुना। निरवाहियौ—निर्वाह किया। दूओ—आज्ञा, कथन, द्वितीय। दुवै—दूसरी। जुड़तां—लड़ते, जुटते। देव हूओ—देवत्व प्राप्त किया, पूजनीय हुआ।

१६६. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

कुंण वीकम पूत करण पूतह कुंण, सिवरी पूत विधीया कुंण सूत ।
सुभपति कहै आउत न सुणिया, पूत तियां घरि कीरति सूत ।।१।।

बड दातारे दीठ किणी बेटा, नरपुरि बेटा अेह निपाप ।
बलिभद तणौ गिणाड़ै बेटा, बेटा जिकै कहै मा-बाप ।।२।।

सांचा सबद पिण्ड सोह, सलहे अजमेरो सकल सुज ।
काळि मंगळ झळ नहीं कळाये, जातिग जायै केमि जस ।।३।।

— कल्याणदास राव रौ कह्यौ

---

१६६. गीतसार—उपरि वर्णित गीत वीरवर शुभराम गौड़ की युद्ध में प्रदर्शित वीरता तथा रण-मृत्यु की श्लाघा का परिचायक है। शुभराम ने कहा है कि विक्रमादित्य, कर्ण और शिवि के पुत्रों के नाम कौन जानता है। सपूत वह है जिसके कारण माता-पिता को यश प्राप्त हो। बलिभद्र तनय शुभराम वह सपूत था जिसके कारण गौड़-जाति का गौरव बढ़ा।

---

१. कुंण—कौन। वीकम—राजा विक्रमादित्य। करण—राजा कर्ण। सिवरी—राजा शिवि। विधीया—विधि, तरह। सूत—सुत, विचार। सुभपति—शुभराम गौड़। आउत—कुपुत्र। तियां—जिनके। कीरति—कीर्ति।

२. दीठ—दृष्टि, देखा। किणी—किसने। नरपुरि—मानवलोक। अेह—यह, ऐसे। निपाप—निष्पाप। तणौ—का, पुत्र। गिणाड़ै—गणना करावे, गिना जावे। जिके—जो, वे।

३. सांचा—सत्य। सबद—शब्द, वचन। पिण्ड—शरीर। सलहे—पूर्ति करे। सुज—वह। काळि—मृत्यु, युद्ध। मंगळ झळ—अग्नि ज्वाला कळाये—फंसे, उलझे। जातिग—जाति का, जाते हुए, बीत जाने पर भी। केमि—कैसे जस—यश, सुनाम।

२००. गीत सुभराम बलिरामोत गौड़ रौ

तिल छे कनहीं तन छेक तमासा, हूऔ सुभौ द्रुम लागि हरां ।
नर सूरो बागो नर सूरां, नर सुहड़ो वाजियां नरां ॥१॥

वार वार वा वार वेपारां, अजमेरो भारां अचुंभ ।
जोधा कुंभ सरीखो जुड़ियौ, कुंभ संजोती वीजौ कुंभ ॥२॥

चत्रसठि गान फेर फौजां चत्र, घटि घटि घाव वणाव घणौ ।
कांम दखिण बरियांम कहाणौ, तांम हाम बलिराम तणौ ॥३॥

---

२००. गीतसार—प्रस्तुत गीत गौड़ क्षत्रिय शुभराम पर कथित है। शुभराम ने दक्षिण प्रान्त के युद्ध में वीरता पूर्वक रण-मृत्यु प्राप्त की थी। गीत में गीतनायक के शरीर पर अनेक घाव लगकर मारे जाने का वर्णन है। वह बलिराम का पुत्र और कुंभा का वंशोत्पन्न था।

---

१. तिल—तिल मात्र, तनिक भी। छेक—छिद्र। तन—शरीर। लागि—लगकर, लिपट कर। नरसूरो—नरवीर। बागो—लड़ा। सुहड़ो—योद्धा। वाजियां—लड़ाई करके कहलाते।

२. वार—समय, अप्सरा। वार वा—वरण करने, उस समय। वेपारां—अपरिमित भारां—बहुत अधिक। अचुंभ—विस्मय। जोधा—योद्धा, जोधराज। कुंभ—कुंभा कुंभकर्ण दैत्य। सरीखो—समान। जुड़ियौ—जुटा, लड़ा। संजोती—ज्योतियुक्त बीजौ—दूसरा।

३. चत्रसठि—चौसठ चण्डिकाए। फेर—फिर। फौजांचत्र—चतुरंगिनी सेना। घटि घटि—शरीर प्रति शरीर। वणाव—शृंगार। घणौ—अधिक। काम—कार्य दखिण—दक्षिण प्रान्त। बरियांम—श्रेष्ठ। तांम—तव। हाम—इच्छा। तणौ—को, पुत्र।

२०१. गीत सुभराम गौड़ बलिराभोत रौ

चड़ खीचड़ रतड़ घेर तड़ तड़, तड़ तेवड़ गौड़ रै तमाज ।
साल साल अणिसाल सौ सरां, सालगिरे सारीख समाज ॥१॥

सुत बलिराव जमाव सिंधुरां, हिन्दवां तुरकां दखिण हठां ।
वरसगांठि सह कोई विराजै, कहो विराजै घाव कठां ॥२॥

घाव बत्तीस बत्तीस बरस घट, अरस परस रस लोह अनंत ।
सुग्रभ पहरि सिंगार करै सब, लोह सिंगार सुभौ लाभंत ॥३॥

बहसे हसे बकाले बरतै बोलह भांते गोपाल बियौ ।
मजलसि मौज जुहार मेल्हंतां, कवि हूंतां उपगार कियौ ॥४॥

—कल्याणदास राव रौ कह्यौ

---

२०१. गीतसार—उपर्युक्त गीत शुभराम बलिराभोत गौड़ योद्धा पर रचित है। शुभराम ने दक्षिण प्रान्त में लड़े गए शाही सेना के युद्ध में वीरगति प्राप्त की थी। युद्ध में घायल होकर मरते समय उसने गीतकार को अंतिम अभिवादन कहलवाया था। कवि ने गीत में इसी प्रसंग का वर्णन किया है।

---

१. चड़—क्रुद्ध, चड़ड़ चड़ड़ की ध्वनि। खीचड़—खीच, कसर। रतड़—रक्तिम। घेर—घेराव। तड़ तड़—तड़तड़ की ध्वनि, अनवरत प्रहार की ध्वनि, गोलियों की आवाज। तेवड़—आरंभ। साल साल—वर्ष प्रति वर्ष। अणि साल—शस्त्र की नोंक की चुभन। सौ सरां—बाण समूह। सालगिरे—जन्म दिन का उत्सव।

२. सिंधुरां—हाथियों का। हठां—हठ पूर्ण। वरसगांठि—वर्षगांठ। सह कोई—सब कोई, हर कोई। विराजै—शोभा पाते, बैठे हुए। कठां—कहां।

३. बरस—वर्ष। घट—शरीर। अरस परस—एक दूसरे के सामने, स्पर्शास्पर्श। रस लोह—युद्ध, शस्त्राघातों का आनन्द। सुग्रभ—जन्मदिन। पहरि—प्रहर, पहिन कर। लाभंत—लाभ लेता है, प्राप्त करे।

४. बहसे—जोश में आकर। हसे—हंसते हुए। बकाले—ललकारते। वरतै—व्यवहृत। भांते—तरह। बियौ—दूसरा। मजलसि—उत्सव, समारोह। मौज—आनंद। मेल्हंतां—भेजते। हूंतां—से। उपगार—उपकार, हित।

२०२. गीत गोयंददास कान्हावत रौ

आहेड़ां मरै अह दळां आयां, बेऊं दांत खिवैं बांणास।
वेड वाराह बिचै बेहु बाघां, डोहि पीयै जळ गोयंददास ॥१॥

मंडोवरां बिचै मेवाड़ां, वीर सिकार नीसरै वाह।
घग रा धीया रोळवै पाघां, बाघां बिहु बिचै बाराह ॥२॥

अेकल मरै नहीं आहेड़ै, चरै बेहु दिस कमंध चर।
आवै खाट घातीयां ओहटै, साट खायकां तणा सर ॥३॥

रिण रावत आदेसियौ राजा, रिम रेसियौ न खेसियौ रांण।
पिड़ि ऊदावत अनै पताउत, कान सुजाव वदै केवांण ॥४॥

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

२०२. गीतसार— उक्त गीत राठौड़ वीर गोयंददास कान्हावत की वीरता और निर्भीकता का परिचायक है। कवि ने गीतनायक को वराह के रूप में वर्णित किया है जो जोधपुर नरेश गजसिंह और उदयपुर नरेश अमरसिंह दोनों सिंहों जैसे प्रतापियों के मध्य स्वच्छंदता पूर्वक विचरण करता है और वह किसी के भी वश में नहीं आता है।

---

१. आहेड़ां—शिकार में। अह दळां—शिकारियों का समूह। बेऊं—दोनों। दांत—दंत्य। खिवैं—चमकती है। बांणास—तलवार। वेड—वन, दो स्थानों के मध्य का विकट स्थान। वाराह—सूअर। बेहु—दोनों। बाघां—सिंहों के, महाराजा गजसिंह जोधपुर और महाराना अमरसिंह उदयपुर। डोहि—मंथन कर।

२. नीसरै—निकले। वाह—प्रहार, धन्य। रोळवै—मिटता है, नाश करता है। पाघां—पगड़ियां (?)। बाघां—शेरों। बिहु—दोनों के।

३. अेकल—अकेला रहने वाला, बड़ा सूअर। आहेड़ै—आखेट में, युद्ध में। चरै—भक्षण करे, चर्वण करता है। कमंध—राठौड़ गोयंददास। चर—विचरण कर, घास खाता है। खाट—चारपाई में। घातियां—डाले हुए। ओहटै—पीछा करने वाले, वापस लौट कर, ढंके हुए। साट—सूअर का मांस। खायकां—खाने वाले। सर—सिर।

४. आदेसियौ—नमस्कार किया। रिम—वैरी। रेसियौ—दवा सका, मार सका। खेसियौ—लड़ सका, नाश कर सका। पिड़ि—युद्ध। ऊदावत—उदयसिंह का पुत्र महाराजा गजसिंह। पताउत—महाराना अमरसिंह। वदै—सराहते हैं। केवांण—तलवार।

२०३. गीत ठाकर रामसिंघ लालसिंघोत नीठराणां रौ

पड़ ताड़ गोळां असण धौम आतस पवन, ऊमड़ण धाड़ पौरस अमावै ।
अभंग रामौ हरिन्द वेळ इम आवियौ, आगि जिम ऊठतां मेह आवै ॥१॥

तीस खट ससत्र झड़ गाज गड़गड़ त्रबंक, तड़ित भरळक तिजड़ भरण रणताळ ।
भीड़ संगराम सुत तणौ आयौ भिड़ण, लाय लागां सघण जेम सुत लाल ॥२॥

बाजि हक वीर केकी कौहोक खुस वखत, जिण समै असत हंस खाय जोलौ ।
यंदहर उग्रहण मदत रिण आवियौ, दहण प्रजळी सुरिंद बीयौ दौलो ॥३॥

तिण समै हरिन्द रहियौ गहर कलपतर, गजण उर सोच कुसमौ गमायौ ।
यंद रामै उरड़ छौळ जळ आवधां, अभंग औरड़ भटी बोळ आयौ ॥४॥

---

२०३. गीतसार— प्रस्तुत गीत नीठराणां स्थान के ठाकुर रामसिंह द्वारा ठाकुर संग्रामसिंह के पुत्र हरिसिंह की युद्ध में सहायता करने का बोधक है। गीत में वर्णन है कि आक्रान्ताओं ने जोश में उमड़ कर हरिसिंह पर आक्रमण किया। जिस समय वर्षा-कालीन ओलों की भांति तोपों के गोलों की बौछार-झड़ी लग गई। अग्निधूम्र फैल गया, उस समय रामसिंह की सहायतार्थ हरिसिंह उसी प्रकार आया जिस प्रकार अग्नि धधकने पर मेघ आकर उसको शांत कर देता है।

---

१. ताड़—बौछार। गोळां—गोलों की। असण—तीर, वज्र, ओले। धौम—धूम्र। आतस—अग्नि। ऊमड़ण—उमड़ कर। धाड़—आक्रान्ता, लुटेरे। पौरस—पौरुष। अमावै—असीम। अभंग—वीर। हरिन्द—हरिसिंह। वेळ—सहायता। आवियौ—आया। आगि—अग्नि। जिम—ज्यों। ऊठतां—धधक पड़ने पर। मेह—मेघ, वर्षा। आवै—आती है।

२. तीस खट—छत्तीस। ससत्र—शस्त्रों की। झड़—प्रहार, बौछार। गाज—गर्जना। गड़ गड़—गडगड़ की ध्वनि। त्रबंक--नगाड़े। तड़ित--विद्युत। भरळक--चमक। तिजड़--तलवार। भरण--परिपूर्ण करने। रणताळ--रणभूमि रूपी तालाब। भीड़--सहायता। तणौ--की। भिड़ण--लड़ने के लिए। लाय लागां--अग्नि लगने पर। सघण--मेघ। जेम--ज्यों। सुत लाल--लालसिंह का पुत्र रामसिंह।

३. बाजि हक--हाक होकर। केकी--मयूर। कौहोक--कुहू ध्वनि, मोर की काकली। खुस वखत--वर्षा काल, सुखद वेला। जिण समै--उस समय। असत--अधर्म, युद्ध। हंस--प्राण। जोलौ--डाँवांडोल होना। यंदहर--इन्द्रसिंह के पौत्र का। उग्रहण--रक्षण--बचाव। रिण--युद्ध में। दहण प्रजळी--प्रज्वलित अग्नि। सूरिंद--इन्द्र। बीयौ--द्वितीय। दौलौ--दौलतसिंह।

४. तिण--उस। गहर--गहरा, हराभरा। कलपतर--कल्पतरु। कुसमौ--विपत्तिकाल। गमायौ--नष्ट किया, मिटाया। यंद--इन्द्र। उरड़--जोश में उमड़ कर। छौळ जळ--जल की तरंगे। आवधां--शस्त्रों। अभंग--वीर, अडिग। औरड़--मेघ की झड़ी। भटबोळ--आग को बुझाने वाला, भट्टी को शांत करने वाला।

२०४. गीत सुंदरदास रै जुद्ध रौ

चहुंवै दिस आसुर विखम चालिया, विहुंवै दळां खिमिया बाणास ।
बिरछां पान ऊडिया खांखर, डिगै न भाखर सुंदरदास ॥१॥

झालण मूंह आयौ जूझारां, बाहंतौ खगबोळ विच ।
परम धार भार भर पड़ियौ, रामांवत ऊपरि रहच ॥२॥

हेक मुहाड़ हालियौ हीकट, रढ़ आफळिया बिचळै राड़ ।
सुंदर ठाकरसी सारीखा, पड़ियौ तूं जूझारां पाड़ ॥३॥

कुंत काढ़ियौ चंद कळोधर, पै पंडरा वगतरां पार ।
तैं खग हथां दांत खैरविया, तौ ऊपरै खिरी तरवार ॥४॥

---

२०४. गीतसार— उपरि कथित गीत में सुन्दरदास की रण-वीरता और रण में वीरगति प्राप्त करने का वर्णन है। गीत में मुसलमानों की सेना से लड़ने तथा युद्ध में विचलित न होने का वर्णन है। गीतकार ने सुन्दरदास और उसी के समान वीर ठाकुरसी के धराशायी हो जाने पर वीरगति प्राप्त होने का उल्लेख किया है।

---

१. चहुंवै दिस—चारों ओर से। आसुर—असुर, मुसलमान। विखम—विषम गति से। विहुंवै दळां—दोनों पक्षीय सैन्य समूह। खिमिया—चमकने लगे। बाणास—तलवार। बिरछां पान—वृक्षों के पत्ते। खांखर—सूखे पत्र। भाखर—पर्वत।

२. झालण—झेलने के लिए। मूंह—सामने, मुंह आगे। जूझारां—जूझने वालों के। बाहंतौ—प्रहार करता हुआ। खगबोळ—खड्ग के प्रहार, भयानक युद्ध। भार भर—भारी युद्धभार, विकट युद्धभार। रामावत—रामसिंह के पुत्र पर। रहच—युद्ध।

३. हेक—एक। मुहाड़—मुखाग्र। हालियौ—चला। रढ़—विग्रह, हठ। आफळिया—भिड़ गये, लड़ने लगे। विचळै—युद्ध की स्थिति बिगड़ने पर। राड़—युद्ध। सारीखा—सरीखा, एक समान। पड़ियौ—धराशायी हुआ। पाड़—गिरा कर, पटक कर।

४. कुंत—भाला। काढ़ियौ—निकाला, पार किया। चंद कळोधर—चंद्रसिंह की कला का धारक, चन्द्रसिंह का वंशोद्धारक। पंड रा—शरीर का। वगतरां—कवचों के। पार—इधर से उधर। खग हथां—खड्गाघात से। खैरविया—तोड़ गिराये। तौ—तेरे, तुम्हारे। खिरी—गिरी, प्रहार हुआ। तरवार—तलवार का।

२०५. गीत औनाड़सिंघ पंवार रौ

प्रळैकाळ ज्यूं अथागौ कीधौ धाड़वे थापले पीठ,
राग बागौ सिंधवी चाडवे कीधी राड़।
लूंण पांणी ऊजळो दिखाउवे धीयागां लागौ,
आउवे भागलां साथै न भागौ औनाड़ ॥१॥

थाट भांजे दिल्ली फिरंगाण सुं कोपियौ थकौ,
काळा लोक प्रथी सुं लोपियौ बहै कार।
भार भारां थारां भुजां आवगां जोपियौ भालो,
पांव सेस माथै ऊंडौ रोपियौ पंवार ॥२॥

---

२०५. गीतसार– उक्त गीत में जोधपुर के दुर्गपाल औनाड़सिंह पंवार की रण-वीरता तथा शत्रुओं का नाश करते हुए वीरगति प्राप्त करने का वर्णन है। मारवाड़ के आउवा स्थान पर सन् १८५७ ई. में औनाड़सिंह ने अंग्रेजों की सहायता करते हुऐ स्वातंत्र्य वीरों से लोहा लेकर मृत्यु प्राप्त की थी। औनाड़सिंह जोधपुर की अंग्रेज-भक्त सेना का उच्चाधिकारी भी था।

---

१. प्रळैकाळ ज्यूं–प्रलयकालीन। अथागौ–अथाहता, शीघ्रता। धाड़वे–दौड़कर, तत्परता से धावा मारकर। थापले पीठ–जोश दिलाने के लिए पीठ पर थपकी मारना, शाबासी देना। राग बागी–राग बजी। सिंधुवी–सिंधु रागिनी। चाडवे–रुचि सहित। राड़–युद्ध। लूंण पांणी–नमक और जल, स्वामिधर्म। धीयागाँ लागौ–शस्त्र प्रहारों से लगकर, शस्त्रधाराओं के लगकर। भागलां–भगने वालों के। औनाड़–औनाड़सिंह।

२. थाट–सेना। भांजे–ध्वंस कर। फिरंगाण–अंग्रेजों से। कोपियौ थकौ–कुपित हुआ। काळालोक–भारतीय लोग, क्रांतिकारियों। लोपियौ–उल्लंघन किये हुए। बहै–चलते हैं। कार–मर्यादा। भार भारां–भारी दायित्व। जोपियौ–जोश में भरा हुआ। ऊंडौ–गहरा। रोपियौ–रोपा, दृढ़ता से स्थिर किये हुए।

आडा जीत भूप रै भागतां दळां हुवौ आडो,
धमाई नाळियां मतै गाढ़ौ सार धार ।
जंगां काळा लोक रौ पड़ंतां भार जठै जाडो,
काम आयौ उठै फौजां लाडो किलादार ॥३॥

मांटी पणौ स्यामध्रमो दिखायौ पंवारां मौड़,
चंदनामो प्रथी धू रखायौ चहुंकूंट ।
वारंगनां बधायौ विवाणां चढ़ै अे णवार,
वीढ़ाण ऊजळी धारां सिधायौ वैंकूंट ॥४॥

---

३. आडाजीत–शक्तिशाली, वीर। आडो–रक्षक, सामने। धमाई–चलवाई। नाळियां–तोपें। मत्ते–उन्मत्त, मन से। सार धार–शस्त्र की धाराएं। जठै–जहां। जाडो–सघन, अधिक। लाडो–दूल्हा।

४. मांटी पणौ–मर्दानगी। स्यामध्रमो–स्वामिधर्म। मौड़–सिरमौर। चंदनामो–कीर्ति। धू–शीश, ऊपर। चहुंकूंट–चारों दिशाओं में। वारंगनां–अप्सराएं। बधायौ–स्वागत किया। अेणवार–इस समय। वीढ़ाण–युद्ध। ऊजळी धारां–तलवारों के प्रहारों से। सिधायौ–प्रस्थान कर गया।

२०६. गीत सिंघवी भींवराज जोधपुर रौ

थूरै खामा दहूं राहां दिलेस व्हैं तावीन थायौ,
महो खेहां डंमरां मिळायौ आसमान ।
आम्बेर ऊथापवा पटेल दळा साज आयौ,
जोरावार देख मनां अभायौ जिहांन ॥१॥

महाबाह ऊमरा सकज्जां मंत्र धारा मिळे,
राजा लिखै प्रताप अरज्जां अेह रीत ।
अजीतसाह आगै ही जैसींघ नै ऊबेळीयौ,
ज्यूं अबैही ऊबेळ कीजै बीजाई अजीत ॥२॥

---

२०६. गीतसार—ऊपर लिखा गीत जोधपुर नरेश विजयसिंह के सेनापति भीमराजसिंघवी की युद्ध- वीरता का बोधक है। जयपुर पर माधवराव पटेल ग्वालियर वालों के पूर्वज ने जब आक्रमण किया तब महाराजा सवाई प्रतापसिंह ने जोधपुर से सैनिक सहायता चाही। महाराजा विजयसिंह ने गीतनायक के नेतृत्व में राठौड़ों को सेना भेजी थी। गीत में मरहठों की सेना को पराजित करने तथा अजमेर का किला उनसे छीन लेने का भी उल्लेख है।

---

१. थूरै—कांपते हैं। दहूं राहां—हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों वाले। दिलेस—वादशाह। तावीन—मातहत। थायौ—किया हुआ। मही—भूमिलोक। खेहां डंमरां—धूलि समूह। आम्वेर—कछवाहों की प्राचीन राजधानी, आमेर नगर। ऊथपवा—उलटने, संहार करने। पटेल दळां—माधव राव अथवा महादाजी पटेल की सेना। साज—सजकर। मनां—मनमें। अभायौ—अप्रिय लगा। जिहांन—संसार को।

२. महाबाह—महावाहु, वीर। ऊमरा—उमराव। सकज्जां मंत्र धारा—सप्रयोजन मंत्रणा के लिए। प्रताप—महाराजा सवाई प्रतापसिंह कछवाहा जयपुर। अरज्जां—निवेदन। अेहरीत—इस प्रकार। अजीतसाह—महाराजा अजितसिंह जोधपुर ने। आगै ही—पहिले भी। जैसींघ—महाराजा सवाई जयसिंह को। ऊबेळीयौ—बचाया था, रक्षा की थी। अबै ही—अब भी। ऊबेळ—रक्षा। बीजाई अजीत—द्वितीय अजितसिंह तुल्य विजयसिंह।

प्रभु चै प्रताप विजैसाह हिंदवांण पत्ती,
तई बत्ती सुणन्ता ऊससे सिरताज ।
कुरम्माण धरत्ती राखिवा तत्ती जैतकाज,
रैणा रूप मदीठौ भेजीयौ भीवराज ॥३॥

बाजे डाक त्रम्बाळा सालुळे महावीर वंका,
धैधींग असंका भुंइ मंडे सूर धीर ।
इंद रौ पारंभ लीधां कूरमाण बेळ आयौ,
वखतेसनन्द रौ दीवाण महावीर ॥४॥

हैं खुरां धमस्सा वागी मचोळां भूगोळ हल्ले,
गरद्दां झवोळां चौतरफ झल्ले गैण ।
अठी माधवेस प्रथी जैत आण आवाजीयौ,
महावाह भीभ जैण गाजीयौ भीमेण ॥५॥

---

३. प्रभु चै—स्वामी के । विजेसाह—विजयसिंह । हिंदवांण पत्ती—हिन्दू समाज के स्वामी । तई बत्ती—आततायी की बात, तप्त वचन, क्रुद्ध बचन, तुम्हारी बात । ऊससै—जोश में उफन कर । कुरम्माण धरत्ती—कछवाहा राज्य, ढूंढ़ाड़ देश । तत्ती—त्वरा पूर्वक । जैतकाज—विजय के कार्य हेतु । मदीठौ—मदमस्त ।

४. बाजे—ध्वनि करें । डाक त्रम्बाळ—डाक और नगाड़े, वाद्ययंत्र। सालुळे—चले, रवाना हुए । वंका—वांकुरे । धैधींग—जबरदस्त, हाथी । असंका—आशंका । भुंइ—भूमि । इंदरौ—चन्द्र का, चन्द्रवंशीय । कूरमाण—कछवाहों की । वेळ—सहायतार्थ, रक्षाहित । वखतेसनंद रौ—महाराजा वखतसिंह के पुत्र महाराजा विजयसिंह का ।

५. हैं खुरां—घोड़ों के सुमों से । धमस्सां—ध्वनि विशेष । वागी—हुई, वजी । मचोळां—अनवरत एक वार ऊपर और एक वार नीचे हिलने की क्रिया का भाव । हल्ले—हिलना । गरद्दां—धूलिसमूह । झवोळां — धूलिमिश्रित वायु के प्रवल प्रवाह से । झल्ले—फैलकर । गैण—आकाश । अठी—इधर । माधवेस—महादाजी पटेल । प्रथी जैत—पृथ्वी को जीतने वाला । आण—आकर । आवाजीयौ—गर्जने लगा । जैण—जिससे, जैसे । गाजीयौ—गर्जने लगा । भीमेण—भीमराज सिंघवी ।

तसां फिरंगाण तेरै हजार धुबक्की तोपां,
कड़क्की बीजळा रुद्र तोपां प्रळै काळ ।
ऊजाळवा नवां कोटां सताबां हरौळ आगै,
राळीया जा अराबां ऊपरै बाजराज ॥६॥

मारवाड़ा वीर चौतरफां मार मार मच्चे,
तई जंग जोबा भाण खंचे सपतास ।
खागां भींक देबा काज भीम मेळीया जोस खाथै,
बांकड़ा गनीमां माथै भेळीया ब्रहास ॥७॥

वीर हाक जोगणी हजारां खागां धारां वागी,
चमू गजां भिड़ज्जां दुसारां चूर चूर ।
अथागो भाराथ सुं दीवाण विजैसाह वाळो,
सतारा नाथ सूं खाग वागो महासूर । ८॥

---

६. तसां—उसी ओर, उसी प्रकार । फिरंगाण—अंग्रेज फ्रांसिसि सेनाएं । धुबक्की—छूटने लगी, ध्वनि करने लगी । कड़क्की—कड़ड़ कड़ड़ की ध्वनि । बीजळां—विद्युत-सी । रुद्र—भयानक । प्रळै काळ—प्रलयकालीन । ऊजाळवा—कीर्तिमान् करने । नवां कोटां—मारवाड़ राज्य को । सताबां—शीघ्रता से । हरौळ—सेना की अग्रिम पंक्ति । राळीया—पटके, डाले । अराबां—तोपखाना, तोपें । बाजराज—घोड़े ।

७. मार मार मच्चे—मारो मारो का कोलाहल हुआ । तई—उस समय । जोबा—देखने के लिए । भाण—सूर्य । खंचे—खींचा । सपतास—सप्ताश्व को । खागां भींक—तलवारों की चोटें । देबा काज—देने हेतु । खाथै—जल्दी से । गनीमां—बैरियों । माथै—पर । भेळीया—मिलाये । ब्रहास—घोड़ ।

८. वीरहाक—वीरों की ललकार, बावनवीरों की ललकारें । जोगणी—देवी । खगधारां—खड्गधारा । वागी—बजी । चमू—सेना । भिड़ज्जां—घोड़े । दुसारां—भालों से । अथागो—अगाध, अथकित । भाराथ—युद्ध । सतारानाथ सूं—पूना-सतारे के राजा से, मरहठा नरेश से । खाग वागो—तलवारें बजाने लगा ।

कुंत बाण कबाण बेधके वंका बीर केई,
लोटणा पख ज्यूं लुटै केई रीठ लेर ।
धैंधींग ऊपटे केई अथां वगो विरद्दां धारू,
वागा मारू मारहठी कट्टा जैण वेर ॥९॥

भाण मागां गरद्दां कायरां माण पाण भागा,
भीड़े रूकां ऊनागां वीराण बाण भींठ ।
लोहा झाट देतै भुजांडंडां आसमाण लागा,
रूघाहरी सींधीरांण वागा आकारीठ ॥१०॥

विधूसै खाग हूं फिरंगाण रा चौवड़ा वाड़ा,
घेतळां ऊवेड़ जाड जोड़ जोस घटेल ।
जोरावार अथायो आघात री देखतां जूझ,
मांण छंडे भागो आधीरात री पटेल ॥११॥

---

९. कुंत वाण—भाले और तीर, भाले और बन्दूकें । कवाण—धनुष । वेधके—विध्य होकर । केई—कई, अनेक । लोटणा पंख—गिरह बाज कबूतर पक्षी । लुटै—लौट गए, भूलुण्ठित हो गए । रीठ लेर—चोटें खाकर । धैंधींग—जबरदस्त, हाथी । अथां—अथाह । धारू—धारण कर्त्ता । मारू—मारवाड़ के वीर । मारहठी—महाराष्ट्रीय । कट्टा—दुर्धर्षवीर, लड़ाकू । जैण वेर—जिस समय ।

१०. भाण मागां—सूर्यपथ, आकाश मार्ग । गरद्दां—धूलिराशि । माण पाण—सम्मान और लज्जा । भीड़े—भिड़ाकर । रूकां—तलवारें । ऊनागां—नग्न । वीराण—वीर । बाण भींठ—तोपों को स्पर्श कर । लोहा झाट—शस्त्रों के प्रहार । भुजांडंडां—भुजदण्ड । लागा—छूने लगे । रूघाहरी—रघुनाथ का पौत्र भीमराज । सिंधीरांण—सिंधियों का राजा, महादाजी पटेल । आकारीठ—युद्ध, घमासान युद्ध ।

११. विधूसै—विध्वंस करे । खाग हूं—तलवार से । फिरंगाण रा—फिरंगियों का । चौवड़ा वाड़ा—चार पंक्तियों का घेरा । घेतलां—प्रहारकों का । ऊवेड़—संहार कर । जाड जोड़—घने आदमियों का समूह । घटेल—शरीर, कमीवाले । अथागो—अथाह । आघात—प्रहार । जूझ—युद्ध । मांण—प्रतिष्ठा । छंडे—छोड़कर ।

लाखां माल गयंदां सहेत डेरा लूट लीधा,
सबोल धणी रा कीधा लिक्खमां सुजाव ।
जीतौ देस देस नै दिलेस नै गांजीयौ जैण,
तैण माधवेस नै भांजीयौ रूकां ताव ॥१२॥

हिन्दू पातसाह बिजैसाह री तपस्यां हूंतां,
राड़ाजीत दूनी साल में दीयौ अरेह ।
राजा प्रताप चौ घिरै जिहांन भाखीयौ सारै,
अंबानैर वाळौ राज राजा राखीयौ अबीह ॥१३॥

बजावे जैत रा जांगी मिळावे अच्छरां वरां,
रूकां धारां धपावे घेतलां चौ वीर रीत ।
अज्जमेर कीलो अच्छेहरी धरा लीधी अं ही,
जैतवादी सींघवी तेहरी राड़ांजीत ॥१४॥

कूरमाण प्रताप चौ सारौ रोग काट आयौ,
तई सेन लोहां लाट आयौ सरताज ।
खावंद चा सबोल बाला सारी धरा खाट आयौ,
राड़ाजीत थाट पाट आयौ भीमराज ॥१५॥

---

१२. गयंदां–हाथियों । डेरा–शिविर । धणी रा स्वामी के । लिक्खमां–लिखम का । जीतौ–विजय किया । गांजीयौ–गंजित किया । जैण–जिसने । तैण–उस । माधवेश–महादाजी । भांजीयौ–भंग किया । रूकां ताव–तलवार के आतप से ।

१३. हूंतां–से । राड़ाजीत–युद्ध में विजय कर । अरेह–निष्कलंक, शत्रु । भाखीयौ–कहा । सारै–समस्त । अंबानैर–आमेर । अबीह–निडर ।

१४. जैतरा–विजय का । जांगी–नगाड़े । वरां- दूल्हे । धपावे–तृप्त करे । कीलो–किल्ला । अच्छेहरी–श्रेष्ठ । सींघवी–सिंघवी भीमराज ।

१५. सारौ–समग्र । रोग–बिमारी, संकट । खावंद चा–स्वामी का । थाट पाट–सज-धजकर, वैभव प्रकट करता हुआ ।

२०७. गीत कविराज भावानीदान कोटा रौ

करण उपगार सदा हितकारी, कविजण लागै मीढ़ किसा ।
आवै नजर आसतीराळा, जौतां पात भुवान जिसा ॥१॥

देवाहरा ऊजाळी दांनत, घैंच अरिहर माण घणा ।
वसुधा सीस अजै छत वरतै, तालाबर संकरेस तणा ॥२॥

अधक परताप राण महियार्‌यां, जग सोभा अप्रमाण जपै ।
लीधां लाज डांणराह लाणौ, तूंहणपुर आथाण तपै ॥३॥

प्रभता पूर बधी दधि पाजां, चित साजां दिन रात चहै ।
सुकव्या आथ अवै जस काजां, राजां सिर आतंक रहै । ॥४॥

—मंगळजी मोतींसर नगरी रौ कह्यौ

---

२०७. गीतसार— उपर्युक्त गीत भूतपूर्व कोटा राज्य के राजकवि भवानीदान महियारिया तुणपुर की उदारत से सम्बद्ध है। गीतकार ने गीतनायक के दान की सराहना करते हुए कहा की वह यश के लिए सुकवियों को द्रव्य देता है। उसकी उदारता से नरेश भी आतंकित बने रहते हैं।

---

१. उपगार—उपकार । मीढ़—बराबरी में । आसतीराळा—आस्तिकता वाला । जीतां—देखते । पात—पात्र, कवि । भुवान—भवानीदान । जिसा—जैसा ।

२. देवाहरा—देवा का पौत्र । ऊजाळी—उज्ज्वल की, प्रसिद्ध की । दानत—वदान्यता । घैंच—हाँक कर, घसीटकर । अरिहव—वैरी । माण—सम्मान । घणा—घना । अजै—अद्यावधि । छत—छत्र, राजत्व । वरतै—व्यवहृत होता है । तालाबर—भाग्यशाली । संकरेसतणा—शंकरदान का पुत्र कविराजा भवानीदान ।

३. महियारियां—चारणों की महियारिया शाखा का भवानीदान । जपै—वर्णन करता है । लीधां लाज—लज्जा लिए हुए । डांण राह—दान की राह, उदारता का पथ । तूंहणपुर—तूनपुर । आथाण—स्थान । तपै—राज्य करता है । पूर—पूर्ण । वधी—बढ़ी फैली । दधि पाजां—समुद्रों पर्यन्त । साजां—चंगा, उदार । सुकव्या—उत्तम कवियों । आथ—अर्थ, धन । अवै—देता है । जस काजां-कीर्ति की कामनां से । आतंक—भय, डर ।

२०८. गीत कलियाणसिंघ वैरीसिहोत रौ

असमर कै वार पाड़ीयां ऊठे, बाही हाथ भाराथ वरै ।
तौ जिम तिकै कहिजै ताता, कला पराक्रम जिकै करै ।।१।।

म्रत मुर वार धरण गै माथै, भांज भांज सांधै भाराथ ।
दलां रज हुवे भाण दूसरा, हद जांणिजेज बाहे हाथ ।।२।।

मार मरणगां धरण मेळिया, घड़ मचकोड़ वार घणा ।
सूर सधीर सामंतां सरखा, ताइ बदजै वैरसी तणा ।।३।।

कळि ऊबरै मरै साको कर असमर खग खेले अचड़ ।
रूप कळोधर जिसां रावतां, धप खेवजे पूजजे घड़ ।।४।।

—माला सांदू रौ कह्यौ

---

२०८. गीतसार—उक्त गीत क्षत्रिय वीर कल्याणसिंह की असीम वीरता और शौर्य-प्रदर्शन का प्रतिबोधक है। गीतकार का कथन है कि कल्याणसिंह युद्ध भूमि में तलवारों के आघातों से अनेक बार गिर कर उठता था। कलयुग में ऐसे वीर ही मरकर अमर कीर्ति प्राप्त करते हैं। कल्याणसिंह को वीरों के सदृश तथा देवतुल्य मानकर धूप दीप करके पूजा की जानी चाहिए।

---

१. असमर—तलवार। कै वार—कई वार। पाड़ीयां—गिरकर पड़ने पर। बाही—प्रहार की, चलाई। भाराथ—युद्ध। जिम—ज्यों। तिकै—वे। ताता—फुर्तीले, उतावले। कला—कल्याणसिंह। जिकै—वह, वे।

२. म्रत—मृत। मुर वार—तीन दफा। धरण—पृथ्वी। गै—गज, गया। माथै—सिर। भांज भांज—भंजन कर, तोड़ कर। सांधै—जोड़े। रज—क्षत्रियपन, धूलि। भाण—गीतनायक के पूर्वज का नाम। हद—सीमा, बेहद। जांणिजेज—जानी जाती है। बाहे—प्रहार।

३. मरणगां—मारने वालों को। धर मेळिया—धराशायी कर दिये, मिट्टी में मिला दिये। घड़—घट, शरीर। मचकोड़—मच मचा कर। घणा—घना, अधिक। सरखा—सदृश। ताइ—उन, इससे। बदजै—शाबास कहिये, वाह वाही दीजिए। तणा—पुत्र, का।

४. कळि—कलियुग में। ऊबरै—बचे, शेष रहे। साको कर—युद्ध कर, साका कर। असमर—तलवार का युद्ध।

२०९. गीत भीमराज भटनेर रौ

सुरतांण फौज असमांन सीधड़ो, सेहर डडीया पडियौ सेर ।
सादां जिसी वार सादूळां, भीमराज तूटौ भटनेर ॥१॥

ऊभे थकै न वैठौ ऊपर, वडिया जो पड़ीयै बिहळ ।
भूरज भटनैर तणी भीमड़े, सीधे लीधा रायसळ ॥२॥

असी रावतां सिलह ऊतरे, वीसा सौ विढ़ पड़े खिवांण ।
मन जीतो जातो जांणीयौ मनोहर, राण तणौ पड़ीयै आरांण ॥३॥

हर कोई दीयै पोळियां हाथां, चंद्रहासां चित्रियौ चढ़े ।
कोई भीमड़ा तणी पर करज्यो, गढ़ सिरवां तूटते गढ़े ॥४॥

खत्रियां गुर नमौ खड़ग सिध खीमां, पोत तुहाळी तणौ प्रमांण ।
वासण इम देसौत विरड़ियौ, सुपह पिछम दिली सुरतांण ॥५॥

---

२०९. गीतसार—उपर्युक्त गीत भटनेर के शासनाधिकारी भीमराज से सम्बद्ध है। भीमराज ने शाही सेनानायक राजा रायसल शेखावत और राव मनोहर शेखावत के भटनेर पर आक्रमण करने पर वीरता के साथ उनका सामना किया और अस्सी रावत पदवीधारी तथा एक सौ वीस योद्धाओं सहित घमसान लड़ाई की।

---

१. असमान—आकाश। सेहर—शिखर। सादां—प्रकार। वार—समय। सादूळां—सिहों। तूटौ—टूट पड़ा, भिड़ा। भटनेर—भटनेर नामक दुर्ग पर।

२. ऊभे—खड़े, सावित रहते। थकै—रहते हुए। बिहळ—विह्वल। भूरज—बुर्ज। तणी—की।

३. सिलह—जिरह बख्तर। वीसा सौ—एक सौ बीस। विढ़ पड़े—लड़ मरे। खिवांण—विमान। आरांण—युद्ध।

४. दीयै पोळियां—दरवाजे बन्द किए। चंद्रहासां—तलवारों। चित्रियौ—चित्रित, घायल। भीमड़ा—भीमराज। पर—तरह, सहायता। सिरवां—सिरपर, ऊपर।

५. खत्रियां गुर—श्रेष्ठ क्षत्रिय। खड़ग सिध—खड्गसिद्ध, वीरवीर। खीमां—खेमसिंह। तुहाळी—तेरी, तुम्हारा। इम—इस प्रकार। देसौत—देशपति। सुपह—राजा, योद्धा। दिली—दिल्ली।

२१०. गीत राजा हरसाय खत्री जैपुर रौ

दर कूंच खड़े अड़े जुध कारण, स्याम ध्रम जळ चाढ़ि सवाय।
कूंभाथळां बाहे केवाणां, हरि मिंदर पोहतौ हरिसाय ॥१॥

राजा रौ लूण उजाळे राजा, भोज आमेरे निवाहण भार।
पाट हरामी जाट पधारे, जुध छाडे नीसरियौ जुवार ॥२॥

समर मेळे भागो सूजावत, भिड़ खत्री जीतियौ भाराथ।
संकर तणा उपासी संवरि, सालो न वणै ही साथ ॥३॥

मह पती माधो तणा मुसद्दी, चंद जस नाम कियै चहु कूंट।
चढ़ि अणी-धारां रथे चढ़िया, वर अच्छरि वसिया वैकूंट ॥४॥

---

२१०. गीतसार—उपर्युक्त गीत राजा हरसहाय खत्री जयपुर पर कथित है। हरसहाय-महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथम जयपुर का फौजवक्षी था। उसने भरतपुर के राजा जवाहरमल जाट के साथ तंवरावाटी के माउण्डा स्थान पर युद्ध विजय प्राप्त कर वीरगति पाई थी। माउण्डा की पराजय से जवाहरमल का राजस्थान से प्रभाव समाप्त हो गया था।

---

१. दर कूंच—मंजिल दर मंजिल। खड़े—प्रस्थान कर। अड़े—सामने आकर भिड़े। स्याम-ध्रम—स्वामीधर्म। जळ—कांति। सवाय—सवाई, अधिक। कूंभाथळां—गजमस्तकों। वाहे—प्रहार करके। केवांणा—तलवारें। हरि मिंदर—स्वर्गलोक। पोहतौ—पहुंचा, गया।

२. लूण—नमक। उजाळे—उज्ज्वल कर। भोज—हुआ। निबाहण—निभाने वाला। भार—दायित्व। पाट—सिंहासन का। जाट—राजा जवाहरमल्ल जाट भरतपुर। नीसरियौ—रणभूमि का त्याग कर भाग गया। जुवार—राजा जवाहरसिंह।

३. समर—युद्ध। मेळे—मिलते, दोनों ओर से युद्धारंभ होते। भागो—भाग गया। सूजावत—राजा सूरजमल्ल का पुत्र। खत्री—जयपुर का सेनानायक हरसहाय खत्री। जीतियौ—विजय किया। भाराथ—युद्ध। उपासी—उपासक। संवरी—संबर, भील (?)।

४. महपती—महाराजा। माधो—माधवसिंह जयपुर। चंद जस नाम—अमर कीर्तिनाम। चहु कूंट—चारों दिशाओं में। अणीधारां—शस्त्रों की नोकें। अच्छरि—अप्सरा। बसिया—निवास किया। वैकूंट—स्वर्ग-लोक।

२११. गीत आपा मरहठा दिखणी रौ

अंजस कर घणां उताळा आया, कहता पळ में अमल करां ।
मुसकल हुई मरायौ मांझी, घोडां नूं जावणौ घरां ॥१॥

आया लाख सवाळख आगै, लाख तणौ न रहयौ लवलेस ।
दीठा देस घणांई दिखण्यां, अहपुर नूं कीधो आदेस ॥२॥

डोढ़ बरस रहिया लग दोळां, रौळा कर कर थाक रहे ।
चक्र अदीठ विजै चक्रवत रा, वैरहरां ऊपरां वहै ॥३॥

जळ में किला मेलिया ज्यारां, त्यारां भला उतारे तौर ।
नरपतियां ओपम नवकोटां, नवकोटां ओपम नागौर ॥४॥

---

२११. गीतसार—उपर्युक्त गीत राव जय अप्पा सिंधिया पर रचित है । जयअप्पा ने जोधपुर के महाराजा विजयसिंह पर आक्रमण कर मेड़ता में जोधपुर की सेना को पराजित कर नागौर पर घेरा लगा दिया था । नागौर के दो राजपूतों ने छलाघात से जयअप्पा को मार दिया था । गीत में जय अप्पा के नागौर में मारे जाने का वर्णन है ।

---

१. अंजस—अभिमान । घणां—घने । उताळा—शीघ्रता से । पळ में—क्षण मात्र में । अमल—अधिकार । मांझी—मुखिया ।

२. सवाळख—सवा लक्ष, सपादलक्ष देश, नागौर प्रान्त का प्राचीन नाम । आगै—सामने । दीठा—देखे । घणांई—बहुतेरे । दिखण्यां—दक्षिण वालों ने, मरहठों ने । अहपुर—अहिपुर, नागौर । आदेस—नमस्कार ।

३. लग—लगे हुए, तक । दोळां—चारों ओर, पीछे पड़े रहे । रोळां—लड़ाई, झगड़े बखेड़े । थाक—थक । चक्र अदीठ—अदृश्य चक्र । विजै—विजयसिंह । चक्रवत रा—चक्रवर्ती राजा का । वैरहरां—शत्रुओं । वहै—चले ।

४. ज्यारां—जिनके । त्यारां—तिनके, उनके । भला उतारे तौर—अच्छी तरह गर्व भंजन किया । ओपम—उपमा । नवकोटां—नवदुर्गों, मारवाड़ में नौ दुर्ग प्रसिद्ध है । इसलिए मारवाड़ को नवकोटि मारवाड़ कहते हैं ।

२१२. गीत आपा मरहठा दिखणी रौ

कह कह रे कासीद कटारी, आपा रै दल वाळी ।
गह पतसाह घणां गरबांणां, जाझी अगन प्रजाळी ॥१॥

जाटां हूंत पहल्ली जुटियौ, तठै कुवधवा तांणी ।
खांडूराय मराय खराबी, आपस में ही आंणी ॥२॥

दिल्ली आद सकोई देसां, ठौड़ ठौड़ धर थांणौ ।
एता प्रवाड़ा तणौ आदमी, मुरधर मांह मरांणौ ॥३॥

भाजत लाख बरजत्तां भिड़ियौ, सिव ने केम सुहावै ।
कमधां लीधौ मार कटारां, आपो तिकौ न आवै ॥४॥

बीजा सकौ प्रथी रा बोलै, विजै विजै री वांणी ।
जनकू अनै दतू री जोवै, वाटड़ियां विलखांणी ॥५॥

जिया लिया चाहौ धर चौथां, धर दूजा दिस धाज्यौ ।
घर घर में कूके घेतलियां, मुरधर देस म जाज्यौ ॥६॥

---

२१२. गीतसार— उपर्युक्त गीत जयअप्पा सिंधिया पर सर्जित है। जयअप्पा नागौर में महाराजा विजयसिंह के आदमियों द्वारा छल से मारा गया था। गीत में लिखा है कि पहिले तो सिंधियों ने जाटों से लड़ कर खाण्डेराय को मरवाया और फिर मारवाड़ में जयअप्पा स्वयं मारा गया। घायलों की स्त्रियाँ अपने पतियों से कहती है कि भविष्य में मारवाड़ की ओर चौथ वसूल करने कभी मत जाना।

---

१. कासीद–सन्देश वाहक, दूत। आपा–राव जयअप्पा सिंधिया। जाझी–गहरी, घनी। प्रजाळी–प्रज्वलित। हूंत–से। जुटियौ–लडा।

२. तठै–वहां। कुवधवा–कुबुद्धि। तांणी–की, रची। आंणी–की।

३. स कोई–सब कोई। थाँणौ–सैनिक चौकियां। एता–इतने। प्रवाड़ा–यश तथा युद्ध के कार्य। मारांणौ–मारा गया।

४. भाजत–भागते। लाख बरजतां–बहुत भांति मना करने पर भी। भिड़ियौ–लड़ा। केम–कैसे। सुहावै–सहन हुवे। कमधां–राठौड़ों ने। आपो–जयअप्पा सिंधिया। तिकौ–वह, जो।

५. बीजा–दूसरे। सकौ–सब कोई। विजै–महाराजा विजयसिंह की। विजै री–विजय की। जनकू–जनकोजी मरहठा। दतू–दत्तोजी मरहठा। वाटड़ियां–मार्ग। विलखांणी–विलाप करती हुई।

६. चौथां–चौथ नामक एक कर। धाज्यौ–जाना। कूके–रुदन करे। घेतलियां–घायलों की स्त्रियां, भेड़-बकरियों के चरवाहों की औरतें। म–मत। जाज्यौ–जाना

२१३. गीत मेघसिंघ सौलंखी रौ

आखड़ियां बिड़द सदा आगौलग, रौळा जुटिया हुआ जियार ।
सौलंखी मिटिया नह सुणिया, सौलंखी कटिया वधि सार ।।१।।

जैचंद बरस पन्दरा जीवाणे, अफळ मरण करण आचाहि ।
अलहणपुरा सदा होइ आई, मेघ बरस चौदाहि मांहि ।।२।।

नवधण तणा बाजि नाराजां कंवळ अवल येखै सब कोई ।
मरण तणा मौसर जग मांहीं, होई आई देवा जिम होइ ।।३।।

लोहे अंग बाईस लागतां, रियां अंग भांजीया रीस ।
बाईसी मिटतां ऊवरीया, बरसाँ भूगति गयौ बाईस ।।४।।

---

२१३. गीतसार— उपर्युक्त गीत क्षत्रियों के सौलंखी कुल के योद्धा मेघसिंह की युद्ध-वीरता पर रचित है । गीत में कहा है कि वीर जयचंद्र सौलंखी पन्द्रह वर्ष की आयु में वीर-गति को प्राप्त हुआ और मेघसिंह चौदह वर्ष की अवस्था में वैरियों के बाईस घातक आघातों से घायल होकर धराशायी हुआ ।

---

१. आखड़िया–प्रण, प्रतिज्ञा । बिड़द–विरुद । आगौलग–पूर्व से ही चलते आ रहने वाले, निरन्तर । रौळा–लड़ाई, दंगा फसाद । जियार–जिस समय । कटिया–हथियारों से कट मरे । वधि–आगे बढ़ कर । सार–लौहा, तलवार, शस्त्र ।

२. जीवाणे–जीवित रहा । अफळ–निष्फल । अलहणपुरा–सौलंखी, अनहिलपुर पाटन में सौलंखियों का शासन रहने के कारण सौलंखी अनहिलपुरा कहलाने लगे । मेघ–मेघसिंह । चौदाहि–चौदह वर्ष में ।

३. नवधण तणा–राजा नवधनसौलंखी की संतान वाले । बाजि–लड़ कर । नाराजां–तलवारों से । कंवळ–सिर । मौसर अवसर ।

४. लोहे–शस्त्र । रिमां–वैरियों । भांजीया–नष्ट किये । रीस–रोष, क्रोध । बाईसी–सेना के । मिटतां–समाप्त होते । ऊवरिया–बच रहे । भुगति–भोग कर, उपभोग कर ।

२१४. गीत अंग्रेजां रै विरोध रौ

बाणीजां नीत हित देस देस जांणौ बुरी, नफै हूं भलौ ओ बुरौ नापैं ।
कुलछणां देस हित काज करसी किसा, दुखियां री लूट हूं नांह धापैं ॥१॥

विणज रौ नाम ले आया बण वापड़ा, तापड़ा तोड़िया राज तांई ।
मोकौ पा मूगलां रोसांण जिण मारिया, पोखौ थां कुण कयां समझ कांई ॥२

धोळे दिन देखतां नवाबी धपाई, सताई बेगमां अवध सांई ।
खोड़ला फौज हिंदवांण की खपाई, सफाई नांख सरम साई ॥३॥

---

२१४. गीतसार– प्रस्तुत गीत अंग्रेज सत्ता के विरोध पर रचित है। गीतकार ने अंग्रेजों के भारत में आगमन, सत्ता हथियाने, व्यापारी से शासक बन बैठने और देशी शासक अवध के नवाब आदि की दुर्दशा करने का वर्णन किया है और कवि ने भारतीय वीरों मुसलमानों, राजपूतों, मरहठों, जाटों और सिक्खों को मिल कर सैनिक विद्रोह करने का सन्देश दिया है।

---

१. बाणीजां–वाणिज्य की, व्यापारियों की । नफै–लाभ । नापैं–माप करते हैं। कुलछणां–कुलक्षणी । करसी–करेंगे । हूं–से । नांह धापैं–तृप्त नहीं होते हैं।

२. बिणज रौ–व्यापार का । बापड़ा–बेचारे, गरीब भाव लेकर । तापड़ा तोड़िया–खूब दौड़े भागे, बहुत अधिक प्रयत्न किया । तांई–वास्ते । रौसांण–दमन कर, कण्ठ दबा कर । पोखौ–पोषण करो । थां–तुम । कयां–कैसे । कांई–क्या ।

३. धोळे दिन–दिनदहाड़े । सताई–सताना । सांई–स्वामी, मुसलमान । खोड़ला–कुलक्षण वाले, बुरे । खपाई–नष्ट की । सफाई–बिलकुल ही । नांख–डाल कर, त्याग कर । सरम–लज्जा ।

धरा हिंदवांण री दाव रया दगै सूं, प्रगट में लड़्यां ही पार पड़सी ।
संकट में एक हुय भेद मेटो सकल, लोक जद जोसहूं जवर लड़सी ।।४।।

मिल मुसलमां रजपूत ओ मरेठां, जाट सिख पंथ छंड जवर जुड़सी ।
दौड़सी देस रा दव्योड़ा दाकळ्यां, मुलक रा मीठा ठग तुरत मुड़सी ।।५।।

भरोसौ छंड फिरंगाण री भ्रमड़ौ, निरखती नफा नुकसान नक्की ।
नवौ नित धांन करसांण निपजावसी, पावसी फतै हिन्दूवाण पक्की ।।६।।

— संकरदान सांभर वोवासर रौ कह्यौ

४. दाव रया—अधिकार में ले रहे हैं । दगै सूं—धोखे से, छल से । पार पड़सी—कार्य सिद्ध होगा, काम चलेगा । जवर—जबरदस्त, जोरावरी से, खूब ।

५. पंथ छंड—मजहबी भेदभाव को छोड़ कर । जुड़सी—लड़ेंगे । दव्योड़ा—दमित, कुचले हुए । दाकळ्यां—ललकारने पर । मुड़सी—पीछे लौट जायंगे ।

६. फिरंगाण रौ—अंग्रेजों को । भ्रमड़ौ—भ्रम । नक्की—साफ, पूरा पूरा । धांन—अन्न । करसांण—कृषक । निपजावसी—उत्पन्न करेंगे । पावसी—प्राप्त करेंगे । पक्की—निश्चित, दृढ़ ।

ऐतिहासिक टिप्पणियां

पृष्ठ ३ गीत सं. १, २, ३ राजा उदैसिंघ राठौड़—

जोधपुर के राव मालदेव का पांचवाँ पुत्र राजा उदयसिंह राठौड़। उदयसिंह का वि. सं. १५९४ में जन्म हुआ था उसे राव मालदेव ने अपने जीवनकाल में फलोदी का परगना जागीर में दिया था। राव मालदेव के निधन के बाद जब वि. सं. १६१९ में राजा चन्द्रसेन मारवाड़ की गद्दी पर बैठा तब उदयसिंह ने सं. १६२७ वि. में बादशाह अकबर की सेवा स्वीकार की और खीचीवाड़े के उपद्रवों को दबाने के लिए भेजा गया। तद्नन्तर उसे ओरछा और बुंदेलखण्ड के राजा मधुकरशाह पर भेजा गया। उदयसिंह ने मधुकरशाह का दमन कर अकबर से राजा की पदवी प्राप्त की और वि. सं. १६४० में उसने जोधपुर पर अधिकार कर लिया। उसने शाही सेवा में रह कर खंभात की चढ़ाई, सिरोही पर आक्रमण आदि अवसरों पर वीरता प्रदर्शित की थी। विक्रम सं. १६४० में बादशाह अकबर ने अब्दुर्रहीम खानखाना के साथ राजा उदयसिंह को मुजफ्फर गुजराती के उपद्रव को शान्त करने के लिए भेजा था। राजपीपला की लड़ाई में मुजफ्फर को पराजित होकर मैदान से भागना पड़ा। प्रथम गीत में मुजफ्फर पर विजय तथा तृतीय गीत में सिरोही के राव सुरतान देवड़ा पर विजय प्राप्त करने का उल्लेख है। दोनों ही गीतों की घटनाएँ इतिहास से प्रमाणित हैं। गीतकार माला सांदू महाराजा गजसिंह का आश्रित कवि था। वह नागौर के भदोरा ग्राम का निवासी था।

—मारवाड़ का इतिहास प्र. भाग(रेऊजी) पृ. १७०, १७६

पृष्ठ ६ गीत सं. ४, ५ महाराजा जसवंतसिंघ जोधपुर—

मारवाड़ के राजा गजसिंह के द्वितीय पुत्र और उत्तराधिकारी महाराजा जसवंतसिंह राठौड़। राजा गजसिंह की इच्छा पर बादशाह शाहजहां ने पाटवी राजकुमार अमरसिंह को राव की पदवी और नागौर का प्रान्त प्रदान किया और जसवंतसिंह को गजसिंह के निधन के बाद जोधपुर का शासन तथा महाराजा का खिताब दिया। जसवंतसिंह ने शाहजहां के शाहजादों के उत्तराधिकार के धर्माट के युद्ध में दाराशिकोह और शाहजहाँ का पक्ष लिया था। प्रथम

गीत में जसवंतसिंह के भाले की तीक्ष्णता तथा दिल्ली से बराबरी करने तथा द्वितीय गीत में विजयपाल यादव से दुर्ग छीनने का वर्णन है। इतिहास से सिद्ध नहीं होता कि विजयपाल कहाँ का था। वैसे यादव करौली के शासक थे और 'माडेचा' शब्द जैसलमेर के भाटियों के लिए प्रचलित है। वर्णित घटना का ख्यातों में कोई संकेत-सूत्र प्राप्त नहीं है। जसवंतसिंह ने जोधपुर पर ४१ वर्ष राज्य किया। बादशाह औरंगजेब के शासनकाल में उनका सात हजारी जात मन्सब था। दक्षिण, कंधार मालवा के युद्धों में उन्होंने भाग लिया था। जसवंतसिंह वीर, विद्वानों के आश्रयदाता और काव्य के मर्मज्ञ विद्वान् माने जाते हैं। वि. सं. १७३५ में उनका जमरूद स्थान पर देहान्त हुआ।

—मा. इ. प्र. भाग, पृ. २१०—२४२

पृष्ठ ८ गीत सं. ६, ७, ८ महाराजा अजीतसिंघ जोधपुर—

जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के पुत्र और उत्तराधिकारी महाराजा अजितसिंह राठौड़। अजितसिंह का महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यु के बाद जमरूद से मारवाड़ आते समय मार्ग में वि. सं. १७३५ चैत्र मास में जन्म हुआ था। अजितसिंह और उसके भाई दलथंभन को बादशाह औरंगजेब बंदी बनाकर मुसलमान बनाना चाहता था, किन्तु मारवाड़ के स्वामिभक्त उमराव दुर्गादास करणोत, सोनंग चांपावत, अजबसिंह चांपावत, मोहकमसिंह मेड़तिया तोसीना प्रभृति वीरों ने शाही मन्सब त्याग कर दलथंभन और अजितसिंह का क्रमशः मालवा और छप्पन के पहाड़ों में पालन पोषण किया। मुकुन्ददास चांपावत पाली और मुकुन्ददास खीची ने भी महाराजा के शिशुकाल में उल्लेखनीय सेवाएँ कीं। जब मारवाड़ के जागीरदारों ने दुर्गादास के नेतृत्व में विद्रोह कर शाही अधिकारियों को मारवाड़ में चैन नहीं लेने दिया तब अन्त में बादशाह औरंगजेब ने राव अमरसिंह नागौर के पौत्र राव इन्द्रसिंह को जोधपुर पर प्रतिस्थापित किया। किन्त, आलनियावास के मेड़तिया राजसिंह ने मेड़ता के फौजदार सादुल्ला खां को परास्त कर मेड़ता छीन लिया और मारवाड़ में समन्तात राठौड़ों के विद्रोह का स्वर गूंजने लगा। दुर्गादास ने औरंग-जेब के शहजादे अकबर से सांठ गांठ कर उसे विद्रोही बना दिया। चांपावत उदयसिंह, ऊदावत जगरामसिंह. जोधा उदयभान, कर्मसोत अनोपसिंह आदि ने शाही थानों को लूट कर शाही प्रभाव को नगण्य कर दिया। तब बादशाह ने महाराजा अजितसिंह को वि. सं १७५६ में जालौर और सांचोर के परगने दिये पर वि सं. १७६३ में बादशाह औरंगजेब की मृत्यु होने पर महाराजा अजितसिंह का जोधपुर पर अधिकार हुआ। तदनन्तर अजितसिंह का वैभव बढ़ता ही रहा। महाराजा अजितसिंह राजनीतिज्ञ होने के साथ साथ कवि और विद्वान् भी थे। गजउद्धार, भावविरही, दुर्गा सप्तशती के अनुवाद आदि उनकी राजस्थानी काव्य-कृतियां हैं। यद्यपि अजितसिंह को मारवाड़ के स्वामिधर्मी

सरदारों ने अपनेप्र ाणों का बलिदान कर पालन-पोसण किया था। किन्तु, अजितसिंह ने शक्ति प्राप्त कर राव अमरसिंह के वंशधर राव मोहकमसिंह, उसके अनुज मोहनसिंह, अपने वैमातृक भ्राता दलथंभन, अर्जुनसिंह जैतावत, मुकुन्ददास चांपावत आदि को छला-घात से मरवाने का जघन्य दुष्कर्म किया। उन पाप कर्मों का फल ही था कि सं. १७८१ में अपने पुत्र बखतसिंह द्वारा छलाघात द्वारा उसे भी मरना पड़ा। एक गीत में अजितसिंह के दीवान गोकुलदास मुहता की सेवाओं और उस पर अजितसिंह की कृपा का भी वर्णन है।

—मा. इ. प्र. भाग (रेउ) पृ. २४८-३२७, अजित विलास, ।

पृष्ट ११ गीत सं. ९, १०, ११, १२ महाराजा विजयसिंघ राठौड़ जोधपुर—

जोधपुर के महाराजा बखतसिंह के पुत्र महाराजा वियर्यसिंह राठौड़। विजय सिंह वि. सं. १८०९ में जोधपुर की गद्दी पर बैठा। उसके शासनकाल में जयअप्पा, महादाजी सिंधिया और जनकोजी की मारवाड़ में लूट-खसोट चलती रही। जोधपुर के राज्य स्वत्वच्युत महाराजा रामसिंह का विग्रह भी जारी रहा। गीतों में महाराजा विजयसिंह द्वारा जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह की महादाजी सिंधिया के विरुद्ध वि. सं. १८४४ के तुंगा स्थान के युद्ध में सहायता करने का वर्णन है। तुंगा के युद्ध में जयपुर और जोधपुर की सेना ने मरहठों को जबरदस्त पराजय दी थी। महाराजा विजय सिह परम वैष्णव नरेश थे। मरहठों और मारवाड़ के सामंतों से इनका आजीवन वैर-विरोध बना रहा। वि. सं. १८५० में विजयसिंह का देहावसान हुआ।

—मा. इ. प्र. (भाग) रेउ पृ ३७१, ३८७, ३९२

पृष्ठ १५ गीत सं. १३, १४, १५, १६ महाराजा मानसिंघ राठौड़ जोधपुर—

जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के पांचवे पुत्र महाराजा गुमानसिंह के पुत्र महाराजा मानसिंह जोधपुर। महाराजा विजयसिंह के सिंहासन पर उनके निधनोपरान्त महाराज भीमसिंह का पुत्र भीमसिंह बैठा और मानसिंह को जागीर में जालौर प्रान्त दिया गया। भीमसिंह और मानसिंह के परस्पर वैमनस्य चलता था। अतः महाराजा भीमसिंह ने मानसिंह को बंदी बनाने के लिए जालौर पर सेना भेजी, किंतु इस काल में महाराजा भीमसिंह का वि. सं १८६० में देहान्त हो गया। तब मारवाड़ के सरदारों ने मानसिंह को भीमसिंह की गद्दी पर अभिषिक्त किया। महाराजा मानसिंह ने जोधपुर के सिंहासन पर आरूढ़ होने के बाद सिरोही के राव वैरीशाल पर आक्रमण कर सिरोही पर अधिकार कर लिया। तदनंतर गींगोली की घाटी (परबतसर) में सवाई जगतसिंह जयपुर से युद्ध लड़ा। गींगोली के युद्ध में मारवाड़ के सरदार ठाकुर सवाईसिंह पोकरण

के नेतृत्व में जयपुर की सेना से मिल गए। फलतः मानसिंह को पराजित होना पड़ा। महाराजा जगतसिंह ने जोधपुर पर घेरा डाल कर महाराजा मानसिंह को तंग कर दिया। १३ वें और १४ वें गीत में उपर्युक्त घटनाओं का अतिरंजित वर्णन है। १५ वें गीत में मानसिंह की निर्भीकता तथा १६ वें में महाराजा के काव्य-सर्जन और नाथ-भक्ति की ओर संकेत किया गया है। मानसिंह नाथ-सम्प्रदाय के प्रबल समर्थक और अनुयायी थे।

महाराजा मानसिंह के शासन में ठाकुर सवाईसिंह पोकरण, सवाई जगतसिंह जयपुर नरेश अमीरखांन पिण्डारी और मरहठों के बखेड़े परेशानी उत्पन्न करते रहे। परन्तु, अपने विग्रहपूर्ण दीर्घकालीन शासन में भी मानसिंह का राजस्थान में प्रभावशाली स्थान बना रहा। अंत में सं. १६०० वि. में मंडोर में इनका अवसान हुआ।

—मा. इ. द्वि. भाग (रेउ) पृ. ४०१-४११

पृष्ठ २२ गीत सं. १७, १८ राव कलियाणमल राठौड़ वीकानेर—

वीकानेर के राव जैतसिंह का जेष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी राव कल्याणमल राठौड़ वीकानेर। राव कल्याणमल वि. सं. १५९८ में सिरसा में गद्दी पर बैठा। वीकानेर पर राव मालदेव जोधपुर ने अधिकार कर रक्खा था। राव कल्याणमल ने बादशाह शेरशाह की सहायता प्राप्त की और राव किशनसिंह जैतपुर के स्वामी ने वीकानेर स्थित जोधपुर की सेना पर आक्रमण कर राव कल्याणमल का अधिकार स्थापित किया। कल्याणमल ने मेड़ता के शासक राव वीरमदेव, हाजीखां पठान आदि की सहायता की थी। गीत में राव कल्याणमल की उदारता और केल्हणकोट तथा वीकूपुर पर आक्रमण कर भाटियों और सिंघलों को परास्त करने का वर्णन है। वीकानेर के इतिहास और दयालदास री ख्यात में यह उल्लेख नहीं है, पर समसामयिक कवि रचित गीत होने के कारण प्रसंग सही जान पड़ता है। राव कल्यणमल का वि० सं० १६३० में स्वर्गवास हुआ।

—वीकानेर का इतिहास प्र. भा. (ओझा) पृ० १३९–१५६, दयालदास री ख्यात भा. २ पृ० ६४–९०

पृष्ठ २४ गीत सं० १९, २०, २१, २२, राजा रायसिंघ राठौड़ वीकानेर—

वीकानेर के राव कल्याणमल के उत्तराधिकारी महाराजा रायसिंह वीकानेर। रायसिंह अपने पिता का देहांत होने पर सं० १६३० विक्रमी में वीकानेर के राजसिंहासन

पर बैठा। रायसिंह ने शाही पक्ष का समर्थन करते हुए इब्राहिम हुसैन मिर्जा की सेना पर हमला कर उसे नागौर से भागने के लिए विवश किया तथा गुजरात के विद्रोहियों का दमन करने के लिए प्रेषित शाही सेना में नियुक्त होकर वि० सं० १६३० में विद्रोही मुहम्मद-हुसैन मिर्जा को बन्दी बनाने में सफल हुआ। रायसिंह ने राजा चंद्रसेन जोधपुर, महाराव-सुरतान, देवड़ा सिरोही बादशाह के सौतेले भाई मिर्जा मुहम्मद हकीम तथा काबुल, बिलुचिस्तान और लाहौर आदि के युद्धों में उल्लेखनीय भाग लिया। बादशाह जहांगीर के शासनकाल में रायसिंह का मन्सब पांच हजारी था। गीत मे रायसिंह की वीरता और उदारता का वर्णन है। उसने शंकर बारहठ को नागौर का प्रान्त और सवा करोड़ रुपयों का दान दिया था। दुरसा आढ़ा, माला सांदू आदि चारणों को हाथी और ग्राम दान में दिये थे। वह स्वयं काव्य-मर्मी और साहित्य-सेवी शासक था। वि० सं० १६६८ में बुरहानपुर में वह दिवंगत हुआ।

—बी. इ. पहला भाग (ओझा) पृ. सं. १६२—२०५, दयालदास री ख्यात पृ. १३६।

पृष्ठ २८ गीत सं० २३, २४ महाराज रामसिंह राठौड़ बीकानेर—

बीकानेर के राव कल्याणमल का द्वितीय पुत्र और महाराजा रायसिंह का अनुज महाराज रामसिंह बीकानेर। महाराजा रायसिंह ने रामसिंह को वी. सं. १६५६ में कल्याणपुर स्थान पर ठाकुर मालदेव चुरू को भेज कर मरवाया। गीतों में महाराज-पृथ्वीराज ने महाराज रामसिंह को मरवाने के कारण महाराजा रायसिंह को उपालंभ दिया है। रामसिंह अपने समय का उच्चस्तर का वीर पुरुष था। पृथ्वीराज ने उसे लक्ष्मण की तरह का भ्रातृसेवी वीर अंकित किया है।

—दयालदास री ख्यात भा. २ पृ. १३६, बी. इ. प्र. भा. (ओझा) पृ. १५६।

पृष्ट ३० गीत सं. २५ राजा दलपतसिंघ राठौड़ बीकानेर—

बीकानेर के महाराज रायसिंह का जेष्ठ पुत्र और उत्ताराधिकारी महाराजा दलपतसिंह बीकानेर। यद्यपि महाराजा रायसिंह अपने द्वितीय पुत्र शूरसिंह को अपना उत्ताराधिकारी बनाना चाहता था, पर बादशाह जहाँगीर ने दलपतसिंह को बीकानेर की सनद प्रदान कर शासक घोषित कर दिया और वि. सं. १६६९ में मिर्जा रुस्तम के साथ दलपसिंह को ठट्ठा पर भेजा. किन्तु दलपतसिंह शाही आदेश की उपेक्षा कर बीकनेर चला गया। दलपसिंह ने शूरसिंह की फलोधी की जागीरी भी छीनली थी। उनके इस प्रकार के व्यवहार से रुष्ट होकर बादशाह जहाँगीर ने दलपतसिंह के विरुद्ध नवाब जावदीनखां को सेना देकर भेजा और शूरसिंह को बीकानेर के शासक का अधिकार प्रदान किया। छापर-

स्थान पर दोनों पक्षों में युद्ध हुआ। दलपतसिंह को चूरू के ठाकुर भीमसिंह ने छल से युद्ध-भूमि में बंदी बना कर हिसार भिजवा दिया। वहां से उसे अजमेर भेज दिया गया। विक्रमी सं. १६७० में हाथीसिंह चांपावत ने कारावद्ध महाराजा दलपतसिंह को मुक्त करवाने के लिए बंदीखाने पर आक्रमण कर दलपतसिंह को कारामुक्त कर दिया। किन्तु, शाही रक्षकों के साथ की मुठभेड़ में महाराजा दलपतसिंह और चांपावत हाथीसिंह दोनों लड़ते हुए मारे गये। गीत में दलपतसिंह की मृत्यु का वर्णन है।

—बी. इ. प्र. भा. (ओझा) पृ. २०५—२१०, कूंपावत राठौड़ों का इतिहास पृ. ७५।

पृष्ठ ३१ गीत सं० २६ महाराजा सूरसिंघ राठौड़ बीकानेर —

बीकानेर के महाराजा रायसिंह के द्वितीय पुत्र महाराजा सूरसिंह। जहांगीर ने वि.सं. १६७० में महाराजा दलपतसिंह को बीकानेर के राज्याधिकार से हटाकर सूरसिंह को राज्याधिकार प्रदान किया। इसने शाही सेवा में रह कर शाहजादे खुर्रम, काबुल, ओरछा, खानजहां आदि के विरुद्ध भेजी गयी शाही सेनाओं में रह कर युद्धों में भाग लिया। सूरसिंह का बुरहानपुर के बोहरी गांव में वि. सं. १६८८ में देहांत हो गया। गीत में सूरसिंह को अपने पूर्ववर्ती चांपा, कांधल,दूदा, बीदा, शत्रुशाल आदि सरक्तीय राठौड़ योद्धाओं के समान वीर घोषित किया गया है।

—बी. इ. प्र. भा. (ओझा) पृ. २११, २१४, २१५, २१६, २२७।

पृष्ठ ३२ गीत सं. २७ राजा रायसिंह बीकानेर —

बीकानेर के महाराजा रायसिंह राठौड़। रायसिंह ने बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार कर शाही पक्ष के कतिपय युद्धों में भाग लेकर पराक्रम दिखाया था। गीत सं. २७ में रायसिंह द्वारा गुजरात के युद्ध में मुसलमानों का संहार करना लिखा है। संभवतः यह प्रसंग १६३० विक्रमी में बादशाह अकबर के गुजरात अभियान का परिचायक है।

—बी. इ. प्र. भा. (ओझा) पृ. १६९—१७० विशेष गीत सं. १९—२२ की टिप्पणी देखें।

पृष्ठ ३३ गीत सं. २८ महाराजा गजसिंघ बीकानेर —

बीकानेर का महाराजा गजसिंह आनन्दसिंह का पुत्र था। महाराजा जोरावरसिंह का निःसंतान निधन हो जाने पर वि. सं. १८०२ में गजसिंह बीकानेर की राजगद्दी पर बैठा। महाराजा गजसिंह ने राजाधिराज बखतसिंह नागौर और महाराजा रामसिंह जोधपुर के आपसी युद्धों में, बखतसिंह की सहायता की थी। मारवाड़ के मरहठों के आक्रमणों में

गजसिंह महाराजा विजयसिंह का पक्षधर बना रहा। उसने बीकानेर के विद्रोही सरदारों का दमन कर उन्हें अधीन बनाया। वह सदैव जोधपुर नरेशों का सहायक बना रहा। गजसिंह विद्वानों का आश्रयदाता और स्वयं राजस्थानी भाषा-काव्य का अच्छा ज्ञाता था। गजन, इभनामी आदि सम्बोधनों से उसका काव्य मिलता है। चारण गोपीनाथ गाड़ण ने ग्रंथराज की रचना की तब महाराजा गजसिंह ने उसे सम्मानित किया। गीत में महाराजा गजसिंह का काव्य-प्रेमी तथा काव्य-रचयिता के रूप में स्मरण किया गया है। बादशाह ने गजसिंह को सप्तहजारी का मन्सब प्रदान किया था। गजसिंह का वि. सं. १८४४ में देहावसान हुआ।

—बी इ. प्र, भा. (ओझा) पृ. ३२२-३५८, मारवाड़ रा उमरावां री वात, राज रसनामृत पृ. ५०

पृष्ठ ३४ गीत सं. २६ महाराजा रतनसिंह बीकानेर—

बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह का जेष्ठपुत्र और उत्तराधिकारी महाराजा रतनसिंह बीकानेर। महाराजा रतनसिंह ने वि.सं १८८५ में बीकानेर का शासनाधिकार प्राप्त किया। उसने पंजाब, जैसलमेर, उदयपुर और रीवां के महाराजाओं से मित्रता बढ़ाई। पड़ौसी राज्यों के सीमा-सम्बंधी विवाद मिटाये। विद्रोही जागीरदारों और प्रजा को लूटने-मारने वाले डकैतों आदि का दमन कर शान्ति स्थापित की। उसने अंग्रेज सरकार से समझौता कर शेखावाटी ब्रिगेड की स्थापना में सहायता दी। वह इतिहास और साहित्य का प्रेमी था। कवियों ने उसकी गुण-ग्राहकता पर प्रसन्न होकर काव्य-ग्रन्थ लिखे। उसका वि. सं. १९०८ में बीकानेर में स्वर्गवास हुआ।

—बी. इ. द्वि. भा. (ओझा) पृ. ४०६, ४०८. ४२७, ४३८

पृष्ठ ३६ गीत सं. ३० महाराजा बहादरसिंघ किसनगढ़—

राजस्थान के किशनगढ़ राज्य का शासक महाराजा बहादुरसिंह राठौड़। वह महाराजा मानसिंह का पुत्र था। प्रसिद्ध भक्त कवि नागरीदास (महाराजा सांवतसिंह) बहादुरसिंह के जेष्ठ भ्राता थे। बहादुरसिंह ने उनकी अनुपस्थिति में किशनगढ़ पर अधिकार कर लिया था। महाराजा बहादुरसिंह वीर और विद्वान् नरेश था। बहादुरसिंह रचित **राग-रागिनी पद, मोहकमसिंह री वारता** आदि प्रसिद्ध कृतियां हैं। बहादुरसिंह ने मरहठों के आक्रमणों के समय सदैव जोधपुर का साथ दिया। महाराजा विजयसिंह जोधपुर, महाराजा गजसिंह बीकानेर और महाराजा बहादुरसिंह किशनगढ़ के घनिष्ठ मैत्री रही। वि. सं. १८३८ में महाराजा बहादुरसिंह का निधन हुआ।

—बांकीदास री ख्यात पृ. ८२, ८३

पृष्ठ ३८ गीत सं. ३१, से ३५ महाराज वहादरसिंघ किशनगढ़—

किशनगढ़ के महाराजा वहादुरसिंह राठौड़। संगीत, साहित्य और स्थापत्य कला के प्रेमी थे। उन्होंने किशनगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया। मरहठा-काल में राजस्थानी नरेशों में महाराजा बहादुरसिंह एक विशिष्ट शासक माने जाते थे। विशेष परिचय के लिए गीत सं. ३० की टिप्पणी देखें।

पृष्ठ ४६ गीत सं. ३६ महाराजा प्रतापसिंघ किसनगढ़—

किशनगढ़ के शासक महाराजा प्रतापसिंह महाराजा विरुदसिंह के पुत्र थे प्रतापसिंह वि. सं. १८४५ में किशनगढ़ की गद्दी पर बैठे। महाराजा प्रतापसिंह ने मरहठों से मित्रता करके जोधपुर पर आक्रमण करने की योजना बनाई थी, किन्तु योजना असफल होने पर महाराजा विजयसिंह ने वि. सं. १८४५ में रूपनगर तथा किशनगढ़ पर घेरा डालकर प्रतापसिंह से तीन लाख का दण्ड वसूल किया। महाराजा प्रतापसिंह साहसी शासक था। वि. सं. १८५४ में उसका देहांत हो गया।

—वीरविनोद द्वि. भाग पृ. ५३३,५३४

पृष्ठ ४८ गीत सं. ३७ महाराजा कल्याणसिंघ किसनगढ़—

महाराजा प्रतापसिंह का पुत्र महाराजा कल्याणसिंह। महाराजा कल्याणसिंह ने जोधपुर नरेश मानसिंह और जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह के मध्य वि. सं. १८५१ में मित्रता करवाने में सहयोग किया। महाराजा के विरुद्ध किशनगढ़ के जागीरदारों तथा महाराज कुमार मोहकमसिंह ने वखेड़ा किया तव कल्याणसिंह ने वि० सं. १८७४ में अंग्रेजों से संधि कर मोहकमसिंह को शासन-भार सौंप दिया तथा स्वयं दिल्ली चला गया। वि. सं. १८९५ में दिल्ली में ही उसका निधन हुआ।

—वीरविनोद द्वि. भा. पृ ५३५-५३६.

पृष्ठ ४९ गीत सं. ३८ कुंवर उदैभाण चुवाण—

मेवाड़ के कोठारिया ठिकाने के रावत रुक्मांगद का पुत्र कुंवर उदयभानु चौहान। उदयभानु ने महाराणा राजसिंह प्रथम और महाराणा जयसिंह के शासनकाल में महाराणा की ओर से शाही थाने पर आक्रमण कर मुसलमान सैनिकों को हताहत किया। तदनन्तर वह महाराणा की ओर से दक्षिण में शाहजादे औरंगजेब के पास भेजा गया।

उदयभानु की वीरता पर प्रसन्न होकर मेवाड़ नरेश ने उसे बारह ग्रामों की जागीर प्रदान की। वह प्रसिद्ध चौहान वीर राव हम्मीर रणथंभोर का वंशज था। रुक्मांगद के बाद वह कोठारिया का रावत हुआ।

—राजपूताने का इतिहास चतुर्थ खण्ड (ओझा)पृ.११८७-८८।

पृष्ठ ५० गीत ३९,४० महाराजा बळवंतसिंघ रतलाम—

मालवा के रतलाम राज्य का शासक महाराजा बलवंतसिंह राजा पर्वतसिंह का पुत्र था-बलवंतसिंह विद्वान् और महान् दानवीर था। उसके दरबार में चारणों, रावों और विद्वान् ब्राह्मण कवियों का निरन्तर आवागमन बना रहता था। 'भैरिया रा सोरठा' नामक उसकी नीतिपरक पुस्तक प्रसिद्ध है।

पृष्ठ ५५ गीत सं, ४१,४२ राठौड़ बल्लू चांपावत—

पाली के ठाकुर गोपालदास का पुत्र ठाकुर बल्लू चांपावत। ठाकुर बल्लू को नागौर के राव अमरसिंह ने वि० सं. १६९५ में बारह गांवों से हरसोलाव का पट्टा प्रदान कर अपना उमराव बनाया था। राव अमरसिंह से किसी प्रसंग पर मन मुटाव होने पर बल्लू मारवाड़ छोड़कर मेवाड़ में महाराणा के पास चला गया। मेवाड़ से शाही सेवा में चला गया। बादशाह शाहजहां के शासनकाल में वह राव अमरसिंह के साथ वि सं १६९८ में काबुल में रहा। वि. सं. १७०१ में राव अमरसिंह के आगरा म मारे जाने पर वह शाही पक्षीय अर्जुन गौड़ की हवेली पर आक्रमण करते हुऐ वीरगति को प्राप्त हुआ। उक्त युद्ध में ठाकुर भवानीसिंह कूंपावत दियावड़ी, ठाकुर भवानीदास चांपावत खाटू, हरनाथसिंह सुन्दरदासोत मेड़तिया रीयां, रणछोड़दास हरीदासोत मेड़तिया आदि कोई ३४ बड़े योद्धा मारे गए और शाही सेना के २५० सैनिक खेत रहे।

—कूँपावत राठौड़ों का इतिहास, पृ. १९६-२०२, बांकीदास री ख्यात पृ. ७२।

पृष्ठ ५९ गीत सं. ४३ ठाकर लालसिंघ चांपावत हरसोळाव—

ठाकुर हरिसिंह का वंशधर ठाकुर लालसिंह हरसोलाव। लालसिंह ने महाराजा-विजयसिंह के समय में मरहठों के साथ लड़े गए युद्धों में वीरता प्रदर्शित की थी। परन्तु, हरसोलाव ठिकाने की पीढ़ियों में लालसिंह का नाम नहीं मिलता है।

पृष्ठ ६१ गीत सं.४४ ठाकर वखतसिंघ—

ठाकुर कल्याणसिंह का वंशधर ठाकुर वखतसिंह । वह किस स्थान का स्वामी था तथा कछवाहों से किस स्थान के युद्ध में लड़ा था स्पष्ट नहीं है । संभवतः वह राजाधिराज वखतसिंह नागौर का सामन्त हो और गगवाणा के युद्ध में लड़कर खेत रहा हो ।

पृष्ठ ६२ गीत सं. ४५ ठाकुर भभूतसिंघ पोकरण—

मारवाड़ के प्रमुख ठिकाने पोकरण का स्वामी ठाकुर वभूतसिंह । वह ठाकुर-सालिमसिंह का पुत्र था । ठाकुर वभूतसिंह की जागीर में एक सौ ग्राम थे ।

पृष्ठ ६४ गीत सं. ४६ ठाकर लिछमणसिंघ चांपावत अड़वड़—

अड़वड़ ठिकाने का ठाकुर लक्ष्मणसिंह चांपावत । वह चांपावतों की भोपतोत उप-शाखा का था । उसने महाराजा भीमसिंह की ओर से बीकानेर के विदावतों पर आक्रमण कर उन्हें मारवाड़ से वाहर खदेड़ा और उसी लड़ाई में काम आया ।

पृष्ठ ६६ गीत सं. ४७ ठाकर जोरावरसिंघ चांपावत किसारी -

नागौर पट्टी के किसारी ठिकाने का ठाकुर जोरावरसिंह । वह महाराजा जसवंतसिंह द्वितीय का कृपा-पात्र सरदार था । लोहियाणा की ओर के एक राजपूत विद्रोही के आत्मसमर्पण करने पर जोरावरसिंह ने कहा—राजपूत होकर वंदी हो गया ? वह कायर था । इस पर महाराजा जसवंतसिंह ने विनोद में कहा—'ठाकरां राज रा हाथ लाम्बा हुवै है । थांने भी पकड़ सकै है ।' इस पर जोरावरसिंह वागी हो गया । कई दिनों तक वाहर दौड़ता रहा । मारवाड़ की पुलिस उसे न पकड़ सकी । तव फिर जोरावरसिंह के मित्र खैरवा के कुंवर ने छल-पूर्वक दुर्ग में वंदी वना कर पुसिस को सूचना दी । जोरावर-सिंह पुलिस द्वारा घिर जाने पर तलवार से अपनी घोड़ी को मार कर स्वयं लड़ता हुआ मारा गया ।

— जोरजी चांपावतरी झमाल (अप्रकाशित)

पृष्ठ ६९ गीत संख्या ४८ ठाकर वखतावरसिंघ आऊवा —

मारवाड़ के आऊवा ठिकाने का चांपावत वंश के ठाकुर वखताव सिंह । वह महाराजा भीमसिंह का समकालीन था । महाराजा अजितसिंह के विपत्तिकाल में ठाकुर-तेजसिंह ने वादशाह औरंगजेव के विरुद्ध अजितसिंह की सहायता की थी । अजितसिंह ने जोधपुर पर अधिकार होने पर तेजसिंह को वि. सं. १७६३ में यह ठिकाना प्रदान किया

था। ठाकुर बख्तावरसिंह तेजसिंह का पौत्र और ठाकुर हरनाथसिंह के पुत्र आईदानसिंह का पुत्र था। महाराजा मानसिंह ने रुष्ट होकर जब आऊवा पर सेना भेजी तब ठाकुर-बख्तावरसिंह ने क्षत्रियोचित साहस से राजकीय सेना का सामना कर यश प्राप्त किया।

—तवारीख जागीरदारान राज मारवाड़ पृ. ६६; बांकीदास री ख्यात पृ. ५५।

पृष्ठ ७० गीत सं. ४६ राव करमसी जोधावत नाहड़सर—

राव जोधा राठौड़ मारवाड़ के स्वामी का नवां पुत्र राव कर्मसिंह खींवसर का अधिपति। कर्मसिंह से राठोड़ों की करमसोत शाखा का प्रचलन हुआ। कर्मसिंह प्रारंभ में नागौर के खान फतन खां की सेवा में रहा फिर बीकानेर के राव लूणकर्ण के पास जा रहा। राव लूणकर्ण ने वि.सं. १५८३ में नारनोल के नवाब शेख अबीमीरा पर आक्रमण किया। नारनोल के समीपस्थ ढोसी ग्राम में दोनों पक्षों में मुकाबला हुआ। नवाब के पक्ष में अमरसर का राव रायमल शेखावत, पाटन के तंवर योद्धा थे। युद्ध में राव लूणकर्ण और राव कर्मसिंह खींवसर आदि कई राठौड़ मारे गए। नवाब की विजय हुई।

—बी. इ. प्र. भा. (ओझा) पृ. ११७—११८; मा. इ. प्र. भाग (रेउ) पृ. ६६।

पृष्ठ ७१ गीत सं. ५० राव पंचायण करमसिंघौत खींवसर—

नागौर परगने के खींवसर ठिकाने वालों का पूर्वज राव पंचायन। पंचायन राव-जोधा के नवें पुत्र कर्मसिंह का पुत्र था। नागौर के शासक फतनखां कायमखांनी ने कर्मसिंह को खींवसर की जागीर वि. सं. १५२४ के आसपास दी थी। राव पंचायन मारवाड़ के बड़े सरदारों में था। राठौड़ों की ख्यात में लिखा है कि राव पंचायन तथा अचला ने नाडौल के युद्ध में महाराणा कुंभा को पराजित कर भगा दिया था। किन्तु, मारवाड़ के इतिहास में नाडौल की लड़ाई सं. १५१२ वि. के आसपास अंकित है। अतः ख्यातकार का उपर्युक्त कथन ठीक नहीं जान पड़ता है। पंचायन राव मालदेव का सामन्त था और उसने सुल्तान शेरशाह सूरी और राव मालदेव के वि.सं. १६०० के गिरी सुमेल के युद्ध में शेरशाह की सेना से राव जैता बगड़ी, राव कूंपा आसोप आदि महावीरों सहित लोहा लेकर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में अचला शिवराजोत और पंचायन कर्मसिंहोत के मेवाड़ वालों से नाडौल में लड़ने का वर्णन है।

—मा. इ. प्र. भाग (रेउ) पृ. ६१ ६६, राठौड़ों की ख्यात (डॉ. कल्याणसिंह का संग्रह); ऐतिहासिक बातां पृ. ४५; कूंपा मेहराजोत रा दूहा।

पृष्ठ ७२ गीत सं. ५१ ठाकर हरदास कर्मसियौत डांवरा रौ—

राठौड़ों की कर्मसोत शाखा के ठाकुर महेशदास का पुत्र ठाकुर हरदास कर्मसोत। ठाकुर हरदास मारवाड़ के डांवरा ठिकाने का ठाकुर था। ठाकुर महेशदास खींवसर का स्वामी था। गीत में महेशदास की उदारता और वीरता उभय गुणों की सराहना की गई है। हरदास को महाराजा गजसिंह ने वि. सं. १६७४ में खींवसर दिया था। वि. सं. १६८८ में उसका देहांत हुआ।

—राठौड़ों की ख्यात (डॉ. कल्याणसिंह का संग्रह)

पृष्ठ ७३ गीत सं. ५२ ठाकर महेशदास पंचायणौत खींवसर —

नागौर परगने के कर्मसोतों के खींवसर ठिकाने का ठाकुर महेशदास कर्मसोत॥ महेशदास ने संभवतः शेरशाह सूर की मृत्यु के बाद मंडोवर में मुसलमानों से युद्ध किया था। महेशदास वि. सं. १६१८ में मेड़ता में मिर्जा शरफुद्दीन के साथ लड़े गए युद्ध में राठौड़ देवीदास जैतावत, वीरमदेव मांगलिया आदि के साथ मारा गया।

—बांकीदास री ख्यात पृ. १५, १६.

पृष्ठ ७४ गीत सं. ५३ ठाकुर खेतसिघ महेसौत नाहड़सर —

राठौड़ वीर ठाकुर खेतसिंह महेशदास का पुत्र था। खेतसिंह की जागीर में नाहड़सर का ठिकाना था। ख्यातों में लिखा है वि वह बादशाही मनसबदार था। उसने किस युद्ध में कटार से शत्रु का संहार किया, कोई संकेत-सूत्र नहीं मिलता। गीत में लिखा है कि बादशाह ने उसके कटार के प्रहार की सराहना की। इससे यह सूत्र मिलता है कि वह एक समय शाही सेवा में रहा होगा।

—राठौड़ों की ख्यात (हस्तलिखित)

पृष्ठ ७५ गीत सं. ५४ लखमीदास पातावत —

वह राव जोधा के पांचवें पुत्र रायपाल राठौड़ का वंशज था। लक्ष्मीदास ने सिवाना के शाही थानाध्यक्ष पुरदलखां मेवाती पर वि. सं. १७४१ में कांणाणा ग्राम में आक्रमण कर मार डाला। पुरतलखां बादशाह औरंगजेब की ओर से सिवाना पर नियुक्त था। राजरूपक के अनुसार पुरदलखां वि. सं. १७४२ में मारा गया था। रतनसिंह सुन्दर-

दासोत, अखैसिंह चांपावत तथा लखसिंह (लिखमीदास) प्रतापसिंहोत (पातावत) की मुठ-भेड़ में पुरदलखां मारा गया था। राठौड़ों के एक सौ वीर और तुर्कों के छः सौ सैनिक मारे गये थे।

—अजित विलास पृ. ४७; राजरूपक पृ. २८०; छंद २३

पृष्ठ ७६ गीत सं. ५५ ठाकर प्रिथीराज दलपतौत पीपाड़—

राठौड़ों की कर्मसोत शाखा का ठाकुर पृथ्वीराज दलपतसिंह का पुत्र। पृथ्वीराज को राव अमरसिंह ने खींवसर का पट्टा दिया था, फिर महाराजा जसवंतसिंह ने वि.सं १७०० में पीपाड़ दिया। वह महाराजा जसवंतसिंह के सामंतों में था। उसने महाराजा जसवंतसिंह की ओर से भाटियों से लड़ाई की थी। पृथ्वीराज वि. सं. १७१५ में शाहजादों के उत्तराधिकार के उज्जैन के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। उज्जैन के युद्ध में पृथ्वीराज के साथ जैतसिंह मुकंददासोत, गिरधरदास माधोदासोत, गोरधन माधोदासोत और इंद्रभाण सबलसिंहोत आदि कर्मसोत मारे गये थे।

– राठौड़ों की ख्यात; मा. इ. द्वि. भा. (रेउ) पृ. ६६४

पृष्ठ ७७ गीत सं. ५६ सिवराज जोधावत दुनाड़ा —

मारवाड़ के दूनाड़ा ठिकाने का स्वामी शिवराज राठौड़। वह जोधपुर के राव जोधा का पुत्र था। शिवराज को वि. सं. १५१८ के आस-पास दूनाड़ा दिया गया था। शिवराज ने देवीदास विजयमलोत सिवाना के स्वामी तथा उसके सहायक बपड़ांऊ, खावड़, बाड़मेर और पोकरण की सम्मिलित सेना को पराजित कर विजय प्राप्त की थी।

– मारवाड़ रा परगना री विगत, प्र. भाग पृ. ३९; मा.इ.प्र. भाग (रेउ) पृ. ९६, ९७

पृष्ठ ७८ गीत सं. ५७ अचळदास सिवराजौत दुनाड़ा—

जोधपुर के राव जोधा का पौत्र और शिवराज का पुत्र अचलदास दूनाड़ा का अधिपति। वि. सं. १६०० में गिर्री सुमेल के युद्ध में राव मालदेव के हार जाने पर शेरशाह की सेना ने जोधपुर दुर्ग को हस्तगत करने के लिए आक्रमण किया। तब अचलदास शिवराजोत, तिलोकसी वरजांगोत राठौड़, जैतमाल और शंकर भाटी वीरतापूर्वक जूझ कर रणखेत रहे। अचलदास ने शेरशाह के सेना-नायक ममारखखाँन को मार कर वीरगति प्राप्त की थी। अचलदास द्वारा ममारखखांन को मारने का ख्यातों में उल्लेख है यथा—

'खाधौ अचळ ममारखखांन।' जोधपुर के क़िले में मस्जिद के पास उल्लेखित वीरों की स्मृति में छत्रियां बनी हुई है

— मा. इ. प्र. भाग (रेउ) पृ. १३१ पाद टिप्पणी सं. ३; परम्परा ऐतिहासिक बातां-भाग ११ पृ. ४५; राठौड़ों की ख्यात (हस्तलिखित)।

पृष्ठ ७९ गीत सं. ५८, ५९ राव अखैराज रिणमलौत बगड़ी—

जोधपुर के राव रणमल्ल का जेष्ठ पुत्र राव अखैराज बगड़ी का अधिपति। अखैराज ने विक्रमी संवत् १४८३ में हूलों को विजित कर सोजत पर अधिकार किया। राव-रणमल्ल की मृत्यु पर राव अखैराज ने अपना राज्याधिकार अपने अनुजात राव जोधा को जोधपुर पर स्थापित कर त्याग का आदर्श प्रकट किया। राव अखैराज ने सोजत पर अधिकार करने के पश्चात् सिंघल चरड़ा को मार कर बगड़ी पर भी वि. सं. १४८३ में अधिकार कर लिया। गीतों में राव अखैराज का रुणेचां और सांखलों तथा मुसलमानों से लड़ने का वर्णन है।

—मा.इ प्र. भाग (रेउ) पृ. ७३, ८७, ८८, ९५; कूंपावत राठौड़ों का इतिहास पृ. ८५,८६।

पृष्ठ ८१ गीत सं ६० राव पंचाइण अखैराजौत बगड़ी —

मारवाड़ के बगड़ी ठिकाने का स्वामी राव पंचायन राठौड़। वह राव अखैराज का जेष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी था। राव पंचायन ने वि. सं. १५४५ में राव जोधा के निधन पर जोधा के जेष्ठ पुत्र को राज्य-स्वत्व से च्युत कर सातल को जोधपुर की गद्दी पर बैठाया और और राव सातल तथा राव सूजा का देहावसान होने पर राव बीरम को अधिकार से च्युत कर वि. सं. १५७२ में राव गांगा को जोधपुर के राजतख्त पर प्रतिष्ठित किया। गीत में राव पंयायन की वीरता का वर्णन हे।

— कूंपावत राठोड़ों का इतिहास पृ. ८८।

पृष्ठ ८२ गीत सं० ६१, ६२, ६३, राव जैता पंचाइणौत बगड़ी —

बगड़ी का शासक राव जैता (जैत्रसिह) वह राव पंचायन का जेष्ठ पुत्र था। वह मारवाड़ के राव मालदेव के प्रधान सेनापतियों में था। राव जैता ने कूंपा, पंचायन-कर्मसोत; वीदा भारमलोत आदि के सहयोग से जोधपुर के राज्य का हिसार तक विस्तार किया उसने और वीर वर कूंपा ने वि. सं. १५९१ में राव वीरमदेव मेड़तिया पर आक्रमण कर अजमेर पर अधिकार किया। वि. सं. १५९८ में दासी पुत्र वणवीर को चित्तौड़ की गद्दी से हटा कर महाराणा उदयसिंह को बैठाने में सहायता दी। राव जैता जैसा

वीर था वैसा ही समाज-प्रेमी भी। राव मालदेव की राज्य-वृद्धि में वह प्रमुख सहायक रहा। वि. सं. १६०० के सुमेल गिर्री के युद्ध में राव मालदेव के मैदान छोड़ भागने पर वीरवर जैता ने पंचायन कर्मसोत, खींवकरण ऊदावत आदि अनेकों योद्धाओं के साथ शेरसाह और राव वीरमदेव मेड़तिया की सेना से घमासान युद्ध कर वीरगति प्राप्त की। राव मालदेव की वीस हजार और शेरशाह की चालीस हजार सेना उस युद्ध में मारी गयी थी।

–आसोप का इतिहास पृ. २३, २४, ४३; कूंपावत राठौड़ों का इतिहास ८९, ९०, ९१; मा. इ. प्र. भाग (रेउ) पृ. १२४, १३०, १३१.

पृष्ठ ८५ गीत सं. ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७१, ७२, ७३ राव प्रिथीराज जैतावत वगड़ी—

वगड़ी ठिकाने का शासक राव पृथ्वीराज जैतावत। वह अपने पिता राव जैता के बाद वगड़ी की गद्दी पर बैठा। उसने राव मालदेव की सेना का नायकत्व प्राप्त कर वि.सं. १६०५ में अजमेर और सं. १६०९ में फलोधी प्रान्त पर अधिकार किया और पोकरण, बाडमेर, कोटड़ा (मालानी) को परास्त कर जोधपुर के अधीन बनाया। महाराणा उदयसिंह को वणाला स्थान पर पराजित किया। जब वि. सं. १६१० में राव मालदेव ने मेड़ता के राव जयमल पर चढ़ाई की तब राव माल देव के साथ पृथ्वीराज वगड़ी, चांदा वीरमदेवोत, जगमाल वीरमदेवोत, रतनसी खीवावत जैतारण और पृथ्वी–राज कूंपावत आदि योद्धा थे· दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ। राव जयमल की विजय हुई। राठौड़ पृथ्वीराज जैंतावत राव मालदेव के अनेक बड़े योद्धाओं सहित रण–खेत रहा।

- परम्परा (ऐतिहासिक वार्ता) भाग ११ पृ. ४७, ४८, ४९; कूंपावत राठौड़ों का इतिहास पृ. ९२, ९३

पृष्ठ ९६ गीत सं. ७४ राणा देवीदास जैतमालोत सिवाणा—

सिवाणा के विजयपाल राठौड़ का पुत्र राणा देवीदास। मालानी के शासक रावल मल्लिनाथ के अनुज जैतमाल से राठौड़ों की जैतमालोत प्रशाखा का उद्‌भव हुआ। जैतमाल के हापा, करण, त्रिहणजी और विजयपाल उत्तराधिकारी हुए। विजयपाल के पुत्र देवीदास ने राव जोधा के संकेत पर आपामज सिंधल भाद्राजून को मार कर सिवाणा पर अधिकार कर लिया था। देवीदास बड़ा दानी, वीर और जातीयसेवी शासक था।

राणा देवीदास के बाद क्रमशः जोगीदास, करमसी और डूंगरसी सिवाणा के शासक हुए राव मालदेव जोधपुर ने वि.सं. १५९५ में आक्रमण कर राणा डूंगरसी ने सिवाणा छीन लिया।

—मारवाड़ रा परगनां री विगत द्वि. भाग पृ. २१६-२१९।

पृष्ठ ९७ सं. ७५ भगवानसिंघ दलावत राठौड़—

राठौड़ रामसिंह का वंशज और दलपतसिंह का पुत्र भगवानसिंह। भगवानसिंह की रणवीरता से राजा तथा शाहजादे सभी भय खाते थे। वह राठौड़ों की किस प्रशाखा तथा ठिकाने का स्वामी था ख्यातों से पता नहीं लगता है।

पृष्ठ ९८ गीत सं. ७६ अमरसिंघ —

अमरसिंह का परिचय प्राप्त नहीं है। उसने आक्रमण कर अचलदास को धराशायी किया था। अमरसिंह को गीतकार ने मालदेव का पुत्र बताया है।

पृष्ठ ९९ गीत सं ७७ भींवसिंघ हींगोलावत राठौड़—

राठौड़ों की हिंगोलावत उपशाखा के रूपसिंह का पुत्र निम्बा का वंशज भीमसिंह राठौड़। भीमसिंह के विषय में अन्य परिचय उपलब्ध नहीं है।

पृष्ठ १०० गीत सं ७८ नरहरदास कांधलोत राठौड़—

जोधपुर के राव जोधा के पराक्रमी भाई राव कांधल का वंशज नरहरिदास राठौड़ राव कांधल के उत्तराधिकारियों के ठिकाने बीकानेर राज्य में थे। नरहरिदास संभवतः उदयसिंह का पुत्र था। वह किसके विरुद्ध लड़ा, कोई संकेत नहीं मिलता।

पृष्ठ १०१ गीत सं. ७९ भाखरसिंघ राठौड़—

राठौड़ कर्णसिंह का पौत्र भाखरसिंह राठौड़। गीत में भाखरसिंह की वीरता पर बादशाह अकबर के प्रसन्न होने का वर्णन है। भाखरसिंह के ठिकाने और मनसब आदि की जानकारी उपलब्ध नहीं होती।

पृष्ठ. १०२ गीत सं. ८० कंवर रामसिंघ राठौड़—

संभवतः बीकानेर के राव कल्याणमल का पुत्र और महाराजा रायसिंह का अनुज रामसिंह राठौड़। रामसिंह को महाराजा रायसिंह ने मरवा दिया था।

पृष्ठ १०३ गीत सं. ८१ ठाकर रूपसिह राठौड़—

ठाकुर नाहरसिह का पुत्र ठाकुर रूपसिह । रूपसिह नागौर के राजाधिराज बखतसिह और जयपुर के महाराजा सवाई जयसिह के मध्य लड़े गए वि. सं. १७९८ के गंगवाना स्थान के युद्ध में लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था । संभवतः वह नागौर प्रान्त के किसी ठिकाने का ठाकुर था ।

पृष्ठ १०४ गीत सं. ८२ उदैसिंघ नरसिंघ लखधीर भावसी चांदावत—

मारवाड़ के नोखा नींबड़ी ठिकाने के उदयसिह, नृसिह, लखधीरसिह और भावसिह चांदावत राठौड़ । चांदावत प्रशाखा मेड़ता के राव वीरमदेव के पुत्र राव चांदा से प्रचलित हुई । उदयसिह भावसिह आदि चारों वीर विजयपाल के पुत्र थे । उदयसिह, नृसिह, लखधीरसिह और भावसिह ने मेड़ता स्थान के किस युद्ध में आमेर के कछवाहों से लड़ाई की थी कोई अन्य उल्लेख प्राप्त नहीं हैं । गीत में चारों योद्धाओं के रणभूमि में काम आने का वर्णन है ।

पृष्ठ १०६ गीत सं. ८३ राव कल्ला राठौड़ सिवाणा—

मारवाड़ के सिवाना प्रान्त का शासक राव कल्ला (कल्याणसिंह) राठौड़ । जोधपुर के राव मालदेव का पौत्र और राव रायमल्ल का पुत्र राव कल्याणसिह बड़ा स्वाभिमानी वीर था । राव कल्ला ने बादशाह अकबर के मनसब की उपेक्षा कर शाही सेना से जूझ कर मरना गौरवपूर्ण समझा । बादशाह अकबर के निर्देश पर जोधपुर के राजा उदयसिह ने राव कल्ला पर आक्रमण किया था । राव कल्ला ने कोई छः माह तक शाही सेना का साहस पूर्वक सामना किया । अन्त में वि. संवत् १६४० में सिवाना में जूझता हुआ रण खेत रहा । मारवाड़ के खारी पट्टी के लाडनू, लैड़ी, गौराऊ, भीडासरी, सिवा, छपारा आदि ठिकाने राव कल्ला के वंशजों के थे ।

—मा. इ. प्र. भाग (रेउ)पृ. १७५—१७६; मा. प. विगत द्वि. भाग पृ. २१९—२२०

पृष्ठ १०७ गीत सं. ८४ उदैसिंघ राठौड़ बघेरा—

राजा चंद्रसेन का आठवां वंशधर उदयसिंह हुआ । वह मालमसिंह का पुत्र और अजमेर मेरवाड़ा के बघेरा ठिकाने का स्वामी था । उदयसिंह ने बघेरा के किले पर मरहठों के आक्रमण को विफल कर पराक्रम दिखाया था ।

—बांकीदास री ख्यात पृ. ८४

पृष्ठ १०८ गीत सं, ८५ राव सगतसिंघ जोधा खरवा —

अजमेर मेरवाड़ा के खरवा ठिकाने का स्वामी राव शक्तिसिंह जोधा। वह मोटे राजा उदयसिंह जोधपुर का ९ वां पुत्र था। बादशाह अकबर ने शक्तिसिंह की वीरता से प्रसन्न होकर उसे राव की पदवी तथा तीन हजारी का मनसब और सोजत, फूलिया तथा केकड़ी के परगने जागीर में दिए थे। कुछ समय बाद सोजत की एवज में बादशाह ने राव शक्तिसिंह को जैतारण दिया। राव शक्तिसिंह का वंशज राव माधवसिंह और उसका पुत्र राव गोपालसिंह हुआ जो बड़ा वीर और स्वतंत्रता-प्रेमी था। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता के प्रयासों में सक्रिय भाग लिया था। राव शक्तिसिंह को बादशाह अकबर ने वि. सं. १६५६ में सोजत का पट्टा दिया था।

—मा. इ. प्र. भाग (रेउ) पृ. १८० पा. टिप्पण १; जोधपुर का इतिहास-(ओझा) पृ. ३६३, ३६६।

पृष्ठ १०९ गीत सं० ८६, ८७ राव खंगार जोगावत —

जोधपुर के शासक राव जोधा के पुत्र जोगा तथा उसका पुत्र राव खंगार। राव खंगार की संतति से राठौड़ों की खंगारोत शाखा प्रारंभ हुई। राव-खंगार जैसा वरसिंघोत से खारिया ग्राम में लड़ कर मारा गया। जोगा को राव जोधा ने छापर द्रोणपुर दिया था।

—छत्रिय जाति की वंशावली पृ. २८; राठौड़ों की ख्यात (हस्तलिखित,) जोधपुर, राज्य का इतिहास (ओझा) प्र: खंड पृ. २५३।

पृष्ठ १११ गीत सं० ८८ चंद्रभाण दुवारकादासोत राठौड़—

मारवाड़ के पांचला ग्राम का ठाकुर चंद्रभाण जोधा। ठाकुर चंद्रभाण द्वारकादास का पुत्र था। वह महाराजा जसवंतसिंह का सामंत था। जसवंतसिंह की मृत्यु के पश्चात् वि. सं. १७३५ में महाराजा जसवंतसिंह के शिशु पुत्र अजितसिंह की रक्षार्थ दिल्ली में बादशाही सेना से लड़कर चंद्रभाण वीरगति को प्राप्त हुआ। चंद्रभाण के पांचला का पट्टा ६०००) रू. की रेख का था। वह पाटन के वीरमगांव का थानेदार भी रहा। उसने औरंगजेब के सामने गाढे राव नामक हाथी को तलवार से मारा था।

—कूंपावत राठौड़ों का इतिहास पृ. २४७-२४८; राजरूपक पृ. ३७; राठौड़ों की ख्यात

पृष्ठ ११३ गीत सं. ८९ कीरतसिंघ पूरणमलोत राठोड़—

खंगार का वंशज और पूर्णमल्ल का पुत्र कीर्तिसिंह राठौड़ का अन्य परिचय प्राप्त नहीं है।

पृष्ठ ११४ गीत सं ९०, से ९७ राव रतनसिंघ ऊदावत जैतारण—

मारवाड़ के राव सूजा के लघु पुत्र राव ऊदा की संतति ऊदावत राठौड़ कहलाते हैं। राव रत्नसिंह राव खींवकरण का जेष्ठ पुत्र था। खींवकरण वि. सं. १६०० में शेरशाह के विरुद्ध गिरीं सुमेल के युद्ध में मारा गया था। राव रत्न-सिंह सं १६०० में जैतारण की गद्दी पर बैठा। वह मालदेव जोधपुर के बड़े सरदारों में था। राव मालदेव की ओर से वि. सं १६१३ में हरमाड़ा (अजमेर) के पास नवाव हाजी खां पठान की सहायतार्थ महाराणा उदयसिंह से लड़े गए युद्ध में रत्नसिंह ने वीरता दिखाई थी। उक्त युद्ध में उदयपुर की सेना पराजित हुई थी और सूजा वालेचा तथा तेजसी डूंगरसिंहोत ऊदावत दो बड़े योद्धा मारे गए थे। राव मालदेव की राव जयमल से हुई पराजय का प्रतिशोध लेने के लिए सं. १६१४ में रतनसिंह और देवीदास जैतावत ने मेड़ता पर आक्रमण कर राव जयमल से मेड़ता छीन लिया। जब वि. सं. १६१४ में अजमेर के सूबेदार कासिमखां ने जैतारण पर आक्रमण किया तब राव रत्नसिंह ने राव मालदेव से सहायता मांगी थी पर मालदेव ने मदद नहीं भेजी। फलस्वरूप रतनसिंह उक्त युद्ध में मारा गया और जैतारण उसके वंशजों के हाथ से निकल गया। रत्नसिंह के साथ किशनदास जैतसिंहोत ऊदावत, कानदास तथा शंकरदास ऊदावत आदि कोई ३२ वीर मारे गए।

—इतिहास नीबाज पृ. ४३, ४४, ४६, ४८, ४९

पृष्ठ १२२ गीत सं. ९८ कुंवर जसवंतसिंह—

खेतसिंह का पुत्र और शूरसिंह का पौत्र कुमार जसवंतसिंह। जसवंतसिंह के ठिकाने तथा युद्ध आदि में वीरता प्रकट करने की जानकारी प्राप्त नहीं हुई।

पृष्ठ १२३ गीत सं. ९९ ठाकर अमरसिंघ नीवाज—

मारवाड़ के नीवाज ठिकाने का ठाकुर अमरसिंह ऊदावत राठौड़। वह ठाकुर जगरामसिंह का पौत्र और कुंवर कुशलसिंह का पुत्र था। कुशलसिंह ठाकुर जगरामसिंह की मौजूदगी में ही अजमेर के शाही सूबेदार के आक्रमण करने पर जगरामगढ़ में लड़कर मारा गया था। अतः अमरसिंह अपने पितामह जगरामसिंह के बाद सं. १७६७ में नीवाज का पट्टाधिकारी हुआ। वह महाराजा अजितसिंह का विश्वस्त सरदार था। अमरसिंह ने महाराजा अभयसिंह द्वारा नवाब सरबिलंदखां अहमदाबाद पर किए गए सैनिक अभियान में उल्लेखनीय वीरता का परिचय दिया और अजमेर के तारागढ़ दुर्ग पर अधिकार कर शाही सूबेदार को अजमेर से भगा दिया था।

—इतिहास नीवाज पृ. १०१, १०२, १०७, ११३; अजितविलास १०५, १०७

पृष्ठ १२४ गीत सं. १०० ठाकर सुरतांणसिंघ ऊदावत नींवाज—

नीवाज के ठाकुर शम्भुसिंह का उत्तराधिकारी ठाकुर सुल्तानसिंह ऊदावत राठौड़। वह १८५६ में नीवाज की गद्दी पर बैठा था। उसने महाराजा मानसिंह की आज्ञा से सिरोही राज्य पर आक्रमण कर सिरोही नरेश को दण्डित करने वाली जोधपुर की सेना का नेतृत्व किया था। तदनन्तर वह महाराजा मानसिंह जोधपुर और महाराजा सवाई जगतसिंह जयपुर के हुए युद्धों में महाराजा मानसिंह का सहायक बना रहा। महाराजा मानसिंह और ठाकुर सवाईसिंह पोकरण, ठाकुर केशरीसिंह आसोप प्रभृति सरदारों में तीव्र विरोध उत्पन्न हो गया था। फलतः महाराजा मानसिंह ने ठाकुर सवाईसिंह को छलाघात से नवाब अमीर खां टोंक द्वारा मरवा डाला और फिर स्वार्थियों के भ्रमित करने पर ठाकुर सुल्तानसिंह के निवास नीवाज की हवेली (जोधपुर नगर) पर आक्रमण किया। ठाकुर सुल्तानसिंह ने क्षत्रियोचित रीति से राजकीय सेना का सामना किया और वह अपने भाई शूरसिंह, ठाकुर खेतसिंह, ठाकुर भीमसिंह पोह आदि सहित मारा गया।

—इतिहास नीवाज पृ. १५६, १६७, १७०, १७१, १७२, १७४।

पृष्ठ १२५ गीत सं. १०१ राव वीरमदेव दूदावत मेड़ता—

जोधपुर के राजा जोधा के लघु पुत्र राव वीरमदेव मेड़तिया राठौड़। वीरमदेव बड़ा पराक्रमी शासक था। उसने नागौर के शासक, जोधपुर के राव मालदेव और अजमेर के शाही सूबेदार से लड़ाइयां लड़ी। मालदेव और वीरमदेव में जीवन-पर्यन्त विरोध चलता रहा। वीरमदेव से मेड़ता, रियां और अजमेर

जाने के बाद वह क्रमशः बोंली और चाटसू में रहा। वहां से वह शेरशाह के पास दिल्ली गया और शाही सहायता प्राप्त कर मालदेव को पराजित किया। वह सं. १५५४ में मेड़ता की गद्दी पर बैठा और सं. १६०९ में मेड़ता में स्वर्गवासी हुआ।

—राठौड़ों की ख्यात; ठिकाना कुचामन की ख्यात।

पृष्ठ १२६ गीत सं. १०२ केसवदास जैमलोत मेड़तिया परबतसर—

राव जयमल मेड़तिया का छोटा पुत्र केशवदास मेड़तिया। ईश्वरदास के पुत्र नरहरिदास के बाद जब केशवदास भी अकबर बादशाह की सेवा में चला गया तब अकबर ने केशवदास को मेड़ता का आधा परगना जागीर में प्रदान कर मन्सब दिया। तदनन्तर बादशाह ने उसे मारवाड़ के राव चंद्रसेन के विरुद्ध भेजे गए सेनानायकों में भेजा। तदुपरांत सन् १५९७ ई. में अहमदनगर राज्य के विरुद्ध भेजी गई सेना में उसे हरावल के प्रमुख व्यक्तियों में नियुक्त किया गया। केशवदास सन् १५९९ ई. बीड़नगर के घमासान युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ता हुआ खेत रहा।

—शोधपत्रिका लेख 'अकबर कालीन विभिन्न केशवदास' डॉ. रघुवीरसिंह, वर्ष १२, अंक ३ पृ. २, ३

पृष्ठ १२७ गीत सं. १०३ ठाकर रामसिंघ मेड़तिया—

ठाकुर रामसिंह मेड़तिया के सम्बन्ध में कोई परिचय उपलब्ध नहीं हुआ। मेड़तियों के ठिकानों में रामसिंह नामक दो ठाकुरों के नाम मिलते हैं। पहला रामसिंह आलनियावास का ठाकुर और दूसरा रामसिंह रायण का ठाकुर था। गीतनायक रामसिंह का सही परिचय प्राप्त नहीं है।

—पृष्ठ १२८ गीत सं. १०४ राजा सबळसिंघ मेड़तिया मारोठ

मारोठ के स्वामी रघुनाथसिंह मेड़तिया का बड़ा पुत्र सबलसिंह मेड़तिया। सबलसिंह बादशाह औरंगजेब की सेवा में था। उसके मन्सब आदिकी जानकारी प्राप्त नहीं है। सबलसिंह ने रसनरासो के लेखक प्रसिद्ध कवि कुम्भकर्ण सांदू भदोरा के परिवार को यवनों द्वारा पकड़ने पर मुक्त करवाया था। सबलसिंह का उत्तराधिकारी इन्द्रसिंह हुआ। इन्द्रसिंह को महाराजा अजितसिंह ने वि.सं. १७६७ में गोढ़ावाटी परगने

का मींढ़ा ठिकाना प्रदान किया था। मींढ़ा और उसके आस-पास के ग्रामों में सबलसिंहोत मेड़तियों की भूमि है।

–कुचामन री ख्यात; मारवाड़ के ठिकानेदारों की पीढ़ियां; बांकीदास री ख्यात पृ. ६६

पृष्ठ १३० गीत सं. १०५ कल्याणसिंघ मेड़तिया सोहिला––

कल्याणसिंह मेड़तिया सोहिला के ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र था। रतनरासो के लेखक कुंभकर्ण सांदू ग्राम भदोरा ने गीत में कल्याणसिंह को पतावत (प्रतापसिंह का पुत्र) कहा है, इससे अधिक परिचय प्राप्त नहीं हुआ।

पृष्ठ १३२ गीत सं० १०६ ठाकर बिसनसिंघ चांणोद—

गोड़वाड़ के चांणोद ठिकाने का ठाकुर विशनसिंह मेड़तिया। विशनसिंह ठाकुर शिवसिंह का पुत्र था। जोधपुर के महाराजा विजयसिंह ने वि.सं. १८२९ म विशनसिंह को चांणोद का पट्टा प्रदान किया था। ठाकुर विशनसिंह ने महाराणा अरिसिंह मेवाड़ के समय में उनके विरोधी महाराणा रत्नसिंह (फरेबी) के विरुद्ध अरिसिंह की सहायता की थी। उसने सादड़ी, खीमेल आदि स्थानों की लड़ाइयों में प्रशंसनीय वीरता प्रकट की थी।

—मारवाड़ के ठिकानेदारों की पीढ़िया (ह.लि.); तवारीख जागीरदारांन राज मारवाड़ पृष्ठ १६०.

पृष्ठ १३३ गीत सं० १०७ ठाकर प्रतापसिंघ गोपीनाथौत मेड़तियौ बोरूंदा—

बिलाड़ा परगने के बोरूंदा ठिकाने वालों का पूर्वज प्रतापसिंह विशनदासोत मेड़तिया राठौड़। वह ठाकुर गोपीनाथ का पुत्र था। प्रतापसिंह ने पठानों की सेना से लोहा लेकर वीरगति प्राप्त की थी। प्रतापसिंह का पिता ठाकुर गोपीनाथ महाराजा अजितसिंह के पक्ष में डीगराणा (मेड़ता) के युद्ध में मारा गया था। प्रतापसिंह किस युद्ध में काम आया, ख्यातों में विशेष विवरण नहीं मिलता।

–– तवारीख जागीरदारांन राज मारवाड़ पृ० १९०; मारवाड़ के जागीरदारों की वंशावली (ह.लि.); मारवाड़ का इतिहास (रेउ) द्वितीय भाग पृ. ६६९

पृष्ठ १३४ गीत सं० १०८, १०९ ठाकर भारथसिह सूरसिंघोत—

बिलाड़ा परगने के बोरूंदा ठिकाने का स्वामी भारतसिंह-मेड़तिया। वह ठाकुर शूरसिंह का पुत्र था। 'तवारीख जागीरदारान मारवाड़' में बोरूंदा की पीढ़ियों में शूरसिंह को 'सूरतसिंघ' लिखा है और सूरतसिंह का उत्तराधिकारी जैतसिंह लिखा है। पीढ़ियों की सूची में भारतसिंह का नाम नहीं दिया है। संभवतः भारतसिंह जैतसिंह का कनिष्ठ भ्राता रहा होगा। वह दौलतसिंह जोधा, बखतसिंह खंगारोत सहित ईडर से मारवाड़ में आते हुए रोहीड़ा की घाटी में मारा गया था। उसकी वीरता पर सुखा दमामी का यह दोहा प्रसिद्ध है—

आया पिसण अपार, विकट थाट घाटा विचै।
भारथ भारथ वार, साम्हो लड़ियौ सूरउत॥

राठौड़ां री ख्यात (ह.लि.)

पृष्ठ १३६ गीत सं. ११०, १११ राणा सगर चित्तौड़—

उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का छोटा पुत्र और महाराणा प्रतापसिंह का अनुज राणा सगर। वह राणा जगमाल का सगा भाई था। जगमाल के वि.सं. १६४० में दत्ताणी (सिरोही) के युद्ध में मारे जाने पर वह महाराणा प्रतापसिंह से रुष्ठ होकर शाही सेवा में चला गया। बादशाह जहांगीर ने सगर को राणा की पदवी और चित्तौड़, नागौर तथा अजमेर के प्रान्त दिये थे। महाराणा अमरसिंह से संधि हो जाने पर बादशाह जांहगीर ने चित्तौड़ की एवज में सगर को पूर्व में जागीर तथा रावत की पदवी दी। सगर की संतति वालों के मालवा में ऊमरी भदोरा आदि ठिकाने थे। सगर का जन्म वि: सं. १६१६ में हुआ था वह तीन हजारी जात तथा दो हजार का मनसवदार था।

—बांकीदास री ख्यात पृ० ९४; मआसिरुल, उमरा पृ० ४००; नैणसी री ख्यात भाग १ पृ० २३, २४.

पृष्ठ १३८ गीत सं. ११२ राजा भीवसिंघ सीसोदिया टोडा—

टोडा राज्य का राजा भीमसिंह राणावत (सिशोदिया) वह महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र था। बादशाह जांहगीर और महाराणा अम सिंह के संधि हो जाने पर शाही सेवा में गया। वि. सं. १६७९ में भीमसिंह को राजा का उपटंक

और मेड़ता जागीर में मिला था। वह शाहजादा खुर्रम का अत्यन्त विश्वासी और महान् योद्धा था। वह शाहजहां के विद्रोह करने पर वि. सं. १६८१ में शाही सेना नायक शाहजादा पर्वेज, महावतखां खानखानां, मिर्जा राजा जयसिंह, महाराजा गजसिंह आदि से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। कथित युद्ध विहार के झूंसी नामक स्थान पर लड़ा गया था।

—मआसिरुल उमरा, पृ० ३६३, ३६४ की पादटिप्पणी; गजगुण रूपक पृ० १४२।

पृष्ठ १४६ गीत सं. ११३ महारावत हरिसिंघ प्रतापगढ़—

वागड़-प्रदेश के देवलिया प्रतापगढ़ का महारावत हरिसिंह-सिशोदिया। वह महारावत जसवंतसिंह का उतराधिकारी था। महारावत जसवंतसिंह के वि. सं. १६६० में उदयपुर में छलाघात से मारे जाने पर हरिसिंह गद्दी पर बैठा। वह विद्वानों का आश्रयदाता शासक था। 'हरिपिंगळ प्रबंध' डिंगल छंदशास्त्र का ग्रन्थ जोगीदास कंवारिया ने उसी की आज्ञा से रचा था।

—बांकीदास री ख्यात भाग १ पृ० ९६, ६७; हरि-पिंगळ (ह.लि.)।

पृष्ठ १४० गीत सं० ११४ महारावत प्रतापसिंघ देवळिया —

देवलिया प्रतापगढ़ का महारावत प्रतापसिंह। वह महारावत हरिसिंह का उत्तराधिकारी था। अहमदाबाद के युद्ध में पराजित होने पर नवाब सर बिलंदखां महारावत प्रतापसिंह के पास रहा था। वह १७३२ वि. में देवलिया की गद्दी पर बैठा था। उसने सं. १७६५ में अपने नाम पर प्रतापगढ़ नगर का निर्माण कर अपनी राजधानी बनाया। संवत् १७६५ में उसका देहान्त हुआ।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत प्र. भा. पृ. ५२४; राजस्थानी वातां भा. ७

पृष्ठ १४२ गीत सं. ११५ महारावत उदैसिंघ प्रतापगढ़ —

देवलिया प्रतापगढ़ का महारावत उदयसिंघ। वह अपने पिता महारावत दलपतसिंह के बाद संवत् १९२० विक्रमी में प्रतापगढ़ की गद्दी पर बैठा। उदयसिंह बडा मिलनसार था उसने प्रतिवेशी राजाओं से राजनैतिक मेल मिलाप बढ़ाकर मित्रता स्थापित की। उसका वि. सं १९४६ में निःसंतान देहावसान हुआ।

राजपूताने का इतिहास प्र. भा. गहलोत पृ. ५३१,५३२.

पृष्ठ १४३ गीत सं. ११६, ११७ राजा ऊमेदसिंघ सायपुरा—

शाहपुरा राज्य का स्वामी राजा उम्मेदसिंह। वह राजा भारतसिंह का पुत्र था। उम्मेदसिंह १७२९ ई. में शाहपुरा की गद्दी पर बैठा था। वह बड़ा वीर था। उसने अपने जीवनकाल में गगवाणा, बनेड़ा, राजमहल, बूंदी आदि अनेक प्रसिद्ध युद्धों में भाग लेकर शौर्य दिखाया तथा महाराणा अरिसिंह का प्रबल पक्षधर बना रहा। अन्त में महादाजी सिंधिया द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण करने पर वि.सं. १८२४ में उज्जेन के युद्ध में अपने तीनों पुत्रों सहित वीरगति प्राप्त की। उक्त युद्ध में सात हजार मरहठे सैनिक मारे गए थे।

–शाहपुरा री ख्यात, भाग २।

पृष्ठ १४७ गीत सं. ११८ महारावळ बिजैसिंघ डूंगरपुर—

महारावत उदयसिंह का पुत्र महारावत विजयसिंह डूंगरपुर। महारावत विजयसिंह वि. सं. १९५४ में सिंहासनासीन हुआ उसने अपने राज्य में शिक्षा का निःशुल्क प्रबंध किया। शासन सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण सुधार किये। सं. १९५६ के महादुर्भिक्ष में प्रजा का पोषण किया। वह सं. १९७४ में स्वर्गवासी हुआ।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत प्र. भा. पृ. ५२४-२५

पृष्ठ १४९ गीत सं. ११९ रावत नारायणदास सीसोदिया वेगू—

महाराणा उदयसिंह के पुत्र शक्तिसिंह से सिशोदियों की शक्तावत शाखा का प्रादुर्भाव हुआ। शक्तिसिंह के पुत्र अचलदाल और उसका पुत्र रावत नारायणदास हुआ। राणा सगर ने नारायणदास को रावत की पदवी और वैगू तथा रतनपुर के ठिकाने दिए थे। वह राणपुर में काम आया था।

—नैणसी री ख्यात भा. १ पृ. २७, ६३, ६७; बांकीदास री ख्यात पृ. ९३

पृष्ठ १५० गीत सं. १२० दलपत सकताउत सीसोदिया—

महाराणा उदयसिंह के पुत्र महाराज शक्तिसिंह का पौत्र दलपत शक्तावत। वह रावत अचलदास वेगू का पुत्र था। उसने महाराणा अमरसिंह की ओर से शाही सेना से युद्ध कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

नैणसी री ख्यात भा पृ. २७

पृष्ठ १५१ गीत सं. १२१ कलियाणदास परतापौत सीसोदिया —

महाराणा प्रतापसिंह का छोटा पुत्र कल्याणदास। वह यशोदावाई चहुवान की कुक्षि से उत्पन्न हुआ था। गीत में उसके भयानक रूप में घायल होकर वच रहने का वर्णन है।

—वीरविनोद द्वितीय भाग, प्रथम खण्ड पृ. १७५; मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १ पृ. २८.

पृष्ठ १५३ गीत सं. १२२ मिरजा राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर —

वह आमेर के राजा महासिंह का पुत्र था। अपने पिता की मृत्यु के वाद सं. १६७१ में आमेर की गद्दी पर वैठा। शाही सेवा में रहकर उसने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त कर यश अर्जित किया था। अपनी मृत्यु के समय सं १७२३ में वृद्धि प्राप्त कर उसका सप्तहजारी जात तथा सात हजार का मनसव हो गया था। वह वुरहानपुर में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

— मुगल दरवार भाग १ पृ. १५४–१६३; राजस्थानी निवंध-संग्रह पृ. १८–२४.

पृष्ठ १५४ गीत सं० १२३ महाराजा सवाई जयसिंघ आमेर —

आमेर नरेश मिरजा राजा जयसिंह का पौत्र और राजा-विष्णुसिंह का पुत्र महाराजा सवाई जयसिंह कछवाह। वह अपने पिता के निवन पर ईस्वी सन् १६९९ में आमेर की गद्दी पर वैठा और शाही सेवा में प्रविष्ट हुआ। जयसिंह ने वादशाह की ओर से मथुरा मण्डल के चूड़ामणि जाट, से तथा गगवाना, वूँदी के युद्ध आदि में विजय प्राप्त की। वह राजनीति, ज्योतिष, स्थापत्य और गणित आदि कलाओं का प्रेमी तथा कुशल शासक था। भारत का भव्य नगर जयपुर सवाई जयसिंह की कीर्ति का अद्वितीय उदाहरण है। मालवा का प्रान्तपाल रहते हुए उसने मरहठों से मित्रता वढ़ाई। इस युगपुरुष का वि. सं. १८०० में देहावसान हुआ।

मु. द. भाग १ पृ १६४–१६७; कछवाहों का इतिहास पृ. ३०.

पृष्ठ १५६ गीत सं० १२४ महाराजा सवाई प्रतापसिंघ —

वह जयपुर के महाराजा सवाई माधवसिंह (प्रथम) का द्वितीय पुत्र था। प्रतापसिंह अपने अग्रज महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह की मृत्यु के वाद जयपुर राज्य के सिंहासन पर वैठा। उसने तुंगा और पाटन स्थानों पर मरहठों से भयानक युद्ध लड़े।

अलवर और जयपुर का विग्रह भी इसके शासनकाल में खूब चला। पर, युद्धों में रत रहते हुए भी प्रतापसिंह ने हवामहल जैसी रमणीय इमारत का निर्माण करवाया। संगीत और साहित्य की उल्लेखनीय सेवाएँ कीं। 'ब्रजनिधि ग्रन्थावली' के नाम से उनका काव्य प्रसिद्ध है। महाराजा सवाई प्रतापसिंह का शासनकाल वि. सं. १८३५ से १८८० तक रहा।

—प्रतापरासो पृ. ४४; महाराजा प्रतापसिंह की निशानियां.

पृष्ठ १६१ गीत सं. १२५, १२६ महाराव सेखा कछवाहा —

शेखावाटी संघ के ठिकानों का परम प्रतापी पूर्वज महाराव-शेखा कछवाहा। वह महाराव मोकल का पुत्र और उत्तराधिकारी था। उसने शासनाधिकार प्राप्त कर अमरसर नगर का निर्माण किया और वहां अपनी राजधानी स्थापित की। महाराव शेखा ने चरखी दादरी के जाटू क्षत्रियों, हांसी हिसार के कायमखांनियों, जयपुर नरेश चंद्रसेन तथा गौड़ावाटी के गौड़ क्षत्रियों को पराजित कर प्रसिद्धि प्राप्त की तथा गौड़ों के साथ अंतिम युद्ध में सं. १५४५ में वीरगति को प्राप्त हुआ।

— रायसल जससरोज; देवगुण प्रकास; खण्डेला का इतिहास; केशरीसिंह समर पृ. १४.

पृष्ठ १६६ गीत सं. १२७ राव रायमल सेखावत —

महाराव शेखा का उत्तराधिकारी राव रायमल शेखावत। राव रायमल बादशाह हुमायूं और जोधपुर के शासक राव मालदेव का समसामयिक था। राव रायमल ने हिंदाल को पराजित किया तथा नारनौल को लूटा। वह सं. १६३३ के आस पास स्वर्गवासी हुआ।

— केशरीसिंह समर पृ. १५-१९.

पृष्ठ १६७ गीत सं. १२८ राव सूरजमल सेखावत —

राव रायमल का पुत्र राव सूरजमल। वह बादशाह का विरोधी बना रहा। उसने गौड़ावाटी से लगे किशनगढ़ के इलाके के गौड़ों को पराजित किया। अंत में रासा टांक से वह पराजित होकर मेवात में टीबा बसई जा रहा और वहीं उसका देहावसान हुआ।

— रायमल जससरोज; केशरीसिंह समर पृ. १९.

पृष्ठ १६८ गीत सं. १२९ राजा गिरधरदास सेखावत खंडेला —

वह खण्डेला के राजा रायसल दरबारी का पुत्र और उत्तराधिकारी था। अपने पिता के देहावासन के पश्चात् वि. सं. १६३२ में वह खण्डेला का अधिपति बना। बादशाह जांहगीर की सेवा में उपस्थित होने पर उसे मेवात के डाकुओं का उन्मूलन करने पर नियुक्त किया। राजा गिरधरदास ने उनका दमन कर शान्ति-स्थापित की। वि.सं. १६७२ में उसे दक्षिण में भेजा गया उस समय उसे राजा की पदवी और ८०० जात, आठ सवार का मनसब मिला। तदनन्तर उसके मनसब में वृद्धि कर वि. सं. १६७९ में दो हजार जात, डेढ़ हजार का मनसबदार बनाया गया और शाहजादे-खुर्रम के विद्रोह का दमन करने के लिए भेजी गई सेना में नियुक्त कर दक्षिण में भेजा गया। वहीं वि. सं. १६८० में वह पूजा करते हुए बुरहानपुर में बाराह के सैयदों के एक सेवक द्वारा २६ आदमियों सहित मारा गया। राजपूत मनसबदारों ने राजा गिरधर का वैर लेना चाहा तब शाहजादे परवेज ने सैयदों के मुखिया सैयद कबीर को कैद कर लिया और घटना की जांच होने पर उसे मृत्यु दण्ड दिया गया।

— म. उ. भा. १ पृ. ३५३; केशरीसिंह समर पृ. ३८; ओझा निबन्ध संग्रह पृ.६०-६३.

पृष्ठ १६९ गीत सं १३० राव रायचंद सेखावत मनोहरपुर —

महाराव शेखा के पौत्र सूरजमल का पाटवी पुत्र और राजा रायसल का जेष्ठ भ्राता राव लूणकर्ण का पुत्र राव मनोहरदास हुआ और मनोहरदास का पुत्र राव रायचन्द हुआ। राव रायचंद ने भी अपने पूर्वजों की भांति शाही-मनसब प्राप्त किया और शाही सेना में रह कर कंधार और बक्सर आदि के युद्धों में भाग लिया तथा शौर्य प्रदर्शित कर बक्सर के युद्ध में मारा गया। इसके भ्राता राय-पृथ्वीचंद को बादशाह जांहगीर ने पांच सदी जात, तीन सो सवार का मनसब दिया था। वह कांगड़ा के युद्ध में विक्रमादित्य के साथ मारा गया था।

—नैणसी भाग १ पृ. ३१९; म. उमरा पृ. ३७८; जयपुर व अलवर का इति. पृ.१९६.

पृष्ठ १७० गीत सं. १३१ राव तिलोकचंद सेखावत मनोहरपुर —

मनोहरपुर का शासक राव तिलोकचंद शेखावत। वह राव रायचंद का उत्तराधिकारी हुआ। राव तिलोकचंद बड़ा दानवीर था। उसने वि. सं. १६९२ में सांवलदास बारहठ के चारों ही पुत्रों को हनुवंतपुरा, जौनपुरा, किशनपुरा और कल्याण-पुरा नामक चार ग्राम दान किये और भूधरदास को हणुतिया ग्राम दिया।

—रायसल जससरोज; जयपुर अलवर का इतिहास पृ. १९६

पृष्ठ १७१ गीत सं. १३२ राव विसनसिंघ सेखावत मनोहरपुर —

राव नाथूसिंह का पुत्र राव बिशनसिंह शेखावत मनोहरपुर। वह जयपुर राज्य के प्रथम श्रेणी के सरदारों में था ।

पृष्ठ १७२ गीत सं. १३३ राव हणवंतसिंघ सेखावत मनोहरपुर —

मनोहरपुर के महाराव विष्णुसिंह का उत्तराधिकारी महाराव हनवंतसिंह शेखावत । वह महाराजा सवाई रायसिंह जयपुर के बाल्यकाल में जयपुर राज्य परिषद का सदस्य रहा । महाराव हनुवंतसिंह काव्य प्रेमी, नीति-निपुण और उदार शासक था । उसके आश्रित कवि आईदान पाल्हावत ने छंदशास्त्र का ग्रन्थ 'हनवंत प्रकास' बनाया था ।

— रा. इ. तृतीय भाग पृ. १४६; वीर-गीत-संग्रह भा. १ भूमिका पृ. ३.

पृष्ठ १७३ गीत सं. १३४, १३५, १३६ ठाकर सादूळसिंघ सेखावत झुंझणू—

शेखावाटी प्रांत के झुंझनू के स्वामी ठाकुर शार्दूलसिंह-शेखावत । ठाकुर शार्दूलसिंह ठाकुर जगरामसिंह का पुत्र था । शार्दूलसिंह का वि. सं. १७३८ में टोंक छीतरी ग्राम में जन्म हुआ था । वह बड़ा वीर और राजनीति निपुण व्यक्ति था उसने अपने भ्राता सलहदीसिंह के सहयोग से झुंझनू के नवाबी राज्य को समाप्त कर उस पर अपना अधिकार स्थापित किया । शार्दूलसिंह ने फतहपुर के नवाबी राज्य को नष्ट करने में राव शिवसिंह सीकर की सहायता की । उसने वि.सं १७८० में सीकर पर शाही आक्रमण होने पर राव शिवसिंह की मदद की और गगवाणा के युद्ध में महाराजा सवाई जयसिंह के पक्ष में राजाधिराज वखतसिंह नागौर से युद्ध लड़ा । शार्दूलसिंह का वि.सं. १७९९ में परशुरामपुरा में देहावसान हुआ ।

— शार्दूलसिंह शेखावत पृ. ७०, ११६; १४४, १४६ शार्दूल वंश-प्रकास १५९–२१०

पृष्ठ १७७ गीत सं. १३७ ठाकर नौलसिंघ सेखावत नवलगढ़ —

ठाकुर शार्दूलसिंह का चतुर्थ पुत्र ठाकुर नवलसिंह शेखावत। ठाकुर नवलसिंह वि.सं. १७९४ में रोहीली नामक स्थान पर नवलगढ़ का दुर्ग बनाया था । बादशाह शाह आलम ने ठाकुर नवलसिंह को तीन हजारी जात, दो हजार सवार का मनसब दिया था । नवलसिंह ने वि.सं. १८३२ में फरुखनगर के नवाब कालेखां-

विलोच और रेवाड़ी के राव मित्रसेन अहीर को पराजित किया। शेखावाटी के इतिहास में यह घटना मांडण के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। नवलसिंह का पुत्र लालसिंह मांडण के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। वि.सं. १७८० में सिघाना में नवलसिंह का देहावसान हुआ।

—शार्दूलसिंह सेखावत पृ. १३५, १४९; मांडण का युद्ध (ह.लि.) शेखावतों की ख्यात.

पृष्ठ १७८ गीत सं. १३८ ठाकर लिछमणसिंघ महणसर —

महणसर का ठाकुर लक्ष्मणसिंह शेखावत। वह ठाकुर-नवलसिंह नवलगढ़ का पौत्र और ठाकुर नाहरसिंह का जेष्ठ पुत्र था वह बड़ा वीर और उदार सरदार था। उसने महाराजा सवाई जगतसिंह की ओर से वि.सं. १८६३ में महाराजा मानसिंह जोधपुर से लड़े गये पर्वतसर के पास गींगोली की घाटी के युद्ध में भाग लियाया था।

— लावा रासा भूमिका पृ. ६; शार्दूलवंश-प्रकास पृ. ३८१, ३८२; शार्दूलसिंह शेखावत पृ. १८१.

पृष्ठ १७९ गीत सं. १३९ सुखरूपसिंघ, उम्मेदसिंघ, जैमल सेखावत झाड़ली—

शेखावतों की 'गोपालजी के' प्रशाखा के ठाकुर गोवर्द्धनसिंह झाड़ली के पुत्र सुखरूपसिंह, उम्मेदसिंह और जयमल शेखावत। सुखरूपसिंह, उम्मेदसिंह और जयमल ने विपक्षियों से जूझ कर रणभूमि में प्राण विसर्जन किया था। यह युद्ध कहां और कब हुआ कोई संकेत नहीं मिला।

पृष्ठ १८१ गीत सं. १४० जवाहरसिंध सेखावत पाटोदा —

सीकर राज्य के पाटोदा ठिकाने का ठाकुर जवाहरसिंह-शेखावत। ठाकुर जवाहरसिंह सीकर के राव शिवसिंह का पौत्र, दलपतसिंह का पुत्र था। ठाकुर जवाहरसिंह ने अपने भाई ठाकुर डूंगरसिंह तथा अन्य शेखावत बंधुओं के सहयोग से अंग्रेजों की छावनी नसीराबाद को लूट लिया था। उसने आगरा के किले पर आक्रमण कर वि सं १९०३ में डूंगरसिंह और अन्य स्वतंत्रता प्रयासी योद्धाओं को बंधन-मुक्त किया और अंग्रेजों की सत्ता को हिला दिया था। अंत में बीकानेर नरेश रतनसिंह के प्रयत्न

से आत्मसमर्पण कर अपने ठिकाने पाटोदा में शांति से रहने लगा। राव राजा भैरूंसिंह-शेखावत सीकर और राव राजा माधवसिंह के शासनकाल में जवाहरसिंह ने सीकर राज्य का राजकीय कार्य भी किया।

— स्वतंत्रता सेनानी डूंगजी जवाहरजी पृ. १–८; रायसल जस सरोज; रायसल विरुद छिहतरी।

पृष्ठ १८२ गीत सं० १४१ राव कलियाणसिंघ नरूका मांचेड़ी ––

मांचेड़ी का राव कल्याणसिंह नरूका। वह राव फतहसिंह का पुत्र था। कल्याणसिंह मिर्जा राजा जयसिंह के द्वितीय पुत्र राजा कीर्तिसिंह कामा के पास रहता था। उसने कामा पर अधिकार करने में राजा कीर्तिसिंह की सहायता की थी। बादशाह औरंगजेब के पक्ष में राजा कीर्तिसिंह की ओर से राव कल्याणसिंह ने अनेक युद्धों में भाग लेकर वीरता का परिचय दिया था। उसका पांचवा वंशधर राव-प्रतापसिंह हुआ जिसने कछवाहों के अलवर-राज्य की स्थापना की। कल्याणसिंह कामा-पहाड़ी का सूबेदार भी रहा।

—लावा रासा पृ. ३४, ३५; नैणसी भा. १ पृ. ३१८.

पृष्ठ १८३ गीत सं. १४२ महाराव प्रतापसिंघ नरूका ––

अलवर-राज्य का संस्थापक महाराव प्रतापसिंह नरूका-कछवाहा। वह राव मोहबतसिंह का पुत्र था। महाराव प्रतापसिंह महाराजा सवाई-प्रतापसिंह जयपुर का समकालीन था। प्रतापसिंह ने जयपुर और भरतपुर के बीच हुए मावंडा मंडोली के युद्ध में जयपुर का पक्ष लिया था। किन्तु, महाराजा सवाई प्रतापसिंह से अनबन हो जाने पर वह दिल्ली चला गया और वहां बादशाह शाह आलम द्वितीय से वि.सं. १८२७ में महाराव राजा की पदवी और पंचहजारी का मनसब प्राप्त किया। प्रतापसिंह ने वि.सं. १८३२ में भरतपुर के जाट नरेश को पराजित कर अलवर को अपनी राजधानी बनाया। वह वि. सं १८४७ में स्वर्गवासी हुआ।

—लावा रासा भूमिका पृ. ३५; प्रताप रासो (सम्पादकीय) पृ. ४२, ४३.

पृष्ठ १८४ गीत सं. १४३ रावराजा संगरामसिंघ उनियारा —

जयपुर के अर्द्ध स्वतंत्र राज्य उनियारा का शासक रावराजा संग्रामसिंह। वह रावराजा फतहसिंह का पुत्र था। वि. सं. १७६५ में महाराजा सवाईजयसिंह आमेर और महाराजा अजितसिंह जोधपुर ने शाही थाने सांभर पर आक्रमण किया। सांभर का शाही रक्षक अली अहमदखां सैयद और उसके सहायक नारनोल मथुरा के फौजदार गैरतखां, अहमद सैयदखां मुकाबले पर आये। दोनों ओर के घमासान युद्ध में दानों राजाओं की सैनाओं के पैर उखड़ गये। उस समय रावराजा संग्रामसिंह ने अपने पांच सौ सवारों से शाही पक्ष पर आक्रमण किया जिसमें सैयदअली अहमदखां मथुरा तथा आमेर के सैयद हुसैनखां फौजदार मारे गये।

— मा. इ. प्र. भा. पृ. २९६; सांभर का युद्ध पृ. ४–८.

पृष्ठ १८६ गीत सं. १४४ रावराजा सरदारसिंघ नरूका उनियारा —

जयपुर के स्वशासी उनियारा राज्य का अधिपति रावराजा-सरदारसिंह नरूका प्रथम। सरदारसिंह ने किस युद्ध में तुर्क सेना को पराजित किया था, कोई पुष्ट आधार नहीं मिला। अह रावराजा अजितसिंह का पुत्र था। ई. सन् १७७४ से १७७७ तक वह उनियारा का शासक रहा।

— जयपुर अलवर का इतिहास पृ.१९८.

पृष्ठ १८७ गीत सं. १४५, १४६ रावराजा संगरामसिंघ नरूका उनियारा—

रावराजा संग्रामसिंह नरूका उनियारा का स्वामी। उसने जयपुर और जोधपुर नरेशों के साथ सांभर के शाही फौजदार सैयदअली अहमद, सैयद-हुसैनअली और सैयद अब्दुला को पराजित किया था।

— लावा रासा भूमिका पृ. ३३, जयपुर अलवर का इतिहास पृ. १९८.

पृष्ठ १८९ गीत सं. १४७ ठाकर केसरीसिंघ जूझारसिंघोत —

वह कछवाहों की राजावत शाखा के ठाकुर जूझारसिंह का पुत्र था। जूझारसिंह आमेर के महाराजकुमार जगतसिंह का छोटा पुत्र था।

— नैणसी री ख्यात भाग १, पृ. २९१, २९८.

पृष्ठ १९० गीत सं. १४८ ठाकर भैरूंसिंघ —

ठाकुर भैरूंसिंह के ठिकाना आदि का परिचय अज्ञात है। यह ठाकुर सौभाग्यसिंह का पुत्र और स्यामलदास का वंशज था।

पृष्ठ १९२ गीत सं. १४९ कछवाहां सीसोदियां रौ जुध —

कछवाहों और सीसोदियों में युद्ध बनास नदी के पास राजमहल स्थान पर हुआ था। वह युद्ध कछवाहा नरेश ईश्वरसिंह और महाराणा उदयपुर की सेना में हुआ था। इसमें महाराणा जगतसिंह द्वितीय को पराजित होना पड़ा था।

—मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास पृ. १३५.

पृष्ठ १९३ गीत सं. १५० महाराव सुरताण देवड़ा सिरोही—

सिरोही राज्य का शासक महाराव सुरतान देवड़ा। वह भाण देवड़ा का पुत्र था। राव मानसिंह के निःसंतान देहावसान पर सुरतान सिरोही की गद्दी पर बैठा। उसने राव कल्ला देवड़ा को हराया और जगमाल सीशोदिया को वि. सं. १६४० में पराजित कर रणशायी किया। वह राजा चंद्रसेन जोधपुर और महाराणा प्रतापसिंह के समान ही स्वतंत्रता-प्रेमी था। वि. सं. १६६७ में उसका देहावसान हुआ।

— नैणसी भाग १ पृ. १४२, १४८, १५२, १५३; डूंगरसी रतनू ग्रंथावली पृ.१९०-१९२.

पृ० १९४ गीत सं. १५१ राव सत्रसाल हाडा बूंदी —

हाडा क्षत्रियों के बूंदी राज्य का शासक महाराव शत्रुशाल हाडा। वह राव रतनसिंह का पौत्र और राजकुमार गोपीनाथ का पुत्र था। शत्रुशाल अपने पितामह के बाद वि. सं. १६८८ में बूंदी की गद्दी पर बैठा। बादशाह-शाहजहां की सेवा में उपस्थित होने पर उसे तीन हजारी जात, दो हजार सवार का मनसब मिला। तदनन्तर उसने दक्षिण के दौलताबाद के घेरे, दुर्ग परेंदा के घेरे, बालाघाट बुरहानपुर, कंधार तथा बीदर और कल्याणी के युद्धों तथा घेरों में साहस तथा वीरता का प्रदर्शन कर यश पाया और वि.सं. १७१५ में धौलपुर के मैदान में शाहजादा-

दाराशिकोह के पक्ष में शाहजादा औरंगजेब और मुराद की सेना से लड़ता हुआ खेत रहा। तव वह चार हजारी जात, चार हजार का मनसवदार था।

— विन्हैरासो पृ. २२२; म. उमरा पृ. ४०१--४०५.

पृष्ठ १९५ गीत सं. १५२ राव मुकंदसिंघ हाड़ा कोटा —

कोटा राज्य का अधिपति राव मुकुंदसिंह हाडा। राव रतनसिंह के द्वितीय पुत्र माधवसिंह हाडा कोटा का पुत्र राव मुकुंदसिंह हाडा वि.सं.१७०४ में कोटा-राज्य की गद्दी पर बैठा। बादशाह शाहजांह ने उसे दो हजारी जात, पन्द्रह सौ सवार का मनसब प्रदान कर सम्मानित किया। तदनंतर वह कंधार और चित्तौड़ दुर्ग की चढ़ाई पर भेजा गया। तदनुपरान्त वि. सं. १७१५ में शाहजांह के शाहजादों के उज्जैन के युद्ध में भेजा गया और उसी युद्ध में अपने तीन भाईयों सहित वीरतापूर्वक संग्राम करते हुए धराशायी हुआ। उस समय वह तीन हसारी जात, दो हजार सवार का मनसवदार था।

— विन्हैरासो पृ. २२४; म. उमरा पृ. ३११.

पृष्ठ १९६ गीत सं. १५३ महाराज मोहणसिंघ हाडा पलायथा —

वह कोटा नरेश राव माधवसिंह का पुत्र और राव मुकुंदसिंह का भाई था। महाराज मोहनसिंह वि.सं. १७१५ में उज्जैन की समरस्थली में अपने भाई राव मुकुंदसिंह के नेतृत्व में शाहजादा औरंगजेब और मुरादबख्श की सेना से लड़कर काम आया। उस समय उसका आठ सौ जात, चार सौ सवार का मनसब था।

—कोटा राज्य का इतिहास प्र. भा. पृ. १३४.

पृष्ठ १९७ गीत सं. १५४ पांच माधाणी हाडा —

कोटा के राव माधवसिंह के पुत्र राव मुकुंदसिंह, महाराज-जूझारसिंह कोटड़ा, महाराज मोहनसिंह पलायथा, महाराज कन्हीराम कोयला और महाराज किशोरसिंह सांगोद। ये पांचों भाई उज्जैन के युद्ध में शामिल थे। उक्त युद्ध में चार भाई मारे गए और किशोरसिंह घायल होकर बच रहा। तदनंतर वह कोटा का शासक बना।

— विन्हैरासो पृ. २२४.

पृष्ठ १९८ गीत सं. १५५ कंवर संगरामसिंघ हाडा—

कुंवर संग्रामसिंह हाडा कोटा बूंदी राज्यों के किस ठिकाने का कंवर था प्राप्त इतिहासों से पता नहीं चलता।

पृष्ठ १९९ गीत सं. १५६ महाराव उम्मेदसिंघ हाडा बूंदी —

बूंदी के महाराव राजा बुद्धसिंह का पुत्र महाराव राजा-उम्मेदसिंह हाडा बूंदी। जयपुर नरेश सवाई जयसिंह और महाराव राजा बुधसिंह के प्रवल विरोध होने पर जयसिंह ने बुद्धसिंह को पराजित कर बूंदी पर करवाड़ के कुंवर-दलेलसिंह को अपनी पुत्री विवाह कर अधिष्ठित कर दिया था। सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उम्मेदसिंह ने वि.सं. १८०० में कोटा के महाराव दुर्जनशाल और शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह राणावत आदि की सहायता प्रप्त कर दलेलसिंह से बूंदी छीन कर अपना अधिकार स्थापित किया। तदनंतर महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह ने पुनः बूंदी पर चढ़ाई कर दवलाना स्थान पर उम्मेदसिंह को परास्त कर बूंदी को हस्तगत किया। उम्मेदसिंह ने उदयपुर, शाहपुरा, कोटा और मल्हार राव होलकर की सहायता प्राप्त कर राजमहल स्थान पर युद्ध लड़ा और बूंदी पर कब्जा किया। फिर ई. सन् १८६२ में माहादाजी सिंधिया और कोटा के महाराव दुर्जनशाल से भी युद्ध लड़ा।

— **राज. इ. (गहलोत) द्वि. भा. पृ.८३, ८४, १२७.**

पृष्ठ २०७ गीत सं. १५७ से १७२ तक महाराज बळवंतसिंघ हाडा गोठड़ा—

महाराव राजा उम्मेदसिंह हाडा बूंदी के द्वितीय पुत्र महाराज वहादुरसिंह का जेष्ठ पुत्र महाराज बलवंतसिंह हाडा गोठड़ा। महाराज बलवंतसिंह बड़ा स्वाभिमानी वीर था। उसने जयपुर राज्य के उनियारा संस्थान की सेना को पराजित कर अपनी वीरता का प्रदर्शन किया था। वह अंग्रेज और उनके मित्र महाराज-राणा जालिमसिंह झालावाड़ नरेश का प्रवल विरोधी था। महाराज राणा जालिमसिंह की राजकुमारी से बूंदी नरेश विशनसिंह का विवाह हुआ था। इसलिए विशनसिंह भी उसकी ओर झुका हुआ था। बलवंतसिंह ने वि.सं. १८६७ में बूंदी के नैनवां स्थान पर अधिकार कर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। अंग्रेजों ने इस अवसर का लाभ उठाकर वि.सं. १८८१ में जब कि वलवंतसिंह केशोराय पाटन की तीर्थयात्रा पर था उसपर आक्रमण कर उसे घेर लिया। ऐसी विकट स्थिति में भी वलवंतसिंह ने साहस नहीं छोड़ा और अंग्रेजों की सेना से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। महाराज वलवंतसिंह के साथ ही उनके भाई दलपतसिंह, शेरसिंह, पुत्र घौंकलसिंह और फतहसिंह भी मारे गए थे।

पृष्ठ २३० गीत सं. १७३ कंवर धौंकळसिंघ हाडा गोठड़ा—

स्वातंत्र्य संग्राम के होता महाराज वलवंतसिंह का पुत्र राजकुमार धौंकलसिंह गोठड़ा। वह अपने पिता महाराज वलवंतसिंह सहित वि.सं. १८८१ में केशोराय पाटन स्थान पर अंग्रेजों तथा महाराज राणा जालिमसिंह झाला झालावाड़ के विरुद्ध लड़ कर रणखेत रहा।

पृष्ठ २३१ गीत सं. १७४ सेरसिंघ हाडा गोठड़ा —

महाराजा वलवंतसिह हाडा का लघु भ्राता शेरसिंह हाडा। शेरसिंह वि.सं. १८८१ में केशोराय पाटन के युद्ध में अंग्रेजों से लड़ता हुआ मारा गया था।

पृष्ठ २३२ गीत सं. १७५ से १७९ तक दळपतसिंघ हाडा—

महाराजा वलवंतसिह का अनुज दलपतसिंह हाडा। वह अपने अग्रज महाराज वलवंतसिंह, शेरसिंह और भतीजे धौंकलसिंह फतहसिंह सहित केशोराराय पाटन स्थान के युद्ध में अंग्रेजी सेना से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

पृष्ठ २३७ गीत सं. १८० सेरसिंघ हाडा —

महाराज वलवंतसिंह गोठड़ा का छोटा भाई शेरसिंह-हाडा विशेष देखें टिप्पणी गीत सं. १७४ की।

पृष्ठ २३९ गीत सं. १८१ ठाकर सोनिंग भाणावत सोनगरा सादड़ा—

उदयपुर राज्य के सादड़ा ठिकाने का ठाकुर सोनिंग-सोनगरा चौहान। वह भांण का पुत्र तथा अक्षयराज का पौत्र था। भांण माहाराणा-उदयसिह के राज्यकाल में कुंभलगढ़ दुर्ग पर शाहवाजखांन कंवू से जूझकर रणक्षेत्र में काम आया था। राणा उदयसिंह जोधपुर भाण के दामाद थे। सोनिग अपने पिता भाण के साथ ही कुंभलगढ़ पर मारा गया था।

नैणसी भा.१ पृ. २०९, २१०

पृष्ठ २४० गीत सं. १८२ मोहकमसिंघ चहुवाण —

लालसिंह चौहान का पुत्र मोहकमसिंह चहुवान । मोहकमसिंह ने महाराजा अभयसिंह और नवाब सरबिलंदखां के मध्य हुए अहमदाबाद के युद्ध में वीरता दिखाई थी। तदनुपरान्त वि. सं. १८०८ में महाराजा रामसिंह और राजाधिराज-बखतसिंह नागोर के विग्रह में मोहकमसिंह तथा भाटी सुजानसिंह लवेरा ने महाराजा-रामसिंह का पक्ष त्याग कर जोधपुर दुर्ग पर बखतसिंह का अधिकार करवा दिया था। परन्तु, इस प्रकार विश्वासघात करने पर महाराजा बखतसिंह उन दोनों से रुष्ट हो गये। मोहकमसिंह सांचोर का स्वामी था।

—मा. इतिहास (रेउ) प्रथम भाग पृ. ३६५.

पृष्ठ २४२ गीत सं. १८३ ठाकर संभुदानसिंघ चौहान संखवास —

नागौर के संखवास ठिकाने का ठाकुर शंभुदानसिंह चहुवान। वह चहुवानों की सांचोरा शाखा का था। शंभुदानसिंह ठाकुर राजसिंह का पुत्र और उत्तराधिकारी था। वह ठाकुर राजसिंह के वि. सं. १८११ में जयअप्पा सिंधिया के भाई दत्ताजी सिंधिया के नागौर के आक्रमण में मारे जाने पर संखवास की गद्दी पर बैठा। महाराजा विजयसिंह जोधपुर ने उसे संखवास के अतिरिक्त कापरड़ा और बगड़ की जागीर प्रदान की थी। शंभुदानसिंह ने जालौर क्षेत्र के डकेतों का भी दमन किया था।

—कीरत प्रकाश काव्य.

पृष्ठ २४४ गीत सं. १८४ रावळ भीमसिंघ भाटी जैसलमेर —

जैसलमेर का महारावल भीमसिंह भाटी। वह रावल हरिराज का पुत्र था। रावल हरिराज के निधनोपरांत वि. सं. १६३४ में वह सिरोही की गद्दी पर बैठा। बादशाह अकबर ने उसे मनसब प्रदान कर मिर्जा खांनखांना के साथ उड़ीसा और बंगाल की लड़ाइयों में भेजा था। वह विक्रमी संवत् १६७० में स्वर्गवासी हुआ।

— राजपूताने का इतिहास प्र. भा. (गहलोत) पृ. ६७३.

पृष्ठ. २४५ गीत सं. १८५ राजा सिवराम गौड़ सरवाड़ —

राजा गोपालदास गौड़ के जेष्ठ पुत्र बलिराम का पुत्र राजा-शिवराम गौड़। वह बादशाह शाहजहां के शासनकाल में ढ़ाई हजारी जात, ढ़ाई हजार सवार का मनसबदार था। शिवराम वि. सं. १७१५ में धौलपुर (शामूगढ़) के युद्ध में मारा गया था।

विन्हैरासो पृ. २२८.

पृष्ठ. २४६ गीत सं. १८६ भीम विक्रमोत गौड़—

भीम अजमेर प्रांत के गौड़ों की खोखर शाखा के गिरवर-सिंह का पौत्र और विक्रमसिंह का पुत्र था। वह वि. सं. १७१५ में शाहजहां के पुत्रों के धौलपुर के युद्ध में शाही पक्ष में लड़ कर मारा गया था।

— विन्हैरासो पृ. २३२.

पृष्ठ २४७ गीत सं. १८७ सैंसमल गौड़ मानावत —

मानसिंह गौड़ का पुत्र सहसमल गौड़। वह किस युद्ध में काम आया कहीं कोई वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हुआ। संभवतः वह उज्जैन में मारा गया हो। मानसिंह आसेर का किलेदार था।

पृष्ठ २४८ गीत सं. १८८ वीरभद्र गौड़—

राजा गोपालदास गौड़ का पुत्र वीरभद्र गौड़। वह वि. सं. १७१५ में शाहजहां के पुत्रों के उज्जैन स्थान के युद्ध में बादशाही पक्ष में लड़ता हुआ मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

—विन्हैरासो पृ. २३०

पृष्ठ २४९ गीत सं. १८९ पोकरदास गौड़ —

भीकसिंह गौड़ का पुत्र पोकरदास गौड़। वह मांडू का किला-अध्यक्ष था। वह वि. सं. १७१५ में शाहजहां के विद्रोही पुत्रों के विरुद्ध धौलपुर में लड़कर काम आया।

— विन्हैरासो पृ. २२९.

पृष्ठ २५० गीत सं. १९० विजैसिंघ गौड़ —

विजयसिंह गौड़ की जागीर एवं स्थान का ख्यातों से पता नहीं चलता। वह किस युद्ध में मारा गया, यह भी उल्लेख प्राप्त नहीं हुआ।

पृष्ठ २५१ गीत सं. १९१ प्रयागदास गौड़ —

गोविंददास का पुत्र प्रयागदास गौड़। वह मालदेव का पौत्र था। वह युद्ध में मारा गया था। अन्य वृत्तान्त अज्ञात है।

पृष्ठ २५२ गीत सं. १९२ मुकंददास बिहारीदास बिठळदास गिरधरदास गौड़–

राजा गोपालदास गौड़ लाखेरी के पुत्र राजा विठ्ठलदास, गिरधरदास, मुकुंददास और विहारीदास। मुकुंददास और विहारीदास धौलपुर में मारे गए और राजा विठ्ठलदास और गिरधरदास बच रहे। राजा विठ्ठलदास औरंगजेब के राज्य काल में ई. सन् १५५१ में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

– वचनिका र. म. टी. पृ. १३६.

पृष्ठ २५३ गीत सं. १९३ से २०१ तक सुभराम गौड़ वलिरामोत —

राजा गोपालदास गौड़ के जेष्ठ पुत्र वलिराम का पुत्र-शुभराम गौड़। संभवतः वह बादशाह औरंगजेब के शासन के प्रारंभिक दिनों में महाराणा राजसिंह के पास जा रहा और मेवाड़ी सेना में रह कर दक्षिण के किसी युद्ध में मारा गया। गीत नायक के सम्बन्ध में विशेप उल्लेख प्राप्त नहीं हुआ।

पृष्ठ २६२ गीत सं. २०२ गोयंददास कान्हावत —

गोविन्ददास कान्हदास का पुत्र। अन्य जानकारी उपलब्ध नहीं हुई।

पृष्ठ २६३ गीत सं २०३ ठाकर रामसिंघ लालसिंघोत नीठराणा—

ठाकुर रामसिंह लालसिंहोत नीठराणा का वृत्तान्त नहीं मिला ॥

पृष्ठ २६४ गीत सं. २०४ सुंदरदास —

सुन्दरदास रामसिहोत। उसने युद्ध में ठाकुरसिह नामक योद्धा को मारा था।

पृष्ठ २६५ गीत सं. २०५ औनाड़सिंघ पंवार—

महाराजा तख्तसिह जोधपुर का योद्धा तथा किलेदार औनाड़सिह पंवार। सन् १८५७ के भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध में अंग्रेजों के पक्ष में महाराजा तख्तसिह ने एक हजार सैनिक और चार तोपें औनाड़सिह, राव राजमल लोढ़ा और छत्रमल महता के नेतृत्व में आऊवा ठिकाने पर जो अंग्रेज सरकार के विरोधियों का तब केन्द्र बना हुआ था—सैना भेजी। ठाकुर कुशालसिह आऊवा, ठाकुर बिशनसिह गूलर और राजकीय सेना में घमासान युद्ध हुआ। जोधपुर के सेना-नायक सिंघवी कुशलराज और मेहता वियसिंह मैदान छोड़ कर भाग गए तथा किलादार औनाड़सिह वीरता पूर्वक लड़ कर मारा गया।

— मारवाड़ का इतिहास द्वितीय भाग (रेउ) पृ. ४४९, ४५०.

पृष्ठ २६७ गीत सं २०६ सिंघवी भींवराज जोधपुर—

ओसवालों की सिंघवी शाखा का भीमराज। भीमराज सिंघवी जोधपुर के महाराजा बखतसिह और उसके पुत्र महाराजा विजयसिंह के शासनकाल में उल्लेखनीय व्यक्तियों में था। वह जोधपुर राज्य के बक्षीगिरी के उच्च पद पर रहा और मरहठों के आक्रमण से मारवाड़ को बचाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहा। वि.सं. १८३४ में जब अम्बाजी इंगलिया ने जयपुर प्रांत पर आक्रमण किया तब महाराजा विजयसिंह के निर्देशन पर भीमराज ने मरहठों के विरुद्ध जयपुर की सहायता कर मरहठों को परास्त किया। गीत में भीमराज द्वारा महादाजी सिंधिया को पराजित करने, अजमेर पर आधिपत्य स्थापित करने और जयपुर की सहायता करने का वर्णन किया गया है जो इतिहास सम्मत है। भीमराज का निधन वि. सं. १८४८ में हुआ।

— ओसवाल जाति का इतिहास ले. सुखसंपतराय भंडारी पृ. ७९–८१.

पृष्ठ २७२ गीत सं. २०७ कविराजा भवानीदान कोटा—

कोटा राज्य का राजकवि भवानीदान महियारिया शाखा का चारण। वह देवा का पौत्र और शंकरदान का पुत्र था।

पृष्ठ २७३ गीत सं. २०८ कलियाणसिंघ वैरीसिंघोत—

वैरीशालसिंह का वंशज कल्याणसिंह। कल्याणसिंह का अन्य परिचय उपलब्ध नहीं हुआ।

पृष्ठ २७४ गीत सं. २०९ भीमराज भाटी भटनेर—

बीकानेर के ढींगसरी ठिकाने का ठाकुर भीमराज। वह भोजराज रूपावत का पुत्र था। ठाकुरसी पर हिसार के शाही सूबेदार के आक्रमण करने पर भीमराज ठाकुरसी के पक्ष में जूझ कर काम आया।

—दयालदास री ख्यात पृ. ८६; ओझा बीकानेर प्र. भा. पृ. १३१.

पृष्ठ २७५ गीत सं. २१० राजा हरसहाय गुरसहाय खत्री—

जयपुर नरेश सवाई माधवसिंह प्रथम का फौजबक्षी हरसहाय और उसका भाई गुरुसहाय। महाराजा सवाई माधवसिंह और भरतपुर नरेश जवाहरमल के बीच मावंडा मंडोली स्थान पर भयानक युद्ध हुआ। इस युद्ध में भरतपुर के दस हजार सैनिक मारे गये और जयपुर के सेनानायक रावत-दलेलसिंह राजावत धूला, उसका पुत्र लक्ष्मणसिंह तथा पौत्र रघुराजसिंह, जोबनेर का का ठाकुर वंशीसिंह अपने तीन पुत्रों सहित, सीकर रावराजा देवीसिंह के काका बुद्धसिंह, पचार का ठाकुर गुमानसिंह शेखावत, घानोता मूंडरू के अधिपति और दोनों खत्री-बंधु मारे गये थे।

— कूर्म विजय पृ. ८१–८२; जयपुर-अलवर राज्य का इतिहास पृ.११३–११४.

पृष्ठ २७६ गीत सं. २११, २१२ आपा मरहठा दिखणी—

मरहठा सेनानायक जयअप्पा सिंधिया। जयअप्पा ने महा-राजा रामसिंह का पक्ष लेकर महाराजा विजयसिंह के समय मेड़ता और नागोर पर आक्रमण किया। महाराजा विजयसिंह ने जयअप्पा से समझौता करने की भरसक चेष्टा की। किन्तु, सिंधिया का लोलुप मन द्रव्य से तृप्त नहीं हुआ। तब विवश होकर महाराजा-विजयसिंह ने वि. सं. १८१२ में केशरखां खोखर और एक गहलोत राजपूत से जयअप्पा को छलपूर्वक मरवा डाला। फिर जयअप्पा के भाई दत्ताजी और जनकोजी (जयअप्पा-के पुत्र) ने जोधपुर और नागौर को घेर लिया। तब विवश होकर महाराजा विजयसिंह को बीस लाख रुपये तथा अजमेर का प्रान्त देकर सुलह करनी पड़ी। और रामसिंह को मेड़ता, परबतसर, मारोठ, सोजत और जालौर आदि के परगने दिये गये।

—मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग (रेउ) पृ. ३७३ – ३७५.

पृष्ठ २७८ गीत सं. २१३ मेघसिंघ सौलंखी —

नवघन का वंशज मेघसिंह सोलंखी । मेघसिंह ने बाईस वर्ष की आयु में तथा उसके भाई जयचंद ने पन्द्रह वर्ष की वय में शत्रुओं का संहार कर वीरगति प्राप्त की । मेघसिंह का विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ ।

पृष्ठ २७९ गीत सं. २१४ अंगरेजां रै विरोध री —

ई. सन् १८५७ तथा उसके पूर्व राजस्थानी वीरों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के प्रयासी वीरों की सराहना और अंग्रेजों की दुर्नीतियों की भर्त्सना करते हुए गीतकार चारण शंकरदान ने अनेक गीत, कवित्त, दोहे तथा सोरठे लिखे । शंकरदान राष्ट्रीय भाव धारा का कवि था । वह बीकानेर के बोवासर ग्राम का निवासी था । शंकरदान रचित 'सगती सुजस' 'वगत वायरो' 'देस दरपण' 'साकेत सतक' आदि कृतियां प्रसिद्ध हैं ।

— चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास पृ. ९८—९९.

परिशिष्ट—२

गीत—छंदानुक्रमणिका